रामविलास पोद्दार

प्रकाशक—
रामविलास पोद्दार स्मारक समिति,
ठि० माधवप्रसाद एण्ड कम्पनी,
युसुफ बिल्डिंग, फोर्ट, बम्बई।

मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कर्नाटक हाउस,
चिराबाजार, बम्बई नं० २

रामविलास पोद्दार स्मारक ग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

रामविलास पोद्दार

(जीवन-रेखा और स्मृतियाँ)

—

मित्र-वर्ग द्वारा लिखित

१९३९

सम्पादक—

जवाहिरलाल जैन, एम० ए०, 'विशारद'

स्मृतियाँ अब तक सुखमय थी जो—
वे ही अब दुखमय हैं हाय !
याद उन्हें कर अश्रु बहावें,
रहा शेष, क्या अन्य उपाय !

—'अभिन्न हृदय'

प्रकाशक—
रामबिलास पोद्दार स्मारक समिति,
ठि० माधवप्रसाद एण्ड कम्पनी,
युसुफ बिल्डिंग, फोर्ट, बम्बई।

मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कर्नाटक हाउस,
चिराबाजार, बम्बई न० २

Rambilas Podar Smarak Granthmala, Vol. I

RAMBILAS PODAR

Life Sketch & Memories

BY

FRIENDS AND ADMIRERS

1936

EDITOR—

JAWAHIR LAL JAIN,

M. A, 'VISHARAD.'

प्रिय विद्यार्थि-जीवनको,

आओ, पढ़ें कुछ भावसे ।

सोचें इसे, समझें इसे,

दिलमें उतारें चावसे ॥

—'अभिनव हृदय'

स्मृतियाँ अब तक सुखमय थी जो—
वे ही अब दुखमय हैं हाय !
याद उन्हें कर अश्रु बहावें,
रहा शेष, क्या अन्य उपाय !

—'अभिन्न हृदय'

अनभ्र-नभ से यह वज्र-निपात

द्वन्द्व-मय, परुष जगज्जीवन;
दुःख-सुख, रुदन-हास प्रतिक्षण;
न केवल यह दुःखों का योग,
और नहिं स्थायी सुख-उपभोग।

देव के सुचतुर हस्त उदार
बरसते सौख्य-समृद्धि अपार;
रिक्त जीवन को करते सार्थ
बनाकर दृश्यादृश्य पदार्थ।

मनुज की स्नेह-लता के तन्तु,
उन्हे परिवृत करते जब किन्तु,
दैव के निर्मम कर निरपेक्ष,
प्रलय कर देते एक निमेष।

कालका यह कैसा व्यापार!
चले तुम असमय तज संसार!
तुम्हारी सुधिसे सिञ्चित प्राण,
स्वजनके सहसा होते म्लान।

उक्ति है:-'देवों के प्रिय-पात्र
जगत में रहते कुछ दिन मात्र।'
कहाँ विस्मय जो बन्धन तोड
गये तुम जग से यों मुख मोड़!

विभव की गरिमा हुई सनाथ
ज्ञान का पाकर तुम मे साथ।
दक्षता, ऋजुता का ले साज
सरल मन रहा सदा निर्व्याज।

विनय मे वाक्पटुता का वास;
ज्ञान-गरिमा-पूरित उपहास।
कर्म मे व्यापृत रहा विवेक;
एक गुण लाया अन्य अनेक।

ज्ञान-धन-जनने किया विनीत;
सरसता, शुचिता-पूर्ण पुनीत।
सौम्यता तत्परता, अवधान
सहोदर-सम पाये थे स्थान।

शील के पुतले! युवक समाज
तुम्हीं से शोभित होता आज,
हुआ होता जो नहिं अज्ञात
अनभ्र-नभ से यह वज्र-निपात!!

तुम्हारे अगणित चरित उदार,
स्मृति-स्थल से उठ झञ्झाकार,
धैर्य—नौका को करते भग्न;
शोक—जल मे मन होता मग्न।

उक्ति है:-'देवों के प्रिय-पात्र
जगत में रहते कुछ दिन मात्र।'
कहाँ विस्मय जो बन्धन तोड
गये तुम जग से यों मुख मोड़!

विभव की गरिमा हुई सनाथ
ज्ञान का पाकर तुम मे साथ।
दक्षता, ऋजुता का ले साज
सरल मन रहा सदा निर्व्याज।

विनय मे वाक्पटुता का वास;
ज्ञान-गरिमा-पूरित उपहास।
कर्म मे व्यापृत रहा विवेक;
एक गुण लाया अन्य अनेक।

ज्ञान-धन-जनने किया विनीत;
सरसता, शुचिता-पूर्ण पुनीत।
सौम्यता तत्परता, अवधान
सहोदर-सम पाये थे स्थान।

शील के पुतले! युवक समाज
तुम्हीं से शोभित होता आज,
हुआ होता जो नहिं अज्ञात
अनभ्र-नभ से यह वज्र-निपात!!

तुम्हारे अगणित चरित उदार,
स्मृति-स्थल से उठ झञ्झाकार,
धैर्य—नौका को करते भग्न;
शोक—जल मे मन होता मग्न।

ता० ६ जुलाई १९३६ का दिन दुःखद घटना के लिये चिरकाल तक याद रहेगा। बम्बई मे अकस्मात् (Accident) से दिन प्रतिदिन अनेक दुर्घटनाऍ होती रहती है एव हॉर्नबी–वेलार्ड नामक समुद्र–तट के राजमार्ग पर भी अनेक दुर्घटनाऍ हो चुकी है; तथापि ता० ६ जुलाई को उस रास्ते पर मोटर–अकस्मात् (Accident) से जो दुर्घटना हुई—उसको हम कदापि भूल नहीं सकते। उस अकस्मात् को सुन कर बम्बई भर मे सनसनी फैल गई थी। सर्वत्र हाहाकार मच गया। इस दुर्घटना से समस्त जनता को इस तरह आघात पहुँचने के दो कारण है—एक तो यह कि स्वर्गीय बाबू रामविलास पोदार एव सेठ आनन्दीलालजी पोदार के कुटुम्बने अपनी परोपकारवृत्ति के कारण असीम लोकप्रियता प्रात करली है, और दूसरा यह, कि स्वर्गीय रामविलास को अकस्मात् होने का निमित्त कारण कोई प्रमोद या विनोद का प्रसङ्ग न था, पर कर्तव्य-पालन था।

इसके साथ-साथ जब हम इस बातका विचार करते है कि कुछ ही समय पहले स्वर्गीय रामविलास का विवाह हुआ था और उसकी पत्नी अपनी सास की बीमारी पर कुछ ही समय पहले ससुरालमे रहने के लिए आई थी, और यह कि सब घरवालो का ध्यान श्रीमती सेठानीजी की अन्तिम इच्छाओ की पूर्ति मे तथा दानपुण्य करनेमे लगा हुआ था और उनकी घडी–पल वाली अवस्था हो रही थी, उस समय यह वज्रपात हुआ—तो हमारे दुःखका पारावार नहीं रहता।

संसारमे आशासे सुख और निराशासे दुःख होता है। जहाँ आशा की प्रबलता होती है–वहाँ निराशा से अत्यधिक दुःखका होना भी स्वाभाविक है। स्व० रामविलास के उज्ज्वल भविष्य पर उसके माता–पिता, भाई–बान्धव, इष्ट-मित्र तथा देशवासियोंने बडे-बडे मनोरथ के पुल बॉधे थे। सेठ आनन्दीलालजी ससारको समस्त प्रवृत्तियोंको अपने समर्थ पुत्रोंके कन्धो पर छोड कर अपना शेष जीवन भगवद्भजन मे, किसी पवित्र स्थानपर व्यतीत करने का

स्व० रामविलास की जीवन-रेखा प्रकाशित करनेका प्रधान हेतु यह है कि वह आज-कलके सुशिक्षित युवकों के लिए और विशेषकर मारवाड़ी समाजके युवकों के लिये अनुकरण करने योग्य है। स्वर्गीय रामविलास एक आदर्श युवक था। उसका जीवन, आदर्श जीवन था। उसके अत्यल्प जीवनकालमें भी चरित्र-बलके इतने उदाहरण उपलब्ध होते हैं कि जिनसे क्या छोटे, क्या बड़े, सभी कुछ न कुछ सार ग्रहण कर सकते हैं। उसका मधुर भाषण, जन-सेवा-कार्य, मातृ-पितृ-भक्ति, भ्रातृ-प्रेम, कर्तव्य-पालन, सदाचार, उन्नत-विचार, बालमित्रादि का मनोरञ्जन, अजात-शत्रुता, वाक्पटुता, आज्ञा-पालन, धैर्य आदि अनेक गुण अनुकरणीय हैं। स्व० रामविलास कुशाग्रबुद्धि, अत्यन्त-शिष्ट और मिलनसार था। बी० ए० परीक्षोत्तीर्ण होते हुए तथा एम० ए० और एल्एल्० बी० का अभ्यास करते रहने पर भी उसमें मत्सरता का नामोनिशान भी नहीं था। वह कभी अपने अभिप्रायको सर्वोत्तम बतानेका दावा न करता। फिर भी उसके मित्र व साथी उसीकी रायको पसन्द करते। अतुल धनराशिका स्वामी होने पर भी वह अपने आपको एक साधारण पुरुष मानता था। और सर्वसाधारण के कष्टोंको प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता था।

पूर्ण यौवन प्राप्त होनेपर भी वह विवेकी और मधुर-भाषी था। उच्छृखल पाश्चात्य शिक्षण प्राप्त कर लेनेपर भी माता-पिता, ज्येष्ठ भ्राता और गुरु जनोंका वह अद्भुत भक्त था। वह कुरीतियोंका विरोधी और सुधारोंका पक्षपाती था। इस कूटनीतिके युगमें वह अपने कर्तव्यपथ और नीतिपथपर आरूढ़ था। उसके सौजन्य, उसकी नम्रता और मित्रताकी कोई सीमा न थी। **उसका प्रत्येक मित्र यही मानता था कि विलासका सर्वश्रेष्ठ मित्र मैं ही हूँ।** संक्षेपमें यह कहना पर्याप्त होगा कि प्रायः सभी श्रेष्ठ गुण उसमें निवास करते थे। जब-जब प्रसङ्ग आता, तब-तब इन पंक्तियोंका लेखक, धनिक-पुत्रोंके सामने, अनुकरण करनेके लिए, रामविलासका आदर्श-जीवन रक्खा करता था।

इन पंक्तियोंके लेखकका सेठ आनन्दीलालजी पोद्दारसे, स्वर्गीय रामविलास के जन्मके आसपास ही परिचय हुआ था। उन दिनों स्थानीय मारवाड़ी विद्यालय और मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हो चुकी थी। मारवाड़ी समाजके उत्थान की बातोंमें उक्त समाजके युवक अग्रसर हो रहे थे। उसी सिलसिलेमें बात-चीत होनेपर सेठ साहबने जाति-उन्नतिके लिए एक विद्यार्थीगृह स्थापित करने की अपनी इच्छा प्रगट की। लेखक का ध्यान जन्म-स्थान राजस्थानकी ओर लगा हुआ था। एतदर्थ मारवाड़ी शिक्षा परिषद,

प्रस्तावना

बम्बई)
ता० २०-१२-३८)

—पं० माधवप्रसाद शर्मा,
एम० ए०, एल् एल० बी०, सोलिसिटर

ता० ६ जुलाई १९३६ का दिन दुःखद घटना के लिये चिरकाल तक याद रहेगा। बम्बई मे अकस्मात् (Accident) से दिन प्रतिदिन अनेक दुर्घटनाएँ होती रहती है एव हॉर्नबी–बेलार्ड नामक समुद्र–तट के राजमार्ग पर भी अनेक दुर्घटनाएँ हो चुकी है; तथापि ता० ६ जुलाई को उस रास्ते पर मोटर–अकस्मात् (Accident) से जो दुर्घटना हुई—उसको हम कदापि भूल नहीं सकते। उस अकस्मात् को सुन कर बम्बई भर मे सनसनी फैल गई थी। सर्वत्र हाहाकार मच गया। इस दुर्घटना से समस्त जनता को इस तरह आघात पहुँचने के दो कारण है—एक तो यह कि स्वर्गीय बाबू रामविलास पोदार एव सेठ आनन्दीलालजी पोदार के कुटुम्बने अपनी परोपकारवृत्ति के कारण असीम लोकप्रियता प्राप्त करली है, और दूसरा यह, कि स्वर्गीय रामविलास को अकस्मात् होने का निमित्त कारण कोई प्रमोद या विनोद का प्रसङ्ग न था, पर कर्तव्य-पालन था।

इसके साथ-साथ जब हम इस बातका विचार करते है कि कुछ ही समय पहले स्वर्गीय रामविलास का विवाह हुआ था और उसकी पत्नी अपनी सास की बीमारी पर कुछ ही समय पहले ससुरालमे रहने के लिए आई थी, और यह कि सब घरवालो का ध्यान श्रीमती सेठानीजी की अन्तिम इच्छाओं की पूर्ति मे तथा दानपुण्य करनेमे लगा हुआ था और उनकी घडी–पल वाली अवस्था हो रही थी, उस समय यह वज्रपात हुआ—तो हमारे दुःखका पारावार नहीं रहता।

संसारमे आशासे सुख और निराशासे दुःख होता है। जहाँ आशा की प्रबलता होती है–वहाँ निराशा से अत्यधिक दुःखका होना भी स्वाभाविक है। स्व० रामविलास के उज्ज्वल भविष्य पर उसके माता–पिता, भाई–बान्धव, इष्ट-मित्र तथा देशवासियोंने बडे-बडे मनोरथ के पुल बाँधे थे। सेठ आनन्दीलालजी ससारकी समस्त प्रवृत्तियोंको अपने समर्थ पुत्रोंके कन्धो पर छोड कर अपना शेष जीवन भगवद्भजन मे, किसी पवित्र स्थानपर व्यतीत करने का

७ जुलाई का दिन था। सुबह का स्कूल होने के कारण लगभग ७ बजे मै स्कूल की ओर जा रहा था। शहर के बाहर निकलते ही एक सहकारी अध्यापक मिले, जो अत्यन्त उदास और गम्भीर मुद्रासे उसी ओर बढ रहे थे। मुझे देखते ही बोले, 'आपने भी सुना?' मैंने उत्सुकता से पूछा, 'क्या?'—'कुँवर रामविलासजीका मोटर एक्सिडेन्ट से स्वर्गवास होगया।' मैंने कहा 'क्या कहते हो? तुम्हारे सुनने मे गलती होगई है। सेठानीजीके विषयमे कुछ कहो, तो विश्वास भी हो सकता है। ऐसी बात मुँहसे नहीं निकालनी चाहिये।' बेचारे सकपका गये। बोले, 'चलिये, स्कूल चले, वहीं मालूम हो जायगा।' स्कूल आये तो जो कुछ सुना—सुनकर ..

'रह गया मै तो कलेजा थाम कर।'

गत दो तीन वर्षोंमे मुझे सेठ साहब आनन्दीलालजी तथा उनके चारों पुत्रों मे से कुँ० रामविलासजी के अतिरिक्त सभी के सम्पर्क मे आने का अवसर मिल चुका था, और बड़े से लेकर छोटे तक सब के मुँहसे एक यही बात सुनी जाती थी कि विलासजी स्वभाव मे, व्यवहार मे तथा गुणो मे सर्व श्रेष्ठ है। बड़ाई सुन-सुन कर विलासजी जैसे सुशिक्षित, विद्वान् तथा गुणी युवक से मिलने की इच्छा बलवती हो उठती, पर भाग्य मे तो भौतिक मिलन न बदा था। आत्मिक सम्बन्धने, जो इस माध्यम द्वारा उनके और मेरे बीच मे स्थापित हुआ है, इस अभाव की वेदना को और भी तीव्र कर दिया है।

की प्रस्तावना लिखने का भी कष्ट किया है, बहुत अधिक सहायता मिली है, इसके लिये मे उनका अनुगृहीत हूँ।

बिलासजी के मित्रो मे श्री हीरालालजी दवे तथा श्री राधाकृष्णजी सराफने भी उनके जीवन-सम्बन्धी कितनी ही घटनाएँ बताकर मुझे सहायता दी है। श्री रामप्रसादजी बक्शी, श्री मदनलालजी सेखसरिया श्री राघवेन्द्ररावजी, श्री मुरलीधरजी शर्मा, श्री कुबेरसिंहजी नवलखा तथा श्री पन्नालालजी शर्मा ने भी प्रूफ-संशोधनादि के कार्य मे बड़ी तत्परता दिखाने की कृपा की है। डॉक्टर पी० आचार्यजी तथा श्री टीकमचन्द्र जैनीजी ने भी डिज़ाइन्स बनाकर मेरी सहायता की है। अतः उक्त सब सज्जन अनेक धन्यवाद के पात्र है।

मै बिलासजी के गुरुजनो, अध्यापको, सहपाठियो, मित्रो तथा प्रेमियो का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होने मेरी प्रार्थना पर ध्यान देकर बिलासजी के संस्मरण तथा उनके विषय मे कवितादि भेजने की कृपा की है। उनकी सहायता के बिना यह पुस्तक इस रूप मे प्रकाशित नहीं हो सकती थी।

पोदार-परिवार की परोपकार-वृत्तियो का चित्रण तथा बिलासजी की बहुमुखी प्रतिभा और सेवा के प्रति यह प्रेमाञ्जलि यदि पाठको के हृदय मे अनुकरणीय आदर्श उपस्थित कर उन्हे जन-सेवा की ओर प्रवृत्त करेगी तो मै अपना प्रयत्न सफल समझूँगा वर्ना---

लाई हयात आए, ले चली कज़ा चले।
अपनी खुशी न आए, न अपनी खुशी चले।—

—वाली बेबसी के अतिरिक्त मनुष्य के लिए और कुछ न बचेगा।

स्व० रामविलास की जीवन-रेखा प्रकाशित करनेका प्रधान हेतु यह है कि वह आज-कलके सुशिक्षित युवकों के लिए और विशेषकर मारवाड़ी समाजके युवकों के लिये अनुकरण करने योग्य है। स्वर्गीय रामविलास एक आदर्श युवक था। उसका जीवन, आदर्श जीवन था। उसके अत्यल्प जीवनकालमें भी चरित्र-बलके इतने उदाहरण उपलब्ध होते हैं कि जिनसे क्या छोटे, क्या बड़े, सभी कुछ न कुछ सार ग्रहण कर सकते हैं। उसका मधुर भाषण, जन-सेवा-कार्य, मातृ-पितृ-भक्ति, भ्रातृ-प्रेम, कर्तव्य-पालन, सदाचार, उन्नत-विचार, बालमित्रादि का मनोरञ्जन, अजात-शत्रुता, वाक्पटुता, आज्ञा-पालन, धैर्य आदि अनेक गुण अनुकरणीय हैं। स्व० रामविलास कुशाग्रबुद्धि, अत्यन्त-शिष्ट और मिलनसार था। बी० ए० परीक्षोत्तीर्ण होते हुए तथा एम० ए० और एल्‌एल्० बी० का अभ्यास करते रहने पर भी उसमें मत्सरता का नामोनिशान भी नहीं था। वह कभी अपने अभिप्रायको सर्वोत्तम बतानेका दावा न करता। फिर भी उसके मित्र व साथी उसीकी रायको पसन्द करते। अतुल धनराशिका स्वामी होने पर भी वह अपने आपको एक साधारण पुरुष मानता था। और सर्वसाधारण के कष्टोंको प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता था।

पूर्ण यौवन प्राप्त होनेपर भी वह विवेकी और मधुर-भाषी था। उच्छृंखल पाश्चात्य शिक्षण प्राप्त कर लेनेपर भी माता-पिता, ज्येष्ठ भ्राता और गुरु जनोंका वह अद्भुत भक्त था। वह कुरीतियोंका विरोधी और सुधारोंका पक्षपाती था। इस कूटनीतिके युगमें वह अपने कर्तव्यपथ और नीतिपथपर आरूढ़ था। उसके सौजन्य, उसकी नम्रता और मित्रताकी कोई सीमा न थी। **उसका प्रत्येक मित्र यही मानता था कि विलासका सर्वश्रेष्ठ मित्र मैं ही हूँ।** संक्षेपमें यह कहना पर्याप्त होगा कि प्रायः सभी श्रेष्ठ गुण उसमें निवास करते थे। जब-जब प्रसङ्ग आता, तब-तब इन पंक्तियोंका लेखक, धनिक-पुत्रोंके सामने, अनुकरण करनेके लिए, रामविलासका आदर्श-जीवन रक्खा करता था।

इन पंक्तियोंके लेखकका सेठ आनन्दीलालजी पोद्दारसे, स्वर्गीय राम-विलास के जन्मके आसपास ही परिचय हुआ था। उन दिनों स्थानीय मार-वाड़ी विद्यालय और मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हो चुकी थी। मार-वाड़ी समाजके उत्थान की बातोंमें उक्त समाजके युवक अग्रसर हो रहे थे। उसी सिलसिलेमें बात-चीत होनेपर सेठ साहबने जाति-उन्नतिके लिए एक विद्यार्थीगृह स्थापित करने की अपनी इच्छा प्रगट की। लेखक का ध्यान जन्म-स्थान राजस्थानकी ओर लगा हुआ था। एतदर्थ मारवाड़ी शिक्षा परिषद,

तभीसे—

विलासके गीत गाये जाते है । विलासकी वाणी कूक उठती है। उसका यशस्सौरभ महक उठता है। और फिर वह वहाँ होता है; जहाँ—हम होते हैं। हम वहाँ होते है, जहाँ—सब होते हैं। सब वहॉ होते हैं; जहाँ—राम होते है। राम वहीं होते है; जहाँ—विलास होता है। विलासका विलास होता है। फिर दोनो मिलते है। राम और विलास। राम और विलास मिलकर '**रामविलास**' होता है; लेकिन हम तो '**विलास**' ही कहते है और विलासकी ही सर्वत्र गूँज होती है।

एक दिन—

विलास प्रगतिके पथपर आरूढ हो हमारे जीवन-क्रममे आनन्द और उपभोग बन जाता है।

और हम देखते है—

जब वह जीवन हिलोरे लेता है—हमारे और उसके सावन-सलूने एक हो जाते हैं।

इस प्रकार—

हम और वह—सुख-सौभाग्य, विलास—वैभव आदि मे परिगमन करते है। पर एक रोज अपने लीलामय रामने न जाने क्यो अपने फले-फूले—विकसे विलास को अचानक समेट लिया।

हाँ, कुछ—क्षण पहले—

हम सुन पाते हैं—उसके अन्तिम दर्शन होते हैं। वह सुन पाता है—उसकी माँ के अन्तिम दर्शन होने वाले हैं। माँ सुन पाती है—'मेरे लालके अन्तिम दर्शन हो चुके है'। और सचमुच ही उसके अन्तिम दर्शन हो चुकते है; और फिर—उसकी माँके भी अन्तिम दर्शन हो जाते हैं।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥

अवस्था बहुत थोड़ी थी, तथा स्वास्थ्य बराबर ख़राब रहता था, इसलिये वे कारोबार को नहीं सम्हाल सके। फल यह हुआ कि कलकत्ता, मिरजापुर और दिल्ली तीनों ही स्थानों मे उनका कारोबार बद होगया। इस प्रकार थोडी ही उम्र मे विपत्तिया अधिक आने से तथा मानसिक चिंताओ के कारण वे नवलगढ मे आकर बीमार होगये और १० वर्ष रुग्ण रहकर चौंतीस वर्ष की युवावस्था मे ही स्वर्गगामी होगये।

सेठ बंशीधरजी के दो पुत्र थे: १. आनंदीलालजी २. जयदेवजी। आनदीलालजी की अवस्था उस समय केवल १७ वर्ष की थी। बड़े होने के कारण सारे परिवारके भरण-पोपण का भार उनके कधों पर आ पड़ा। विपत्ति के बादल सिर पर मडरा रहे थे। कोई हाथ पकड़ने वाला न था। कारोबार बंद हो जाने तथा पिताजीके १० वर्ष-तक बीमार रहने के कारण घर की आर्थिक अवस्था ठीक नहीं थी। वे पुरानी दूकानो की बड़ी उगाही वसूल करने के लिये चितौड़ तथा किसनगढ गये, पर १७ वर्ष के बालक की कौन सुनता था ? अतः उन्होंने बाहर जाकर कुछ रोजगार करने का निश्चय कर लिया।

विपत्ति के थपेड़ो से पीडित युवक आनदीलालजी कलकत्ते गये, पर वहाँ भी कुछ ढग न जमा। आखिर कलकत्ता महानगरी से भी निराश होकर वे आसाम की ओर बढे। वे चक्कर खाते हुए डिब्रूगढ पहुँचे, और एक व्यापारी के यहाँ नौकर हुए। काम क्या था ? सुई से लेकर सोना-चादी तक सर्व-साधारण के काम की सारी चीजे बाहर से मगवा कर बेचना। दूकान का सारा काम-काज उन्हीं को करना पड़ता था। अत्यधिक शारीरिक परिश्रम करने से उन्हे हृद्-रोग होगया जो कि ४० वर्ष के निरंतर इलाज से भी, अब तक ठीक नहीं होसका है।

लगभग १। वर्ष वहाँ रहने के बाद उन पर ज्वर का भयंकर आक्रमण हुआ। आसाम की नर्म आबोहवा मे स्वास्थ्य ठीक होना असंभव था, अतः वे नौकरी छोड़कर नवलगढ आगये। ज्योही उनका स्वास्थ्य ठीक हुआ

पोदार परिवार का संक्षिप्त परिचय

बम्बई के प्रसिद्ध व्यापारी तथा वयोवृद्ध सेठ आनदीलालजी पोदार को कौन नहीं जानता ? उन्होने अपने आकर्षक व्यक्तित्व, सीधे तथा सच्चे व्यवहार, दानशीलता और परदु:ख-कातरता से असाधारण लोक-प्रियता प्राप्त कर ली है और वे बम्बई के बहुत चुने हुए व्यक्ति गिने जाते है।

इतना वैभव तथा प्रसिद्धि सेठ साहब ने स्वय अपने बाहुबल तथा प्रतिभा से प्राप्त की है। उनकी किशोर तथा युवावस्था सुख और ऐश्वर्य की गोद मे नहीं बीती थी, अपितु विपत्ति के झोंको मे झुलसते हुए उन्होने वह जीवन बिताया था।

सेठ साहब का आदिम निवास-स्थान जयपुर राज्यान्तर्गत शेखावाटी प्रान्तका नवलगढ नगर है। उनके पितामह सेठ ज्ञानीरामजी पोदार उक्त नगर के सम्माननीय सेठो मे गिने जाते थे। उनकी दूकाने कलकत्ता, मिरजापुर तथा दिल्ली मे चलतीं थीं। सेठ ज्ञानीरामजी के स्वर्गवास के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र बशीधरजी पर सारा कार्यभार आ पडा। उनकी

और दूरदर्शिता का ऐसा सिक्का जमा और भाग्य ने उनका कुछ ऐसा साथ दिया कि जिस काम मे उन्होने हाथ डाला, उसीमे उन्हे पूरी सफलता मिली। सेठ 'कीलाचंद देवचंद' के अतिरिक्त वे मेसर्स 'ई० डी० सासून' नामक देशविख्यात फर्म के भी दलाल हो गये और वहाँ भी सच्चे व्यवहार तथा साख के कारण इनकी वडी प्रतिष्ठा हुई। धीरे धीरे दलाली के साथ साथ वे स्वय भी व्यापार करने लगे और वम्वई के प्रमुख रुई एवम् गल्ले के व्यापारियो मे गिने जाने लगे।

व्यापार-जगत मे उनका जीवन विशेष उल्लेखनीय रहा है। वे व्यापार मे वड़े साहसी रहे है। नैतिकता के लिये आप वहुत विचार रखते रहे हैं, जो कि व्यापार मे एक श्रेष्ठ गुण माना जाता है। वे हमेशा बाजार के व्यापारियो का, खास कर दलालों के हितका वहुत ध्यान रखते रहे है, तथा जव जव रुई और गल्लेके व्यापार मे अनिश्चित तथा डाँवाडोल परिस्थितियाँ उपस्थित हुई है, तव तव उन्हे सुलझाने मे उन्होंने प्रमुख भाग लिया है और अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व का परिचय दिया है।

जैसा हम ऊपर कह आए है सेठ साहव को हृद्-रोग की शिकायत वरावर चल ही रही थी। अतः जव सन् १९१९ में उनकी तवियत ज्यादा खराव होगई, तो उन्होने व्यापारिक-जीवन से अवकाश लेने का इरादा किया और इसीलिए अपने साझीदारो से अलग होकर अपना कारोवार मेसर्स 'आनदीलाल पोद्दार एण्ड कंपनी' के नाम से अलग कर लिया। परन्तु परमात्मा को यह मजूर न था। अभी उन्नतिकी वहुत सीढियों पर उन्हे चढना था। फलतः उन्हीं दिनो मेसर्स 'टोयो मेनका कैशा' नामी प्रसिद्ध जापानी फर्म के कार्यकर्ताओ ने उन्हे अपने फर्मकी दलाली का काम सौंपा। इच्छा न रहते हुए भी, आखिर दवाव अधिक पडने पर उन्होने इसे कुछ समय के लिये स्वीकार कर लिया, पर फिर इन्हे कौन छोड़नेवाला था? धीरे धीरे सम्वन्ध दृढ होता गया और इसे

अवस्था बहुत थोड़ी थी, तथा स्वास्थ्य बराबर ख़राब रहता था, इसलिये वे कारोबार को नहीं सम्हाल सके। फल यह हुआ कि कलकत्ता, मिरजापुर और दिल्ली तीनों ही स्थानों मे उनका कारोबार बद होगया। इस प्रकार थोडी ही उम्र मे विपत्तिया अधिक आने से तथा मानसिक चिंताओ के कारण वे नवलगढ मे आकर वीमार होगये और १० वर्ष रुग्ण रहकर चौंतीस वर्ष की युवावस्था मे ही स्वर्गगामी होगये।

सेठ वंशीधरजी के दो पुत्र थे: १. आनंदीलालजी २. जयदेवजी। आनदीलालजी की अवस्था उस समय केवल १७ वर्ष की थी। बड़े होने के कारण सारे परिवारके भरण-पोषण का भार उनके कधों पर आ पड़ा। विपत्ति के वादल सिर पर मडरा रहे थे। कोई हाथ पकड़ने वाला न था। कारोवार वंद हो जाने तथा पिताजीके १० वर्ष-तक वीमार रहने के कारण घर की आर्थिक अवस्था ठीक नहीं थी। वे पुरानी दूकानो की बड़ी उगाही वसूल करने के लिये चितौड़ तथा किसनगढ गये, पर १७ वर्ष के वालक की कौन सुनता था? अतः उन्होंने वाहर जाकर कुछ रोजगार करने का निश्चय कर लिया।

विपत्ति के थपेड़ो से पीडित युवक आनदीलालजी कलकत्ते गये, पर वहाँ भी कुछ ढग न जमा। आखिर कलकत्ता महानगरी से भी निराश होकर वे आसाम की ओर वढे। वे चक्कर खाते हुए डिब्रूगढ पहुँचे, और एक व्यापारी के यहाँ नौकर हुए। काम क्या था? सुई से लेकर सोना-चादी तक सर्व-साधारण के काम की सारी चीजे वाहर से मगवा कर वेचना। दूकान का सारा काम-काज उन्हीं को करना पड़ता था। अत्यधिक शारीरिक परिश्रम करने से उन्हे हृद्-रोग होगया जो कि ४० वर्ष के निरंतर इलाज से भी, अव तक ठीक नहीं होसका है।

लगभग १। वर्ष वहाँ रहने के वाद उन पर ज्वर का भयंकर आक्रमण हुआ। आसाम की नर्म आवोहवा मे स्वास्थ्य ठीक होना असंभव था, अतः वे नौकरी छोड़कर नवलगढ आगये। ज्योही उनका स्वास्थ्य ठीक हुआ

वे फिर नवलगढ से रवाना होगये, पर अबकी बार कलकत्ता न जाकर बम्बई गये।

बम्बई मे वे पहले पहल एक व्यापारी के यहाँ २५) प्रति मास पर नौकर हुए। सवा वर्ष तक उन्होने अपना कार्य बड़ी ईमानदारी और मेहनत से किया। सन् १८९६ मे बम्बई मे प्लेग का भयकर आक्रमण होने पर वे अपने देश चले गये।

वहाँ वे बड़ी कठिन समस्या मे पड़ गये। उनके सामने जयदेवजी के विवाह का प्रश्न था, पर तत्कालीन आर्थिक परिस्थिति मे कुलोचित मर्यादा के अनुसार विवाह करना असंभव था। अतः उन्होने यह तय किया कि अब बम्बई जाकर मै नौकरी नहीं करूगा, किन्तु कोई स्वतत्र व्यवसाय आरंभ करूगा और भाई के विवाह योग्य धन एकत्रित करके ही नवलगढ आऊगा।

सेठ साहब ने बम्बई मे आकर रुई की दलाली शुरू की। उनकी ईमानदारी और सच्चे व्यवहार की प्रशसा सुन कर सेठ 'कीलाचद देवचद' नामी रुई की प्रसिद्ध फर्म के मालिक सेठ कीलाचदजी ने उन्हे अपनी फर्म की रुई और गल्ले की दलाली सौपी। उनकी मेहनत और बुद्धिमानी फल लाई। दूसरे ही वर्ष उन्होने नवलगढ़ जाकर अनुज का विवाह समारोह के साथ सानन्द सम्पन्न किया। उन्होने अपनी दलाली की फर्म का नाम 'आनदीलाल ईश्वरदास' रक्खा। इस फर्म के अन्य साझीदार सेठ आनदी-लालजी कूलवाल, सेठ दुर्गादत्तजी जालान तथा सेठ ईश्वरदासजी पोदार थे। इसी नाम से वर्षों तक कामकाज होता रहा। सेठ साहब की बराबर उन्नति होती गई और साख बढती गई। बीस वर्ष तक उन्होने सेठ कीलाचंद देवचद की दलाली की। करोडो का लाभ उक्त फर्म को हुआ और लाखों रुपये इन्होने कमाए। सेठ कीलाचन्दजी और इनमे बड़ा स्नेह रहा। सेठ कीलाचन्दजी इनकी सलाह पर बहुत निर्भर रहते थे, और आप भी उनको पितातुल्य मानते थे। धीरे धीरे सेठसाहब की सज्जनता

और दूरदर्शिता का ऐसा सिक्का जमा और भाग्य ने उनका कुछ ऐसा साथ दिया कि जिस काम मे उन्होने हाथ डाला, उसीमे उन्हे पूरी सफलता मिली। सेठ 'कीलाचंद देवचंद' के अतिरिक्त वे मेसर्स 'ई० डी० सासून' नामक देशविख्यात फर्म के भी दलाल हो गये और वहाँ भी सच्चे व्यवहार तथा साख के कारण इनकी बडी प्रतिष्ठा हुई। धीरे धीरे दलाली के साथ साथ वे स्वय भी व्यापार करने लगे और बम्बई के प्रमुख रुई एवम् गल्ले के व्यापारियो मे गिने जाने लगे।

व्यापार-जगत मे उनका जीवन विशेष उल्लेखनीय रहा है। वे व्यापार मे बड़े साहसी रहे है। नैतिकता के लिये आप बहुत विचार रखने रहे हैं, जो कि व्यापार मे एक श्रेष्ठ गुण माना जाता है। वे हमेशा बाजार के व्यापारियो का, खास कर दलालों के हितका बहुत ध्यान रखते रहे है, तथा जब जब रुई और गल्लेके व्यापार मे अनिश्चित तथा डाँवाडोल परिस्थितियाँ उपस्थित हुई है, तब तब उन्हे सुलझाने मे उन्होंने प्रमुख भाग लिया है और अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व का परिचय दिया है।

जैसा हम ऊपर कह आए है सेठ साहब को हृद्र-रोग की शिकायत बराबर चल ही रही थी। अतः जब सन् १९१९ में उनकी तबियत ज्यादा खराब होगई, तो उन्होने व्यापारिक-जीवन से अवकाश लेने का इरादा किया और इसीलिए अपने साझीदारो से अलग होकर अपना कारोबार मेसर्स 'आनदीलाल पोदार एण्ड कंपनी' के नाम से अलग कर लिया। परन्तु परमात्मा को यह मजूर न था। अभी उन्नतिकी बहुत सीढियों पर उन्हे चढना था। फलतः उन्हीं दिनो मेसर्स 'टोयो मेनका कैशा' नामी प्रसिद्ध जापानी फर्म के कार्यकर्ताओ ने उन्हे अपने फर्मकी दलाली का काम सौंपा। इच्छा न रहते हुए भी, आखिर दबाव अधिक पडने पर उन्होने इसे कुछ समय के लिये स्वीकार कर लिया, पर फिर इन्हे कौन छोड़नेवाला था? धीरे धीरे सम्बन्ध दृढ होता गया और इसे

change) तथा 'कॉटन कॉन्ट्रेक्टस् बोर्ड' (Cotton Contracts Board) इत्यादि इत्यादि संस्थाओ की स्थापना में उनका प्रमुख भाग रहा है और वे उक्त संस्थाओ के चेयरमैन, वाइस-चेयरमैन अथवा डाइरेक्टर रहे है।

सेठ साहब के सामाजिक विचार बड़े उदार हैं। वे 'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा' के कानपुर—अधिवेशन के सभापति थे। इसके अतिरिक्त वे 'मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष' तथा 'मारवाडी अग्रवाल हितकारिणी सभा' के सभापति भी रह चुके हैं।

शिक्षा के प्रचार मे तो उनको बहुत ही रुचि है। इसमे उन्होंने लाखो रुपयो का दान किया है। सन् १९२१ में सेठ साहब ने शेखावाटी मे शिक्षा-प्रचार के लिये २०१०००) रुपयो की रकम 'तिलक स्वराज्य फड' मे कांग्रेस को दान दी थी, जिससे महात्मा गांधीजी, पं० मदनमोहनजी मालवीय, सेठ जमनालालजी बजाज तथा सेठ साहब के ट्रस्टीशिप मे 'श्री आनदीलाल विद्या-प्रचार संस्था' बनी। सन् १९२४ मे उक्त संस्था को सेठ साहबने १ लाख का दान और दिया। इस संस्थाद्वारा नवलगढ मे 'शेखावाटी ब्रह्मचर्याश्रम' की स्थापना की गयी तथा गाँवो मे स्कूल खोले गये। सन् १९३० मे उक्त ब्रह्मचर्याश्रम मे यथोचित परिवर्तन कर हाईस्कूल की स्थापना कर दी गई। अब वह 'सेठ ज्ञानीराम बशीधर पोदार हाईस्कूल' के नाम से सुचारु रूपसे चल रही है। सन् १९३२ मे सेठ साहब ने स्कूल को एक भव्य भवन नगरके बाहर उत्तम स्थानपर बनवा दिया है, जिसकी लागत करीब ८० हजार होती है। सांताक्रुज मे भी 'सेठ आनदीलाल पोदार हाईस्कूल' के नाम से एक प्रगतिशील संस्था उनकी ओर से स्थापित है। इसका संचालन 'साताक्रुज एज्युकेशन सोसाइटी' करती है; जिसके सभापति सेठ साहब हैं। इस संस्था मे हिन्दी, गुजराती तथा मराठी तीनो भाषाओ मे बालक और बालिकाओं के लिए मैट्रिक तक की शिक्षा का प्रबन्ध है। इस स्कूल मे इस समय करीब १८०० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे है। इनके अतिरिक्त
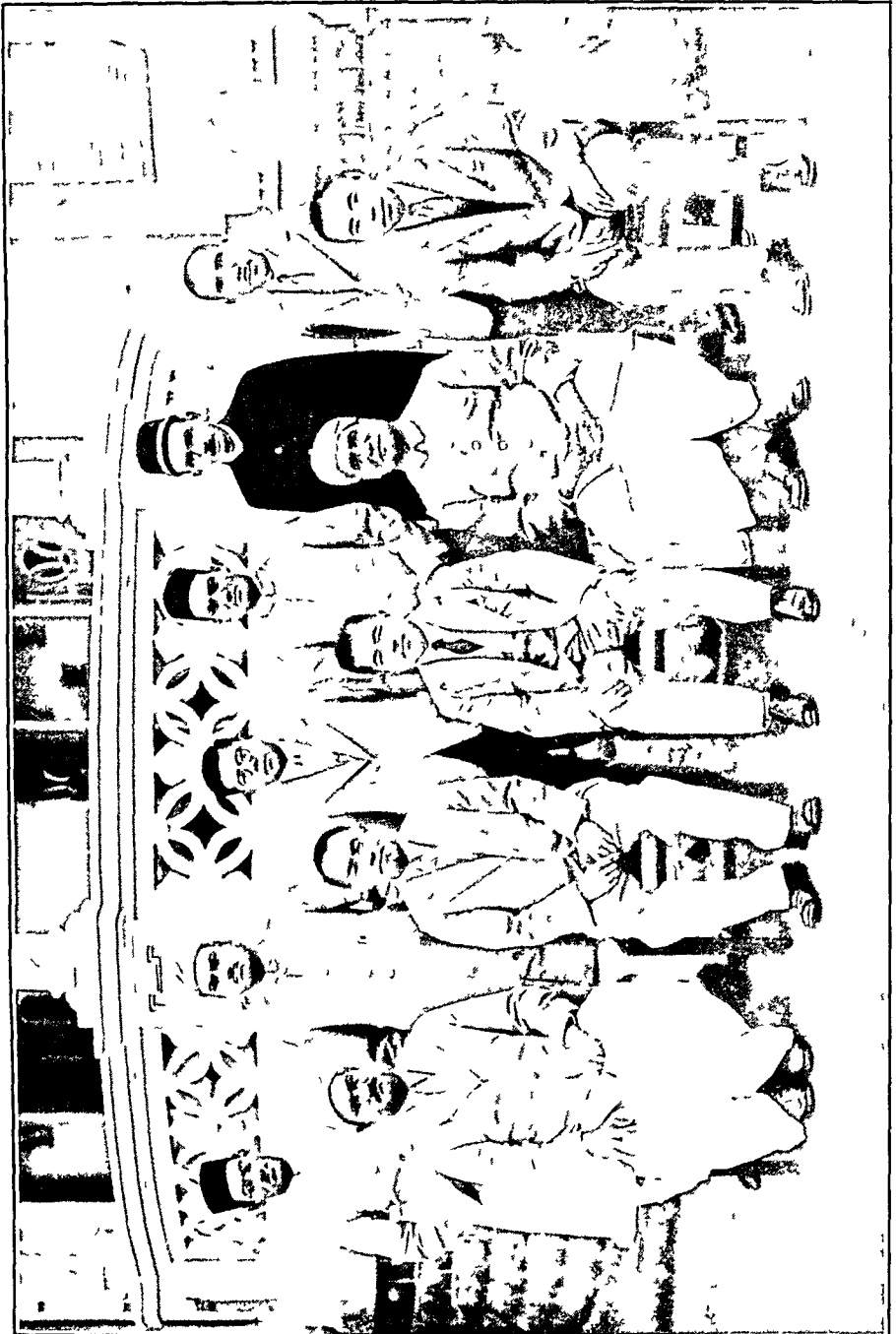
भगवान दिखाई नहीं देते थे, तबभी वे विना अन्नजल ग्रहण किये ही अपना दैनिक कार्यक्रम सदा की भाँति निभाती रहती थीं। धार्मिक ग्रंथ, जैसे कि १८ पुराण, रामायण, भागवत आदि के पाठ उन्होने स्वयं किये तथा सुने थे। तुलसीकृत रामायण पर तो उन्हे वडी ही आस्था थी। ५० वर्ष की अवस्थामे अक्षर-ज्ञानसे प्रारम्भ कर, इन ग्रन्थों का पाठ कर सकना उनकी शुद्ध आत्मा तथा लगन का उत्तम उदाहरण है। नवीन सभ्यता और नवीन रंगढग से उन्हे इतनी घृणा थी कि अग्रेजी दवा लेना तो दूर, डाक्टरसे निदान कराना भी उन्हे नापसंद था। वे वडी दानशीला तथा धर्मात्मा थीं। निर्धन ब्राह्मणोकी लडकियो के विवाह करानेमे वे सदा उद्योगशील रहती थीं। व्रत-उपवास आदि वे वहुत अधिक मात्रा में करती थीं। प्रत्येक सोमवती अमावस्याको एक ही धातुकी अथवा एक ही प्रकार की १०८ वस्तुओं का दान करती थीं। इसी प्रकार के अनेक दान-पुण्य वे करती ही रहती थीं। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता होगा कि जब वे किसी न किसी प्रकार का दान-पुण्य न करती हों।

सेठानीजी मे विशेषता यह थी कि वे अपने कुटुम्ब परिवार के सभी स्त्रीपुरुषो को सुखी और सम्पन्न देखना चाहती थीं। वे सदैव यही इच्छा करती रहती थीं कि उनके कुटुम्ब परिवार के सभी मनुष्य सुखसमृद्धियुक्त रहे और वे उनको सुखी तथा सम्पन्न रखने मे सहायक हों।

सेठ साहव के सवसे वड़े पुत्र, कुँवर रामदेवजी है; जो फर्म के सारे काम-काज की देख भाल करते हैं। कुँवर रामदेवजी सेठ साहव के कारोबार मे गत २५ वर्ष से सहायता कर रहे हैं तथा सेठ साहव की परोपकार वृत्ति तथा सार्वजनिक सेवा-भाव ने इनके हृदय मे भी पूर्ण रूपसे स्थान कर लिया है। आपका भी अनेक सार्वजनिक एव व्यापारिक संस्थाओ से घनिष्ट सम्बन्ध है। 'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल-जातीय कोष'

इन दोनो को इनके मित्र भाई भाई न समझ कर घनिष्ठ मित्र समझते थे। कुँ० रामनाथजी भी सार्वजनिक कार्यों मे भाग लेते थे पर अपने कनिष्ठ भ्राता के स्वर्गवास ने आपके जीवन को बिलकुल नीरससा बना दिया है।

सेठ साहब के एक पुत्री श्रीमती भगवानीबाई है। जिनका विवाह नवलगढ के सेठ गौरीशंकरजी सेखसरिया से हुआ है। कुँ० रामदेवजी के तीन पुत्रियाँ हैं। बड़ी पुत्री श्रीमती भगवतीदेवी का विवाह सेठ रामबिलासजी खेतान झुंझनूवालों के पौत्र कुँ० भगवतीप्रसादजी खेतान के साथ हुआ है। मँझली पुत्री श्रीमती सावित्रीदेवी का विवाह कलकत्ते के रायबहादुर सेठ रामेश्वरदासजी नाथानी के पुत्र कुँ० महावीर-प्रसादजी नाथानी के साथ हुआ है और छोटी पुत्री चि० पद्माकुमारी की अवस्था अभी ४ वर्ष की है। कुँ० रामनिरंजनजी के एक पुत्र तथा दो पुत्रियाँ है जिनके नाम क्रमशः चि० गणेशकुमार, चि० पुष्पाकुमारी तथा चि० चन्द्रकला हैं। कुँ० रामनाथजी की संतति क्रमशः चि० सुशीला-कुमारी, चि० शांतिकुमारी, तथा चि० कांतिकुमार हैं।

सेठ साहब जैसे दानी, सत्यनिष्ठ, सरल-हृदय तथा निरभिमान व्यक्ति पर ऐसा वज्रपात हुआ, और वह भी ऐसे अवसरपर जब धर्म-प्राण सेठानी साहिबा संसार-यात्रा समाप्त कर स्वर्गलोक की ओर अग्रसर हो रही थीं, और सब प्रकार से दान-पुण्य करने मे इस परिवार के लोग संलग्न थे, इसे परमात्मा की रहस्यमय लीला के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? यह तो जगदीश्वर ही जाने कि यह किसी पूर्वजन्म के अशुभ-कर्म का फल है, या विपत्तियो द्वारा भक्त की सत्यनिष्ठा, धैर्य और श्रद्धा की कठोर परीक्षा है, पर अत मे यही कहकर सब कुछ परमात्मा की इच्छा पर छोड़ना पड़ता है:—"राजी हैं हम उसीमे, जिसमे तेरी रजा है।"

———

Such Was Thou RamBilas!

(*By*—RAMPRASAD BAKSHI, B A)

But once in one long generation's span
There comes a perfect heart whose rich life-blood
Goes surging through the veins and arteries
Of institutions, scattered far and near,
Inspiring with purpose and with life
What erstwhile but pursued a routine dead and cold

But once into this world from Flame Divine
Descends a spark that illumines apace
This gloomy vale of life, and at one touch,
At one electric touch, rejuvenates
The weak and worn to youthful enterprize,
And lends an urgent pace to lean bedraggling legs

Such was Thou RamBilas, when Thou didst live,
We lived, and institutions lived, a life
Of soulful substance and of graceful glee,
Our Ram and our Bilas were one in Thee.
Gone is that Ram and gone is that Bilas
And now we drag on heavily a phantom of a life

And yet what's our loss, Oh RamBilas!
To hers you've left to live a widow's life,
A widow's life—a life of poignant grief—
A life consigned to everlasting gloom
That lets not but one single ray of light
Reach the tender heart-bud that withers ere its bloom?

We know we must not weep, we must not mourn
This loss however great, though like a thorn
It pricks the heart at every single beat,
And every heart-beat is a pang of grief,
We must not weep, we must meekly resign
To the Almighty's will with faith in His design

We may not let soft emotion dethrone
Stern reason, yet reason itself anon
Uprises in disconsolate revolt
When Nature turning mercilessly cold
Defeats her own true purpose in a trice,
And dooms to sudden end its noblest edifice.

In Thee, dear RamBilas! the World witnessed
Its rarest gifts in one existence pressed,
An inborn skill by scholarship enhanced,
Sound sportsmanship with seriousness balanced,
Discretion ripe combined with youthful zest,
Wisdom wedded to wealth—thy father's fond bequest.

In Thee O RamBilas! did we behold
The cosmic scheme of perfection unfold
Nay, Nature seemed in Thee so nigh its goal
Of harmonious perfection of the soul,
That seeing nipped in bud this life of Thine
Is this, we ask, is this dispensation divine?

And yet what's our loss, Oh RamBilas !
To hers you've left to live a widow's life,
A widow's life—a life of poignant grief—
A life consigned to everlasting gloom
That lets not but one single ray of light
Reach the tender heart-bud that withers ere its bloom ?

We know we must not weep, we must not mourn
This loss however great, though like a thorn
It pricks the heart at every single beat,
And every heart-beat is a pang of grief,
We must not weep, we must meekly resign
To the Almighty's will with faith in His design

We may not let soft emotion dethrone
Stern reason, yet reason itself anon
Uprises in disconsolate revolt
When Nature turning mercilessly cold
Defeats her own true purpose in a trice,
And dooms to sudden end its noblest edifice.

In Thee, dear RamBilas ! the World witnessed
Its rarest gifts in one existence pressed,
An inborn skill by scholarship enhanced,
Sound sportsmanship with seriousness balanced,
Discretion ripe combined with youthful zest,
Wisdom wedded to wealth—thy father's fond bequest.

In Thee O RamBilas ! did we behold
The cosmic scheme of perfection unfold
Nay, Nature seemed in Thee so nigh its goal
Of harmonious perfection of the soul,
That seeing nipped in bud this life of Thine
Is this, we ask, is this dispensation divine ?

जीवन-रेखा

इसमे दो बाते विचारणीय हैं।

संस्कृत का प्रसिद्ध श्लोक है:

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः।
परोपकाराय वहन्ति नद्यः॥
परोपकाराय दुहन्ति गावः।
परोपकारार्थमिदं शरीरं॥

प्रकृति परोपकारपूर्ण है। वृक्षो मे फल-फूल लगते है। क्या वृक्ष स्वयं अपने मधुर फलो का आस्वादन करते है? क्या वे स्वय अपने सुरभित तथा सुंदर फूलो का आनद लेते हैं? नहीं। तो फिर मनुष्य ही स्वार्थी बनने का दावा क्यो करता है? वही मनुष्य, मनुष्य कहलाने योग्य है जो परोपकार मे रत हो। वैसे, अपना भरण-पोपण तो कीडे-मकोड़े, पशु-पक्षी सभी करते है। मनुष्य की जो विशेपता विचार-शक्ति है, उसका आशय यही है कि वह क्षणिक तुष्टिकर वस्तुओं मे न फँसा रहे। वह केवल वर्तमान का ही गुलाम न बने; किन्तु भूत का अध्ययन कर भविष्य की ओर भी दृष्टि रक्खे। वही मनुष्य आदर्श है, उसीका देहा-वसान शोक-जनक है, जो अपनी आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक तथा शारीरिक शक्तियो को उन्नत कर दूसरो के हित मे उनका उपयोग करता हो। वही चरित्र अनुकरणीय है जो परोपकार मे रत हो। हमारे चरित्र नायक श्री रामविलासजी ऐसेही अनुकरणीय युवक थे।

एक वात और है। वृक्ष मे पहले पहल डंठल निकलता है, फिर वह वद कली के रूपमे आजाता है। कली धीरे धीरे वढ़कर खिल जाती है और फूल का रूप धारण कर लेती है। फूल प्रौढ होता है, अपने रंग और सुगध से दर्शको के चित्तको हरण कर लेता है। धीरे धीरे समय वीतता जाता है। फूल की पँखुड़ियाँ पीली पड़ने लगती हैं, सूखने लगती है। इतने मे हवाका झोका आता है, फूल झड़कर मिट्टी मे गिर जाता है और मिट्टी में मिलकर स्वयं मिट्टी वन जाता है। यह है फूल

जन्म

श्री रामविलासजी का जन्म भाद्रपद शुक्ला २, संवत् १९७० तदनुसार ३ सितम्बर सन् १९१३ को बम्बई नगर मे हुआ था। सेठ साहब का निवास स्थान उस समय बम्बई में ही था। यद्यपि उस समय भी सेठ साहब का बम्बई के रुई एवं गल्ले के बाजार मे एक विशेष स्थान हो चला था, तथापि उन्होंने उस समय तक कोई भौमिक संपत्ति नहीं खरीदी थी। आज तो वे बम्बई और उसके आसपास लाखो की कीमत के मकान, बाग-बगीचे आदि के स्वामी हैं। उस समय वे किराये के मकान में ही रहते थे। वे दिन सेठ साहब के लिए अत्यंत चिंता और संकट के थे क्योंकि कुछ ही समय पूर्व श्री रामदेवजी पर ज्वर का भयंकर आक्रमण हुआ और वह ज्वर बढ़कर विषम-ज्वर (Typhoid fever) के रूप मे परिणत हो गया। बम्बई के बड़े बड़े डाक्टरो का इलाज किया गया, पर रोग मे कुछ कमी मालूम न हुई। आखिर ज्वर का वेग इतना बढ़ा कि उसने सन्निपातका रूप धारण कर लिया। कई दिनो तक भयङ्कर सन्निपात के कारण जीवन और मृत्यु के बीचमें उनकी जीवन-नैया लड़खड़ाती रही। आशा-रेखा धीरे धीरे क्षीण हो चली।

प्रास्ताविक

'संसार परिवर्तनशील है' यह केवल वैराग्य-वादियोंका ही धार्मिक तत्त्व नहीं है किन्तु विज्ञान का एक आधार-भूत सिद्धांत है। स्थान, समय और परिस्थिति के अनुसार प्रकृतिके प्रत्येक भागमे अवस्था का परिवर्तन अविश्रांत रूपसे चला करता है। उत्पत्ति के साथ नाश, वृद्धिके साथ न्यूनता, नवीनता के साथ प्राचीनता का सनातन सम्बन्ध है। यह भी कहा जा सकता है कि इन द्वंद्वोमे एक का अर्थ दूसरे के आशय पर ही निर्भर है। मृत्यु के विना उत्पत्ति का कोई अर्थ नहीं। यदि न्यूनता न हो तो वृद्धि की कल्पना ही असंभव है। यदि कोई वस्तु प्राचीन नहीं होती तो अन्य वस्तु मे नवीनता का विचार ही नहीं उठता। इसी प्रकार जीवन-मरण प्रकृति का नियम है। नियम भी कैसा? बिल्कुल अटल। जिसमे अपवाद की गुंजाइश ही नहीं। सारांश यह है कि जो पैदा हुआ है उसे मरना तो पड़ेहीगा, परन्तु

इसमे दो बाते विचारणीय हैं।

संस्कृत का प्रसिद्ध श्लोक है:

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः।
परोपकाराय वहन्ति नद्यः॥
परोपकाराय दुहन्ति गावः।
परोपकारार्थमिदं शरीरं॥

प्रकृति परोपकारपूर्ण है। वृक्षो मे फल-फूल लगते है। क्या वृक्ष स्वयं अपने मधुर फलो का आस्वादन करते है? क्या वे स्वय अपने सुरभित तथा सुंदर फूलो का आनद लेते हैं? नहीं। तो फिर मनुष्य ही स्वार्थी बनने का दावा क्यो करता है? वही मनुष्य, मनुष्य कहलाने योग्य है जो परोपकार मे रत हो। वैसे, अपना भरण-पोपण तो कीडे-मकोड़े, पशु-पक्षी सभी करते है। मनुष्य की जो विशेपता विचार-शक्ति है, उसका आशय यही है कि वह क्षणिक तुष्टिकर वस्तुओं मे न फँसा रहे। वह केवल वर्तमान का ही गुलाम न बने; किन्तु भूत का अध्ययन कर भविष्य की ओर भी दृष्टि रक्खे। वही मनुष्य आदर्श है, उसीका देहावसान शोक-जनक है, जो अपनी आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक तथा शारीरिक शक्तियो को उन्नत कर दूसरो के हित मे उनका उपयोग करता हो। वही चरित्र अनुकरणीय है जो परोपकार मे रत हो। हमारे चरित्र नायक श्री रामविलासजी ऐसेही अनुकरणीय युवक थे।

एक बात और है। वृक्ष मे पहले पहल डंठल निकलता है, फिर वह वद कली के रूपमे आजाता है। कली धीरे धीरे वढ़कर खिल जाती है और फूल का रूप धारण कर लेती है। फूल प्रौढ होता है, अपने रंग और सुगध से दर्शको के चित्तको हरण कर लेता है। धीरे धीरे समय वीतता जाता है। फूल की पँखुड़ियाँ पीली पड़ने लगती हैं, सूखने लगती हैं। इतने मे हवाका झोका आता है, फूल झड़कर मिट्टी मे गिर जाता है और मिट्टी में मिलकर स्वयं मिट्टी वन जाता है। यह है फूल

बाल्यकाल तथा शिक्षा

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' वाली कहावत के अनुसार श्री रामविलासजी बालकपनसे ही तीक्ष्ण बुद्धि थे। नियमानुकूल शिक्षा आरम्भ होने से पहले ही उन्होने खेलकूद मे पढना शुरू कर दिया था, क्योंकि श्री रामनिरंजनजी तथा श्री रामनाथजी उस समय प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। भाइयो को पढ़ते और पाठ याद करते देख उनकी भी इस ओर रुचि जागृत हो गई। उनकी रुचि देखकर श्री रामदेवजी ने संध्याके समय खेलके साथ ही साथ कुछ अंग्रेजी के शब्द भी बतलाना आरम्भ कर दिया। थोड़े ही समय मे उनको अंग्रेजी का अक्षरज्ञान न होने पर भी २०० से अधिक अंग्रेजी के शब्दार्थ याद हो गये।

श्री रामविलासजी का प्रारम्भिक अक्षर-ज्ञान तथा हिन्दी लिखना पढना घर पर ही हुआ। इसके पश्चात् वे ८—८॥ वर्ष की अवस्था मे स्थानीय 'मारवाड़ी विद्यालय हाईस्कूल' की तृतीय कक्षा (हिन्दी—विभाग) में सन् १९२२ के जनवरी मास मे प्रविष्ट हुए। उनका विद्यालय-सम्बन्धी

का साधारण जीवन। पर यदि कोई अत्यत सुंदर कलिका खिलकर कुसुम रूपमे ही परिणत न हुई हो, कली की अवस्था मे ही उसमे इतना आकर्षक सौदर्य और ऐसी अपूर्व सुगध हो कि मधुप-मडली उसके चारो ओर सदा घूमती रहे, दर्शकगणो के हृदय आनद से नाच उठे और उसके भावी सौदर्य की कल्पना मे अपने आपको भूल जाँय; और फिर उस अविकसित अथवा अर्द्धविकसित कली को वायुका प्रचण्ड झोंका अचानक आकर झुलसादे तो कितने शोक और विषाद की बात होगी! वह विषाद केवल वर्तमान गुणों के लियेही न होगा परन्तु उससे भी कहीं अधिक उस सुदूर भविष्य की मधुर आशाओ के नाश के लिए होगा; जिनकी ओर उनका अर्द्धविकसित सौदर्य स्पष्टरूपसे सकेत कर रहा था। श्री रामबिलासजीका आकस्मिक देहावसान भी ऐसीही कली का उदाहरण है। अफसोस—

फूल तो दो दिन बहारे जाँ फ़िजाँ दिखला गये।
हसरत उन ग़ुञ्चों पै है जो बिन खिले मुर्झा गये।

जन्म

श्री रामविलासजी का जन्म भाद्रपद शुक्ला २, संवत् १९७० तदनुसार ३ सितम्बर सन् १९१३ को वम्बई नगर मे हुआ था। सेठ साहब का निवास स्थान उस समय वम्बई में ही था। यद्यपि उस समय भी सेठ साहब का वम्बई के रुई एवं गल्ले के वाजार मे एक विशेष स्थान हो चला था, तथापि उन्होंने उस समय तक कोई भौमिक संपत्ति नहीं खरीदी थी। आज तो वे वम्बई और उसके आसपास लाखो की कीमत के मकान, वाग-वगीचे आदि के स्वामी हैं। उस समय वे किराये के मकान में ही रहते थे। वे दिन सेठ साहब के लिए अत्यंत चिंता और सकट के थे क्योंकि कुछ ही समय पूर्व श्री रामदेवजी पर ज्वर का भयकर आक्रमण हुआ और वह ज्वर वढ़कर विपम-ज्वर (Typhoid fever) के रूप मे परिणत हो गया। वम्बई के वड़े वड़े डाक्टरो का इलाज किया गया, पर रोग मे कुछ कमी मालूम न हुई। आखिर ज्वर का वेग इतना वढ़ा कि उसने सन्निपातका रूप धारण कर लिया। कई दिनो तक भयङ्कर सन्निपात के कारण जीवन और मृत्यु के वीचमें उनकी जीवन-नैया लड़खड़ाती रही। आशा-रेखा धीरे धीरे क्षीण हो चली।

समाज के बालक के लिए कोई भी कार्य कठिन तथा असम्भव नहीं है'। जब माताजी ने उन्हे विलायत जाने देने से इन्कार कर दिया तथा अन्य कारण भी ऐसे ही बन गये तो उन्हे अपना इरादा छोड़ देना पड़ा। पर वे प्रायः कहा करते थे, 'आप लोगों ने मुझे आगे नहीं बढ़ने दिया—इसके लिए आपको पछताना पड़ेगा'। कौन जानता था कि घरवालो को उनके लिए पछताने के अतिरिक्त और कुछ भी न बचेगा!

मैट्रिक पास करने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए 'सेट जेवियर्स कॉलेज' (St. Xavier's College) में भरती हुए। यहाँ भी उनके सद्गुणो का प्रभाव बहुत शीघ्र पड़ा। अपने सद्व्यवहार, परिश्रम, तथा तीक्ष्ण बुद्धिसे उन्होने अध्यापकों को शीघ्र ही अपनी ओर आकर्पित कर लिया। स्वयं गुजराती भापी न होते हुए भी, उन्होने उक्त कॉलेज मे 'गुजराती इन्स्टिट्यूट' की स्थापना करने मे प्रमुख भाग लिया और वे उसके संस्थापको मे गिने जाते हैं। इसका वर्णन पाठकों को अन्यत्र मिलेगा। धीरे धीरे श्री रामविलासजी के विचार राष्ट्रीयता की ओर झुकने लगे और 'सिविल सर्विस' (I C. S) का मोह उनके मस्तिष्क से निकल गया।

सन् १९३४ मे श्री रामविलासजी ने 'बम्बई युनिवर्सिटी' की बी. ए. की परीक्षा मे सफलता प्राप्त की। मारवाड़ी समाज प्रायः शिक्षाको धन-प्राप्ति का साधन मात्र समझता है और लोग अक्सर ऐसा कहते हुए सुने जाते है कि हमे पढाकर कोई नौकरी थोड़े ही करानी है। ऐसे समाज के सामने श्री रामविलासजी ने अनुकरणीय उदाहरण रक्खा है।

बी. ए. पास कर लेने पर भी श्री रामविलासजी की ज्ञानपिपासा शान्त न हुई। उन्होने इतिहास विपय लेकर 'सेन्ट जेवियर्स कॉलेज' मे एम्. ए. का अध्ययन आरम्भ कर दिया, तथा एम्. ए. की डिग्री के लिए निबध (Thesis) की तैयारी करने लगे। निबंध का विपय 'साँभर के

चौहान' (The Chauhans of Sambhar) था। उधर एल्एल्. बी. की क्लासों में भी पढ़ते रहे।

अभी उनकी तैयारियाँ जारी ही थीं, दोनों में से एक कार्य भी पूरा न हो पाया था कि कूच का नक्कारा बज उठा। श्री रामविलासजी ने कुछ न सोचा और उस पथ की ओर चल दिये जहाँ से लौटकर आज-तक कोई नहीं आया !

विवाह तथा सामाजिक विचार

श्री रामविलासजी के सामाजिक विचार बड़े उच्च थे। विवाह के उद्देश्य तथा महत्त्व के विषय मे उनकी धारणाएँ बड़ी उदार थीं। वे समझते थे कि विवाह एक पवित्र बधन है—दो परस्पर सहयोग देनेवाली आत्माओ का पावन संयोग है। वे बाल विवाह के कट्टर विरोधी थे तथा वर-वधू के पारस्परिक परिचय के विना किए गए विवाह को उचित नहीं समझते थे। मारवाड़ी समाज मे अब यद्यपि कुछ थोडा बहुत सुधार हुआ है, पर फिर भी वालविवाह की प्रथा जोरो से जारी है और उसपर भी सम्पन्न मारवाड़ियो में तो इसका प्रचार और भी अधिक है।

विवाह के सम्बंध में सबसे अधिक उत्कठा और जल्दी माता को रहा करती है। श्री रामविलासजी के विवाह के लिए माताजी बहुत वर्षों से प्रेरणा कर रही थीं। पहले संकेत रूप मे यह बात प्रगट की गई, पर कोई असर न हुआ तो जरा खुले तौर पर यह प्रश्न सामने रक्खा गया, परन्तु वे इस ओर से उदासीन रहे। इस के अतिरिक्त वे

विवाह तथा सामाजिक विचार

श्री रामविलासजी के सामाजिक विचार बड़े उच्च थे। विवाह के उद्देश्य तथा महत्त्व के विषय मे उनकी धारणाएँ बड़ी उदार थीं। वे समझते थे कि विवाह एक पवित्र बंधन है—दो परस्पर सहयोग देनेवाली आत्माओ का पावन संयोग है। वे बाल विवाह के कट्टर विरोधी थे तथा वर-वधू के पारस्परिक परिचय के बिना किए गए विवाह को उचित नहीं समझते थे। मारवाड़ी समाज मे अब यद्यपि कुछ थोडा बहुत सुधार हुआ है, पर फिर भी बालविवाह की प्रथा जोरो से जारी है और उसपर भी सम्पन्न मारवाड़ियो में तो इसका प्रचार और भी अधिक है।

विवाह के सम्बंध में सबसे अधिक उत्कंठा और जल्दी माता को रहा करती है। श्री रामविलासजी के विवाह के लिए माताजी बहुत वर्षों से प्रेरणा कर रही थीं। पहले संकेत रूप मे यह बात प्रगट की गई, पर कोई असर न हुआ तो जरा खुले तौर पर यह प्रश्न सामने रक्खा गया, परन्तु वे इस ओर से उदासीन रहे। इस के अतिरिक्त वे

अत्यावश्यक है, परन्तु उन्हे श्री रामविलासजीने छुआ भी नहीं । सारे विवाह मे उन्होने साफ़ा तथा शेरवानी ही पहनी । अन्य कई अनावश्यक रीति-रिवाज तथा भद्दे तरीको को दूर कर दिया गया । विवाह के लगभग दो वर्ष वाद मुकलावा हुआ । अफसोस ! कली अभी खिलने भी न पाई थी कि निर्दयी माली ने उसे तोड़कर फैंकदी ।

श्री रामविलासजी का छोटासा गार्हस्थ्य-जीवन अत्यंत पवित्र तथा प्रेममय था । धनिक युवक ऐयाशी के गढे मे प्राय: आकण्ठ डूवे हुए देखे जाते हैं, पर वे तो इससे कोसों दूर थे। वे यद्यपि एक कोट्याधीश के पुत्र थे, खर्च करने के लिए रुपयों की कमी न थी, न कोई उन्हे रोकनेवालाही था; क्योंकि उन पर सवका पूर्ण प्रेम तथा विश्वास था, उन्होने ४ वर्ष तक कॉलेज का सहशिक्षामय जीवन विताया था तथा वे वम्वई के अप-टु-डेट वातावरण में पले थे, पर उनका चरित्र इतना उच्च और आचरण इतना शुद्ध और पवित्र था कि यकायक विश्वास करना कठिन है, पर सच तो यह है कि उन्हे इस स्वार्थपूर्ण संसार मे अधिक रहना ही न था अत: उनमे जितनी वाते थीं, वे सव उच्च कोटि की तथा प्रशंसनीय थीं ।

श्री रामविलासजी के सामाजिक विचार कितने परिष्कृत तथा सामयिक थे उसका अदाजा पाठकों को एक पत्र से हो जायगा जो उन्होने अपनी सासको देहावसान के केवल ६ दिन पूर्व लिखा था । उससे उनकी सरल प्रकृति, सीधे व्यवहार, तथा प्रेममय गार्हस्थ्य जीवन का भलीभाँति पता लगता है । उस पत्र का व्लॉक यहाँ दिया जाता है ।

अपनी भावी सह-धर्मिणी को पहले देखे बिना विवाह-सम्बंध करने को तैयार भी न थे। सन् १९३२ के मार्च मास में उन्हे उनकी ममेरी बहन के विवाह-समारोह मे सम्मिलित होने के साथ साथ अपनी सह-धर्मिणी चुनने का भी अवसर मिला। कलकत्तेके सुप्रसिद्ध 'सेठ गणपतरायजी नागरमलजी राजगढ़िया' फर्म के मालिक सेठ भूधरमलजी राजगढ़िया की सुपुत्री ज्ञानवतीकुमारीकी ओर वे आकर्षित हुए। इस विषयमें उनके साथी श्री हीरालालजी दवे ने कलकत्तेसे श्री रामनाथजी को पत्र लिखकर श्री रामविलासजी के मनो-भाव को प्रगट कर दिया। सेठ साहबने तार द्वारा अपनी सम्मति प्रगट कर दी। सम्बन्ध निश्चित कर लिया गया और कुछ समय पश्चात् श्री रामदेवजी की मँझली लड़की सावित्रीबाईके विवाह अवसर पर मुद्दा लेकर कलकत्ते में सगाई करदी गई।

श्री रामविलासजी की इच्छा बी. ए. पास करने के बाद ही विवाह करने की थी, किन्तु लड़कीवालो की ओर से अधिक आग्रह और पूजनीया माताजी का दबाव अधिक होने के कारण उन्हे सन् १९३३ में जब वे बी. ए. के प्रथम वर्ष में पढ़ रहे थे, विवाह की स्वीकृति देनी पडी और अनिच्छापूर्वक भी उन्होने बडो की आज्ञा को शिरोधार्य किया। विवाह सन् १९३३ की १४ फरवरी को होना निश्चित हुआ। बारात कोडरमा गई। कोडरमा बिहार प्रात के हजारीबाग जिले मे एक नगर है। वहाँ राजगढ़ियो की अभ्रक की खाने है इसलिये उन्होंने विवाह आदि का प्रबंध वहीं किया था।

विवाह दो धनिक तथा समृद्ध परिवारो मे जैसा होना चाहिए वैसाही हुआ। उसका विस्तार से वर्णन करने का न तो यह अवसर ही है, और न इसकी आवश्यकता ही है। इस विवाह मे उल्लेखनीय बात यह थी कि कई सामाजिक कुरूढियो को तोड दिया गया। मारवाडी समाज मे विवाह के अवसर पर पगडी तथा जामा पहनना

अत्यावश्यक है, परन्तु उन्हे श्री रामविलासजीने छुआ भी नहीं । सारे विवाह मे उन्होने साफ़ा तथा शेरवानी ही पहनी । अन्य कई अनावश्यक रीति-रिवाज तथा भद्दे तरीको को दूर कर दिया गया । विवाह के लगभग दो वर्ष बाद मुकलावा हुआ । अफसोस ! कली अभी खिलने भी न पाई थी कि निर्दयी माली ने उसे तोड़कर फैंकदी ।

श्री रामविलासजी का छोटासा गार्हस्थ्य-जीवन अत्यंत पवित्र तथा प्रेममय था । धनिक युवक ऐयाशी के गढे मे प्रायः आकण्ठ डूबे हुए देखे जाते हैं, पर वे तो इससे कोसों दूर थे। वे यद्यपि एक कोट्याधीश के पुत्र थे, खर्च करने के लिए रुपयों की कमी न थी, न कोई उन्हे रोकनेवालाही था; क्योंकि उन पर सबका पूर्ण प्रेम तथा विश्वास था, उन्होने ४ वर्ष तक कॉलेज का सहशिक्षामय जीवन बिताया था तथा वे बम्बई के अप-टु-डेट वातावरण में पले थे, पर उनका चरित्र इतना उच्च और आचरण इतना शुद्ध और पवित्र था कि यकायक विश्वास करना कठिन है, पर सच तो यह है कि उन्हे इस स्वार्थपूर्ण संसार मे अधिक रहना ही न था अतः उनमे जितनी बाते थीं, वे सब उच्च कोटि की तथा प्रशंसनीय थीं ।

श्री रामविलासजी के सामाजिक विचार कितने परिष्कृत तथा सामयिक थे उसका अदाजा पाठकों को एक पत्र से हो जायगा जो उन्होने अपनी सासको देहावसान के केवल ६ दिन पूर्व लिखा था । उससे उनकी सरल प्रकृति, सीधे व्यवहार, तथा प्रेममय गार्हस्थ्य जीवन का भलीभाँति पता लगता है । उस पत्र का ब्लॉक यहाँ दिया जाता है ।

वर्ष मे ही उक्त विभाग ने आश्चर्यजनक उन्नति कर दिखाई। उनके कार्य-भार सम्हालने के पूर्व सन् १९३३-३४ मे केवल १०,००० रुई की गाँठें बाहर भेजी गई थीं, दूसरे वर्ष २५,००० गाँठे विदेश भेजी गई और ३५-३६ मे तो यह संख्या ६५,००० गाँठों तक पहुँच गई।

श्री रामविलासजी ने रुई के एक्सपोर्ट के साथ साथ गेहूँ, तिल (Seeds) आदि का एक्सपोर्ट भी आरम्भ कर दिया। यह उन्ही के प्रयत्नो का फल था कि उनका फर्म (Anandılal Podar & Co), 'न्यूयॉर्क कॉटन एक्षचैञ्ज' (New York Cotton Exchange), 'लीवरपूल कॉटन एसोसिएशन' (Lıverpool Cotton Association), तथा 'इनकॉर्पोरेटेड ऑइल सीड्स एसोसिएशन, लडन' (Incorporated Oıl Seeds Association, London) का सदस्य वन गया। इन विश्व-विख्यात व्यापारिक संस्थाओ की सदस्यता से—जिसका सौभाग्य वहुत कम भारतीय फर्मों को प्राप्त है—इस फर्म की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा मे बहुत वृद्धि हुई।

श्री रामविलासजी ने उपर्युक्त विभागों के अतिरिक्त, चाँदी सोने (Bullıon) तथा शेअर (Share) के विभागो को भी हाथ मे लिया और इनमे भी आशातीत उन्नति कर दिखलाई। धीरे धीरे उन्हे यह प्रतीत होने लगा कि फर्म की यथोचित उन्नति तथा अन्तर्राष्ट्रीय-प्रतिष्ठा-वृद्धिके लिए और देश मे वढती हुई वेकारी को रोकने के लिए इस कार्य मे पूर्ण रूप से लग जाना आवश्यक है। उन्होंने लॉ क्लासो मे जाना छोड़ दिया और व्यापारमे पूर्णतया दत्त-चित्त होगये, तथापि उनकी आतरिक इच्छा यह वरावर वनी रही कि अवकाश मिलते ही एम्. ए., एल्एल्. वी. (M. A., LL B) तो अवश्य ही कर लेना चाहिये।

जिस तरह चुम्बक के पास लोहा अपने आप खिंच आता है, उसी प्रकार उनके व्यापार-क्षेत्र मे आने के बाद धीरे धीरे फर्म का सारा

यात्राएँ तथा भ्रमण

श्री रामविलासजी ने २३ वर्ष के छोटेसे जीवन-काल मे भारत के वहुत से भागों मे भ्रमण कर लिया था। उत्तर मे काश्मीर, पश्चिम मे कोहाट, हैदरावाद तथा करांची, दक्षिण में रामेश्वरम् तथा पूर्व मे जगन्नाथपुरी, चटगांव तथा दार्जिलिङ्ग तक वे हो आये थे।

उनकी छोटीसी अवस्था मे ही पिताजी उन्हें अपने साथ यात्रा मे ले गये और उस समय उन्होने प्रायः सभी वड़े वड़े तीर्थस्थानों के दर्शन किये। आठ वर्ष की अवस्था मे वे श्री रामदेवजी के साथ देवलाली गये और दूसरे वर्ष पूजनीया माताजी तथा श्री रामनाथजी के साथ उन्हे कलकत्ते की सैर करने का मौका मिला।

इसके पश्चात् नियमित रूप मे अध्ययन प्रारम्भ हो जाने के कारण कई वर्षों तक उन्हे किसी लम्वी यात्रा मे जाने का मौका नहीं मिला। सन् १९२८ मे वे श्री रामनाथजी के साथ महावलेश्वर गये। उसी वर्ष वे श्री रामदेवजी के साथ कलकत्ते की कांग्रेस मे सम्मिलित हुए और फिर वहाँ से दार्जिलिङ्ग गये। दो वर्ष वाद वे श्री सेठ साहव के साथ पचगनी गये।

ANANDILAL PODAR & Co.

BANKERS

MERCHANTS, COMMISSION AGENTS AND BROKERS

CABLE CODE USED BENTLEY'S

Telephone { OFFICE 27066 / " 27087 / SEWREE 42342 / SANTACRUZ REGI. 80110

Telegraphic Address -" ANPODAR"

(BHULESHWAR)

Bombay __________ 193

ईश्वर के आधीन है। इस की तरह से आप कोई भी तरह की चिन्ता न करें। उनको मैं बहुत समझाता हूँ। वह खुद भी समझदार है लेकिन फिर भी माता और बापू छिपने नहीं चाहिये। उनके होने के बाद हम दोनों के तो साथ ही [illegible] जाती है। आप लोगों के आशीर्वाद ही हम लोगों के लिये सब कुछ है।

आपका आज्ञाकारी

रामेश्वरलाल
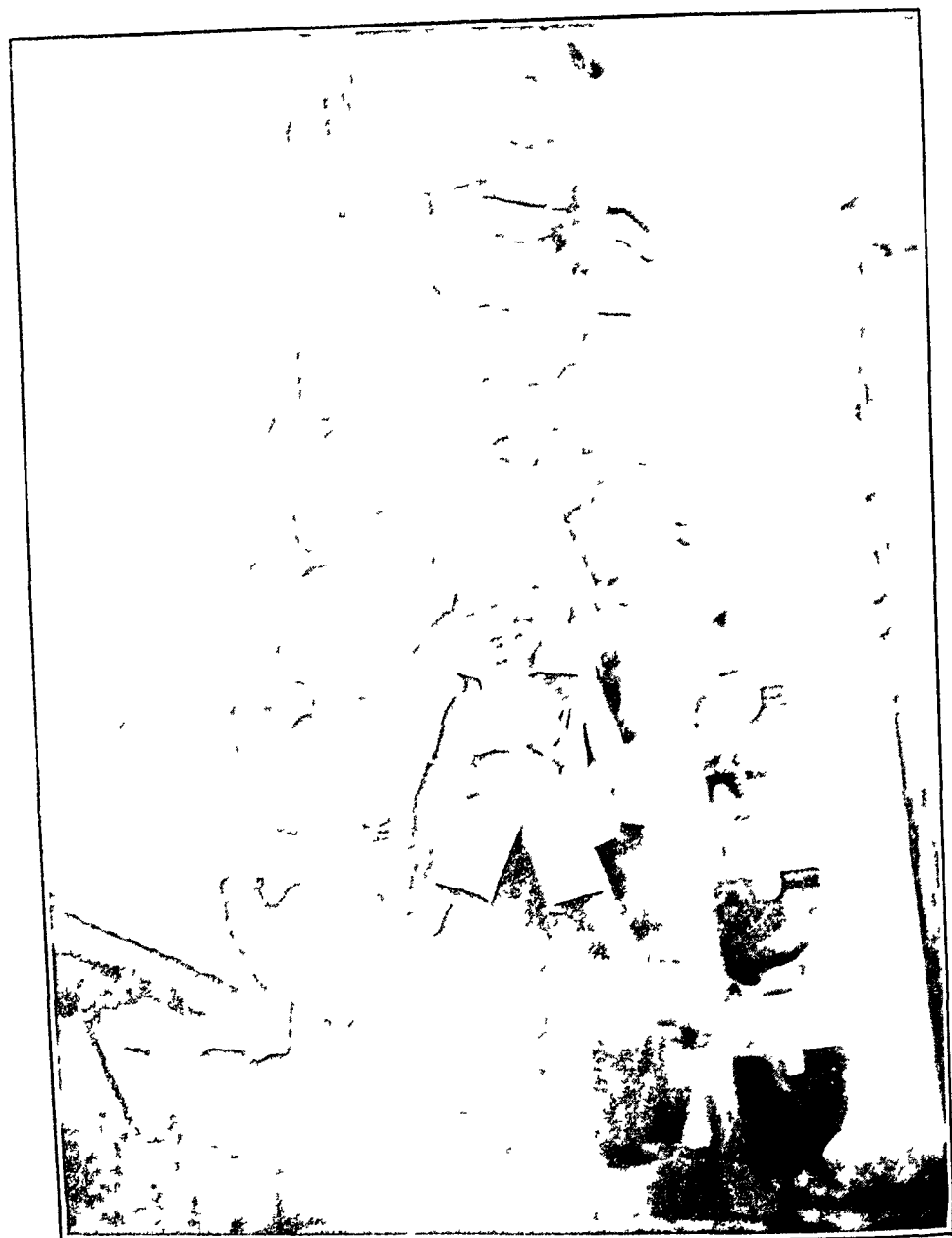
जाया करते थे। इसी प्रकार की सैरो मे उन्होंने अजंटा, एलोरा, दौलता-वाद, नासिक, पूना आदि स्थान देखे थे।

श्री रामविलासजी का इरादा शीघ्र ही यूरोप, अमेरिका, जापान आदि देशो को जाने का था, लेकिन—

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं।
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कज श्रीः॥
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे।
हा हन्त, हन्त, नलिनी गज उज्जहार॥

व्यापार-क्षेत्र में

श्री रामविलासजी के वालिग होने के पहले ही सेठ साहव ने उन्हें अपनी फर्म का साझीदार वना दिया था। मैट्रिक पास होने के वाद से ही उन्होंने व्यापार सम्वंधी कार्यों मे दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था, पर अध्ययन जारी होने के कारण वे इस ओर अधिक ध्यान नहीं दे सके। उधर सेठ साहव देख रहे थे कि रामनाथजी और रामविलासजी अपनी शिक्षा को पूर्णकर व्यापार-क्षेत्रमें उतरनेवाले हैं, इसलिये उन्होंने आयात-निर्यात विभाग (Exports and Imports Department) खोल दिया।

वी. ए. पास होने के वाद श्री रामविलासजी को अध्ययन से पर्याप्त अवकाश मिला क्योंकि एम. ए. के लिये तो उन्हे निवन्ध लिखना था और उक्त कार्य धीरे धीरे कई वर्षों मे पूर्ण होने वाला था और लॉ क्लासों में भी उन्हें कुछ समय के लिये ही जाना पडता था। अतः वे अव व्यापार की ओर अधिक आकृष्ट हुए। उन्होंने उपर्युक्त विभाग का कार्य ही अपने हाथ में लिया। उनकी प्रतिभा के कारण केवल दो
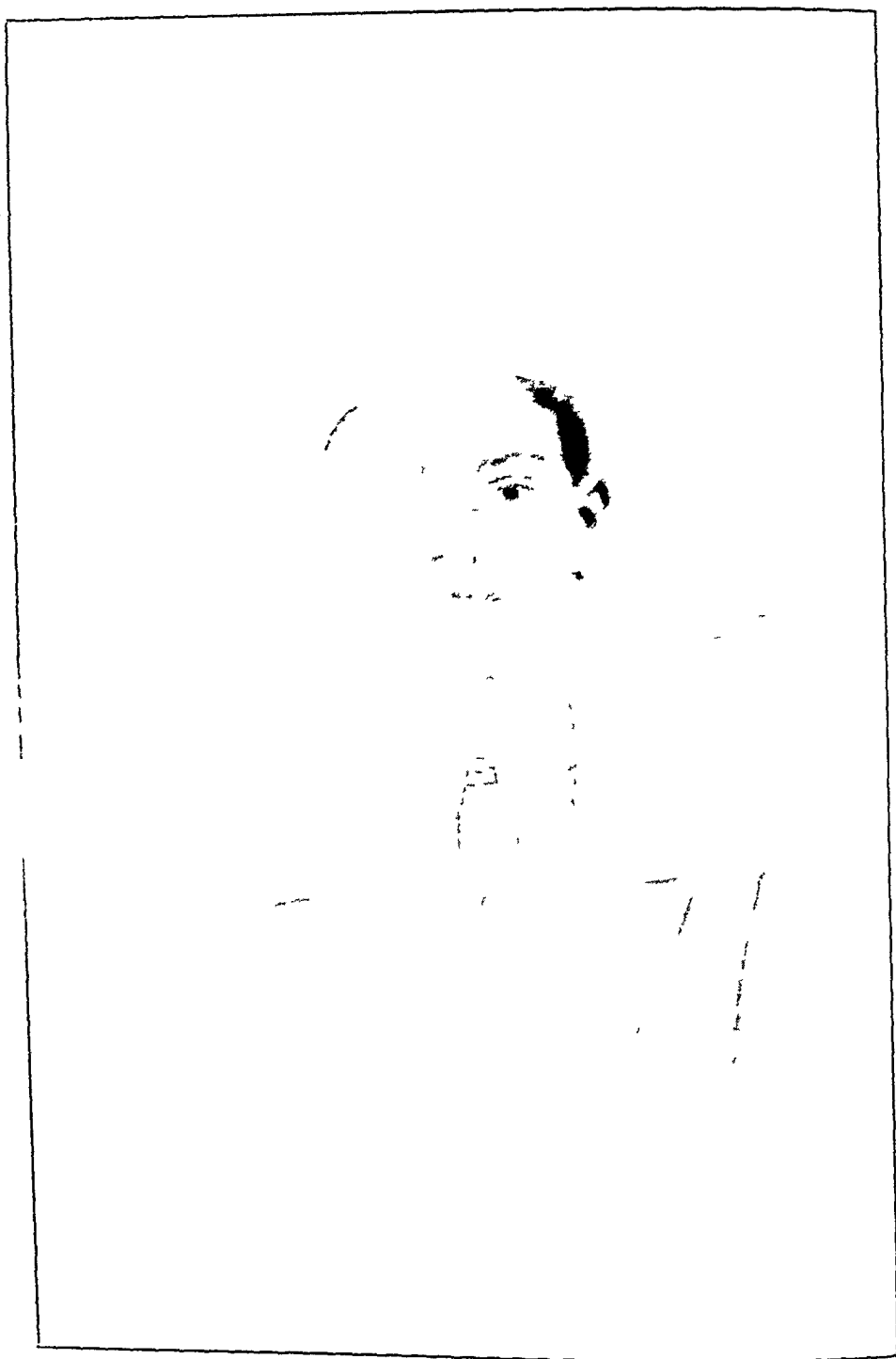
वर्ष मे ही उक्त विभाग ने आश्चर्यजनक उन्नति कर दिखाई। उनके कार्य-भार सम्हालने के पूर्व सन् १९३३-३४ मे केवल १०,००० रुई की गाँठें बाहर भेजी गई थीं, दूसरे वर्ष २५,००० गाँठे विदेश भेजी गई और ३५-३६ मे तो यह संख्या ६५,००० गाँठों तक पहुँच गई।

श्री रामविलासजी ने रुई के एक्सपोर्ट के साथ साथ गेहूँ, तिल (Seeds) आदि का एक्सपोर्ट भी आरम्भ कर दिया। यह उन्ही के प्रयत्नो का फल था कि उनका फर्म (Anandilal Podar & Co), 'न्यूयॉर्क कॉटन एक्षचैञ्ज' (New York Cotton Exchange), 'लीवरपूल कॉटन एसोसिएशन' (Liverpool Cotton Association), तथा 'इनकॉर्पोरेटेड ऑइल सीड्स एसोसिएशन, लडन' (Incorporated Oil Seeds Association, London) का सदस्य बन गया। इन विश्व-विख्यात व्यापारिक संस्थाओ की सदस्यता से–जिसका सौभाग्य बहुत कम भारतीय फर्मों को प्राप्त है–इस फर्म की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा मे बहुत वृद्धि हुई।

श्री रामविलासजी ने उपर्युक्त विभागों के अतिरिक्त, चाँदी सोने (Bullion) तथा शेअर (Share) के विभागो को भी हाथ मे लिया और इनमे भी आशातीत उन्नति कर दिखलाई। धीरे धीरे उन्हे यह प्रतीत होने लगा कि फर्म की यथोचित उन्नति तथा अन्तर्राष्ट्रीय-प्रतिष्ठा-वृद्धिके लिए और देश मे बढती हुई बेकारी को रोकने के लिए इस कार्य मे पूर्ण रूप से लग जाना आवश्यक है। उन्होंने लॉ क्लासो मे जाना छोड़ दिया और व्यापारमे पूर्णतया दत्त-चित्त होगये, तथापि उनकी आतरिक इच्छा यह बराबर बनी रही कि अवकाश मिलते ही एम्. ए., एल्एल्. बी. (M. A., LL B) तो अवश्य ही कर लेना चाहिये।

जिस तरह चुम्बक के पास लोहा अपने आप खिंच आता है, उसी प्रकार उनके व्यापार-क्षेत्र मे आने के बाद धीरे धीरे फर्म का सारा

को तन, मन, धन से तत्पर रहते थे। गत आन्दोलनो के अवसर पर उन्होंने वड़ी नाजुक परिस्थितियो मे सहायता कर अपनी लगन, साहस और देश-प्रेम का परिचय दिया था।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है श्री रामविलासजी की शिक्षा 'मारवाड़ी विद्यालय' तथा 'सेट जेवियर्स कॉलेज' मे हुई थी। उन्हे इन संस्थाओ के प्रति वड़ा अनुराग था। 'मारवाड़ी विद्यालय' को तो वे अपनी ही चीज समझते थे और सदा उसके हित-साधन मे सलग्न रहते थे। वे उक्त संस्था की शिक्षा-समिति के सदस्य थे, और वहाँ के शिक्षण-सम्बन्धी कार्य-क्रम, वनाने मे उनका पूरा हाथ रहता था। केवल अक्षर-ज्ञान की शिक्षा ही उनकी दृष्टि मे मानव-शक्तियो को विकसित करने के लिए पर्याप्त न थी। वे वालको के चरित्र-निर्माण का भी पूरा ध्यान रखते थे, इसलिये वे उन्हे खेलने-कूदने और निर्दोप क्रीड़ाओ मे भाग लेनेके लिये सदा उत्साहित करते थे। वालको की इस प्रवृत्ति को छोटे वड़े सभी पुरुपोंमे जागृत करने तथा स्थायी रखने के सदुद्देश्य से उन्होने सन् १९३४ के अप्रैल मास मे 'मारवाड़ी स्पोर्ट्स क्लब' (Marwadı Sports Club) की स्थापना की।

'मारवाड़ी विद्यालय' का वार्पिकोत्सव इधर कई वर्षों से नहीं हुआ था। उनकी तीव्र इच्छा थी कि उक्त उत्सव सुदर रूप से अवश्य होना चाहिये। वस फिर क्या था? उनमे उत्साह की तो कमी थी ही नहीं, वे जी जान से इस काम मे जुट गये। वे वड़ी से वड़ी और छोटीसे छोटी वात को स्वय देखते थे और प्रत्येक व्यवस्था पर पूरा ध्यान रखते थे, फल यह हुआ कि उत्सव को पूर्ण सफलता मिली। इसका अधिकाश श्रेय श्री रामविलासजी के कार्यशील व्यक्तित्वको ही है।

'सेट जेवियर्स कॉलेज' से भी उन्हे वड़ा प्रेम था। अपने विद्यार्थी जीवन मे वे कालेज की 'हिन्दू एसोसिएशन' (Hındu Association) के सदस्य वहुत वड़े वहुमत से चुने गये थे और संस्था के कार्यों मे खूव

इनके अतिरिक्त उक्त संस्था के प्रथम प्रधान सर चिमनलाल सेतलवड़ थे तथा संयुक्त-मत्री, श्रीयुत कन्हैयालाल एम्. मुन्शी, एड्वोकेट, और रेव्हरेण्ड जी. पेलेसिओस एस्. जे., प्रिन्सिपाल हैं ।*

स्थानीय मारवाड़ी समाजकी अन्य शिक्षासम्बन्धी संस्थाओं को उन्नत करने की भी उन्हे वड़ी लगन रहती थी । वे 'सीताराम पोद्दार वालिका विद्यालय' और 'राजपूताना शिक्षा-मंडल' की प्रवन्ध-समितियों के सदस्य थे और उनके संचालन मे मनोयोगपूर्वक सहयोग देते रहते थे। वे 'अ० भा० मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष' की शिक्षासमिति के सदस्य थे और सजातीय वालको की शिक्षा मे पूरी दिलचस्पी लेते थे। यह अधिकांश मे उन्हीं के प्रयत्नो का सुफल है कि कोप की सहायता से एक विद्यार्थी को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विलायत भेजा गया है।

वालिका–विद्यालय के प्रति तो उनका व्यवहार बड़ा प्रेम-पूर्ण था। अभी कुछ दिन पहिले उन्होने उक्त संस्था के वार्पिकोत्सव मे वड़े चावसे भाग लिया था। हफ्तों पहले से वे उत्सव विपयक तैयारियो मे लगे हुए थे। उस अवसर पर एक छोटासा अभिनय भी किया गया था। उसकी सफलता अधिकांश मे श्री रामविलासजी की विशुद्ध सेवा-भावनाका ही फल थी।

इनके अतिरिक्त वे सेठ साहव द्वारा स्थापित सान्ताक्रुज के 'सेठ आनदीलाल पोदार हाईस्कूल' तथा नवलगढ के 'सेठ ज्ञानीराम बसीधर पोदार हाईस्कूल' के संचालन मे बहुत दिलचस्पी लिया करते थे। नवलगढ हाईस्कूल का तो सारा प्रवंध उन्हीं के हाथ मे था। यद्यपि मैनेजर श्री रामदेवजी थे, पर सारा कार्य-भार श्री रामविलासजी पर ही था। उनके हाथ मे संचालन-भार आने से पहले उक्त संस्था की दशा अच्छी न थी। श्री रामविलासजी ने काम सम्हालते ही स्कूल की काया-

* वॉम्बे क्रॉनिकल–ता. १५ जुलाई १९३६
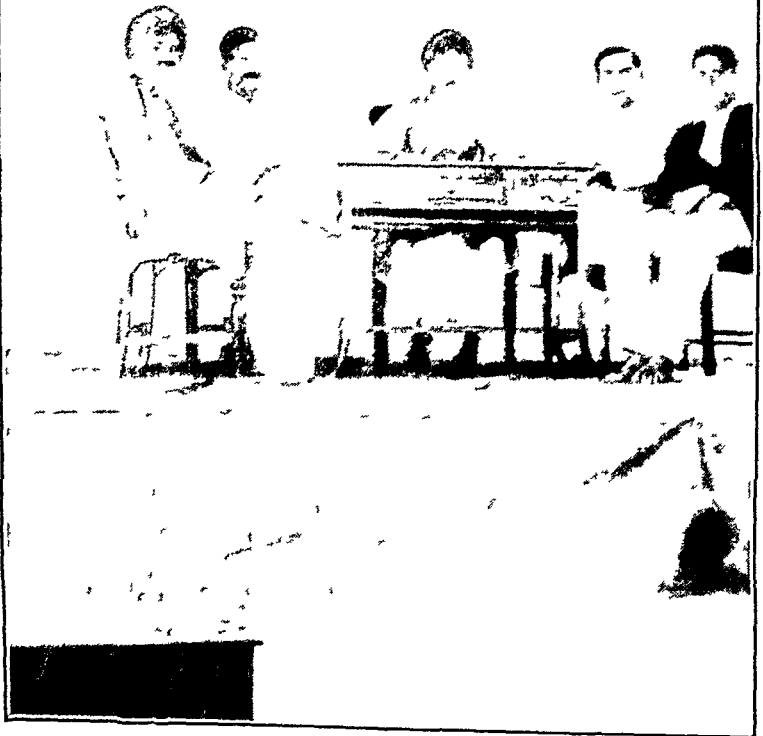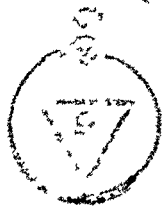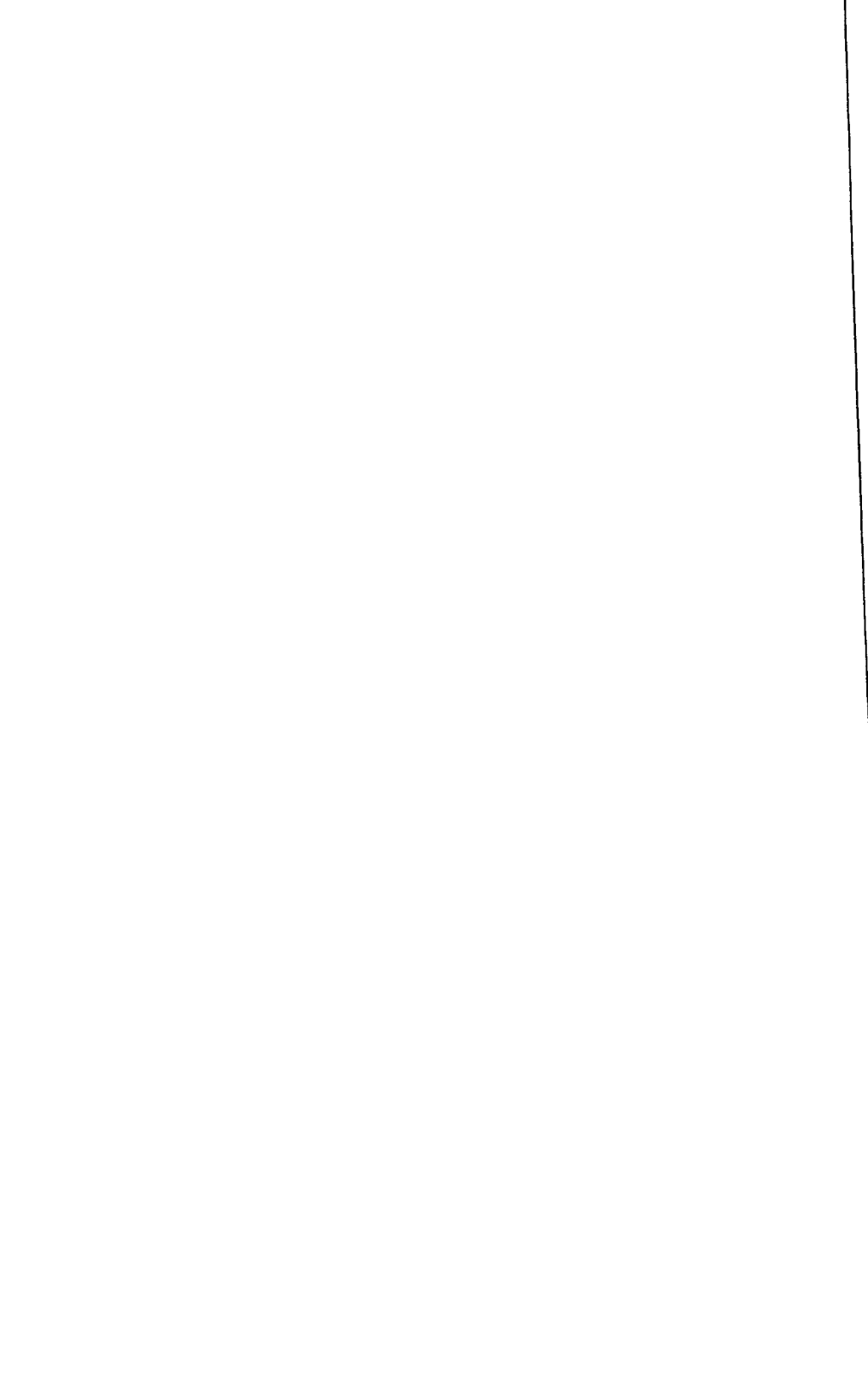
भाग लेते थे। 'हिन्दू एसोसिएशन' के वार्षिक अधिवेशन पर बहुत से अभिनय भिन्न भिन्न भाषा-भाषी छात्रों ने खेले थे। उन मे हिन्दी भाषी छात्रो ने 'उपाधि की व्याधि' नामका अभिनय किया था। वह अभिनय अत्यत सफल हुआ था। उसकी अधिकाश व्यवस्था उनके हाथ मे थी। उन्होने इस मे 'मौलवी साहब' का अभिनय किया था।

इस कॉलेज मे गुजराती भाषा-भाषी अध्यापको तथा छात्रो की संख्या हजारो तक होते हुए भी उनकी कोई प्रतिनिधि संस्था न थी। कुछ गुजराती छात्रो ने इस विषय की चर्चा उनसे की। स्वयं गुजराती तथा गुजराती भाषी न होते हुए भी उन्होने इस विषय मे बहुत उत्साह दिखाया। बाद मे उक्त छात्रो के उत्साह-हीन हो जाने पर उन्होने इस विपय को स्वय हाथ मे लिया। उनमे विशेषता यह थी कि स्वयं तो उत्साह-पूर्ण थे ही, किन्तु दूसरो मे भी उत्साह भर देना उन्हे खूब आता था। फल यह हुआ कि St Xaviers College मे 'गुजराती इन्स्टिट्यूट' (Gujerati Institute) की स्थापना हो गई। उक्त संस्था के संस्थापको की सूची इस प्रकार है:—

सर चुनीलाल वी महेता, के. टी
जस्टिस बी जे वाड़िया.
जस्टिस ए. वी दिवेटिया.
सर लल्लूभाई सामलदास, के. टी.[1]
सर सोराबजी पोचखानावाला, के. टी.
सर मङ्गलदास वी. महेता, के टी
श्री. चुनीलाल वी. महेता.
श्री हुसेनअली रहीमतुल्ला.
श्री आबिदअली एम्. काजी.
दीवान बहादुर के एम् ज़वेरी.
श्री. भूलाभाई जे. देसाई, बी ए., एलएल् बी एड्वोकेट.
श्री वी पी. वैद्य, बार-एट्-लॉ.
श्री. के. टी. शाह, एम्. ए.
श्री वेलजी देवसी
श्री. मणिलाल बी. नाणावाटी
श्री. रामविलास आनंदीलाल पोद्दार, बी. ए.
रेव्हरेण्ड जी कौजेट एस् जे
प्रो ए एच्. कालापेसी, पीएच् डी
प्रो जी सी झाला, एम् ए

१ खेद है कि गत १४ अक्तूबर को आपका स्वर्गवास हो गया है।

इनके अतिरिक्त उक्त संस्था के प्रथम प्रधान सर चिमनलाल सेतलवड़ थे तथा संयुक्त-मत्री, श्रीयुत कन्हैयालाल एम्. मुन्शी, एड्वोकेट, और रेव्हरेण्ड जी. पेलेसिओस एस्. जे., प्रिन्सिपाल हैं ।*

स्थानीय मारवाड़ी समाजकी अन्य शिक्षासम्बन्धी संस्थाओं को उन्नत करने की भी उन्हे वड़ी लगन रहती थी । वे 'सीताराम पोद्दार वालिका विद्यालय' और 'राजपूताना शिक्षा-मंडल' की प्रवन्ध-समितियों के सदस्य थे और उनके संचालन मे मनोयोगपूर्वक सहयोग देते रहते थे । वे 'अ० भा० मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष' की शिक्षासमिति के सदस्य थे और सजातीय वालको की शिक्षा मे पूरी दिलचस्पी लेते थे । यह अधिकांश मे उन्हीं के प्रयत्नो का सुफल है कि कोप की सहायता से एक विद्यार्थी को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विलायत भेजा गया है ।

वालिका—विद्यालय के प्रति तो उनका व्यवहार बड़ा प्रेम-पूर्ण था । अभी कुछ दिन पहिले उन्होने उक्त संस्था के वार्पिकोत्सव मे वड़े चावसे भाग लिया था । हफ्तों पहले से वे उत्सव विपयक तैयारियो मे लगे हुए थे । उस अवसर पर एक छोटासा अभिनय भी किया गया था । उसकी सफलता अधिकांश मे श्री रामविलासजी की विशुद्ध सेवा-भावनाका ही फल थी ।

इनके अतिरिक्त वे सेठ साहव द्वारा स्थापित सान्ताक्रुज के 'सेठ आनदीलाल पोद्दार हाईस्कूल' तथा नवलगढ के 'सेठ ज्ञानीराम बसीधर पोद्दार हाईस्कूल' के संचालन मे वहुत दिलचस्पी लिया करते थे । नवलगढ हाईस्कूल का तो सारा प्रवंध उन्हीं के हाथ मे था । यद्यपि मैनेजर श्री रामदेवजी थे, पर सारा कार्य-भार श्री रामविलासजी पर ही था । उनके हाथ मे संचालन-भार आने से पहले उक्त संस्था की दशा अच्छी न थी । श्री रामविलासजी ने काम सम्हालते ही स्कूल की काया-

* वॉम्वे क्रॉनिकल—ता. १५ जुलाई १९३६

मनोविनोद

श्री रामविलासजी को स्कूल-जीवन मे ही खेलकूद का खूब शौक होगया था। वे स्कूल की स्काउट-मडली मे भरती होगये थे तथा स्काउटिंग (Scouting) के कार्यों मे दिलचस्पी लिया करते थे। स्कूल जीवन में वे क्रिकेट, फुटबॉल आदि खेलों मे भी भाग लिया करते थे। स्कूल मे कई टूर्नामेन्ट उनके प्रभाव से चालू हुई।

श्री रामविलासजी बड़े उत्तम खिलाड़ी थे। उनका सब से प्रिय खेल टेनिस था। उन्होने अपने सान्ताक्रुजवाले बंगले मे दो अति उत्तम टेनिसकोर्ट बनवा रक्खे थे। वहाँ वे श्री रामनाथजी तथा अपने मित्रो के साथ नियमपूर्वक प्रतिदिन टेनिस खेला करते थे। रविवार का दिन खास तौर पर इसी काम के लिए नियत था। बम्बई के अच्छे अच्छे खिलाड़ियो को बंगले पर आमंत्रित करने और उनके साथ खेलने के वे बड़े शौकीन थे। प्रायः ७ बजे सुबह से दो पहर के १ बजे तक मित्र-मडली टेनिस खेलती रहती और १ बजे बाद उन्हे दावत (Lunch) दी जाती। श्री रामविलासजी खिलाने पिलाने मे बड़े पटु थे और भिन्न भिन्न प्रकारके व्यक्तियो का उनकी रुचि के अनुसार स्वागत करना वे खूब जानते थे। जो भी कोई
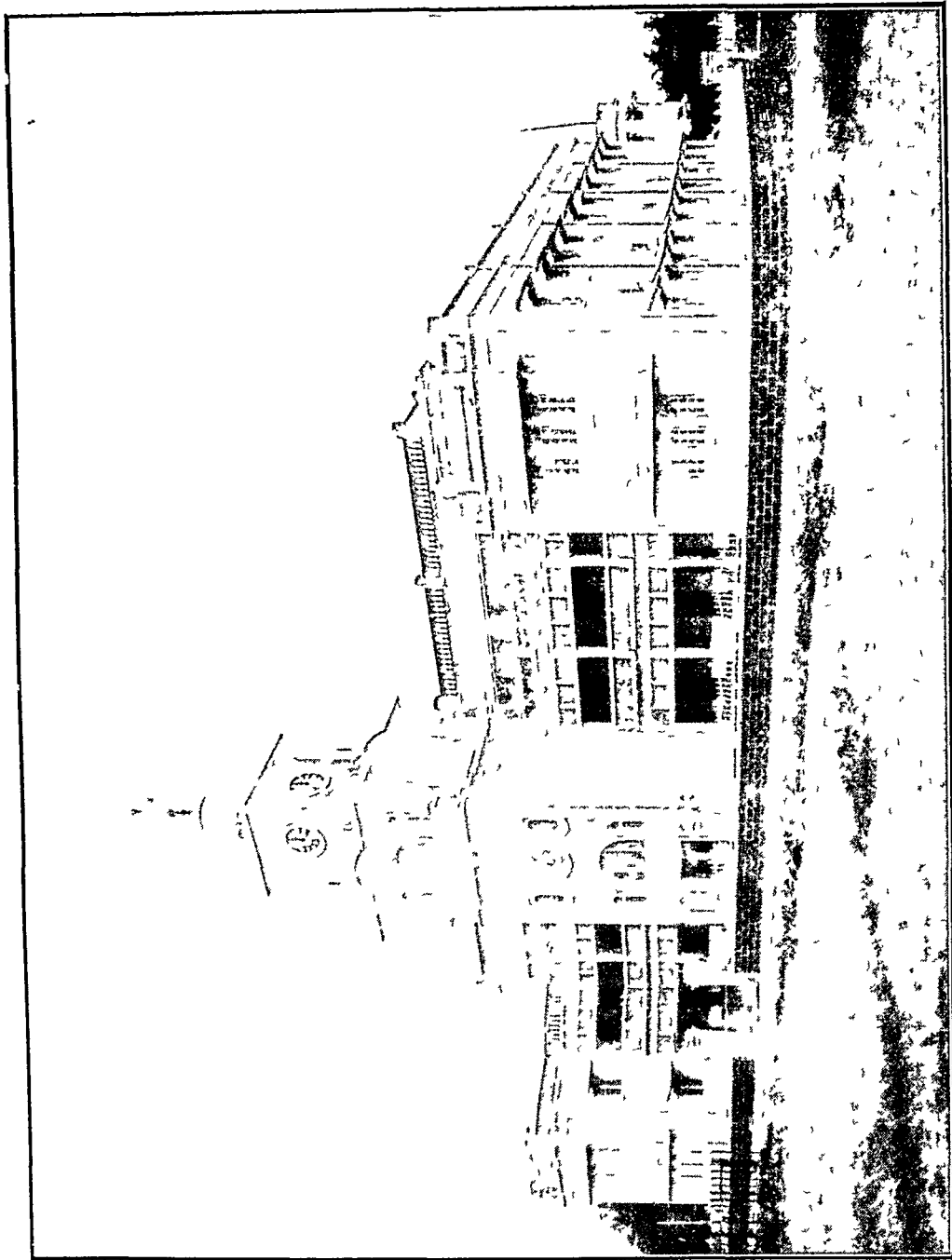
व्यवहार

श्री रामविलासजी का व्यवहार अत्यंत शुद्ध तथा निश्छल था। सब से छोटे होने के कारण बड़े भाइयो का उन पर अत्यधिक अनुराग था। उनकी प्रकृति ऐसी शात और समझ इतनी तेज थी कि उनका झगड़ा या अनबन कभी किसी से होती ही नहीं थी और कभी होती भी, तो पानी मे खेची हुई लकीर के समान शीघ्र ही मिट जाती थी। यद्यपि घर में वे सब से अधिक शिक्षित थे, पर उनमे गर्व की मात्रा बिल्कुल न थी। अपने से बड़ों का यथा-योग्य सम्मान करने मे वे कभी त्रुटि नहीं करते थे।

बच्चो के साथ तो उन्हे अत्यंत ही प्रेम था। बच्चे उनपर न्योछावर थे। वे नहाते तो एकाध बच्चे के साथ नहाते, भोजन करते तो एकाध को साथ बिठाते, सोते तो एकाध बच्चे को साथ सुलाए बिना उनका जी न भरता था। बच्चे दंगा करते, शोर करते, लड़ते, झगड़ते, पर उनके चेहरे पर कभी बल न पड़ता था। हमेशा वे हँसते रहते और उन्हे हँसाते रहते थे। बच्चो के शौक को पूरा करने के लिए उन्होने बँगले मे झूले, फिसलने के तख्ते, तैरने के लिए कुण्ड आदि बनवाये थे और
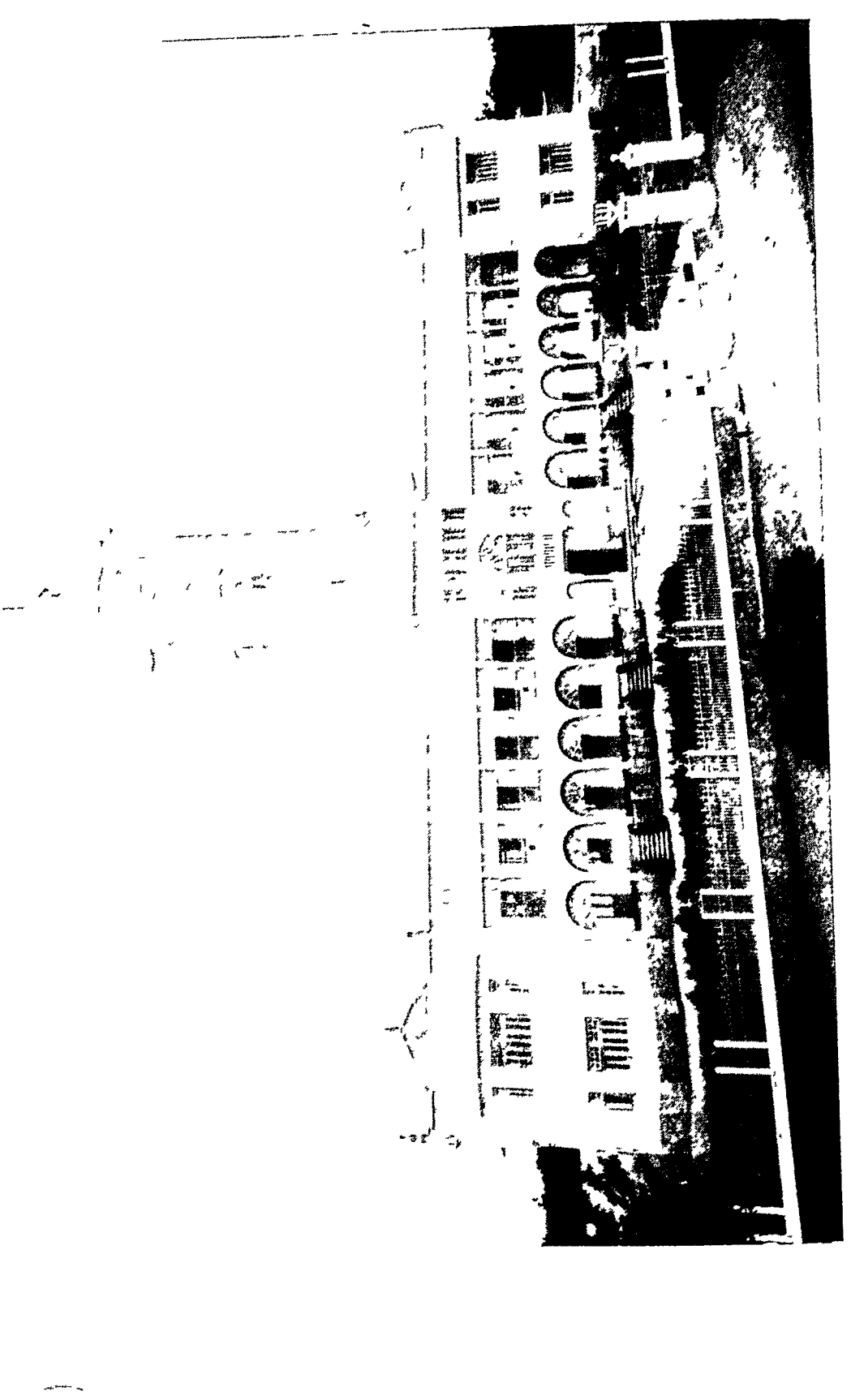
बाहर खुली हवा मे बच्चो को खिलाया करते थे। वे बच्चों के केवल मित्र और साथी ही न थे, न्यायाधीश तथा पच भी थे। बच्चों के सारे झगड़े-टंटे उनके पास आया करते थे। वे उनका फैसला हँसते हँसते कर दिया करते थे और दोनो पार्टियाँ फिर खेलकूद मे लग जातीं थीं। उनमे सब से बडी बात यह थी कि उनकी आत्मा, बालक की आत्मा की भाँति, शुद्ध तथा पवित्र थी, इसीलिये वे बालकों के साथ दूधपानी की तरह मिल जाते थे।

वे संसार को प्रेममय दृष्टि से देखते थे। प्रेम को ही ईश्वर मानते थे। इसी ध्येय से उन्होने अपना 'Motto' अर्थात् 'जीवन-सिद्धान्त' 'Love is God' अर्थात 'प्रेम ही ईश्वर है' रक्खा था।

मित्रों के साथ मे उनका व्यवहार बडा सरल तथा आत्मीयतापूर्ण होता था। उनके दुःख मे दुखी और सुख मे सुखी होना वे अपना कर्तव्य समझते थे। मित्रो के साथ रहने-सहने मे वे कभी इस बात का भान भी न होने देते थे कि वे स्वय एक बहुत संपन्न पिता की प्रिय संतान है। गरीब से गरीब मित्र से भी वे बड़ी सहृदयता और प्रेम से मिलते थे। दोस्तो के साथ बात बात मे विनोद करना, स्वयं जी खोलकर हँसना और उन्हे हँसाना उनके स्वभाव मे शामिल था। अपने मित्रोके साथ जैसा सरल, प्रेमपूर्ण तथा निष्कपट व्यवहार उनका था वह अवश्य ही युवको के लिए अनुकरणीय है।

मित्रों की बात तो जाने दीजिये, नये से नया आदमी भी जो उनसे एक बार मिल लेता था उन्हीं का हो जाता था। प्रत्येक व्यक्ति के प्रति वे इतनी सहानुभूति रखते थे कि उनके व्यवहार तथा प्रेम पर वह न्योछावर हो जाता था। किसी के प्रति उदासीन होना अथवा शत्रुता का बर्ताव करना तो उन्होने सीखा ही न था। वे यात्राओ को जाते या कहीं इधर उधर घूमने जाते तो जिन लोगो से भेट हो जाती, या जिनको ५–७ दिन भी श्री रामबिलासजी के साथ रहने का अवसर मिल जाता, वे

उनके सरल तथा सौम्य व्यक्तित्व से इतने आकर्षित हो जाते थे कि फिर कभी उन्हे न भूलते थे।

श्री रामविलासजी सदा दूसरो की सहायता मे तत्पर रहते थे। खास कर विद्यार्थियो की सहायता करने मे उन्हे बड़ा आनद आता था। गरीब विद्यार्थियों को पढाई की पुस्तके दिलवा देना, स्कूल या इम्तिहान की फीस दे देना, या अन्य प्रकार से उनकी मदद कर देना उनका नित्य का काम था। वे विद्यार्थियो की इतनी सहायता करते थे, पर दूसरो को कुछ भी ज्ञात नही होने देते थे। घरवालो तथा दोस्तो तक को इसका पता नहीं होने देते थे। उनके निधन पर आये हुए समवेदना-सूचक पत्रों से कुछ आभास होता है कि वे कितनों को छात्रवृत्तियाँ देते थे। एक छात्र की माता का पत्र आया है जिसमे वह लिखती है कि 'श्री रामविलासजी उसके पुत्र को यूरोप मे छात्रवृत्ति भेजा करते थे'। आश्चर्य की बात तो यह है कि अपने दैनिक तथा आवश्यक खर्चों से बचाकर वे अपने रु. १००) प्रतिमास के साधारण हाथ-खर्च मे से इतना रुपया किस तरह बचा लेते थे? इसका अर्थ यही है कि इतने सम्पन्न व्यक्ति होने पर भी उन्होने अपने व्यक्तिगत खर्च बहुत घटा रक्खे थे और वे अपनी सुविधा का विचार न कर दूसरो की सहायता को सदा तैयार रहते थे।

सेठ साहब का कारबार छोटा मोटा नहीं है। उनकी अधीनता मे सैकड़ो कर्मचारी काम करते है। श्री रामविलासजी के व्यापारमे प्रविष्ट होने के बाद से अधिकाश कर्मचारियो को उनके सम्पर्क मे आना पड़ता था और उनके आदेशानुसार ही काम करना पड़ता था। यद्यपि वे उचित सगठन तथा अनुशासन (discipline) के पक्षपाती थे, तथापि वे कड़ाई के स्थान मे मृदुता से ही काम लेना पसंद करते थे। यदि किसी कर्मचारी से भूल भी हो जाती तो वे बजाय डाटने फटकारने के, उसे समझा बुझा कर अपनी गल्ती सुधारने का बराबर मौका देते रहते थे।

उनके सरल तथा सौम्य व्यक्तित्व से इतने आकर्षित हो जाते थे कि फिर कभी उन्हे न भूलते थे।

श्री रामविलासजी सदा दूसरो की सहायता मे तत्पर रहते थे। ख़ास कर विद्यार्थियो की सहायता करने मे उन्हे बड़ा आनद आता था। गरीब विद्यार्थियों को पढाई की पुस्तके दिलवा देना, स्कूल या इम्तिहान की फीस दे देना, या अन्य प्रकार से उनकी मदद कर देना उनका नित्य का काम था। वे विद्यार्थियो की इतनी सहायता करते थे, पर दूसरो को कुछ भी ज्ञात नही होने देते थे। घरवालो तथा दोस्तो तक को इसका पता नहीं होने देते थे। उनके निधन पर आये हुए समवेदना-सूचक पत्रों से कुछ आभास होता है कि वे कितनों को छात्रवृत्तियाँ देते थे। एक छात्र की माता का पत्र आया है जिसमे वह लिखती है कि 'श्री रामविलासजी उसके पुत्र को यूरोप मे छात्रवृत्ति भेजा करते थे'। आश्चर्य की बात तो यह है कि अपने दैनिक तथा आवश्यक खर्चों से वचाकर वे अपने रु. १००) प्रतिमास के साधारण हाथ-खर्च मे से इतना रुपया किस तरह वचा लेते थे? इसका अर्थ यही है कि इतने सम्पन्न व्यक्ति होने पर भी उन्होने अपने व्यक्तिगत खर्च वहुत घटा रक्खे थे और वे अपनी सुविधा का विचार न कर दूसरो की सहायता को सदा तैयार रहते थे।

सेठ साहव का कारवार छोटा मोटा नहीं है। उनकी अधीनता मे सैकड़ो कर्मचारी काम करते है। श्री रामविलासजी के व्यापारमे प्रविष्ट होने के वाद से अधिकाश कर्मचारियो को उनके सम्पर्क मे आना पड़ता था और उनके आदेशानुसार ही काम करना पड़ता था। यद्यपि वे उचित सगठन तथा अनुशासन (discipline) के पक्षपाती थे, तथापि वे कड़ाई के स्थान मे मृदुता से ही काम लेना पसंद करते थे। यदि किसी कर्मचारी से भूल भी हो जाती तो वे वजाय डाटने फटकारने के, उसे समझा वुझा कर अपनी गल्ती सुधारने का वरावर मौका देते रहते थे।

उनके सरल तथा सौम्य व्यक्तित्व से इतने आकर्षित हो जाते थे कि फिर कभी उन्हे न भूलते थे।

श्री रामविलासजी सदा दूसरो की सहायता मे तत्पर रहते थे। ख़ास कर विद्यार्थियो की सहायता करने मे उन्हे बड़ा आनद आता था। गरीब विद्यार्थियो को पढाई की पुस्तके दिलवा देना, स्कूल या इम्तिहान की फीस दे देना, या अन्य प्रकार से उनकी मदद कर देना उनका नित्य का काम था। वे विद्यार्थियो की इतनी सहायता करते थे, पर दूसरो को कुछ भी ज्ञात नहीं होने देते थे। घरवालों तथा दोस्तो तक को इसका पता नहीं होने देते थे। उनके निधन पर आये हुए समवेदना-सूचक पत्रो से कुछ आभास होता है कि वे कितनो को छात्रवृत्तियाँ देते थे। एक छात्र की माता का पत्र आया है जिसमे वह लिखती है कि 'श्री रामविलासजी उसके पुत्र को यूरोप मे छात्रवृत्ति भेजा करते थे'। आश्चर्य की बात तो यह है कि अपने दैनिक तथा आवश्यक खर्चों से बचाकर वे अपने रु. १००) प्रतिमास के साधारण हाथ-खर्च में से इतना रुपया किस तरह बचा लेते थे? इसका अर्थ यही है कि इतने सम्पन्न व्यक्ति होने पर भी उन्होने अपने व्यक्तिगत खर्च बहुत घटा रक्खे थे और वे अपनी सुविधा का विचार न कर दूसरो की सहायता को सदा तैयार रहते थे।

सेठ साहब का कारबार छोटा मोटा नहीं है। उनकी अधीनता मे सैकड़ों कर्मचारी काम करते है। श्री रामविलासजी के व्यापारमे प्रविष्ट होने के बाद से अधिकाश कर्मचारियो को उनके सम्पर्क मे आना पडता था और उनके आदेशानुसार ही काम करना पड़ता था। यद्यपि वे उचित सगठन तथा अनुशासन (discipline) के पक्षपाती थे, तथापि वे कड़ाई के स्थान मे मृदुता से ही काम लेना पसंद करते थे। यदि किसी कर्मचारी से भूल भी हो जाती तो वे बजाय डाटने फटकारने के, उसे समझा बुझा कर अपनी गल्ती सुधारने का बराबर मौका देते रहते थे।

बहुतसे अधिकार तथा धन के मद से मत्त व्यक्तियो मे दर्प, चिड़चिड़ेपन और अकारण क्रोध की मात्रा बहुत अधिक बढ जाया करती है और वे मनुष्य को भुनगे के बराबर समझने लगते हैं। मानवीय कमजोरियो के समझने की शक्ति उनके मस्तिष्क मे से निकल जाती है, परन्तु श्री रामबिलासजी मे उक्त दुर्गुण जरा भी न थे। वे यह समझते थे कि कर्मचारीगण मशीन नहीं है किन्तु उन्हीं की भाँति हाड़-मास के पुतले हैं। वे इस तत्त्व को भली-भाँति जानते थे कि काम कठोरता से भी लिया जा सकता है और मृदुता से भी, पर कठोरता से काम लेने मे काम लेने-वाले और देनेवाले दोनो का चित्त अशात, उद्विग्न और असंतुष्ट रहता है। इसके विपरीत दृढता-मिश्रित मृदुता से काम लेने मे काम लेने-वाली आत्मा शान्ति का अनुभव करती है और काम करनेवालों के हृदय मे उत्साह तथा प्रसन्नता रहती है और काम अच्छा होता है। इसी प्रकार नौकर-चाकरो के प्रति भी उनका बर्ताव सदा दयापूर्ण रहता था।

दुर्घटना

सेठ साहब का परिवार इस समय पूर्णतया सुखी था। सब प्रकार का ऐश्वर्य उनको प्राप्त था। चारो पुत्र युवा तथा विवाहित थे। गत सात वर्ष से सेठ साहब ने क्रियात्मक जीवन से अवकाश ग्रहण कर लिया था और अधिकतर यात्रा आदि मे संलग्न रहते थे। फर्म का सारा कार्य-भार पुत्रो पर ही था और वे लोग सुचारु-रूप से उसे चला रहे थे। सेठ साहब, पौत्र तथा पौत्रियों के मुख भी देख चुके थे। सारांश यह है कि सेठ साहब तथा सेठानीजी का जीवन सांसारिक दृष्टि से पूरी तरह सुखी था। सेठानीजी तो बड़े संतोप से कहा करती थीं कि अब मुझे किसी बात की इच्छा नहीं है। अब तो मेरी एक मात्र अभिलाषा यही है कि पूज्य पतिदेव के समक्ष ही मै चारो पुत्रो के कंधोंपर इस संसार से चली जाऊ। पर हा! किसे ज्ञात था कि माता को कंधादेनेवाले पुत्र चार मे से तीन ही रह जाँयगे और उनमे सब से होनहार तथा प्रिय पुत्र माता के स्वागतार्थ उनके आगे कुछ ही घटो पूर्व स्वर्ग को चला जायगा? निःसदेह भाग्य एक चक्र के समान है। जहाँ हम आज आल्हाद का सागर उमड़ता हुआ देखते है, कौन जानता है कल वहाँ शोक के बादल

उनके सरल तथा सौम्य व्यक्तित्व से इतने आकर्षित हो जाते थे कि फिर कभी उन्हे न भूलते थे।

श्री रामविलासजी सदा दूसरो की सहायता मे तत्पर रहते थे। ख़ास कर विद्यार्थियो की सहायता करने मे उन्हे बड़ा आनद आता था। गरीब विद्यार्थियो को पढाई की पुस्तके दिलवा देना, स्कूल या इम्तिहान की फीस दे देना, या अन्य प्रकार से उनकी मदद कर देना उनका नित्य का काम था। वे विद्यार्थियो की इतनी सहायता करते थे, पर दूसरो को कुछ भी ज्ञात नहीं होने देते थे। घरवालों तथा दोस्तो तक को इसका पता नहीं होने देते थे। उनके निधन पर आये हुए समवेदना-सूचक पत्रो से कुछ आभास होता है कि वे कितनो को छात्रवृत्तियाँ देते थे। एक छात्र की माता का पत्र आया है जिसमे वह लिखती है कि 'श्री रामविलासजी उसके पुत्र को यूरोप मे छात्रवृत्ति भेजा करते थे'। आश्चर्य की वात तो यह है कि अपने दैनिक तथा आवश्यक खर्चों से वचाकर वे अपने रु. १००) प्रतिमास के साधारण हाथ-खर्च में से इतना रुपया किस तरह वचा लेते थे? इसका अर्थ यही है कि इतने सम्पन्न व्यक्ति होने पर भी उन्होंने अपने व्यक्तिगत खर्च वहुत घटा रक्खे थे और वे अपनी सुविधा का विचार न कर दूसरो की सहायता को सदा तैयार रहते थे।

सेठ साहव का कारवार छोटा मोटा नहीं है। उनकी अधीनता मे सैकड़ों कर्मचारी काम करते है। श्री रामविलासजी के व्यापारमे प्रविष्ट होने के वाद से अधिकाश कर्मचारियो को उनके सम्पर्क मे आना पडता था और उनके आदेशानुसार ही काम करना पड़ता था। यद्यपि वे उचित सगठन तथा अनुशासन (discipline) के पक्षपाती थे, तथापि वे कड़ाई के स्थान मे मृदुता से ही काम लेना पसंद करते थे। यदि किसी कर्मचारी से भूल भी हो जाती तो वे वजाय डाटने फटकारने के, उसे समझा वुझा कर अपनी गल्ती सुधारने का वरावर मौका देते रहते थे।

गया कि नगर भर के सारे ब्राह्मणो को नावाँ और थली अर्थात् भोजन-सामग्री तथा दक्षिणा बाँटी जाय और नगर के सभी मन्दिरो मे भोजन सामग्री भी उन्ही की ओर से बाँटी जाय।

ऐसा अनुमान किया जाता था कि ६ जुलाई का दिन उनके जीवन का अन्तिम दिन होगा अतः सेठ साहब तथा श्री रामदेवजी आदि सभी पुत्र उस दिन ऑफिस नहीं गये और घर पर ही उनकी अन्तिम शुश्रूषा मे लगे रहे। सब के हृदय मे ईश्वर-भक्ति का संचार हो रहा था। लगभग सभी माताजी के कमरे मे बैठे हुए थे। धार्मिक-ग्रन्थों का पाठ हो रहा था। श्रावण का प्रथम सोमवार होने के कारण अधिकाश व्यक्तियो ने व्रत रक्खा था और स्थानीय श्री लक्ष्मीनारायण के मन्दिर मे उनकी ओर से ही राजभोग लगाया गया था। इस प्रकार वह दिन परिवार के व्यक्तियो के लिए अधिकाधिक पवित्र होता जा रहा था।

पर 'जब तक साँस तब तक आस' वाली कहावत के अनुसार स्वभावतः ही घरवालों की यह इच्छा थी कि वैद्यराज पं० हरिप्रपन्नजी को उसी समय बुलवा लिया जाय। वे गत रात्रि को वहीं थे और सुबह कुछ घंटो के लिए बम्बई चले गये थे। उसी दिन सुबह प० बैजनाथजी मिश्र जो नवलगढ मे पोद्दार-परिवार के पुराने वैद्य है, करीब ९ बजे नवलगढ से आगये थे और माताजी की देखभाल कर रहे थे। दोपहर के लगभग १॥ बजे दूकान से एक टेलीफोन व्यापार-सम्बन्धी किसी आवश्यक कार्य के विषयमे आदेश माँगने के लिए हुआ। श्री रामदेवजी की इच्छा थी कि टेलीफोन द्वारा उन दोनो बातो के लिए कह दिया जाय, पर श्री रामविलासजी बोले 'मे अभी जाता हूँ और एक डेढ घंटे के भीतर ही वे दोनो काम कर आता हूँ'। श्री रामदेवजी की इच्छा न तो उन्हे भेजने की ही थी और न उन्होने श्री रामविलासजी को रोका ही। सेठ साहब ने प्रश्नसूचक दृष्टि से श्री रामविलासजी की ओर देखा। रामविलासजी ने केवल इतना ही कहा कि मैं अभी एक घंटे मे वापिस

बहुतसे अधिकार तथा धन के मद से मत्त व्यक्तियो मे दर्प, चिड़चिडेपन और अकारण क्रोध की मात्रा बहुत अधिक बढ जाया करती है और वे मनुष्य को भुनगे के बरावर समझने लगते हैं। मानवीय कमजोरियो के समझने की शक्ति उनके मस्तिष्क मे से निकल जाती है, परन्तु श्री रामबिलासजी मे उक्त दुर्गुण जरा भी न थे। वे यह समझते थे कि कर्मचारीगण मशीन नहीं है किन्तु उन्हीं की भाँति हाड़-मास के पुतले है। वे इस तत्त्व को भली-भाँति जानते थे कि काम कठोरता से भी लिया जा सकता है और मृदुता से भी, पर कठोरता से काम लेने मे काम लेने-वाले और देनेवाले दोनो का चित्त अशात, उद्विग्न और असंतुष्ट रहता है। इसके विपरीत दृढता-मिश्रित मृदुता से काम लेने मे काम लेने-वाली आत्मा शान्ति का अनुभव करती है और काम करनेवालो के हृदय मे उत्साह तथा प्रसन्नता रहती है और काम अच्छा होता है। इसी प्रकार नौकर-चाकरो के प्रति भी उनका बर्ताव सदा दयापूर्ण रहता था।

दुर्घटना

सेठ साहब का परिवार इस समय पूर्णतया सुखी था। सब प्रकार का ऐश्वर्य उनको प्राप्त था। चारो पुत्र युवा तथा विवाहित थे। गत सात वर्ष से सेठ साहब ने क्रियात्मक जीवन से अवकाश ग्रहण कर लिया था और अधिकतर यात्रा आदि मे संलग्न रहते थे। फर्म का सारा कार्य-भार पुत्रो पर ही था और वे लोग सुचारु-रूप से उसे चला रहे थे। सेठ साहब, पौत्र तथा पौत्रियों के मुख भी देख चुके थे। सारांश यह है कि सेठ साहब तथा सेठानीजी का जीवन सांसारिक दृष्टि से पूरी तरह सुखी था। सेठानीजी तो बड़े संतोप से कहा करती थीं कि अब मुझे किसी बात की इच्छा नहीं है। अब तो मेरी एक मात्र अभिलाषा यही है कि पूज्य पतिदेव के समक्ष ही मै चारो पुत्रो के कंधोंपर इस संसार से चली जाऊ। पर हा ! किसे ज्ञात था कि माता को कंधादेनेवाले पुत्र चार मे से तीन ही रह जॉयगे और उनमे सब से होनहार तथा प्रिय पुत्र माता के स्वागतार्थ उनके आगे कुछ ही घंटो पूर्व स्वर्ग को चला जायगा ? निःसदेह भाग्य एक चक्र के समान है। जहाँ हम आज आल्हाद का सागर उमड़ता हुआ देखते है, कौन जानता है कल वहाँ शोक के बादल

अनुमानतः मोटर के गिरने के बाद ही दोनों व्यक्ति—श्री रामविलासजी तथा ड्राइवर—मोटर से बाहर निकल आये और पानी मे डुबकियाँ खाने लगे। इनकी मोटर के आगे आगे ही एक इञ्जीनियर की मोटर जा रही थी। एक लड़का दूसरी ओर से आ रहा था, उसने जब श्री रामविलास जी की मोटर को उछलते और समुद्र मे गिरते देखा तो इञ्जीनियर की मोटर को रुकवाकर उससे बोला—"देखो एक मोटर अभी-अभी समुद्र मे गिर पडी"। मोटरवाले अपनी मोटरको लेकर इस ओर आये और उन्होने श्री रामविलासजी तथा ड्राइवरको पानी मे देखा तो अपना साफा उनकी सहायता के लिये फेका। पर अफसोस ! साफा छोटा होने के कारण उन तक नहीं पहुँच सका। हा! ईश्वर को जब कुछ बुरा करना होता है, तो वह उसके सौ बहाने बना देता है। जब साफा उन तक न पहुँच सका तो लोग दौड़ कर पास से रस्सियाँ लाए और उन्होंने रस्सियाँ उनकी ओर फेकी। दैव का विधान कैसा विचित्र है कि वह रस्सी ड्राइवर के तो हाथ मे आगई, पर श्री रामविलासजी के हाथ मे न आई। लोगो ने ड्राइवर को चिल्लाचिल्लाकर तथा इशारे से बतलाया कि रस्सी को उधर की ओर भी फेक दे, पर हम लोगो का दुर्भाग्य उसे क्यो सुनने देता? उतनी ही देर मे श्री रामविलासजी के शरीर का दिखना भी बन्द होगया, शायद वे पानीमे डूब गये। कराल-कालने अपना काम कर दिखाया और उस ठंडी आग ने उन्हे भस्मीभूत कर दिया।

उधर वह दुर्घटना घट रही थी, इधर माताजी बेहोश पड़ी थीं। ठीक २ बजेके आसपास, जब वह दुर्घटना हुई, धर्म-प्राण माताजी, जो ३० घंटेसे मूर्छा मे थीं, एकदम चीख उठी। उनका चीखना सुनते ही श्री रामनाथजी, जो बराबर के कमरे मे बैठे हुए रामायण का पाठ कर रहे थे, एकदम दौड़ कर आये। माताजी की आँखे मूर्छा-कालमे बराबर बंद थीं, पर इस समय उनकी दाहिनी आँख खुल गई और उसमेसे एक ऐसा

छाए हुए दिखाई दे। ऐसी ही विषादपूर्ण घटना का वर्णन हमे पाठकों के सामने करना पड़ेगा।

कुछ समय से पूज्य माताजी की बाई बगल मे कॅन्सर (cancer) हो गया था और वह धीरे धीरे बढ रहा था, पर माताजी को इसकी कुछ भी चिन्ता न थी, क्योकि वे तो इस असार-संसार से जाने को सन्नद्ध थीं ही। इसीलिए शायद वे उचित तथा आवश्यक परिचर्या से भी विमुख रहीं। इस वर्ष के मई मास से उनका रोग इतना बढ चला कि कुटुम्बीजनोने उनके जीवन की आशा छोड़ दी। जुलाई मास के प्रारंभ से तो वे अब तब हो रही थीं। उनकी जीवन-नैया क्षितिज के उसपार की ओर अबाध गति से बढती जा रही थी। जब उन्होने समझ लिया कि मेरा अन्तिम समय निकट आ रहा है, तब पुत्री, पोतियो आदि को जो उन्हे देना था वह दे दिया। इस अवसर पर वे सार्वजनिक संस्थाओ, सम्बधियो, रिश्ते-दारो, नौकरो, गायो, कबूतरो, भूखो आदि किसी को भी न भूली और सब के लिए यथा-योग्य दान आदि निश्चित कर दिया। घरवालो ने भी उनके निमित्त हजारो रुपये के दान का संकल्प लिया[1]। पुत्रों, पुत्र-वधुओ, पौत्रो तथा पौत्रियो को उन्होने आशीर्वाद तथा अतिम उपदेश दिया और ५ जुलाई की रात्रि से वे ऐसी समाधि मे मग्न हुई—उन्हे ऐसी मूर्छा आई कि फिर कभी होश न हुआ।

उनकी इस अवस्था को देखकर सेठ साहब ने अन्तिम समय के दान-पुण्य यथा रीति आरम्भ कर दिये। नवलगढ की हवेली पर भी तार भेज दिया

---

१ **नोट**—घरवालोने अलग अलग उनके निमित्त दानके जो सकल्प लिये उनके अतिरिक्त फर्मकी ओरसे उनके निमित्त रु ५००००) के सकल्प लिये गये। इनमेंसे २५ हजार रुपयों की लागतसे तो उनके नामसे एक 'हॉस्पिटल तथा प्रसूतिका गृह' (Hospital and Maternity Home) बनाया जायगा और २५ हजार रुपयों की लागतसे सान्ताक्रुज के 'सेठ आनन्दीलाल पोदार हाईस्कूल'के अन्तर्गत एक विशेष भवन निर्माण किया जायगा।

गया कि नगर भर के सारे ब्राह्मणो को नावँा और थली अर्थात् भोजन-सामग्री तथा दक्षिणा बाँटी जाय और नगर के सभी मन्दिरो मे भोजन सामग्री भी उन्ही की ओर से बाँटी जाय।

ऐसा अनुमान किया जाता था कि ६ जुलाई का दिन उनके जीवन का अन्तिम दिन होगा अतः सेठ साहब तथा श्री रामदेवजी आदि सभी पुत्र उस दिन ऑफिस नहीं गये और घर पर ही उनकी अन्तिम शुश्रूषा मे लगे रहे। सब के हृदय मे ईश्वर-भक्ति का संचार हो रहा था। लगभग सभी माताजी के कमरे मे बैठे हुए थे। धार्मिक-ग्रन्थों का पाठ हो रहा था। श्रावण का प्रथम सोमवार होने के कारण अधिकाश व्यक्तियो ने व्रत रक्खा था और स्थानीय श्री लक्ष्मीनारायण के मन्दिर मे उनकी ओर से ही राजभोग लगाया गया था। इस प्रकार वह दिन परिवार के व्यक्तियो के लिए अधिकाधिक पवित्र होता जा रहा था।

पर 'जब तक साँस तब तक आस' वाली कहावत के अनुसार स्वभावतः ही घरवालों की यह इच्छा थी कि वैद्यराज पं० हरिप्रपन्नजी को उसी समय बुलवा लिया जाय। वे गत रात्रि को वहीं थे और सुबह कुछ घंटो के लिए बम्बई चले गये थे। उसी दिन सुबह प० बैजनाथजी मिश्र जो नवलगढ मे पोदार-परिवार के पुराने वैद्य है, करीब ९ बजे नवलगढ से आगये थे और माताजी की देखभाल कर रहे थे। दोपहर के लगभग १॥ बजे दूकान से एक टेलीफोन व्यापार-सम्बन्धी किसी आवश्यक कार्य के विषयमे आदेश माँगने के लिए हुआ। श्री रामदेवजी की इच्छा थी कि टेलीफोन द्वारा उन दोनो बातो के लिए कह दिया जाय, पर श्री रामविलासजी बोले 'मे अभी जाता हूँ और एक डेढ घंटे के भीतर ही वे दोनो काम कर आता हूँ'। श्री रामदेवजी की इच्छा न तो उन्हे भेजने की ही थी और न उन्होने श्री रामविलासजी को रोका ही। सेठ साहब ने प्रश्नसूचक दृष्टि से श्री रामविलासजी की ओर देखा। रामविलासजी ने केवल इतना ही कहा कि मैं अभी एक घंटे मे वापिस

शरीर डूबने के कुछ काल बाद अपने आप ही ऊपर आ गया और लहरो द्वारा किनारे लगने पर बाहर निकाल लिया गया। डाक्टरों ने हृदयमे तीन इन्जेक्शन भी दिये पर सब बेकार। दैव को यह दिन दिखाना मजूर था, इन्जेक्शन आदि का क्यो असर होता?

नियमानुसार शव को लेकर श्री रामनाथजी कारोनर के यहाँ गये। भयङ्कर शोक की ज्वाला मे उनके आँसू जल चुके थे, पर हृदय को वज्र बना कर वे उक्त सब कार्य कर रहे थे। श्री नरीमान के प्रयत्नों से वह शव उन्हे कुछ ही समय मे मिल गया। वे उसे लेकर सांताक्रुज की ओर आये।

इधर, उतनी देर मे तो यह कुसमाचार बिजली की तरह सारी बम्बई मे फैल गया और व्यापारी समाज शोकमग्न हो गया। कितने ही व्यापारी बाजार उसी समय बन्द हो गये और बड़े बड़े व्यापारी, अन्य धनिक तथा पोद्दार-वंश से कुछ भी सम्बन्ध रखनेवाले लोग हजारो की संख्या मे वहाँ एकत्रित हो गये। सबकी आँखो से चौधारे आँसू बह रहे थे। लोग शोक के मारे आपा खो बैठे थे। जब बाहरवालो की यह दशा थी, तो घरवालो तथा अभिन्न-हृदय मित्रो की क्या हालत होगी; इसका अनुमान पाठक स्वयम् कर सकते है। इसका वर्णन कर सकना असंभव है।

आखिर छाती पर पत्थर रख कर सारी लौकिक रीतियाँ करनी ही पड़ीं। जिस शरीर को इतने लाड़ प्यार और चाव से पाला था, जिसे गोदी मे इतने प्रेम से खिलाया था, जिसके उज्वल-भविष्य पर परिवार को इतनी आशाएँ थी, उसे अग्निदेव के हवाले कर क्षारवत् कर दिया गया।

उसी रात्रि को १ बजे के लगभग माताजी का देहान्त हो गया। माताजी कहा करती थीं कि मैं सब प्रकार का सुख देख चुकी हूँ अतः मेरे मरने के बाद कोई शोक न करना। साधारण अवस्था मे यह कब सम्भव था कि इतनी धर्मात्मा तथा सरल स्वभावा देवी के शरीर-त्याग पर घरवालो को शोक न हो? पर ईश्वर की लीला कैसी विचित्र है! उसने

ऊर्म्मि-विलास

१

जीवन-सागर में आती है,
चल अनन्त से ऊर्म्मि अपार।
इठलाती रंगरेली करती,
दिखलाती यौवन-व्यापार।
"आनँद" के मध्य-गगन मे,
प्रगटी विलास की किरणे।
क्रीड़ा करती कंचन से,
फैलीं जग के प्राङ्गण में॥

२

प्रणय के सुन्दर सुमनों का,
गूँथ कर एक मनोहर हार।
"ज्ञानवती" ऊषादेवी थी,
खड़ी हुई लेकर उपहार।
उषा को गाढ़ालिङ्गन में,
भानु ने बद्ध किया नभ में।
उषा ने हो विलीन रवि में,
वार सर्वस्व दिया क्षण मे॥

३

आशाने नयनों में जल भर,
किया योग्य स्वागत सत्कार।
कुसुमालङ्कृत जीवन-पथ में,
किया भानु ने मुदित प्रसार।
हर्ष की दुंदुभि थी नभ में,
नाद कलकलित हुआ वन में
प्रेममय तान छिड़ी घर में,
माङ्गलिक वाद्य बजे जग मे॥

४

अप्राची के जलनिधि तल से,
उठा मेघ भूधर आकार।
विद्युत् गतिसे बढ़कर नभ में,
ग्रसित कर लिया रवि सुकुमार॥
"आनँद" के सान्ध्य-गगन में,
फैलीं विषाद की लपटें।
फिर हुआ अँधेरा नभ मे,
जग डूब गया तब तम में॥

५

जीवन-सागरमे आती है,
चल अनन्त से ऊर्म्मि अपार।
काल-वायु से प्रेरित जाती,
फिर सत्वर अनन्त के द्वार॥

—श्री जवाहिरलाल जैन, एम्. ए., विशारद

क्या तरसाता है विलास ! तू
तेरा था यह काम नहीं ।
क्या दुनिया में अपने भी यों
हो जाते हैं वाम कहीं ?

तू हँसने को ही था जन्मा
और हँसाता था सबको ।
तुझसे लोगोंको दुख हो क्यों ?
और रुलाये क्यों सबको ?

सुख लेकर तू चला गया,
हम सुखको खोकर आवेंगे ।
दुख देकर तू चला गया,
हम दुखको लेकर आवेंगे ॥

देव ! तुम्हें क्या यही सुहाया
प्रिय विलास को छीन लिया ?
हम लोगों के जीवनकी
ज्योती से हमको हीन किया।

किसको करूँ मैं प्रेम जग में,
चाहना किसकी करूँ ?
जिस एक को था दिल दिया,
वह चल दिया, अब क्या करूँ ?

दर्दे दिल की आहको
कोई भला क्यों कर सुने ?
वेदनाकी इस धधकती
आग में क्यों कर भुने ?

—'अभिन्न-हृदय'

लोक-प्रकाशन

कुँ० रामविलासजी के असामयिक देहावसान की सूचना जिसे भी मिली वह समवेदना के आँसू बहाए बिना न रहा। चिट्ठियों, तारों आदि का ताँता बँध गया। जान अनजान सभी ने पोद्दार-परिवार की इस दारुण व्यथा में हाथ बँटाने का प्रयत्न किया। उन हज़ारों पत्रों में से कुछ इस तरह के पत्र, पाठकों की जानकारी के लिए दिये जाते हैं, जिनसे कुँ० रामविलासजी के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है और लोगों की सहानुभूति की गहराई का पता लगता है।

—सम्पादक

हा ! रामबिलास !!

मित्र-मण्डली, परिजन, पत्नी, वृद्ध-पिता का भी तज ध्यान।
' गमन ' किया जननी-सेवा-हित, सबसे गुरुतम उसको मान ॥
निज-परिजन-जीवन-नौका के, तुम थे एक मात्र पतवार।
गृहोद्यान के विकसित पंकज, ज्ञानवती-कण्ठों के हार ॥
प्रिय ' बिलास,' तव सौम्य-मूर्ति को, कैसे जावेंगे हम भूल ?
स्मृति तुम्हारी नित्य रहेगी, हृदय दुखाती बनकर शूल ॥
शील, साधुता और सरलता, सद्गुण-खनि हे रामबिलास !
प्रेम-मूर्ति हो, प्रेम तोड़ यों, सहसा क्यों कर गये निराश ?

*　　　*　　　*

शक्तिहीन है मानव इसमें, है अबाध विधि की गति वाम।
भाग्य कोस कर रहना पड़ता, किसी भाँतिसे उर को थाम ॥
ईश्वरसे है विनय तुम्हे वह देवे, अटल शान्ति का दान।
शोक-दग्ध-परिवार जनों को, सहन-शक्ति वह करे प्रदान ॥

—पं० देवीप्रसाद शर्मा, विशारद

Bangalore,

13th July, 1936.

My dear Seth Anandilalji,

I was shocked to read the heart-rending news about the fatal accident your beloved son met with I have sent you a message of condolence, but since then I am extremely grieved to know that your misfortune has not ended there and that the shock proved too severe for your wife who followed her son in no time I know, no words can bring any solace in such terrible sad bereavements. **They say misfortunes never come alone But remember, no king nor nation one moment can retard the appointed hour. God's finger touched them and they slept It is too tragic indeed** All the same it is a circumstance over which man has no control and there is no way out of it except to resign to the Divine Will and try to find consolation in the thought of ultimate goodness of His intentions. **Life's race well run, life's work well done, life's crown well won, now comes the rest.**

Let me hope the same Supreme Power will grant you strength, courage and power to bear this shock with fortitude

The sad news as it appeared in the paper was very brief, and I was wondering how the tragic accident took place

With our renewed expressions of deep sympathy,

Yours sincerely,
Rajendra Singh
(His Highness The
Maharajrana of Jhalawad).

कुँ० रामविलासजी के असामयिक देहावसान की सूचना जिसे भी मिली वह समवेदना के आँसू बहाए बिना न रहा। चिट्ठियों, तारों आदि का ताँता बँध गया। जान अनजान सभी ने पोद्दार-परिवार की इस दारुण व्यथा में हाथ बँटाने का प्रयत्न किया। उन हज़ारों पत्रों में से कुछ इस तरह के पत्र, पाठकों की जानकारी के लिए दिये जाते हैं, जिनसे कुँ० रामविलासजी के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है और लोगों की सहानुभूति की गहराई का पता लगता है।

—सम्पादक

Palanpur, 9th July, 1936.

Dear Sheth Anandilal,

It was with extreme pain that I read in the papers about the tragic death of your son in a motor accident, as well as by the cruelty of a sea wave Such a young and promising man has been carried away in the prime of life Even his mother, to save whom he was rushing to Bombay, expired a day after him So this has been a double misfortune for you May God give you strength to bear this

I know you only by name and not in person, but your beneficent work in Santa Cruz and also in Harijan Cause is so well-known that I write this letter without any apology. May the souls of both the mother and the son rest in peace.

Yours sincerely,

A V Thakkar.

"Deeply distressed over Rambilas' death under tragic circumstances My condolences, bereaved relatives

Gandhi "

"Deeply grieved to hear of your heart rending bereavement May God sooth you and your family in your sorrow

Malaviya "

Osaka, 7th July, 1936

Dear Mr Anandilal Podar,

It is really a shocking and heart-rending news for me that I have this morning received a telegram from Mr Y. Mayada informing me of your youngest son's most unfortunate death occurred in the motor accident yesterday noon I heartily sympathise with all your family in this sorrowful bereavement, and I cannot find any word to express my heart-felt condolence for this unbearable loss, and I pray to God to protect you in this most trying destiny while eternal peace and rest may be given to the soul of Mr. Rambilas

Indeed, I am feeling the same grief and sorrow as I lost one of my family members.

With most profound grief and sorrow,

Yours sincerely,

T Sasakura.

Bangalore,
13th July, 1936.

My dear Seth Anandilalji,

I was shocked to read the heart-rending news about the fatal accident your beloved son met with I have sent you a message of condolence, but since then I am extremely grieved to know that your misfortune has not ended there and that the shock proved too severe for your wife who followed her son in no time I know, no words can bring any solace in such terrible sad bereavements. They say misfortunes never come alone **But remember, no king nor nation one moment can retard the appointed hour. God's finger touched them and they slept It is too tragic indeed** All the same it is a circumstance over which man has no control and there is no way out of it except to resign to the Divine Will and try to find consolation in the thought of ultimate goodness of His intentions. **Life's race well run, life's work well done, life's crown well won, now comes the rest.**

Let me hope the same Supreme Power will grant you strength, courage and power to bear this shock with fortitude

The sad news as it appeared in the paper was very brief, and I was wondering how the tragic accident took place

With our renewed expressions of deep sympathy,

Yours sincerely,
Rajendra Singh
(His Highness The
Maharajrana of Jhalawad).

Ajmer, *July, 9, 1936.*

Dear Seth Sahib,

I was extremely shocked to learn of the tragic and heart-breaking sudden death of your youngest son by a motor accident The late Kunwar Ram Bilas was a promising youth of our community with exceptional progressive views. His death is a serious irreparable loss not only to your friends but to the whole community. His charming personality had endeared him to all those who came in contact with him.

I sincerely sympathise with you in the saddest calamity that has befallen you and your family at this old age. May God give you courage to bear the deepest unhealable wound and peace to the departed soul who lost his life as a dutiful son of his darling mother who followed him!

Sympathising with you again for the saddest losses followed by that of your beloved wife

Dear Ramdeoji,

I have no words to console you. This is a serious irreparable loss, but you understand full well that it was God's will and what is ordained must happen Man cannot help it or have any say in it The whole community mourns the loss Kindly keep strength and console your worthy aged father and the whole family

I have come here for a change of climate, and I will call on you as soon as I am back again to Bombay.

Yours sincerely,
Motilal N. Agrawal.

Bombay,
Date, 3rd August, 1936.

Dear Seth Anandilal Podar,

Thanks for your letter of appreciation for my humble efforts to rescue the valuable life of your beloved son I wish our efforts had been successful and his precious life had been saved, because **I was looking forward to a time, when this young citizen would have been an asset to our city and would have also given his contribution for the regeneration and redemption of this country However, God destined otherwise, and we are to submit to His superior will.** I hope in course of time some suitable memorial will be set up which may even partially give effect to his great desire to render some public service, particularly in the direction of literacy and education amongst the masses For the present we can only pray for the ever lasting peace to his soul, and may God give you and other members of this family and the most unfortunate widow sufficient strength and courage to bear this terrible calamity

With kind regards,

Yours sincerely,
K F. Nariman.

Bombay, 7th July, 1936.

Dear Seth Anandilal Podar,

It was a terrible shock to me to hear yesterday afternoon of the dreadful news of your son's sad death As you know, I had had the privilege of knowing Mr Rambilas for several years, and have always been charmed by his pleasant manners, which made him beloved and respected by all those with whom he came in contact On the top of this blow, I now hear that you have just suffered a further cruel loss in the loss of your wife.

Would you please allow me to tender you, my dear Seth Anandilal Podar, my very sincere and very humble sympathy in your terrible bereavement? I should esteem it a great favour if you would also pass on my message to the young widow of your dear son

Yours sincerely,
G A H Korts.

Palanpur, 9th July, 1936.

Dear Sheth Anandilal,

It was with extreme pain that I read in the papers about the tragic death of your son in a motor accident, as well as by the cruelty of a sea wave Such a young and promising man has been carried away in the prime of life Even his mother, to save whom he was rushing to Bombay, expired a day after him So this has been a double misfortune for you May God give you strength to bear this

I know you only by name and not in person, but your beneficent work in Santa Cruz and also in Harijan Cause is so well-known that I write this letter without any apology. May the souls of both the mother and the son rest in peace.

Yours sincerely,

A V Thakkar.

Derby, 20th July, 1936.

My dear Ramnath,

Only a couple of days ago did I come to know of the terrible tragedy that has befallen the House of Podar.

I knew the late Rambilas well enough to know what a great gentleman he was A thorough sportsman and a very good tennis player and enthusiast, he was gentle, kind, friendly and social, and the soul of generosity It would be difficult to come across a more praiseworthy young gentleman. That his life-work was cut short in his prime was the act of God, and we may take whatever little consolation we can in the great belief that, "What God does is always for the best." I for one pray that his soul may rest in peace

May the Almighty grant you and the other members of your family—and particularly your worthy father—the necessary courage in your present great bereavement?

Please accept my heart-felt condolences

Yours very sincerely,
Vijay Merchant.

Bandra, 9th July, 1936.

Dear Sir,

Although not personally acquainted with you, I feel that I might take the liberty of writing a line to you to convey my deep and respectful sympathy with you in the tragic death of your son Mr Rambilas in a motor accident on Monday, followed soon after by the death of his mother, no doubt due to the shock I have heard from friends that **he was a young man of great promise and public spirit** May God give you strength to sustain you in this double calamity !

Yours sincerely,

K Natarajan

Bombay, 7th July, 1936.

Dear Mr Podar,

We were rudely shocked to hear of the most terrible and heart-rending tragedy that culminated in the sad demise of late B Rambilas Podar yesterday afternoon, followed by his mother's death We offer our deepest sympathy to the Podar family in its bereavement and pray to God for the eternal rest of the departed souls May He also give sufficient strength to his aged father, wife, brothers and others to bear the unforgettable and irreparable loss !

In B Rambilas we have lost a very intelligent, kind-hearted and promising friend who was an embodiment of all qualities that would have enabled him to become one day a great leader. He was of affable habits and an enlightened young graduate well posted with the public views His loss is not a loss to the Podar family alone but also to his numerous friends whom he had endeared by his most lovable and charming manners In him the Marwari community has lost a very shining Jewel

Yours sincerely,

P. C. Gupta.

Osaka, 7th July, 1936

Dear Mr Anandilal Podar,

It is really a shocking and heart-rending news for me that I have this morning received a telegram from Mr Y. Mayada informing me of your youngest son's most unfortunate death occurred in the motor accident yesterday noon I heartily sympathise with all your family in this sorrowful bereavement, and I cannot find any word to express my heart-felt condolence for this unbearable loss, and I pray to God to protect you in this most trying destiny while eternal peace and rest may be given to the soul of Mr. Rambilas

Indeed, I am feeling the same grief and sorrow as I lost one of my family members.

With most profound grief and sorrow,

Yours sincerely,

T Sasakura.

Bombay,
Date 10th July, 1936.

Dear Sir,

Extremely shocked to hear of the accidental death of your dear son and my great friend Rambilas. I had the good fortune of coaching him up when he appeared for and passed his B A , a few years ago I had always a great admiration for his qualities of head and heart

When the news first came to me, I could not persuade myself to believe it , so unexpected it was

I am sure, no amount of sympathy expressed by us will console you in your present bereavement, which was only worsened by the death of Rambilas's dear mother—another great calamity But it may be after all some comfort to you to know that there are so many others like myself to share the grief with you all

This is not the occasion to write anything more. When the heart is full, words fail.

Hoping to be excused,

Yours very respectfully,

W. R. Patankar.

Bombay, 7th July, 1936

Dear Ramnath,

I was extremely grieved to read about your brother Rambilas' death by accident followed by your mother's death in to-day's newspaper On reading I found it very difficult to believe that Rambilas was no more with us.

A really promising career has been cut short by cruel fate And we feel the more because at the same time, his death has been so tragic Though loved by all his relations, friends and admirers, he must have been still loved the more by the Almighty and that is why He seems to have taken him away from us I shall never forget his kind and loving nature and his social temperament To describe him truly,

" He was a man, take him
From all in all,
I shall not see his like again "

I really cannot imagine how bereaved you and your whole family must be by these two tragic deaths in your family I offer my sincere condolences to you, to the widow of Rambilas, your worthy father and other members of your family

Yours truly,

Chandrakant Mehta

Salogra, 9-7-36.

Dear Seth Anandilalji,

I have learnt from the papers about the tragic death of Rambilas Podar I am simply shocked at this untimely death of a charming friend

I had the pleasure of being his class-fellow in third and fourth primary classes He was one of the most brilliant students of the class and was very popular due to the charm of his manners, affable nature and sweet temperament I was looking forward to renewing our childhood friendship when I next come to Bombay From enquiries I had learnt that he had become a graduate of my own Alma Mater.

Pray accept my heartfelt condolences

Yours sincerely,

Mohanlal.

Salogra, 9–7–36.

Dear Seth Anandilalji,

I have learnt from the papers about the tragic death of Rambilas Podar I am simply shocked at this untimely death of a charming friend

I had the pleasure of being his class-fellow in third and fourth primary classes He was one of the most brilliant students of the class and was very popular due to the charm of his manners, affable nature and sweet temperament I was looking forward to renewing our childhood friendship when I next come to Bombay From enquiries I had learnt that he had become a graduate of my own Alma Mater.

Pray accept my heartfelt condolences

Yours sincerely,

Mohanlal.

Dadar,

19th July, 1936.

Dear Seth Anandilal Podar,

With an appalling shock, I heard of the death of your youngest son Rambilas, when I was out of Bombay Mr. K S Patwardhan, my brother-in-law, who is a teacher in your school, intimated it to me. Having learnt the particulars of that accident, I could not but subscribe to the opinion that it was one of the gravest that took place By the death of your wife which occurred later, you have been doubly pressed down On this very sad occasion that has befallen you and yours, I extend my humble and heart-felt sympathies

Rambilas was my class-mate since the 5th standard, when I joined Marwari Vidyalaya From that time, we have been most familiar with one another, and I counted him as one of my noblest and sincerest friends While at school, I have been twice photographed with him But the figure to which I formerly looked with pride has now to be mourned over for ever

I was glad to see that your son had taken up from you your philanthropy, and as such I think India has lost a great benefactor of her needy children

I may add that by this lamentable incident, I have strengthened my faith in a wise saying which I shall presently whisper in your ears

"THOSE WHOM THE GODS LOVE DIE YOUNG"

Believe me,

Yours faithfully,

D. D. Parchure.

Baheri,

13th July, 1936.

Respected Seth Saheb,

I am very much shocked to hear the news of the sad and sudden demise of dear Ram Bilas, due to some motor accident We were studying together in Marwari Vidyalaya Only recently in the month of May last I have met him, I think you remember, in your office I can hardly believe the news It is too cruel of God to bring an end so sudden to a rising soul He was a friend in need and a friend indeed. I pray to God to give the departed soul eternal peace and to give strength, Seth Saheb, in this old age to stand this shock He was a soul which it is very difficult to find in this world It is a great loss not only to you but to us all I beg to remain, Seth Saheb,

Yours faithfully,

G D Mallapur.

नैनीताल,

३०-७-३६

प्रियवर रामदेवजी,

किन शव्दो मे धीरज और शान्ति दूँ। ऐसे घोर मार्मिक-समय मे इतने दिनो के बाद भी ज्ञान-वैराग्य की चर्चा करना या उपदेश देना दुखी हृदयो पर आघात पहुँचाना होगा। **काल ने सर्वोत्तम सुगंधित सुन्दर पुष्प को चुन लिया।** वह महा कठोर, क्रूर, वलवान और सर्वभक्षी है। उसने कभी किसी को नहीं छोड़ा। उसका आतंक सार्वकालिक और सार्वभौमिक रहा है और रहेगा। यहाँ पर मनुष्य विवश और लाचार हैं। आप जैसे आहत और पीड़ित जनों की शान्ति के लिये मै ईश्वर-प्रार्थना भी नहीं कर सकता, क्योकि इस हृदय-विदारक वज्राघातने मेरी अनीश्वरवादी चित्तवृत्ति को और भी दृढ और पुष्ट कर दिया है। यह कहां का न्याय और कहा की बुद्धिमानी और नीति है? पूर्व कर्म-फल की दुहाई देना, केवल आत्मविडंवना और दिल को समझाने के लिये अपने आप को धोखा देना है। 'भगवान जो करते है सो भले के लिये' मै इस का कायल नहीं। श्री सेठजी के दिल को मै यहाँ से देख रहा हूँ। वह तो टूक टूक हो जाता है। वह चुपचाप मूकवत् वैठे है। अव तो जीवन का अन्त ही इस घोर दुख और शोक का अन्त करेगा।

भाईयो के साथ समवेदना प्रगट करना लोकाचार मात्र होगा। समय वडा प्रभावशाली है। वही उनके घाव को धीरे धीरे भरेगा। मेरी तुच्छ बुद्धि मे ही नहीं आता कि क्या कहू और क्या लिखूं। मै तो अवाक् हूँ, वह सौम्य सूरत आँखो के सामने से अव तक नहीं हटती। ९-१० साल की आयु से मैंने भी उसे खाते, खेलते, हँसते, झगडते देखा था। तीन चार रातें तो रंज के मारे करवटे वदलते वीतीं। पापी पेट तो नहीं माना। वह तो अपना प्राकृतिक कर्म किन्तु निश्चेष्ट भाव से करता ही

Dear Seth Anandilal Podar,

With an appalling shock, I heard of the death of your youngest son Rambilas, when I was out of Bombay Mr. K S Patwardhan, my brother-in-law, who is a teacher in your school, intimated it to me. Having learnt the particulars of that accident, I could not but subscribe to the opinion that it was one of the gravest that took place By the death of your wife which occurred later, you have been doubly pressed down On this very sad occasion that has befallen you and yours, I extend my humble and heart-felt sympathies

Rambilas was my class-mate since the 5th standard, when I joined Marwari Vidyalaya From that time, we have been most familiar with one another, and I counted him as one of my noblest and sincerest friends While at school, I have been twice photographed with him But the figure to which I formerly looked with pride has now to be mourned over for ever

I was glad to see that your son had taken up from you your philanthropy, and as such I think India has lost a great benefactor of her needy children

I may add that by this lamentable incident, I have strengthened my faith in a wise saying which I shall presently whisper in your ears

"THOSE WHOM THE GODS LOVE DIE YOUNG"

Believe me,

Yours faithfully,

D. D. Parchure.

भिवानी,
१२।७।३६

प्रिय मित्र सेठ आनन्दीलालजी,

जयशङ्कर। अखबारों मे रामविलास की असामयिक मृत्यु का समाचार पढ कर वहुत दुःख हुआ। यह शोक बड़ा दारुण है। हृदयको विदीर्ण करनेवाला है। '**इतना होनहार जवान पुत्र कैसे भूला जा सकता है?**' किन्तु विधाता के लेख हैं। किसीका वश नहीं। सब करना होगा। रोने से कुछ वनता नहीं। समझ से काम लीजिये। धैर्य धरे और बच्चो को धैर्य दिलावे। जितने दिनका संस्कार था, साथ रहा। अव जिसकी चीज़ थी उसने वापिस ले ली। उसकी लीला मे कौन दखल दे सकता है।

रामदेवजी को भ्रातृ-वियोगका वड़ा दुःख हुआ है। आप उन्हे वोध दें।

आपके दुःख से दुखी,
नेकीराम शर्मा

श्रीहरि

वर्धा,
७।७।३६

प्रिय श्री आनंदीलालजी,

अभी श्री फतेचन्द का पत्र मिला। श्री रामबिलास का मोटर एक्सिडेन्ट के कारण एकाएक देहान्त हो गया तथा इस हृदय-विदारक वार्ता को सुन कर रुग्ण-शैय्या पर पडी हुई उसकी माता भी इह लोक छोड़ गई, जानकर बहुत दुःख हुआ। आपको तथा सर्व कुटुम्बियोंको इन आकस्मिक घटनाओसे कितना दुःख हुआ होगा! पुत्र और सहधार्मिणी का चिर-विरह एक ही समयमे होना असीम दुख का कारण हो सकता है। परन्तु आप तो विचारवान है। ऐसे प्रसंगों पर विवेक और धैर्य से काम लेना पडता है। हम इन घटनाओ पर यदि थोड़ी गहराई से विचार करें तो अपने जीवन के लिए इनसे काफी सबक़ सीख सकते है और मैने तो ऐसी घटनाओ से अपने भावी जीवन के लिए सबक़ सीखनेका ही प्रयत्न किया है।

मेरी आपके दुख मे पूर्ण सहानुभूति है, और मै समवेदना प्रगट करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उन दोनों की आत्मा को शान्ति-प्रदान करे और आपको बल। अधिक क्या लिखू ?

जमनालाल बजाजका वन्देमातरम्

प्रिय रामदेव,

तुम्हे क्या लिखूँ। आज जबसे यह घटना सुनी है रामबिलास को भूलना चाहता हू तो भी भूला नहीं जाता। तुम बुद्धिमान हो। श्री भाईजी को और सब लोगोको हिम्मत दिलाओगे, ऐसी तुमसे आशा है। समय पर ही मनुष्य की हिम्मत व ईश्वर पर की अगाध श्रद्धा का परिचय होता है। आशा है तुम विवेक से काम लेओगे।

जमनालाल बजाजका आशीर्वाद

महिदपुर, ८।७।३६

सेठजी साहब,

ता० ८–७–३६ के 'अखंड–भारत' मे प्रियवर रामविलास की असामयिक अत्यन्त दुःखदाई मृत्यु के समाचार पढ कर जो दुःख हो रहा है वह लिख नहीं सकता। सेठजी! **प्रियवर रामविलास बचपन ही से बड़ा आज्ञाकारी, विनयी तथा शीलवान था। उसकी कुशाग्र–बुद्धि देखते वह भविष्य में बड़ा होनहार नज़र आता था। भारत–माता का एक चमकता हुआ तारा इस संसार को त्याग आकाश में विलीन हो गया** और साथ मे सेठानीजी भी अपने प्रिय पुत्र के साथ चल बसीं। सेठजी! मै क्या व कहां तक लिखू? यह बड़ा भारी दुःख आपको तथा तीनो भाईयो को तथा सारे परिवार को हुआ तथा हो रहा होगा। लिखा नहीं जाता है परन्तु कुदरत के आगे किसी का वश नहीं है। परमात्मा माता तथा पुत्र की आत्मा को शान्ति प्रदान करे ऐसी उस जगन्नियन्ता से बारम्बार प्रार्थना है। मेरे हृदय मे कई प्रकार के विचार उत्पन्न होते है और बारम्बार आखोसे आँसूओ की धारा बहती है। इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय भी नहीं है। बस इतने मे ही सब कुछ है। आगे पत्र भी लिखा नहीं जाता है। किंबहुना,

आपका,

नाथूलाल मास्टर

नैनीताल,

३०–७–३६

प्रियवर रामदेवजी,

किन शब्दो मे धीरज और शान्ति दूँ। ऐसे घोर मार्मिक-समय मे इतने दिनो के बाद भी ज्ञान-वैराग्य की चर्चा करना या उपदेश देना दुखी हृदयो पर आघात पहुँचाना होगा। **काल ने सर्वोत्तम सुगंधित सुन्दर पुष्प को चुन लिया**। वह महा कठोर, क्रूर, बलवान और सर्वभक्षी है। उसने कभी किसी को नहीं छोड़ा। उसका आतंक सार्वकालिक और सार्वभौमिक रहा है और रहेगा। यहाँ पर मनुष्य विवश और लाचार हैं। आप जैसे आहत और पीड़ित जनों की शान्ति के लिये मै ईश्वर–प्रार्थना भी नहीं कर सकता, क्योकि इस हृदय-विदारक वज्राघातने मेरी अनीश्वरवादी चित्तवृत्ति को और भी दृढ और पुष्ट कर दिया है। यह कहां का न्याय और कहा की बुद्धिमानी और नीति है? पूर्व कर्म-फल की दुहाई देना, केवल आत्मविडंवना और दिल को समझाने के लिये अपने आप को धोखा देना है। 'भगवान जो करते है सो भले के लिये' मै इस का कायल नहीं। श्री सेठजी के दिल को मै यहाँ से देख रहा हूँ। वह तो टूक टूक हो जाता है। वह चुपचाप मूकवत् वैठे है। अव तो जीवन का अन्त ही इस घोर दुख और शोक का अन्त करेगा।

भाईयो के साथ समवेदना प्रगट करना लोकाचार मात्र होगा। समय वडा प्रभावशाली है। वही उनके घाव को धीरे धीरे भरेगा। मेरी तुच्छ बुद्धि मे ही नहीं आता कि क्या कहू और क्या लिखूं। मै तो अवाक् हूँ, वह सौम्य सूरत आँखो के सामने से अव तक नहीं हटती। ९–१० साल की आयु से मैंने भी उसे खाते, खेलते, हँसते, झगडते देखा था। तीन चार रातें तो रंज के मारे करवटे वदलते वीतीं। पापी पेट तो नहीं माना। वह तो अपना प्राकृतिक कर्म किन्तु निश्चेष्ट भाव से करता ही

चिड़ावा, ता १३।७।३६

महाशयजी,

श्रीमती सेठानीजी की मृत्यु तथा हमारे प्रेमी मित्र कुँवर रामविलासजी की अकाल मृत्युके हृदय-विदारक समाचार जान कर अत्यन्त दुःख हुआ। **कुँवर साहिब बड़े ही योग्य, उदार और सुशील युवक थे और शेखावाटी के रत्नों में से एक थे।**

ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और परिवारजनों को इस महान दुःख के सहन करने की शक्ति व धैर्य प्रदान करे।

आपका,
प्यारेलाल गुप्त

रहा। इतने दिन बीत जाने पर भी हृदय व्यथित रहता है। न जाने आप सब पर क्या बीतती होगी। दुखी सेठजी का ध्यान रह रह कर आता है। उन्हे कैसे आश्वासन दिया जावे। वह तो बड़े विचारवान और विवेकी हैं किन्तु ऐसे समय मे विचार विवेक कुछ काम नहीं देते। दिलपर पत्थर रख कर रहना पड़ेगा। इस महान घोर कष्ट को आहे ले लेकर सहना ही पड़ेगा। इसका कोई प्रतिवाद नहीं। इस जख़्मका कोई इलाज नहीं। फर्क सिर्फ इतना है कि "**ज्ञानी भुगते ज्ञानसे, मूरख भुगते रोय। देह धरे का दण्ड है, सब काहू को होय**"। ऐसे विपत्ति काल मे ज्ञान वैराग्य ही कुछ सहायक हो सकते है। अधिक क्या लिखू, कुछ लिखते नहीं बन पड़ता।

'राम गये रावण गये, जिनके बहु परिवार।
कह नानक कुछ थिर नहीं, सपना है संसार ॥'

आपके दुःख से दुखी,
काशीनाथ

મુંબઈ,

તા. ૧૨-૭-૩૬.

મેહરબાન શેઠજી સાહેબ શેઠ આનંદીલાલ જોગ,

જત આપ સાહેબને બે હાથ જોડી અરજ એ છે કે આપના દીકરા રામબિલાસના મોતના સમાચાર સમજી ઘણાંજ દલગીર છીએ ને તમારી ઉપર આવી પડેલા ભારે દુઃખમાં અમારી ખરા અંત કરણની દીલસોજી છે. ખુદા, એ ભલા અને નેક આત્માને અમર શાંતિ બક્ષે, તમુને ખુદા એ દુઃખ ખમવાની ધીરજ અને સબુરી બક્ષે.

બીજુ મહારા બેટા ને તમારા બેટા બંને કૉલેજમાં સાથે ભણુતા હતા ને હાલમાં મહારા બેટાને 'વેલાયત' મોકલવામાં એવનનો મુખ્ય હાથ હતો અને ખાનગીમાં દરેક મદદ કરવાને પોતાના ગરીબ ફ્રેન્ડને સહાય થવાનું પ્રોમીસ આપી અતી ખંત લઈ ને મોકલી આપ્યા. સખી અને હાતમ દિલના બાપના જેવાજ બેટા હતા. તસ્દી માફ કરશોજી. બે હાથ જોડી આપની માફી ચાહું છું.

હાલ એજ,

લી. દુવાગીર સેવક,

તેમીના ન. દારૂવાલા

भिवानी,
१२।७।३६

प्रिय मित्र सेठ आनन्दीलालजी,

जयशङ्कर। अखबारों मे रामविलास की असामयिक मृत्यु का समाचार पढ कर वहुत दुःख हुआ। यह शोक बड़ा दारुण है। हृदयको विदीर्ण करनेवाला है। '**इतना होनहार जवान पुत्र कैसे भूला जा सकता है?**' किन्तु विधाता के लेख हैं। किसीका वश नहीं। सब्र करना होगा। रोने से कुछ वनता नहीं। समझ से काम लीजिये। धैर्य धरे और बच्चो को धैर्य दिलावे। जितने दिनका संस्कार था, साथ रहा। अब जिसकी चीज़ थी उसने वापिस ले ली। उसकी लीला मे कौन दखल दे सकता है।

रामदेवजी को भ्रातृ-वियोगका वड़ा दुःख हुआ है। आप उन्हे वोध दें।

आपके दुःख से दुखी,
नेकीराम शर्मा

શ્રી

કુડલા,

તા. ૧૦-૭-૩૬.

નેકનામ સુરબ્બી શેઠ,

મારા અત્રેના વતનમાં લાગત ૭ વરસના વસવાટ દરમીયાન જ્યારે જ્યારે પેપરોથી આપના સુખી દિવસો જેવા કે સમાજસેવા, જ્ઞાતીસેવા માટેના પરોપકારી કામો આપના હાથે થયેલા વાંચવાથી રાજી થતો, ત્યારે આજે તા. ૭ મી ના 'મુંબઈ સમાચાર'માં ભાઈ રામબિલાસના અકસ્માતિક ભરજુવાન વયે અવસાન થયાના માઠા સમાચાર સાંભળી ઘણોજ દીલગીર થયો છું.

મરનાર રામબિલાસ પોતાની માતા તરફની ઉમદા ફરજ બજાવવા કાજે કર્મના સંજોગે જ્યારે અકસ્માતમાં આવી પડ્યા ત્યારે તેમનાં તે માતા બે દિવસના અંતર પછી અવસાન પામ્યાં. કુદરતની અટલ-ગતી છે. જેવી રીતે મરનાર રામબિલાસે પોતાની માતુઃશ્રીનું મૃત્યુ જોયું કે સાંભળ્યું નહીં તેવી રીતે તેમનાં માતાએ બેશુદ્ધ હાલતમા છેલ્લા દમસુધી રામબિલાસના મૃત્યુના ખબર ન સાંભળ્યા હોય તો ઈશ્વરની કૃપા. સુરબ્બી શેઠ, નાનાથી મોટા દુઃખનું નીવારણ જ્ઞાનના ઉપયોગ સીવાય કોઈ રીતે થઈ શકતું નથી. ખરેખર લખવું સહેલું છે પણ કરવું અઘરૂં છે. આપની બુજુર્ગ વયે આવુ દુ ખ જીવને વ્યર્થ બનાવે તે બનવા જેવું છે. પણ જેવી રીતે સુ ખમાં ઈશ્વર તરફ ભાવ રાખ્યો તેવીજ રીતે દુ ખમાં પણ ભાવ રાખવાથી દુ ખ ખમવાની તાકાત આવે છે. હું ઈચ્છુ છું કે તેવી રીતે મનનું સમાધાન કરી આપના વડીલ પુત્ર રામદેવ વીગેરે ને દિલાસો આપી, મારો દિલાસો સ્વીકારશો.

લી સેવક,

પારખ જયંતીલાલ ભગવાનના પ્રણામ.

गोरखपुर

पूज्य भाईजी,

सादर प्रणाम ।

आज 'वेकटेश्वर–समाचार' मे भा० रामबिलास तथा पू० माजीके परलोकवासी होने के समाचार पढे। भा० रामबिलास का मोटर दुर्घटनावश इस प्रकार हम लोगो के बीच से उठ जाना बहुत ही शोकजनक है। आप स्वयं समझदार और विवेकी पुरुष है। मै आपको किन शब्दो मे क्या सान्त्वना दूँ ? वस्तुतः ससार अनित्य है और इस दृष्टि से दुःखमय है। भगवानने गीता मे आज्ञा दी है "**अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ।**" इस अनित्य और सुखरहित लोक को पाकर मुझको भजो। अनित्य मे नित्य बुद्धि, और दुःखमे सुखबुद्धि हो रही है, इसी से हम सब दुखी रहते है। आप धैर्य धारण करे, और भगवान के भजन मे चित्त की वृत्तियो को अधिक से अधिक लगावे। यह मेरी आप से हाथ जोड़ कर प्रार्थना है। जो बात हमारे हाथमे नहीं है, उसके लिये क्या किया जाय ! यहीं आकर मनुष्य को हार माननी पड़ती है।

यहाँ गोरखपुर मे साल भर के लिये अखड–श्रीहरिनाम–कीर्तन, अखंड-गीता-पारायण, अखंड-भागवत-पारायण, अखड-रामायण-पारायण शुरू किया गया है। नित्य भागवत, गीता तथा रामायण की कथाएँ होती है। बहुतसे साधु महात्मा पधारे है। कभी मन हो तो इधर पधार सकते है, शान्ति के बहुत से साधन यहाँ पर है। आपकी आज्ञानुसार सब प्रबंध करा दिया जायगा। शोक के समय मै आपको यह लिख रहा हूँ परन्तु मेरी समझ से शोक–नाश का एक मात्र उपाय वैराग्य, ज्ञान अथवा भगवान की भक्ति का साधन ही है। और किसी भी उपाय से किसी को भी परम शक्ति नहीं मिल सकती। आप बडे है, विवेकी है। धैर्य धारण कर दुख-सतप्त परिवार को धीरज दीजिये।

आपका दुखी भाई,

हनुमानप्रसाद पोदार

महिदपुर, ८।७।३६

सेठजी साहब,

ता० ८—७—३६ के 'अखंड—भारत' मे प्रियवर रामविलास की असामयिक अत्यन्त दुःखदाई मृत्यु के समाचार पढ कर जो दुःख हो रहा है वह लिख नहीं सकता। सेठजी! **प्रियवर रामविलास बचपन ही से बड़ा आज्ञाकारी, विनयी तथा शीलवान था। उसकी कुशाग्र—बुद्धि देखते वह भविष्य में बड़ा होनहार नज़र आता था। भारत—माता का एक चमकता हुआ तारा इस संसार को त्याग आकाश में विलीन हो गया** और साथ मे सेठानीजी भी अपने प्रिय पुत्र के साथ चल बसीं। सेठजी! मै क्या व कहां तक लिखू? यह बड़ा भारी दुःख आपको तथा तीनो भाईयो को तथा सारे परिवार को हुआ तथा हो रहा होगा। लिखा नहीं जाता है परन्तु कुदरत के आगे किसी का वश नहीं है। परमात्मा माता तथा पुत्र की आत्मा को शान्ति प्रदान करे ऐसी उस जगन्नियन्ता से वारम्वार प्रार्थना है। मेरे हृदय मे कई प्रकार के विचार उत्पन्न होते है और वारम्वार आखोसे आँसूओ की धारा वहती है। इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय भी नहीं है। वस इतने मे ही सब कुछ है। आगे पत्र भी लिखा नहीं जाता है। किंवहुना,

आपका,

नाथूलाल मास्टर

श्री रामबिलासजी के निधन का हृदय-विदारक शोक-समाचार शीघ्रही सारे देश मे फैल गया। एसोसियेटेड प्रेस की ओर से यह दुःखद-संवाद सब प्रतिष्ठित समाचार-पत्रो को प्रेषित कर दिया गया। भारत के बड़े बड़े समाचार पत्रोमे इस दुर्घटना का विवरण, श्री रामबिलासजी के फोटो के साथ प्रकाशित हुआ। पाठको की जानकारी के लिए ता. ७ तथा ८ जुलाई के 'बॉम्बे क्रॉनिकल' (Bombay Chronicle) तथा 'टाइम्स ऑफ इंडिया' (Times of India) मे जो विवरण प्रकाशित हुआ था उसकी प्रतिलिपि आगे दी जाती है। इसके अतिरिक्त बहुतसे पत्र-सम्पादकों तथा लेखकों ने सम्पादकीय वक्तव्यो द्वारा श्री रामबिलासजीकी प्रतिभा तथा गुणोका चित्रण किया है। उनमे से कुछ की प्रतिलिपि दी जाती है। इनसे पाठकोको विदित हो जायगा कि २३ वर्ष के उस युवक ने सार्वजनिक जीवनमे कैसा स्थान प्राप्त कर लिया था।

—संपादक

CITY MERCHANT CAUGHT IN WORLI DEATH-TRAP

MOTOR FALLS INTO THE SEA

Mr Anandilal Podar's Son Killed

BOMBAY, Monday

A tragic motor accident took place at about 2 p m at Hornby-Vellard in which Mr Rambilas Anandilal Podar was killed The driver of the car who sustained serious injuries is lying in Sir J J. Hospital

How it Happened.

It appears that Mr. Rambilas was driving down from his residence at Santa Cruz to Bombay. The car was being driven by his chauffeur When the car reached Hornby-Vellard, the driver saw two motor lorries coming from the opposite side Behind the motor lorries another car, in which there were Europeans, was also coming It is said the driver of his car wanted to overtake the two lorries As there was no room to proceed further the driver of Mr Rambilas gave a turn to the motor car in order to drive it on the footpath In doing so the car collided against a cocoanut tree and the impact sent the car towards the railing on the opposite side and it fell into the sea

To Rescue

The passers-by at once came to the assistance of these two unfortunate victims and with great difficulty they were able to rescue the two bodies Meanwhile, two doctors, passing by the road in their motor car were ready to help and give first aid It was found that Mr Rambilas's injuries were more serious than those of the driver Both the victims of the accident, when taken out from the sea, were said to be unconscious Injections were given to both of them to save their life

Nariman on Scene

At this moment Mr K. F. Nariman was passing in his motor car He immediately got down and rendered every help that was possible. He immediately telephoned to the Fire Brigade to get the ambulance car and he himself took both the bodies to the J J Hospital, where on examination, it was found that Rambilas had already expired and the condition of the driver was found to be very serious

Motor Falls Into the Sea

Mr Anandilal Podar's Son Killed

BOMBAY, Monday

A tragic motor accident took place at about 2 p m at Hornby-Vellard in which Mr Rambilas Anandilal Podar was killed The driver of the car who sustained serious injuries is lying in Sir J J. Hospital

How it Happened.

It appears that Mr. Rambilas was driving down from his residence at Santa Cruz to Bombay. The car was being driven by his chauffeur When the car reached Hornby-Vellard, the driver saw two motor lorries coming from the opposite side Behind the motor lorries another car, in which there were Europeans, was also coming It is said the driver of his car wanted to overtake the two lorries As there was no room to proceed further the driver of Mr Rambilas gave a turn to the motor car in order to drive it on the footpath In doing so the car collided against a cocoanut tree and the impact sent the car towards the railing on the opposite side and it fell into the sea

To Rescue

The passers-by at once came to the assistance of these two unfortunate victims and with great difficulty they were able to rescue the two bodies Meanwhile, two doctors, passing by the road in their motor car were ready to help and give first aid It was found that Mr Rambilas's injuries were more serious than those of the driver Both the victims of the accident, when taken out from the sea, were said to be unconscious Injections were given to both of them to save their life

Nariman on Scene

At this moment Mr K. F. Nariman was passing in his motor car He immediately got down and rendered every help that was possible. He immediately telephoned to the Fire Brigade to get the ambulance car and he himself took both the bodies to the J J Hospital, where on examination, it was found that Rambilas had already expired and the condition of the driver was found to be very serious

Deputy Inspector Winton and Sergeant Dugard of the Agripada Police station are making inquiries

---

MRS PODAR DEAD

A telephone message received at 1-35 a m from Santa Cruz states that the aged and ailing mother of Mr Rambilas Podar who met with the fatal motor accident at Hornby Vellard at Worli expired at about 1-30 a m She leaves behind her husband Mr Anandilal Podar and three sons to mourn her loss

—Bombay Chronicle,
7-7-36

The damaged car was taken out by Mr. Coombs and his staff who came on the scene in response to a message to them The Coroner held post-mortem examination and after the body was identified by the relatives of the deceased the jury was adjourned The body was taken to Santa Cruz where it was cremated at 7 p m

Market Closed

When the news of the accident reached the markets all business in the cotton market came to a dead stop The Marwari Merchants and others went to Santa Cruz to offer condolence to the aged father About two hundred merchants and other prominent citizens were present at the crematorium

Promising Career Cut Short

Mr Rambilas was a very promising member of the Agrawal Marwadi community His father, Mr Anandilal Podar, is a known cotton merchant and is also well-known for his charities

Mr Rambilas who was 23 years old was his youngest son He was a graduate of the Bombay University He held progressive views and helped the nationalist cause on all occasions He made many friends who will mourn his death He leaves behind him an aged mother, who has been lying unconscious since the last two days suffering from a long illness, his aged father, three brothers and his widow.

Worli Death Trap

This fatal accident which has taken away the life of a rich and promising merchant is not the first of its kind at Hornby Vellard Several fatal accidents have occurred in the past, but it is very unfortunate that the cause of such accidents, viz, narrowness of the road, has not been removed by the Bombay Municipality Only last year such an accident happened, when Mr Jamnadas Dwarkadas was almost fatally injured At that time Mr K F Nariman was the Mayor and he had protested very strongly against the executive that no steps had been taken to widen this road, which has become a veritable death-trap for motorists To-day's accident could have been avoided if the road had been wide enough to allow Mr Rambilas' car to pass with safety It is to be hoped that City Municipal Executive would at least now awake to its sense of duty

The cocoanut tree was uprooted and the car skidded across the road, broke the wooden railings on the right and fell headlong into the raging sea

Witness threw a rope to Pratap Dalvi, the driver, and helped him ashore He stopped a passing motor car and went in it to the residence of Sheth Anandilal Podar and informed him of the accident Witness returned to the scene with Seth Anandilal and saw the dead body of Mr Rambilas, which had been taken out by fishermen

Evidence of Driver.

Pratap Laxman Dalvi, Sheth Anandilal's motor driver, stated that his employer's family lived at Santa Cruz

"Mr Rambilas's mother had been very ill Therefore, he was coming to Bombay to see a doctor and take him to Santa Cruz

"He was driving the car in which I was seated About 2 p m we arrived at the Worli end of Hornby Vellard The sea was very rough A big wave swept right across the road

"Mr Rambilas, therefore, swerved the car more to the left It dashed into a cocoanut tree and skidded violently Having broken the wooden railing to our right, the car fell into the sea

"I was on the left of Mr Rambilas and got out through the door The car fell on its right side I could not drag Rambilas out as he had got entangled in the steering Some people threw a rope to me and dragged me out Others went into the water and brought out the body The car was a Packard of 30 to 40 h p"

The Coroner recorded a verdict of death caused by asphyxiation owing to accidental drowning

The Marwadi Chamber of Commerce, Bombay, at a specially convened meeting on Tuesday afternoon, passed a resolution expressing grief at the tragic death of Mr Rambilas Podar and the passing away, a few hours later, of his mother, and sympathising with Seth Anandilal Podar and his family in their bereavement By another resolution it was decided that the offices of the Chamber and those of its members should remain closed on Wednesday as a mark of respect

The cotton and bullion markets remained closed on Tuesday

Deputy Inspector Winton and Sergeant Dugard of the Agripada Police station are making inquiries

---

MRS PODAR DEAD

A telephone message received at 1-35 a m from Santa Cruz states that the aged and ailing mother of Mr Rambilas Podar who met with the fatal motor accident at Hornby Vellard at Worli expired at about 1-30 a m She leaves behind her husband Mr Anandilal Podar and three sons to mourn her loss

—Bombay Chronicle,
7-7-36

THE BOMBAY MAN'S DIARY

(By—J S PEREIRA)

The Tragedy of the Vellard—A Safety Fence Needed—A Menace to Motorists—The Deadly Bottleneck—Corporation's Plans and Delay—The Vellard in Wet Weather—Ideal for Skidding—A Previous Tragedy and Accidents

The tragic death of my young friend Rambilas Podar—the tragedy is the more poignant because of the nature of the errand on which he was speeding when accident flung him to a sudden and untimely end and the death of his mother early this morning—will, I hope, turn the attention of the authorities to the necessity for erecting a more solid fence along the sea edge of the Hornby Vellard

There is need, too, for widening the stretch of road that lies between the traffic roundabout at the bottom of Pedder Road and the dangerous bottle-neck facetiously known as Eau-de-Cologne Corner

A proposal for widening that bottle-neck at Lovegrove, a death-trap so dangerous that it inspires caution in the most reckless driver—nevertheless there was a fatal crash there not so very long ago, and the wonder is that accidents are not more frequent there—was considered by the Corporation which expressed approval of expenditure in that behalf

A Languid Voice.

But nothing has been done so far towards putting the resolve of the City Fathers into effect though several months have elapsed since the matter was first mooted

I telephoned the department concerned this morning and after some digging a languid voice informed me that "plans for the work are in process of preparation and will be submitted in due course for approval by the Corporation"

"When," I asked, "is the Corporation liable to be afflicted with this urgent piece of work?"

I had to paraphrase that before the same languid voice somewhat deprecatingly replied, "That we are not in a position to say"

THE HORNBY VELLARD TRAGEDY

INQUEST EVIDENCE

How Millionaire's Son Met His Death

Details of the car accident in which Mr Rambilas Anandilal Podar, youngest son of Seth Anandilal Podar, a millionaire and leading business man of Bombay, was killed at Hornby Vellard on Monday afternoon, were narrated by eye-witnesses in the City Coroner's Court on Tuesday

Seth Anandilal's chauffeur, who was in the car when it plunged into the sea, stated that Mr Rambilas was at the wheel at the time of the accident

It was revealed that a big wave swept across the road while the car was entering Hornby Vellard, that Mr Rambilas swerved to the extreme left and dashed against a cocoanut tree The car then skidded across the road to the right, hit the railings and dropped into the sea

Within twelve hours of the tragedy which overtook her son, Seth Anandilal's wife, who had been very ill, died at her residence at Santa Cruz on Tuesday morning

Mr Ratilal Bapubhai Desai, Manager of Messrs Anandilal Podar and Company, cotton merchants, stated that Mr Rambilas was 23 years old and was a partner in his father's firm The family lived at Santa Cruz His mother had been very ill

Mr Rambilas was coming to Bombay in his motor car for medical aid

About 2 p m Mr Desai received information that Rambilas's car had fallen into the sea at Hornby Vellard and that Mr Rambilas was dead

Evidence of Cook

Doraswami Ponnuswami, a cook, stated that about 2 p m he was walking along Hornby Vellard, having just entered it from the northern end A motor car came from behind at a fast speed Waves were beating high on the road The car passed witness and dashed against a cocoanut tree on its left just as a big wave swept across the road

through the frail wooden railings and plunged into a boiling sea—it was the highest tide I have ever known at the Vellard —and, trapped in it, a most promising young life was cut off in a few seconds

Not the First Tragedy

That isn't the first tragedy that has occurred on the Vellard

Last year a young member of the Peerbhoy family crashed through the railings to meet his death in a somewhat similar manner

Then there was Mr Jamnadas Dwarkadas who was fortunate to escape with his life when his car took a header in similar fashion, also last year

And some time ago a band of revellers drove right on to the rubble below but escaped drowning because it happened to be low tide at the time.

What is Needed

Obviously we have had proof and to spare of the extremely dangerous nature of this stretch of road, which carries a daily increasing stream of motor traffic

There is room enough to widen the road to take the opposing streams of traffic without hindrance to each other

While this would greatly increase the safety factor, it will still be necessary to erect a more solid fence along the sea-front than the present frail wooden railing

It is to be hoped the authorities concerned, who have shown commendable alertness and enterprise in making our streets safer for traffic, will hasten to extend their attention to the Vellard before more lives are sacrificed in this most dangerous death-trap

—*The Evening News of India, 7-7-36.*

The cocoanut tree was uprooted and the car skidded across the road, broke the wooden railings on the right and fell headlong into the raging sea

Witness threw a rope to Pratap Dalvi, the driver, and helped him ashore He stopped a passing motor car and went in it to the residence of Sheth Anandilal Podar and informed him of the accident Witness returned to the scene with Seth Anandilal and saw the dead body of Mr Rambilas, which had been taken out by fishermen

Evidence of Driver.

Pratap Laxman Dalvi, Sheth Anandilal's motor driver, stated that his employer's family lived at Santa Cruz

"Mr Rambilas's mother had been very ill Therefore, he was coming to Bombay to see a doctor and take him to Santa Cruz

"He was driving the car in which I was seated About 2 p m we arrived at the Worli end of Hornby Vellard The sea was very rough A big wave swept right across the road

"Mr Rambilas, therefore, swerved the car more to the left It dashed into a cocoanut tree and skidded violently Having broken the wooden railing to our right, the car fell into the sea

"I was on the left of Mr Rambilas and got out through the door The car fell on its right side I could not drag Rambilas out as he had got entangled in the steering Some people threw a rope to me and dragged me out Others went into the water and brought out the body The car was a Packard of 30 to 40 h p"

The Coroner recorded a verdict of death caused by asphyxiation owing to accidental drowning

The Marwadi Chamber of Commerce, Bombay, at a specially convened meeting on Tuesday afternoon, passed a resolution expressing grief at the tragic death of Mr Rambilas Podar and the passing away, a few hours later, of his mother, and sympathising with Seth Anandilal Podar and his family in their bereavement By another resolution it was decided that the offices of the Chamber and those of its members should remain closed on Wednesday as a mark of respect

The cotton and bullion markets remained closed on Tuesday

LEADERS' SYMPATHY FOR PODAR

BOMBAY, Wednesday

Sardar Vallabhbhai Patel, Babu Rajendra Prasad and Mr K F Nariman went to Santa Cruz this morning, to offer their condolences to Seth Anandilal Podar for the demise of his young son Rambilas Podar, which occurred under such tragic circumstances on Monday

—*Bombay Chronicle,*
9-7-36

Nightmare to Motorists

Hornby Vellard is a nightmare to motorists, especially during the monsoon when the sea becomes rough and waves sweep the smooth, tarred road The wooden railing offers scanty protection to skidding cars The height of the embankment and the rocks below offer very little chance of escape to occupants of cars which may crash through the railing

About a year ago, a young member of the Peerbhoy family, who was driving along Hornby Vellard shortly after midnight, lost his life when his car broke through the railing and fell on the rocks below, flinging out five of its occupants The others had a miraculous escape from death

Mr Jamnadas Dwarkadas had a narrow escape a few months ago when his car dropped from the embankment There have been other instances where people have been fortunate enough to escape, but the place is a danger spot which motorists hesitate to negotiate when the road is wet and slippery

It is felt that a broad parapet in place of the wooden railing would lessen the danger to some extent Another remedy suggested is the opening of a road away from the edge of the sea wall

Mr K F Nariman has given notice of a resolution, which he intends to move at the meeting of the Municipal Corporation on July 13, "requesting the Municipal Commissioner to take immediate steps to widen the Hornby Vellard Road and also to take other measures such as the raising and strengthening of the sea wall, etc, so as to prevent repeated motor accidents on that road, particularly during the monsoon"

Mr Nariman intends to ask for priority to discuss his resolution

—*Times of India*,
8-7-36

A MEMORIAL TROPHY

(By—J S PEREIRA)

It was typical of the many-sided nature, generous, carefree and happy, of my friend, the late Rambilas Anandilal Podar that he should have been a founder of the Merry Makers' Club, a club of cheery sportsmen, for he was himself a promising young cricketer and a clubbable man

Yesterday, the Merry Makers met and passed, with heavy hearts, a resolution of sorrow and sympathy over the death of a comrade they had all cherished and loved

It was decided to perpetuate his memory by offering a Silver Challenge Cup in his name to the P J Hindu Gymkhana to run at Bombay an Annual Badminton Tournament

There have been many condolence meetings held since Mr Podar's death, but of them all, this tribute from his old comrades is apt, and appreciative of the qualities of good fellowship of comradeliness and fun, which were not the least attractive qualities of the unfortunate young man who met his untimely death in such tragic circumstances

—The Evening News,
14-7-36.

THE BOMBAY MAN'S DIARY

(By—J S PEREIRA)

The Tragedy of the Vellard—A Safety Fence Needed—A Menace to Motorists—The Deadly Bottleneck—Corporation's Plans and Delay—The Vellard in Wet Weather—Ideal for Skidding—A Previous Tragedy and Accidents

The tragic death of my young friend Rambilas Podar—the tragedy is the more poignant because of the nature of the errand on which he was speeding when accident flung him to a sudden and untimely end and the death of his mother early this morning—will, I hope, turn the attention of the authorities to the necessity for erecting a more solid fence along the sea edge of the Hornby Vellard

There is need, too, for widening the stretch of road that lies between the traffic roundabout at the bottom of Pedder Road and the dangerous bottle-neck facetiously known as Eau-de-Cologne Corner

A proposal for widening that bottle-neck at Lovegrove, a death-trap so dangerous that it inspires caution in the most reckless driver—nevertheless there was a fatal crash there not so very long ago, and the wonder is that accidents are not more frequent there—was considered by the Corporation which expressed approval of expenditure in that behalf

A Languid Voice.

But nothing has been done so far towards putting the resolve of the City Fathers into effect though several months have elapsed since the matter was first mooted

I telephoned the department concerned this morning and after some digging a languid voice informed me that "plans for the work are in process of preparation and will be submitted in due course for approval by the Corporation"

"When," I asked, "is the Corporation liable to be afflicted with this urgent piece of work?"

I had to paraphrase that before the same languid voice somewhat deprecatingly replied, "That we are not in a position to say"

RAMBILAS A PODAR

The sympathy of all Bombay went out to the family of the boy Rambilas A Podar, who died under such tragic circumstances on his way to Bombay, when he was driving there to fetch a doctor for his dying mother Rambilas had only left us a short time back, and was helping his father in business, and a nicer boy it was difficult to meet From the year 1930 till he left the College, he had been one of those unobtrusive, quiet, most gentlemanly boys, whose presence in a class or in a group of students made itself felt by some strange influence, which his companions could not resist, and which gives tone and distinction to the circle in which they move Rambilas was apparently quite unconscious of the influence he thus wielded over his fellow-students , but they all took to him instinctively, as to one who was marked out to be a leader, though he never strove after such a distinction It would have come to him in time in his community, if he had been spared To his father, to his young wife, and to all his relatives we offer our heartiest condolence in their dire bereavement

—St Xavier's College Magazine,
September, 1936

It is not only the mills of God that grind infinitely slow. They have nothing on our Municipality in that respect, or for that matter, in most other respects And I wouldn't split hairs over dividing the blame between the City Fathers, who can't be expected to hasten anyway, and their executive arm who ought to be a band of hustlers

No Danger at All

Time was when complaints from householders were filed for attention at the Greek Kalends

Mr Nariman did something to ginger this department up and Mr Taunton, I hear, is jealous in maintaining the Corporation's reputation for prompt attention to civic grouses and grievances

That bottle-neck business, however, shows that the Corporation could put plenty more snap into itself without running the least risk of breaking any speed records

More urgent than the bottle-neck, however, is the need for a safety fence along the sea wall of the Vellard itself, which is heavily frequented by motor traffic and is a clear enough stretch to tempt drivers to step on the gas

Full of Menace

When the road surface is wet, as it is throughout the monsoon with heavy seas breaking in clouds of spray over the full stretch of it, the Vellard is full of menace to the motorist's life in every inch of its slippery, salt-encrusted length

At such times fifteen to twenty miles an hour is the upper limit of safe speed on a surface that is ideal for skidding

Yesterday afternoon the Vellard was at its worst A heavy gale was piling tons of water against the wall These broke in mighty waves on the road and cars had to hug the trees to avoid being flooded or over-turned

Unfortunate

When the unfortunate Rambilas entered the road in his Packard he must have been travelling at nothing less than forty, an ordinary speed for such a high powered car

He was no road hog Anxious to get help for his dying mother he very likely didn't notice the dangerous condition of the road

A swerve was enough to cause the car to skid out of control That seems to be precisely what occurred The car crashed

महालक्ष्मी पर भयंकर मोटर दुर्घटना घट गई

सेठ आनन्दीलालजी के सुपुत्र रामविलासजीका देहान्त

मारवाड़ी समाजका एक हीरा खो गया

शहर भर में शोक

बम्बई ६ जुलाई। आज दोपहरको करीब २ बजे महालक्ष्मी पर एक भयंकर दुर्घटना हो गई जिसके परिणामस्वरूप सेठ आनन्दीलालजी पोदारके सबसे छोटे लड़के श्रीयुत् रामविलास पोदारका देहावसान हो गया और उनका पुराना ड्राइवर बाबू मरते मरते बचा।

घटनाका कारण

सेठ आनन्दीलालजी की पेढी पर इक्कीस हजार की हुंडी सिकारने के लिए तिजोरी की चाबी की आवश्यकता थी। यह चाबी लेकर श्रीयुत् रामविलासजी अपने सान्ताक्रुजके निवासस्थानसे बम्बई की ओर एक नई पेकार्ड मोटर मे आ रहे थे। उनका ड्राइवर बाबू जोकि १८ वर्ष से सेठजीकी नौकरी करता है और जिसका लाइसेन्स नम्बर १९५ वाँ है; उनके साथ था। जब मोटर महालक्ष्मीकी सड़क पर समुद्रके किनारे जा रही थी तब सामने से दो मोटर-ट्रक आती दिखाई दीं। पूछ—ताछ से माल्म हुआ कि उसी समय मोटर-ट्रकोंके पीछे से एक मोटर तेजीसे आई। उसमे कोई यूरोपियन था। उस मोटर तथा ट्रको से बचाने के लिए इस पेकार्डको बहुत बाई तरफ ले लिया गया। इससे यह मोटर वृक्ष से टकरा कर समुद्रके किनारे पर लगे हुए लकडी

through the frail wooden railings and plunged into a boiling sea—it was the highest tide I have ever known at the Vellard —and, trapped in it, a most promising young life was cut off in a few seconds

Not the First Tragedy

That isn't the first tragedy that has occurred on the Vellard

Last year a young member of the Peerbhoy family crashed through the railings to meet his death in a somewhat similar manner

Then there was Mr Jamnadas Dwarkadas who was fortunate to escape with his life when his car took a header in similar fashion, also last year

And some time ago a band of revellers drove right on to the rubble below but escaped drowning because it happened to be low tide at the time.

What is Needed

Obviously we have had proof and to spare of the extremely dangerous nature of this stretch of road, which carries a daily increasing stream of motor traffic

There is room enough to widen the road to take the opposing streams of traffic without hindrance to each other

While this would greatly increase the safety factor, it will still be necessary to erect a more solid fence along the sea-front than the present frail wooden railing

It is to be hoped the authorities concerned, who have shown commendable alertness and enterprise in making our streets safer for traffic, will hasten to extend their attention to the Vellard before more lives are sacrificed in this most dangerous death-trap

—*The Evening News of India, 7-7-36.*

इच्छा रखते थे। पहिली कक्षासे लगाकर 'सेन्ट जेवियर्स कॉलेज' से बी० ए० की परीक्षा तक आपने अच्छे मार्क प्राप्त किए। अपने पिताके एक्सपोर्ट-इम्पोर्टके कामको ये स्वयं संभालते थे तथा अपने कारोबार के सिलसिलेमे यूरोप जानेका भी इरादा रखते थे; पर दुष्ट कालने इस कलीको पूरी खिलने भी नहीं दिया। आपकी आयु २३ वर्षकी थी। सन् १९३३ मे आपका विवाह भी होगया था। ईश्वर जाने आज इनके शान्त-स्वभाववाले पिता, मरण-शय्यापर पड़ी माता, तीनों भाई, सुकुमार स्त्री और अनेक कुटुम्बियो पर इस दुर्घटनाके कारण क्या बीतती होगी ?

एक निरभिमानी समाजसेवक

धनवान, विद्वान और युवक होते हुए भी रामविलासजी एक सरल और निरभिमानी व्यक्ति थे। 'सीताराम पोदार वालिका विद्यालय' के गत उत्सवके अवसर पर आप घण्टो साधारण स्वयंसेवककी तरह पावोंपर खड़े रहे थे। पडित जवाहरलालजीके आगमन पर उनके आरामके लिए अच्छी मोटरकी व्यवस्था करनेके लिये वे चिंतित थे। राजेन्द्र वाबूके राष्ट्रपतिके तौर पर स्वागत करनेके समय रुई की गाँठोके पुल की भारी व्यवस्था करनेमे सफलताके गुप्त कारण श्री रामविलासजी ही समझे जाते थे। मृदुभापी और सुशील होनेसे घर भर ही मे नहीं, समाज भरमे आपका वहुत सम्मान था। आपको सार्वजनिक कार्योंमे वहुत अधिक रुचि थी और योग भी देते रहते थे।

शहरभरमें शोक और रोष

रामविलासजीके देहावसानसे शहर भरमे शोककी लहरसी छागई है। 'मारवाडी सम्मेलन,' पुस्तकालय और 'सीताराम पोदार वालिका विद्यालय' वन्द रहेंगे और शामको शोक सभा भी होगी। सैकड़ो लोग घटनास्थल पर टूटी हुई मोटर को देखने जा रहे थे। सड़क पर लकड़ीके इस अप-

र्याप्त बचावके कारण लोगोको म्युनिसिपॅलिटिके प्रति भारी रोप है। वीर नरीमानने जिस समय वे मेयर थे, बहुत प्रयास किया था कि समुद्र और सड़कके बीच कुछ भारी रोक हो; पर उनकी न चली। यहाँ पर छोटे मोटे और भी एक्सिडेट हो चुके हैं। यदि ऊँची दीवाल या ऊँचे ऊँचे लोहेके मजबूत डंडे होते तो यह घटना न घटती, सम्भव है कुछ चोट लग जाती। मालूम हुआ है कि श्री वीर नरीमान इस घटना को लेकर एक वार और कॉर्पेरिशनमे इस बात पर जोर लगावेगे कि नागरिको की रक्षा के लिए वहाँ सुव्यवस्था हो।

—अखण्ड-भारत, ७-७-३६

शोचनीय निधन !

वम्बई के सुख्यातिलब्ध और सुप्रतिष्ठित सेठ आनंदीलालजी पोदार के पुत्र रामविलास सोमवार को व्यापार-सम्बन्धी कार्य के लिए सांताक्रुजसे मोटर द्वारा वम्बई आते समय, मोटर कावूसे वाहर होकर समुद्रमे जा पड़नेके कारण, परलोकवासी हो गये। वे बड़े ही होनहार और माता-पिताके भक्त थे। हाल मे ही उन्होंने बी. ए. की परीक्षा पास की थी और सार्वजनिक कार्यों मे रस लेने लगे थे। पर दैवदुर्विपाकसे असमयमे ही वे हमसे विदा हो गये। यह तो हुई एक बात। यह वज्र-पात था, जिसने हृदयो को चूर चूर कर डाला। पर नहीं, दैवी इच्छा अभी कुछ और भी करना चाहती थी। सेठजीकी रुग्ण पत्नी भी अपने पुत्रके निधन के वादही चल वसीं। वे वृद्धा थीं। उन्होने जीवन के चढाव-उतार देखे थे। वे सौभाग्यवती थीं और अत मे भी उन्होने यह दुःख न देखा। वे एकदिन पूर्वसे ही मूर्च्छितावस्था मे थीं। वे ससार से विदा हुई। हम दैवी इच्छापर विश्वास करनेवालोमे है। हमारा तो यह विश्वास है कि जो कुछ होता है, दैवी शक्तियोकी प्रेरणासे होता है। पर उनका रहस्य हम पर प्रगट नहीं होता। मरना और जीना लगा ही रहता है, यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ, यह सिलसिला कभी नहीं टूटता। कहाँ इस जीवको क्या करना होता है यह भी कौन कह सकता है, पर यह सव जानते हे कि जो यहाँ से जाता है वह वहाँ भी रहता है। किस रूप में रहता है, किस तरह रहता है; ये परम रहस्यमय वातें है, जो प्रभुके अनुग्रहसे कभी किसी पर खुलती हैं, पर ये पक्तियाँ तो यहाँ

शोचनीय निधन !

वम्बई के सुख्यातिलब्ध और सुप्रतिष्ठित सेठ आनंदीलालजी पोदार के पुत्र रामविलास सोमवार को व्यापार-सम्बन्धी कार्य के लिए सांताक्रुजसे मोटर द्वारा वम्बई आते समय, मोटर कावूसे बाहर होकर समुद्रमे जा पड़नेके कारण, परलोकवासी हो गये। वे बड़े ही होनहार और माता-पिताके भक्त थे। हाल मे ही उन्होंने बी. ए. की परीक्षा पास की थी और सार्वजनिक कार्यों मे रस लेने लगे थे। पर दैवदुर्विपाकसे असमयमे ही वे हमसे विदा हो गये। यह तो हुई एक बात। यह वज्र-पात था, जिसने हृदयो को चूर चूर कर डाला। पर नहीं, दैवी इच्छा अभी कुछ और भी करना चाहती थी। सेठजीकी रुग्ण पत्नी भी अपने पुत्रके निधन के वादही चल वसीं। वे वृद्धा थीं। उन्होने जीवन के चढाव-उतार देखे थे। वे सौभाग्यवती थीं और अत मे भी उन्होने यह दुःख न देखा। वे एकदिन पूर्वसे ही मूर्च्छितावस्था मे थीं। वे ससार से विदा हुई। हम दैवी इच्छापर विश्वास करनेवालोमे है। हमारा तो यह विश्वास है कि जो कुछ होता है, दैवी शक्तियोकी प्रेरणासे होता है। पर उनका रहस्य हम पर प्रगट नहीं होता। मरना और जीना लगा ही रहता है, यहॉ से वहाँ और वहाँ से यहाँ, यह सिलसिला कभी नहीं टूटता। कहाँ इस जीवको क्या करना होता है यह भी कौन कह सकता है, पर यह सब जानते है कि जो यहाँ से जाता है वह वहाँ भी रहता है। किस रूप में रहता है, किस तरह रहता है; ये परम रहस्यमय वातें है, जो प्रभुके अनुग्रहसे कभी किसी पर खुलती हैं, पर ये पक्तियाँ तो यहाँ

शोचनीय मृत्यु !

हमें यह सुनकर अत्यन्त शोक हुआ कि बम्बईके सुप्रसिद्ध व्यापारी सेठ आनन्दीलालजी पोदारके कनिष्ठ पुत्र श्रीयुत रामबिलासजी पोदार गत् ६ जुलाईके तीसरे पहर मोटर दुर्घटनासे स्वर्गवासी हो गये। रामविलासजी सुशिक्षित, विवेकशील और उदारचेता नवयुवक थे। आप अपनी माताकी चिकित्साके लिये डाक्टर लाने मोटर द्वारा सान्ताक्रुजसे बम्बई जा रहे थे। रास्तेमे मोटर दुर्घटना हो गयी और केवल २३ वर्षकी आयुमे आप अपने समस्त कुटुम्बियो, सम्बन्धियों, और प्रियजनोको रुलाकर परलोकवासी हो गये। आप वास्तवमे बड़े होनहार और समाजके भूषण रूप थे। खेद है, आपकी मृत्युके कुछ ही घण्टे वाद आपकी मानाजीका भी स्वर्गवास हो गया। सेठ आनन्दीलालजीको इस वृद्धावस्थामे ये दोनो शोक असह्य हो रहे होगे। परमात्मा आपको तथा अन्य शोक सन्तप्त स्वजनोको धैर्य और रामबिलासजी तथा उनकी माताजीकी आत्माओंको शान्ति प्रदान करे।

—लोकमान्य, ८ जुलाई १९३६

प्रसङ्गोपात ही समझनी चाहिये। कह हम यह रहे थे कि किसी प्रकारके क्रमसे सेठ आनदीलालजी पोदार, जे. पी. के हृदयको क्लेश पहुँचानेवाले एक साथ दो प्रसङ्ग हो गये। उनके हृदयको कितनी चोट पहुँची होगी, यह सहज मे ही अनुमान किया जाता है। पर इस प्रकारकी बातो मे विवशता ही रहती है। हम रो सकते हैं, झींक सकते हैं, अपने हृदयको कुढा सकते है और अपना जीवन दुःखमय बना सकते हैं। पर हम किसी परलोकवासी व्यक्तिको वापिस नहीं बुला सकते। हाँ! यह तो अवश्य ही कर सकते है कि अपनी तरह परलोकवासियों को व्यथित बनाते रहे, पर इसमे किसीका भी हित नहीं है। इसीलिए हम यह कहेगे कि सेठजी और उनके परिवारवाले तथा इष्ट मित्र धैर्य धारण करे और प्रभु से उनपर कृपा करने की प्रार्थना करते रहे।

—श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार, १० जुलाई १९३६

महान् दुःख सुनना पड़ा। इस दुखद समाचारसे उनका रोग और अधिक बढ गया और कुछ ही घंटोंके बाद वे भी अपने प्रिय पुत्रसे मिलनेको स्वर्ग सिधारीं। वयोवृद्ध सेठ आनंदीलालजी पर इस दुर्घटनाका जैसा भीषण धक्का लगा है, वह असह्य और कल्पनातीत है। उनके इस महान दुःखमें न केवल बम्बई नगर ही बल्कि सारे भारतवर्षके मारवाड़ी समाजने अपनी समवेदना प्रगट की है। 'पंचराज' भी सेठजीसे आन्तरिक समवेदना प्रगट करते है और भगवानसे प्रार्थना करते है, कि सेठजीको धैर्य और मृत आत्माओको शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे।

—पञ्चराज, जुलाई-अगस्त १९३६.

शोचनीय मृत्यु !

हमें यह सुनकर अत्यन्त शोक हुआ कि बम्बईके सुप्रसिद्ध व्यापारी सेठ आनन्दीलालजी पोदारके कनिष्ठ पुत्र श्रीयुत रामबिलासजी पोदार गत् ६ जुलाईके तीसरे पहर मोटर दुर्घटनासे स्वर्गवासी हो गये। रामविलासजी सुशिक्षित, विवेकशील और उदारचेता नवयुवक थे। आप अपनी माताकी चिकित्साके लिये डाक्टर लाने मोटर द्वारा सान्ताक्रुजसे बम्बई जा रहे थे। रास्तेमे मोटर दुर्घटना हो गयी और केवल २३ वर्षकी आयुमे आप अपने समस्त कुटुम्बियो, सम्बन्धियों, और प्रियजनोको रुलाकर परलोकवासी हो गये। आप वास्तवमे बड़े होनहार और समाजके भूषण रूप थे। खेद है, आपकी मृत्युके कुछ ही घण्टे बाद आपकी मानाजीका भी स्वर्गवास हो गया। सेठ आनन्दीलालजीको इस वृद्धावस्थामे ये दोनो शोक असह्य हो रहे होगे। परमात्मा आपको तथा अन्य शोक सन्तप्त स्वजनोको धैर्य और रामबिलासजी तथा उनकी माताजीकी आत्माओंको शान्ति प्रदान करे।

—लोकमान्य, ८ जुलाई १९३६

अपनी प्रतिभाका पूरा परिचय देकर भारतेन्दु हरिश्चन्द्रकी इस युक्तिको सार्थक किया था—

"होनहार बिरवानके, होत चीकने पात"।

बच्चोसे प्रेम करना, हमजोलियोसे मिलके खेलना, सहपाठियोसे मीठी बाते करना, धनी पुत्र होने की भावना भूलकर अपनी क्लासमे सबसे मिलकर रहना, घर जाना तो अपने निर्दोष मुखसे सारे परिवारको एक ही मधुर मुस्कानमे प्रफुल्लित कर देना, छोटी अवस्थामे ही बड़ोका यथेष्ट आदर करना, पिता-भाईके परिचितोंके प्रति सन्मान दिखाना आदि बालक रामविलासके स्वाभाविक गुण थे।

स्थानीय 'मारवाड़ी विद्यालय'से उन्होंने मॅट्रिक्युलेशन परीक्षा पास की तदनन्तर 'सेण्ट जेवियर कॉलेज' से बी० ए० की डिग्री लेकर, वे 'आई० सी० एस्०' परीक्षाके लिये इग्लेण्ड जानेवाले थे, पर पारिवारिक परिस्थिति और घरेलू व्यापारके कारण न जा सके। इसके बाद उन्होंने एम्० ए० क्लासमे इतिहास लेकर पढना आरंभ किया; वकालत भी पढने लगे। एम्० ए० मे इतिहास लेनेका विशेष ध्येय अग्रवाल जातिके इतिहासकी खोज था। किन्तु 'आनन्दीलाल पोद्दार एण्ड कम्पनी के बढते हुए व्यापारको सम्भालनेका भार इनपर ही विशेषरूपसे पडा और वे उसके एक हिस्सेदार भी हो गये। फलतः उन्हे अपना अध्ययन कुछ कालके लिये स्थगित करना पड़ा।

व्यवसाय क्षेत्रमे आकर उन्होने अपनी कार्य-कुशलताका इतना प्रभावशाली और लाभदायक परिचय दिया, कि कम्पनीके सभी विभाग चमक उठे। कम्पनी नगरकी किसी भी सुसंचालित और सुप्रबन्धित कम्पनीसे टक्कर लेनेके लिये तैयार हो गयी। उन्होने चाँदी और शेअरके भी विभाग खोल दिये। इस तरह वे अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे अपने फर्मकी शाख स्थापित कर रहे थे। यह उनके ही प्रयत्नोका फल था, कि उक्त कपनी 'न्यूयॉर्क कॉटन एक्सचेंज,' 'लिवरपुल कॉटन एसोसियेशन,' और लण्डनके

दुःखमय घटना !

इस दुर्घटनाके दुःखमय समाचार लिखनेमे हमारा हृदय काँपता है; लेखनी थर्राती है, बुद्धि चकराती है–कि हाय ! तुम क्या लिख रहे हो? पाठको ! वह दुर्घटना क्या है, एक अपनी समाजके प्रमुख सज्जनके ऊपर वृद्धावस्थामे शोकका पहाड टूट पडा है। मारवाडी समाजके एक होनहार नवयुवकको दुष्ट कराल-कालने अकस्मात् छीन लिया है, उस होनहार नवयुवकका नाम और फोटो सामने आप देख रहे है।

यह दुर्घटना श्रावण-मासमे हुई। दुर्घटनावाले दिन वावू रामविलास-जीकी माताकी तवियत कुछ अधिक खराव हो गई थी। माताके स्नेहने स्व० वावू रामविलासजीको इतनी अधिक तेजीसे खींचा कि उन्होने अपने मोटरवालेसे खूव तेजीके साथ मोटर चलानेको कहा। मोटर पूरी गतिसे जा रही थी, कि सामनेसे दो मोटर आगयी। उनसे बचनेके लिए ड्राइवरने मोटरको इतना पीछे हटाया कि वह महालक्ष्मीके समुद्रमे गिर पडी और वावू रामविलासजी पोदार अपनी स्नेहमयी माताको दवा नहीं दे सके। इस घटनासे वम्बई नगरमे सर्वत्र शोक छा गया। एक ओर उस होनहार युवकके प्रति समाजको वडी वडी आशाएँ थीं, दूसरी ओर रुग्णावस्थामे पड़ी हुई माता अपने पुत्रके हाथसे दवा लेनेको तडफडा रही थी। परन्तु इस भीषण घटनासे माताके हृदयपर इस रुग्णावस्थामें भी एक और भारी चोट लगी और दवाके स्थान पर उन्हे पुत्र-वियोगका

कहानी सुनना, सबकी सुनके कुछ न कुछ प्रार्थी के विचारोंको कार्यान्वित करना, घरका व्यापार देखना, बाजारका रुख पहचानना, स्वाध्याय करना; एक शब्दमे कर्मण्यताका तूफान लेके पोदार वंशमे हँसते हुए सूर्यकी तरह वे आये थे और कुछ ही दिनोमे अपनी अलौकिक प्रतिभाकी चमक दिखाके जहाँसे आये थे वहीं यह कहते हुए चले गये—

'हयात ले आई, आये,
कज़ा ले चली, चले;
न अपनी खुशी आये,
न अपनी खुशी चले।'

एक बात और। स्वर्गीय रामविलासजी अपने समवेष्टित परिचितो और कुटुम्ब तथा व्यवसायिक क्षेत्रके सुगम, सुशील, सुशिक्षित, सहायक और साधन थे। उन्हे करालकालने छीन कर हमे जो मार्मिक और लौकिक ठेस पहुँचाई है, शायद उसकी पूर्ति शीघ्र सम्भव नहीं। उनका जितना ऊँचा मन था, उतना ही एक धनी परिवारमे होकर ऊँचा आदर्श और चरित्र भी था। उनकी असामयिक मृत्युसे पोदार-परिवार और उसके मित्रोके हृदयमे जो आघात पहुँचा है, सम्भवतः उसका निकट भविष्यमे मिटना कठिन है। फिर भी सन्तोपकी बात यह है, कि रामविलासजी—**वीर अभिमन्यु**—की तरह कर्तव्य क्षेत्रमे आये थे और अन्तिम समय तक अपना कर्तव्य पालन करते हुए, इह लीला संवरण की। माताजी बीमार थीं, सारा परिवार उनकी चिन्तासे चिन्तित और अस्त-व्यस्त था। वे अपने फर्मसे एक आवश्यक टेलीफोन पाकर सान्ता-क्रुजसे चलके बम्बई आते हे, फर्मका काम देखते है, माताजीके डाक्टरसे मुलाकात करते हैं, फिर भागे हुए माताके अन्तिम दर्शनोके लिये दौडते है, मोटर फिसलती है, वह फिर गहरे समुद्रमे गिरती है और रामविलासजी माताकी चिन्ता करते हुए पहलेही वहाँ जा बैठते

महान् दुःख सुनना पड़ा। इस दुखद समाचारसे उनका रोग और अधिक बढ गया और कुछ ही घंटोंके बाद वे भी अपने प्रिय पुत्रसे मिलनेको स्वर्ग सिधारीं। वयोवृद्ध सेठ आनंदीलालजी पर इस दुर्घटनाका जैसा भीषण धक्का लगा है, वह असह्य और कल्पनातीत है। उनके इस महान दुःखमें न केवल बम्बई नगर ही बल्कि सारे भारतवर्षके मारवाड़ी समाजने अपनी समवेदना प्रगट की है। 'पंचराज' भी सेठजीसे आन्तरिक समवेदना प्रगट करते है और भगवानसे प्रार्थना करते है, कि सेठजीको धैर्य और मृत आत्माओको शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे।

—पञ्चराज, जुलाई-अगस्त १९३६.

!

आजसे कोई छः मास पूर्व 'मारवाड़ी हितकारिणी सभा' और 'मारवाड़ी नवयुवक मण्डल'की स्थापनासे ऐसा जान पड़ता था, कि अब समाजमे एक लगनकी लहर आ गई है। हितकारिणी सभाके कर्णधार स्वनामधन्य सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार (सभापति) और मन्त्री श्रीयुत पीरामलजी केडिया थे और ऐसा विधान बनाया गया, जिससे ऐसा जान पड़ता था, कि पुराने तथा नये खयालके सब मारवाड़ी इसी संस्थाके झण्डेके नीचे आ जायेंगे, परंतु 'मन चीती होवे नहीं, प्रभु चीती तत्काल' मनुष्य सोचता है और परमेश्वर उसे नष्ट कर देता है। ठीक ऐसाही हुआ! मारवाडी समाजके होनहार पोद्दार-कुल-मयङ्क रामविलासजी पोद्दारका असामयिक स्वर्गवास, केवल मारवाड़ी समाजके ही लिये वज्राघात न था; बल्कि उन तमाम संस्थाओं, समाजों और व्यक्ति विशेषोंके लिये भी महान ठेस थी। यही कारण है, कि 'मारवाड़ी हितकारिणी सभा'का जीवन-प्रवाह रुक गया। यह वह सभा थी, कि जिसकी कलकत्तेके मारवाड़ी कार्यकर्त्ताओंने प्रशसा की थी। इसकी नियमावलीसे सभी लोग सन्तुष्ट थे। पर ईश्वरकी गति निराली है; एक बनता हुआ कार्य बिगड़ गया।

—स्वाधीन-भारत, २८ नवम्बर १९३६

मारवाडी समाजका एक दीप निर्वाण !

(ले०-पं० सुन्दरलाल त्रिपाठी)

संसारमे गरीबो और अमीरोमे मैत्री नहीं हुआ करती। दोनो दो छोर पर रहते है; दोनोमे घोर असमञ्जस हुआ है, यह एक प्राकृतिक नियम है पर सस्कार और संस्कृतिसे इसमें भी विभिन्नता दिखाई दे जाती है। आज हम जिस मारवाड़ी-अग्रवाल कुल-सम्भूत नवयुवक स्वर्गीय राम-विलासजी पोदारकी चर्चा करने जा रहे हैं, वह उक्त कथित सिद्धान्तके ज्वलन्त अपवाद थे। उनका जीवन दीनोंके लिए एक आधार था, उनकी सहृदयता गरीबोकी शाश्वत-जननी थी, उनकी उदारता, निराश्रितोका आश्रय और विनम्र स्वभाव, पुरजनों और परिजनोके लिए एक सजीव फुलवारी थी; जिसकी सौरभ और सुगन्धिसे चारो ओर एक हँसमुख संसार दिखाई देता था। पर आह! बुरा हो उस--६ ठी जुलाई १९३६ के दिनका जिसने गरीबोका एक आधार छीन लिया। भारत-माताकी गोदसे एक होनहार कुशल व्यवसायी और अलौकिक शिक्षा-प्रेमी चिरकालके लिये चला गया।

स्वर्गीय रामविलास रूईके अद्वितीय व्यापारी स्वनामधन्य श्रीमान् सेठ आनन्दीलालजी पोदारके कनिष्ठ पुत्र थे। इनका जन्म गत सन् १९१३ ई० की ३ री सितम्बरको हुआ था। इन्होने बचपनसे ही

પોતાની ગાડી રસ્તાની જોડે લાગેલા ફુટપાથ તરફ ફેરવી, જેમ કરતાં એ ગાડી એક ઝાડ સાથે જોરમાં અથડી પડી અને ઝાડ સાથે અથડાં-તાંજ મોટરકાર સામી બાજુએ ધસી જઈ રેલીંગને અથડી દરીયામાં ઉથલી પડી એ વેળાજ એ રસ્તેથી પસાર થતી મોટરકારમાં બેઠેલા લોકોએ તુરતજ ઉતરી પડી આ ગંભીર અકસ્માતમાં ફસી પડેલા બંને સખસોને બચાવવાની કોશેષ કરી હતી એમ માલમ પડે છે કે મી૦ રામબિલાસને થયલી ઇજા સઉથી ગંભીર હતી. તેમનાં માથા-માંથી પુષ્કળ લોહી વહેતું હતું ડ્રાઇવિરને પણ ગંભીર ઇજા પુગી હતી મોટરમાં પસાર થતા બે ડ્રાકટરોએ બંનેને તબીબી મદદ આપી હતી અને મી૦ રામબિલાસ, જેઓ બેશુદ્ધ હાલતમાં હતા તેઓને ઇન-જેકશન પણ તેમણે તુરતજ આપ્યાં હતાં પરંતુ આ સઘળા ઇલાજો ફોકટ ગયા હતા એજ સમયે મુંબઇનાં માજી મેયર મી૦ ખુરશેદ એફ નરીમાન પોતાની મોટરમાં આવી પુગ્યા હતા અને તેઓએ તુરતજ બંબાખાતાં ઉપર ટેલીફોન કરી મોટર એમ્બ્યુલન્સ મગાવી બને કમનસીબ સખસોને તેમાં નાંખી તુરતજ 'સર જે જે હોસપીટ-લમાં' લઇ ગયા હતા, જ્યાં તપાસ કરતાં મી૦ રામબિલાસ મરણ પામેલા માલમ પડ્યા હતા, જ્યારે ડ્રાઇવરને હોસપીટલમાં રાખી ત્યાં તેની ચાંપતી સારવાર કરવામાં આવી હતી. ડ્રાઇવરની સ્થીતી ગંભીર છે

આ અકસ્માતની ખબર પડતાં મરનારનાં કુટુંબીજનો તુરતજ હોસ્પીટલ ઉપર દોડી ગયાં હતાં એ સઘળો વખત મી૦ નરીમાન ત્યાંજ હાજર હતા.

મરનારની લાશ ઉપર તુરતા તુરતજ જ્યૂરી ભરવામાં આવી હતી અને લાશ ઓળખાવ્યા બાદ જ્યૂરી મુલતવી રાખવામાં આવી હતી. તેમની લાશ તુરતજ સાંતાકુઝ લઈ જવામાં આવી હતી અને સાયં-કાળે અગ્નિદાહની ક્રિયા કરવામા આવી હતી જે વેળા મુંબઇના મોટા મોટા વેપારીઓએ હાજરી આપી હતી હાજર રહેલાઓમાં મુંબ-ઈના શેરીફ પણ હતા.

(આ કરુણાજનક બનાવથી અગ્રવાલ કોમમાં ભારે ખેદની લાગણી ફેલાઈ હતી શ્રીમાન આનંદીલાલ પોદારે આજ સુધીમાં ઓછામાં

अपनी प्रतिभाका पूरा परिचय देकर भारतेन्दु हरिश्चन्द्रकी इस युक्तिको सार्थक किया था—

"होनहार विरवानके, होत चीकने पात"।

बच्चोसे प्रेम करना, हमजोलियोसे मिलके खेलना, सहपाठियोसे मीठी बाते करना, धनी पुत्र होने की भावना भूलकर अपनी क्लासमे सबसे मिलकर रहना, घर जाना तो अपने निर्दोप मुखसे सारे परिवारको एक ही मधुर मुस्कानमे प्रफुल्लित कर देना, छोटी अवस्थामे ही बड़ोका यथेष्ट आदर करना, पिता-भाईके परिचितोंके प्रति सन्मान दिखाना आदि बालक रामविलासके स्वाभाविक गुण थे।

स्थानीय 'मारवाड़ी विद्यालय'से उन्होंने मॅट्रिक्युलेशन परीक्षा पास की तदनन्तर 'सेण्ट जेवियर कॉलेज' से बी० ए० की डिग्री लेकर, वे 'आई० सी० एस्०' परीक्षाके लिये इग्लेण्ड जानेवाले थे, पर पारिवारिक परिस्थिति और घरेलू व्यापारके कारण न जा सके। इसके बाद उन्होंने एम्० ए० क्लासमे इतिहास लेकर पढना आरंभ किया; वकालत भी पढने लगे। एम्० ए० मे इतिहास लेनेका विशेप ध्येय अग्रवाल जातिके इतिहासकी खोज था। किन्तु 'आनन्दीलाल पोद्दार एण्ड कम्पनी के बढते हुए व्यापारको सम्भालनेका भार इनपर ही विशेपरूपसे पडा और वे उसके एक हिस्सेदार भी हो गये। फलतः उन्हे अपना अध्ययन कुछ कालके लिये स्थगित करना पड़ा।

व्यवसाय क्षेत्रमे आकर उन्होने अपनी कार्य-कुशलताका इतना प्रभावशाली और लाभदायक परिचय दिया, कि कम्पनीके सभी विभाग चमक उठे। कम्पनी नगरकी किसी भी सुसंचालित और सुप्रबन्धित कम्पनीसे टक्कर लेनेके लिये तैयार हो गयी। उन्होने चाँदी और शेअरके भी विभाग खोल दिये। इस तरह वे अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे अपने फर्मकी शाख स्थापित कर रहे थे। यह उनके ही प्रयत्नोका फल था, कि उक्त कपनी 'न्यूयॉर्क कॉटन एक्सचेंज,' 'लिवरपुल कॉटन एसोसियेशन,' और लण्डनके

મુંબઈની મ્યુનિસિપાલટીને આ સાંકડો રસ્તો પહોળો કરવા યા દરીયા કીનારા આગળ જે રેલીંગ ભરી છે તેને બદલે દીવાલ બાંધી લેવાનું હજીએ સુઝ પડતું નથી. અમારા વાંચકને યાદ હશે કે એજ સ્થળ ઉપર જ્યારે શ્રીયુત જમનાદાસ દ્વારકાદાસને ગંભીર અકસ્માત નડ્યો હતો તે વેળા મેયર પદ ઉપરથી મી૦ નરીમાને પ્રોટેસ્ટ જાહેર કર્યો હતો અને હોર્નબી વેલાર્ડ પોહળા કરવા મ્યુનિસિપાલ કારોબારીઓને અપીલ કરી હતી પણ તેના સંબંધમાં મ્યુ૦ સત્તાવાળાઓએ હજી કાંઈ કર્યું નથી અને તેનું પરીણામ એ આવ્યું છે કે દર વરષે એકાદ મોટરકાર રેલીંગ સાથે થઈ ઝાડ સાથે ટક્કર ઝીલી દરીયામાં ડુબે છે અને માણસોના કીંમતી જાન જાય છે. મુંબઈની મ્યુ૦ હવે પણ જાગશે કે ?

આ મરણની ખબર પડતાં રૂ બજાર તુરતજ બંધ કરવામાં આવ્યું અને સદ્દગતના માનમાં આજે પણ રૂ બજાર બંધ રાખવામાં આવશે.

—મુમ્બઈ સમાચાર, ७-७-३६.

'ऑइल-सीड्स एसोसियेशन' की मेम्बर बन गई। संक्षेपमे वे कम्पनीके जीवन थे; जीवन ही नहीं, वे कम्पनीकी सारी गतिविधिके प्राण थे और थोड़ेही समयमे वे फर्मके जनरल-मेनेजर कहलाने लगे।

राष्ट्रीय आन्दोलनमे वे यथेष्ट भाग लेते थे। भारतकी स्वाधीनता उनको उतनी ही अभीष्ट थी, जितनी किसी भी कट्टर राष्ट्रवादीको हो सकती है। गत सन् १९३४ ई० मे उन्होंने बम्बई-कॉंग्रेसके कार्यमे दिलचस्पी ली और वे स्वागतसमितिके अर्थ सदस्य भी थे। कॉंग्रेस की जुबिलीके अवसरपर उन्होंने यथेष्ट-रीतिसे कार्य किया और शिक्षित नवजवानके लिये ऐसा होना स्वाभाविक ही था! कारण उनके हृदयको बचपनसे ही मानवताके विस्तृत क्षेत्रमे विचरण करते हुए अपने सहपाठियोके साथ सहृदयताका परिचय देनेका अवसर मिला था।

जितना उन्हे राष्ट्रसे प्रेम था, उतना ही उनको राष्ट्रको सुदृढ बनानेकी एकमात्र साधना और शिक्षासे अनुराग था। उनके उद्योग और सुप्रबन्धके कारण श्रीमान सेठ आनन्दीलालजी द्वारा परिचालित नवलगढ और सान्ताक्रुज (बम्बई) के हाई-स्कूल आज भी स्तब्ध होके उनकी कार्य-दक्षता और शिक्षा-प्रेमका ढिंढोरा पीट रहे है। इतना ही नहीं, वे अपने कॉलेजके कितने ही क्लबोके प्राणदाता तथा 'मारवाडी विद्यालय' के शिक्षा बोर्डके एक प्रौढ तथा मनस्वी सदस्य थे। इसी तरह, वे 'अग्र-वाल जातीय कोप' तथा 'सीताराम पोदार बालिका विद्यालय'के कर्मिष्ठ मेम्बर थे। छोटीसी अवस्था मे ही इतने कर्तव्यपरायण थे, कि जहाँ देखिये वहाँ रामबिलासजी किसी न किसी रूपमे मौजूद थे और तो क्या, 'राजपूताना शिक्षामण्डल'के एक आजीवन और उसकी प्रबन्ध-कमेटीके एक क्रियाशील सदस्य थे।

सभाओमे जाना, सामाजिक हलचलोमे भाग लेना, सार्वजनिक क्षेत्रमे आगे आना, पीड़ितोकी सहायता करना, समभावसे सबकी दुख-दर्दकी

कहानी सुनना, सबकी सुनके कुछ न कुछ प्रार्थी के विचारोंको कार्यान्वित करना, घरका व्यापार देखना, बाजारका रुख पहचानना, स्वाध्याय करना; एक शब्दमे कर्मण्यताका तूफान लेके पोदार वंशमे हँसते हुए सूर्यकी तरह वे आये थे और कुछ ही दिनोमे अपनी अलौकिक प्रतिभाकी चमक दिखाके जहाँसे आये थे वहीं यह कहते हुए चले गये—

'हयात ले आई, आये,
कज़ा ले चली, चले;
न अपनी खुशी आये,
न अपनी खुशी चले।'

एक बात और। स्वर्गीय रामविलासजी अपने समवेष्टित परिचितो और कुटुम्ब तथा व्यवसायिक क्षेत्रके सुगम, सुशील, सुशिक्षित, सहायक और साधन थे। उन्हे करालकालने छीन कर हमे जो मार्मिक और लौकिक ठेस पहुँचाई है, शायद उसकी पूर्ति शीघ्र सम्भव नहीं। उनका जितना ऊँचा मन था, उतना ही एक धनी परिवारमे होकर ऊँचा आदर्श और चरित्र भी था। उनकी असामयिक मृत्युसे पोदार-परिवार और उसके मित्रोके हृदयमे जो आघात पहुँचा है, सम्भवतः उसका निकट भविष्यमे मिटना कठिन है। फिर भी सन्तोषकी बात यह है, कि रामविलासजी—**वीर अभिमन्यु**—की तरह कर्तव्य क्षेत्रमे आये थे और अन्तिम समय तक अपना कर्तव्य पालन करते हुए, इह लीला संवरण की। माताजी बीमार थीं, सारा परिवार उनकी चिन्तासे चिन्तित और अस्त-व्यस्त था। वे अपने फर्मसे एक आवश्यक टेलीफोन पाकर सान्ता-क्रुजसे चलके बम्बई आते है, फर्मका काम देखते है, माताजीके डाक्टरसे मुलाकात करते हैं, फिर भागे हुए माताके अन्तिम दर्शनोके लिये दौडते है, मोटर फिसलती है, वह फिर गहरे समुद्रमे गिरती है और रामविलासजी माताकी चिन्ता करते हुए पहलेही वहाँ जा बैठते

સદ્ગત રામબિલાસ આનંદીલાલ પોદાર.

ટુંક રેખા ચિત્ર.

(લે૦—બાળપણથી તેમને પીછાણનાર)

સદ્ગત રામબિલાસ પોદારનો આત્મ કેવી ઉચ્ચ કોટીનો હતો, તે વીષે બહારની દુનીયાને ભાગ્યેજ ખબર છે. તેના બધા મિત્રો અને નોકરોને પણ તે એક કુટુંબીજન જેવા લાગતા. તેને વીષે ખરેખર કહી શકાય કે તેને કોઈ દુશ્મનજ નહોતું તેમનો જીવનકાળ એટલો ટુંકો છે કે તેમના જીવન કાર્યની સાચી કદર કરવી મુશ્કેલ પડે. છતાં અતિશયોક્તિ વગર કહી શકાય કે રામબિલાસ એક આદર્શ પુત્ર, આદર્શ બંધુ, આદર્શ મિત્ર અને આદર્શ શેઠ હતા.

જન્મ

૧૯૧૩ ના સપ્ટેમ્બરમાં રામબિલાસનો જન્મ થયો હતો અને સદ્ભાગ્યે તેમના જન્મ પછી શેઠ આનંદીલાલ પોદારની આર્થિક સ્થિતિ એકદમ સુધરતી ચાલી અને વેપારી કોમમાં તેઓ એક આગેવાન થઈ પડ્યા આથી જુની કહેતી પ્રમાણે રામબિલાસે શુભ પગલાં ભર્યાં.

અભ્યાસ

તેમની બાળપણની કારકીરદીમાં એવો અસાધારણ બનાવ બન્યો નથી. 'મારવાડી વિદ્યાલય હાઇસ્કુલ'માં મેટ્રીકની પરીક્ષા પસાર કરી ઝેવીઅર્સમાં તેઓ ગ્રેજયુએટ થયા. ત્યાર પછી એમ. એ અને એલ-એલ. બી ના વર્ગોમાં જોડાયા પણ તેમના પિતાશ્રીના વધતા જતા ધંધાને લીધે તેમને પણ ધંધાની જવાબદારી ઉઠાવવી પડી.

ધંધામાં કાબેલીયત

ધંધામાં પણ બાહોશી અને કુનેહથી તેમણે સારી નામના મેળવી અને ટુંક વખતમાં સઉને તે પ્રિય થઇ પડ્યા. ધંધાને અંગે તેમના સંસર્ગમાં આવનાર સઉ ઉપર તેમની સારી છાપ પડતી.

ગરીબોને મદદ

પોતાના ધીકતા ધંધામાં પણ સમાજમાં પ્રવર્તતી ગરીબાઈ, અજ્ઞાન અને શારીરિક કંગાળીયતનો ખ્યાલ તેઓ કદી ભુલ્યા નહોતા. ગરીબ અને પીડિતોને તેમણે છુટે હાથે મદદ આપી છે. ' મારવાડી વિદ્યાલય હાઇસ્કુલ,' 'સીતારામ પોદ્દાર ગર્લ્સ સ્કુલ' અને 'રાજપુતાના શિક્ષા મંડળ'ના એજ્યુકેશન બોર્ડના તેઓ સભ્ય હતા. આ ઉપરાંત શાન્તાક્રુઝની પોદ્દાર હાઇસ્કુલના વહીવટમાં પણ તેઓ સારો રસ લેતા હતા

કુશળ ખેલાડી

રામબિલાસ એક કુશળ ખેલાડી હતા ટેનીસ, ક્રીકેટ, ચેસ અને બીજી રમતોના શોખીન હતા. તેમનું ગૃહજીવન પણ સુખી હતું. ત્રણ વષ પહેલાં તેઓ પોતાની પસંદગીની, એક ખાનદાન કુટુંબની કન્યાને પરણ્યા હતા પણ વિધિને તેમનુ સુખ ગમ્યુ નહી તેમના અકાળ અવસાનના ઘાથી શેઠ આનંદીલાલની પોલાદી કાયા પણ લથડી ગઈ છે. પણ આપણે આશા રાખીશું કે રામબિલાસના નામનું સ્મરણ, તેમને અને તેમના કુટુંબીજનોને આ ખોટ સહન કરવાનુ બળ આપશે

—મુમ્બઈ સમાચાર, ૩૦–૭–૩૬

રામબિલાસ આનંદીલાલ પોદાર

ગર્ભ શ્રીમંત અને અભિનવ યૌવનમાં આવી પ્હોંચેલા હોવા છતાં, પોતાની સરલતા, વિનમ્રતા અને ઔદાર્યથી મહાકવિ બાણને પણ ખોટો પાડનાર ભાઇ રામબિલાસનું અકાળ અવસાન કેવા ખેદજનક સંજોગોમાં થયું તે આપણે સૌ જાણીએ છીએ. મૃત્યુ કાંઠે ઉભેલી, પીડાતી માતાનું દરદ હળવું થાય એ બુદ્ધિથી માતૃ-વત્સલ ભાઈ રામબિલાસ ઔષધ આણવા માટે મોટરમાં મુંબઈ તરફ ઉપડ્યા–માર્ગમાં અકસ્માત થયો, જેમાં તે ઝડપાઈ ગયા અને આ હૃદયદ્રાવક સંજોગોમાં તાત્કાલિક અવસાન પામ્યા.

ભાઈ રામબિલાસ કૉલેજમાં ભણતા ત્યારે આપણા મંડળના સભ્ય હતા. 'ગુજરાતી મંદિર'ની યોજનામાં પણ બહુ ઉત્સાહ દાખવ્યો હતો અને બધી રીતે એ યોજનાને સહાય્ય-ભૂત થવાનું પોતેજ સ્વીકારી લીધું હતું. આ પુત્ર-રત્નના અકાળ મૃત્યુથી, શોકનિમગ્ન થયેલા શેઠ આનંદીલાલ પોદાર અને અન્ય સ્વજન પ્રત્યે આપણી સહાનુભૂતિ દર્શાવીયે છીએ.

—રશ્મિ, ૧૯૩૬–૩૭*

* 'सेंट जेवियर्स कॉलेज' की 'गुजराती इन्स्टिटयूट' की मुख-पत्रिका।
—संपादक

રામબિલાસ આનંદીલાલ પોદાર

ગર્ભ શ્રીમંત અને અભિનવ યૌવનમાં આવી પ્હોંચેલા હોવા છતાં, પોતાની સરલતા, વિનમ્રતા અને ઔદાર્યથી મહાકવિ બાણને પણ ખોટો પાડનાર ભાઇ રામબિલાસનું અકાળ અવસાન કેવા ખેદજનક સંજોગોમાં થયું તે આપણે સૌ જાણીએ છીએ. મૃત્યુ કાંઠે ઉભેલી, પીડાતી માતાનું દરદ હળવું થાય એ બુદ્ધિથી માતૃ-વત્સલ ભાઈ રામબિલાસ ઔષધ આણવા માટે મોટરમાં મુંબઈ તરફ ઉપડ્યા—માર્ગમાં અકસ્માત થયો, જેમાં તે ઝડપાઈ ગયા અને આ હૃદયદ્રાવક સંજોગોમાં તાત્કાલિક અવસાન પામ્યા.

ભાઈ રામબિલાસ કૉલેજમાં ભણતા ત્યારે આપણા મંડળના સભ્ય હતા. 'ગુજરાતી મંદિર'ની યોજનામાં પણ બહુ ઉત્સાહ દાખવ્યો હતો અને બધી રીતે એ યોજનાને સહાય્ય-ભૂત થવાનું પોતેજ સ્વીકારી લીધું હતું. આ પુત્ર-રત્નના અકાળ મૃત્યુથી, શોકનિમગ્ન થયેલા શેઠ આનંદીલાલ પોદાર અને અન્ય સ્વજન પ્રત્યે આપણી સહાનુભૂતિ દર્શાવીયે છીએ.

—રશ્મિ, ૧૯૩૬-૩૭*

---

* 'सेंट जेवियर्स कॉलेज' की 'गुजराती इन्स्टिटयूट' की मुख-पत्रिका।

—संपादक

"विलास-स्मृति"

हँसते भी रो रो उठते हैं।
दो क्षण दो युग से कटते हैं।
दिल पर आरे चल उठते हैं।
पर तुम कुछ कुछ मुसकाते हो।
जब स्मृति-पथ में आते हो॥

नेत्रों से अश्रु बरसते हैं।
परितप्त-हृदय पर ढ़लते हैं।
उफ़! कर वे भी मर मिटते हैं।
तुम शान्त-चित्त दिखलाते हो।
जब स्मृति-पथ में आते हो॥

आहें तूफान बनाती हैं।
मन को दुख-सिंधु बहाती हैं।
वे जाती हैं, फिर आती हैं।
तुम विभु-विलास बन जाते हो॥
जब स्मृति-पथ में आते हो॥

—साहित्यरत्न प० लक्ष्मणप्रसाद शर्मा

जीवन रहा है। क्रूर-काल के कठोर हाथो द्वारा ऐसे अलभ्य-रत्न के बलात् छीने जाने पर वयोवृद्ध सेठ आनन्दीलालजी और उनके परिवार के हृदय पर जो वज्राघात पहुँचा है; सभा उसके प्रति अपनी हार्दिक समवेदना प्रगट करती है। ईश्वर स्वर्गीय आत्मा को सद्गति और उसके संतप्त परिवार को दारुण दु:ख-सहने की शक्ति प्रदान करे।"

१२ जुलाई को (१) सान्ताक्रुज रेजीडेण्ट्स एसोसिएशन, (२) सान्ताक्रुज एज्युकेशन सोसाइटी, (३) सान्ताक्रुज टेनेट्स एसोसिएशन, (४) सान्ताक्रुज़ गुजराती हिन्दू स्त्री मण्डल, (५) सान्ताक्रुज तरुण मण्डल, (६) सान्ताक्रुज सारस्वत क्लब, (७) सान्ताक्रुज़ केथोलिक लेड-लॉईस एसोसिएशन, (८) सान्ताक्रुज हरिजन सेवक मण्डल, (९) ट्रस्टीज—श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर, (१०) विलिङ्गडन केथोलिक जीमखाना एसोसिएशन, (११) सेठ ए० पी० हाईस्कूल पास्ट स्टूडेण्ट्स एसोसिएशन, (१२) वसन्त थियोसॉफिकल सोसाइटी एण्ड लाइब्रेरी, और (१३) केथॉलिक रेजीडेंट्स ऑफ सान्ताक्रुज़ की ओरसे सान्ताक्रुजके निवासियो की एक सार्वजनिक सभा 'श्री आनन्दीलाल पोदार हाईस्कूल' भवन मे हुई। इस सभाने निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :—

"सान्ताक्रुज के निवासियो की यह सार्वजनिक सभा श्रीमान् सेठ आनदीलालजी के कनिष्ट पुत्र श्रीयुत रामविलासजी की दु:खजनक अकाल मृत्यु पर, जिससे उनका उज्ज्वल भविष्य नष्ट हो गया तथा सेठजी की धर्मपत्नी माननीया श्रीमती महादेवीजी पोदार की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रगट करती है और श्रीमान् सेठ आनन्दीलालजी पोदार, श्रीयुत रामविलासजी की पत्नी तथा कुटुम्बी जनो के प्रति इस महान् विपत्ति पर हार्दिक समवेदना प्रगट करती है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उक्त दुखित हृदयों को इस घोर दु:खको सहन करने की शक्ति दे और स्वर्गस्थ आत्माओ को शान्ति प्रदान करे।"

संस्थाएँ

व्यापारिक संस्था, एक शिक्षा-संस्था तथा एक खेल-सम्बन्धी संस्था द्वारा स्वीकृत शोक प्रस्तावों की प्रतिलिपि यहाँ दीजाती है और अन्य संस्थाओं का नामोल्लेख मात्र कर दिया गया है। इससे पाठकोंको ज्ञात हो जायगा कि २३ वर्ष की छोटीसी अवस्थामे सार्वजनिक जीवन मे श्रीरामबिलासजी का कितना बड़ा भाग हो गया था और यदि क्रूर-काल उन्हे कुछ समय तक यहाँ और रहने देता, तो वे जनता की कितनी अधिक सेवा करते !

(The East India Cotton Association Ltd.)

The Committee, hearing of the tragic death of Mr. Rambilas, the son of Seth Anandilal Podar, a leading and respected cotton merchant, due to a motor accident, was greatly grieved and with a heavy heart passed the following resolution —

"The Ring Committee is greatly grieved to hear of the tragic and untimely death of Mr Rambilas Podar and conveys its heart-felt condolences to Seth Anandilal Podar in his tragic bereavement and as a mark of respect to the memory of the deceased resolves that the Trading Ring be kept entirely closed from 5 p m. on 6th July to 11-30 a m. on 8th July 1936 and that a letter of condolence to the family of the deceased be despatched"

* * *

(The Merry Maker's Club)

"This meeting of the Merry Maker's Club puts on record its sense of profound sorrow at the sad and premature demise of Sjt Ram Bilas Podar, one of the founders and beloved members of the club, which took place under tragic circumstances on July *6th*. It offers its heart-felt condolences to the bereaved family and deems that the cutting of the life of such an amiable and promising sportsman, with great business acumen and a spirit of social service can only be consoled with the thought that the ways of the Almighty are inscrutable and He takes them away early whom He loves best."

* * *

(१७) श्री मारवाड़ी सम्मेलन—बम्बई।
(१८) श्री मारवाड़ी नवयुवक मण्डल—बम्बई।
(१९) श्री राजपूताना शिक्षा मण्डल—बम्बई।
(२०) श्री राजपूताना शिक्षा मण्डल—झुंझुनूँ।
(२१) श्री बड़ा-बजार कुमारसभा—कलकत्ता।
(२२) श्री राजस्थान ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम—रतनगढ़।
(२३) श्री घाटकोपर सार्वजनिक जीवदया खाता—घाटकोपर।
(२४) दी वसंत लॉज थियोसॉफिकल सोसाइटी—सांताक्रुज़।
(२५) ,, सांताक्रुज़ टेनेंट्स एसोसिएशन—सांताक्रुज़।
(२६) ,, सांताक्रुज़ रेज़ीडेंट्स एसोसिएशन— ,, ।
(२७) श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर ट्रस्ट— ,, ।
(२८) दी पोद्दार इस्टेट-टेनेंट्स एसोसिएशन—मलाड।
(२९) श्री मुम्बई प्रांतीय वर्णाश्रम स्वराज्य संघ—बम्बई।
(३०) दी गुरुकुल हाईस्कूल—घाटकोपर।
(३१) श्री मोढ़-ब्राह्मण संस्कृत भाषा ज्ञानवर्धक मण्डल—बम्बई।
(३२) श्री आर्यविद्या सभा—बम्बई।
(३३) श्री ऋषिकुल—दहिसर।
(३४) श्री विलेपार्ले केळवणी मण्डल—विलेपार्ले।
(३५) श्री गुजराती ब्राह्मण, ८४ ज्ञातिक व्यवस्थापक मण्डल—बम्बई।
(३६) श्री गुजराती हिंदू स्त्री मण्डल—बम्बई।
(३७) सांताक्रुज़ हिंदू स्त्री मण्डल—साताक्रुज़।
(३८) श्री गोपाल गोशाला—रतलाम।
(३९) दी प्रभुराम आयुर्वेदिक कॉलेज—बम्बई।
(४०) ,, डॉक्टर पोपट यूनिवर्सिटी ऑफ़ आयुर्वेद—बम्बई।
(४१) ,, आयुर्वेदिक सोसाइटी—बम्बई।
(४२) श्री गोकुलीबाई पूनमचंद पीताम्बर हाईस्कूल—विलेपार्ले।
(४३) दी सेंट टीरेसाज़ कन्वेंट—सांताक्रुज़।
(४४) ,, बॉम्बे होमियोपेथिक मेडिकल कॉलेज—बम्बई।
(४५) ,, क्रिश्चियन स्कूल—बम्बई।
(४६) ,, यूनियन हाईस्कूल—बम्बई।
(४७) ,, विलेपार्ले संस्कृत पाठशाला—विलेपार्ले।

सार्वजनिक-संस्थाएँ

श्री रामविलासजी के असामयिक निधन का समाचार नगरमे फैलते ही बम्बई के प्राय: सब ही बाजार, जैसे रूई का बाज़ार, चाँदी-सोने का बाज़ार, अलसी का बाज़ार आदि बन्द होगए। 'मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कॉमर्स' ने ८ जुलाई को अपना कारोबार बन्द रक्खा और तमाम सदस्यों ने सारा व्यापार उस दिन स्थगित रक्खा।

९ जुलाई को 'मारवाड़ी सम्मेलन' के तत्वावधानमे बम्बई की जनता की एक सार्वजनिक सभा सम्मेलन-हॉलमे हुई, जिस मे निम्न-लिखित प्रस्ताव पास किया गया :—

"यह सभा श्रद्धेय सेठ आनन्दीलालजी पोदार के मात्र २२ सालके तरुण और होनहार पुत्र बाबू रामविलासजी पोदार के आकस्मिक अवसान पर आन्तरिक शोक प्रगट करती है। सभा की दृष्टिमे बा० रामविलासजी की मृत्यु **मारवाड़ी समाज की ऐसी क्षति है कि जिसकी कसक हमेशा सालती रहेगी।** बचपन से लेकर अब तक का उनका जीवन सादगी, महत्वाकाँक्षा और अथक कार्यतत्परता का

जीवन रहा है। क्रूर-काल के कठोर हाथो द्वारा ऐसे अलभ्य-रत्न के वलात् छीने जाने पर वयोवृद्ध सेठ आनन्दीलालजी और उनके परिवार के हृदय पर जो वज्राघात पहुँचा है; सभा उसके प्रति अपनी हार्दिक समवेदना प्रगट करती है। ईश्वर स्वर्गीय आत्मा को सद्गति और उसके संतप्त परिवार को दारुण दुःख-सहने की शक्ति प्रदान करे।"

१२ जुलाई को (१) सान्ताक्रुज रेजीडेण्ट्स एसोसिएशन, (२) सान्ताक्रुज एज्युकेशन सोसाइटी, (३) सान्ताक्रुज टेनेट्स एसोसिएशन, (४) सान्ताक्रुज़ गुजराती हिन्दू स्त्री मण्डल, (५) सान्ताक्रुज तरुण मण्डल, (६) सान्ताक्रुज सारस्वत क्लब, (७) सान्ताक्रुज़ केथोलिक लेड-लॉईस एसोसिएशन, (८) सान्ताक्रुज हरिजन सेवक मण्डल, (९) ट्रस्टीज—श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर, (१०) विलिङ्गडन केथोलिक जीमखाना एसोसिएशन, (११) सेठ ए० पी० हाईस्कूल पास्ट स्टूडेण्ट्स एसोसिएशन, (१२) वसन्त थियोसॉफिकल सोसाइटी एण्ड लाइब्रेरी, और (१३) केथॉलिक रेजीडेंट्स ऑफ सान्ताक्रुज़ की ओरसे सान्ताक्रुजके निवासियो की एक सार्वजनिक सभा 'श्री आनन्दीलाल पोदार हाईस्कूल' भवन मे हुई। इस सभाने निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :—

"सान्ताक्रुज के निवासियो की यह सार्वजनिक सभा श्रीमान् सेठ आनदीलालजी के कनिष्ट पुत्र श्रीयुत रामविलासजी की दुःखजनक अकाल मृत्यु पर, जिससे उनका उज्ज्वल भविष्य नष्ट हो गया तथा सेठजी की धर्मपत्नी माननीया श्रीमती महादेवीजी पोदार की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रगट करती है और श्रीमान् सेठ आनन्दीलालजी पोदार, श्रीयुत रामविलासजी की पत्नी तथा कुटुम्बी जनो के प्रति इस महान् विपत्ति पर हार्दिक समवेदना प्रगट करती है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उक्त दुखित हृदयों को इस घोर दुःखको सहन करने की शक्ति दे और स्वर्गस्थ आत्माओ को शान्ति प्रदान करे।"

पक्ष-भङ्ग पक्षी जैसे,
हो गये पिता आनन्दीलाल ।
तरु-विहीन लतिका सी भू पर,
विलख रही पत्नी बेहाल ॥

अग्रज रामदेवजी का है,
टूटा आज दाहिना हाथ ।
कितने ही गरीब विद्यार्थी,
विना तुम्हारे हुए अनाथ ॥

जीवन के चहुँ ओर खिंच गयी
आह ! वेदना की दीवार ।
साल रही अन्दर ही अन्दर,
प्रिय–पुर–परिजन की चित्कार ॥

हेरि–हेरि हैरान हो चुकी,
आँखें तुमको चारों ओर ।
भरे न कुछ भी घाव हृदय के,
हुए न दिल के दुख कुछ थोर ॥

कसक रहीं पीड़ायें पल–पल,
अब तक वैसी की वैसी ।
बरसी थीं आँखें, जल जैसी;
बरसें तैसी की तैसी ॥

अलका सी पोद्दार-पुरी का,
हुआ न कुछ भी क्षीण विलाप ।
विषम वज्र से लगे हृदय में,
किन जन्मों के संचित पाप ॥

पूज्य पिताजी का जीवन था,
गरिमा-मय, शुभ-विमल विशिष्ट ।
उसमें जोड़ा निर्मम विधि ने,
यह क्या दर्दनाक परिशिष्ट ॥

वैभव की अमराई में यह,
अकस्मात् पतझड़ का वास ।
जुड़ा हाय सुख की गाथा में,
दुख का हिय-दाहक इतिहास ।

समझाते हैं घायल दिलको,
कह कर "विधिकी गति है" हाय !
पर इस दुख में सुख-स्मृतियोंके,
सम्मुख सभी ज्ञान निरुपाय ॥

भूलें तब, विलास ! तुझको हम,
भूलें जब जग के व्यापार ।
भूलें जब अपनी हस्ती को,
भूलें जब अपनों का प्यार ॥

इस सभा मे **श्री० विश्वेश्वरलालजी भार्गव, बी० ए०, एल-एल० बी०, जे० पी०** ने निम्नलिखित शोकोद्गार प्रगट किये थे :—

हा ! हा ! रामबिलासजी, कहाँ गए तुम आज।
क्यों त्यागा इस जगत को, रहनी गहनी साज ?
मोटर बन गई काल ही, दरिया था यमदूत।
रहम किया नहि तनिक भी, ले गया एक सपूत॥
बाँह पकड़ खैंचा जभी, बदल गई तकदीर।
बहुते किये उपाय भी, चली न कुछ तदबीर॥
बेबस तुम ऐसे हुए, करी न कुछ भी बात।
माताजी भी यों गईं, पूछन को कुशलात॥
पिता, भ्रात तड़पत रहे, व्याकुल अरु बेचैन।
नैनन नीर बहे घना, निकसत नाही बैन॥
रामदेवजी भ्रात अति, दुखित रहत दिन रैन।
इक पल भी भूलत नही, रहत सदा बेचैन॥
जनता अति पीड़ित भई, उपजा शोक अपार।
परगट करने तासु को, आये सभा मँझार॥
ईश्वर के दरबार में, बढ़े तुम्हारा मान।
है यह सबकी प्रार्थना, पावो पद निर्वान॥
पत्नी को भगवान दें, श्रद्धा, शान्ति अपार।
सहनशीलता हो प्रबल, रक्षक हों करतार॥
सेठ आनन्दीलालजी, और कुटुम्बी लोग।
सहन कर सकें क्लेश को, दूर होय सब सोग॥

इसी प्रकार नवलगढ के नागरिकों की एक शोक-सभा 'श्री विद्या-विवर्धन पुस्तकालय नवलगढ' मे हुई जिसमे भी समवेदना सूचक प्रस्ताव पास किया गया।

इसके अतिरिक्त बम्बई तथा बम्बई के बाहर की बहुतसी सार्वजनिक संस्थाओ ने इस असामयिक मृत्यु पर शोक तथा दुखी परिवार के प्रति सहानुभूति प्रगट की। उन सब प्रस्तावो की नकल स्थानाभावसे यहाँ नहीं दी जा सकती। पाठको की जानकारी के लिए एक

व्यापारिक संस्था, एक शिक्षा-संस्था तथा एक खेल-सम्बन्धी संस्था द्वारा स्वीकृत शोक प्रस्तावों की प्रतिलिपि यहाँ दीजाती है और अन्य संस्थाओं का नामोल्लेख मात्र कर दिया गया है। इससे पाठकोंको ज्ञात हो जायगा कि २३ वर्ष की छोटीसी अवस्थामे सार्वजनिक जीवन मे श्रीरामविलासजी का कितना बड़ा भाग हो गया था और यदि क्रूर-काल उन्हे कुछ समय तक यहाँ और रहने देता, तो वे जनता की कितनी अधिक सेवा करते !

(The East India Cotton Association Ltd.)

The Committee, hearing of the tragic death of Mr. Rambilas, the son of Seth Anandilal Podar, a leading and respected cotton merchant, due to a motor accident, was greatly grieved and with a heavy heart passed the following resolution —

"The Ring Committee is greatly grieved to hear of the tragic and untimely death of Mr Rambilas Podar and conveys its heart-felt condolences to Seth Anandilal Podar in his tragic bereavement and as a mark of respect to the memory of the deceased resolves that the Trading Ring be kept entirely closed from 5 p m. on 6th July to 11-30 a m. on 8th July 1936 and that a letter of condolence to the family of the deceased be despatched"

* * *

(The Merry Maker's Club)

"This meeting of the Merry Maker's Club puts on record its sense of profound sorrow at the sad and premature demise of Sjt Ram Bilas Podar, one of the founders and beloved members of the club, which took place under tragic circumstances on July *6th*. It offers its heart-felt condolences to the bereaved family and deems that the cutting of the life of such an amiable and promising sportsman, with great business acumen and a spirit of social service can only be consoled with the thought that the ways of the Almighty are inscrutable and He takes them away early whom He loves best."

* * *

બિલાસ—એક દેવદૂત

શું ! શું ! ખરેખર ગયો ? નહિં—ના, હું માનું,
ના, ના, હશે યુવક કોઈ બીજો અજાણ્યો;
દીઠો હતો કુસુમથી શણગારતો મે
અસ્વસ્થ માતૃતણી આજ પ્રભાત શય્યા.

ના, ના, હજી પણ નહીં—નથી એ, મનાતું,
નક્કી કંઈ સમજફેર થઈ દિસે છે.
"જે વજ્ર તોડતું સદા ગિરિશૃંગ માત્ર
તે શૂં પડે મૃદુલ પુષ્પ ભર્યા બગીચે."

*　　　*　　　*

હા, હા, ખરેખર હકીકત સર્વ સાચી;
કોપ્યો અચાનક વિધિ વિકરાળ રૂપે,
ફાડી પ્રચંડ મુખને ઉછળ્યો સમુદ્ર,
સર્વે બની ગયૂં અરે ! ક્ષણવારમાંએ

નીતિ ભર્યા જીવનનો શુભ આ નતીજો ?
કે પુણ્યશાળી પરમાર્થતણું પ્રમાણ ?
કે મુક્તિનો સુભગ માર્ગ બતાવવાને
આ મોકલ્યો ભગવતે અહીં દેવદૂત !

*　　　*　　　*

રે શું પડ્યો થઈ દયાહીન, ઊઠ બાળા !
રે, ઉઠ, ઉઠ, ક્યમ સ્તબ્ધ થઈ પડ્યો છે ?
તું દોડતો ત્વરિત એક અવાજ દેતાં
તે, કેમ આજ દરકારવિહીન સૂતો ?

પોકાર સાંભળ દુખી તવ તાત કેરા,
કલ્પાંત કેવૂ તવ બાળ સતી કરે છે;
આક્રંદ બંધુગણના નવ જાય જોયા;
રે, રે, દયાળુ ક્યમ નિર્દય આજ આવો ?

*   *   *

ના, ના, થયો ન કંઈ નિર્દય હૂ અનેરો,
ના, ના, ગયો નથી નથી તમને હું ત્યાગી,
સેવાર્થ મે જનનીનો શુભ સાથ સાધ્યો
કલ્યાણનો પરમ માર્ગ બતાવવાને.

જેવૂં કરો સ્મરણ આજ કુટુમ્બિ મારૂં,
તેવૂં કરો સ્મરણ સર્વ તમે પ્રભૂનૂં,
તો દિવ્ય ધામમહીં સદ્ય સહુ મળીશૂં,
આનંદમાં સતત કાળ સૂધી રહીશૂં.

—સાક્ષર શ્રી મનહરરામ મહેતા, બી.એ.

રે શું પડ્યો થઈ દયાહીન, ઊઠ બાળા !
રે, ઉઠ, ઉઠ, ક્યમ સ્તબ્ધ થઈ પડ્યો છે ?
તું દોડતો ત્વરિત એક અવાજ દેતાં
તે, કેમ આજ દરકારવિહીન સૂતો ?

પોકાર સાંભળ દુખી તવ તાત કેરા,
કલ્પાંત કેવૂ તવ બાળ સતી કરે છે;
આક્રંદ બંધુગણના નવ જાય જોયા;
રે, રે, દયાળુ ક્યમ નિર્દય આજ આવો ?

* * *

ના, ના, થયો ન કંઈ નિર્દય હૂ અનેરો,
ના, ના, ગયો નથી નથી તમને હું ત્યાગી,
સેવાર્થ મે જનનીનો શુભ સાથ સાધ્યો
કલ્યાણનો પરમ માર્ગ બતાવવાને.

જેવૂં કરો સ્મરણ આજ કુટુમ્બિ મારૂં,
તેવૂં કરો સ્મરણ સર્વ તમે પ્રભૂનૂં,
તો દિવ્ય ધામમહીં સદ્ય સહુ મળીશૂં,
આનંદમાં સતત કાળ સૂધી રહીશૂં.

—સાક્ષર શ્રી મનહરરામ મહેતા, બી.એ.
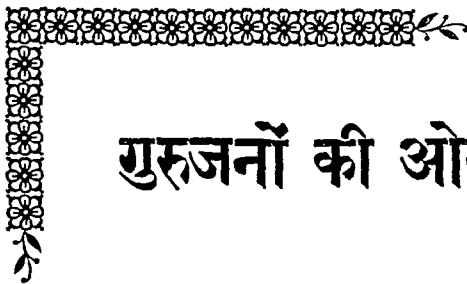
गुरुजनों की ओर से—
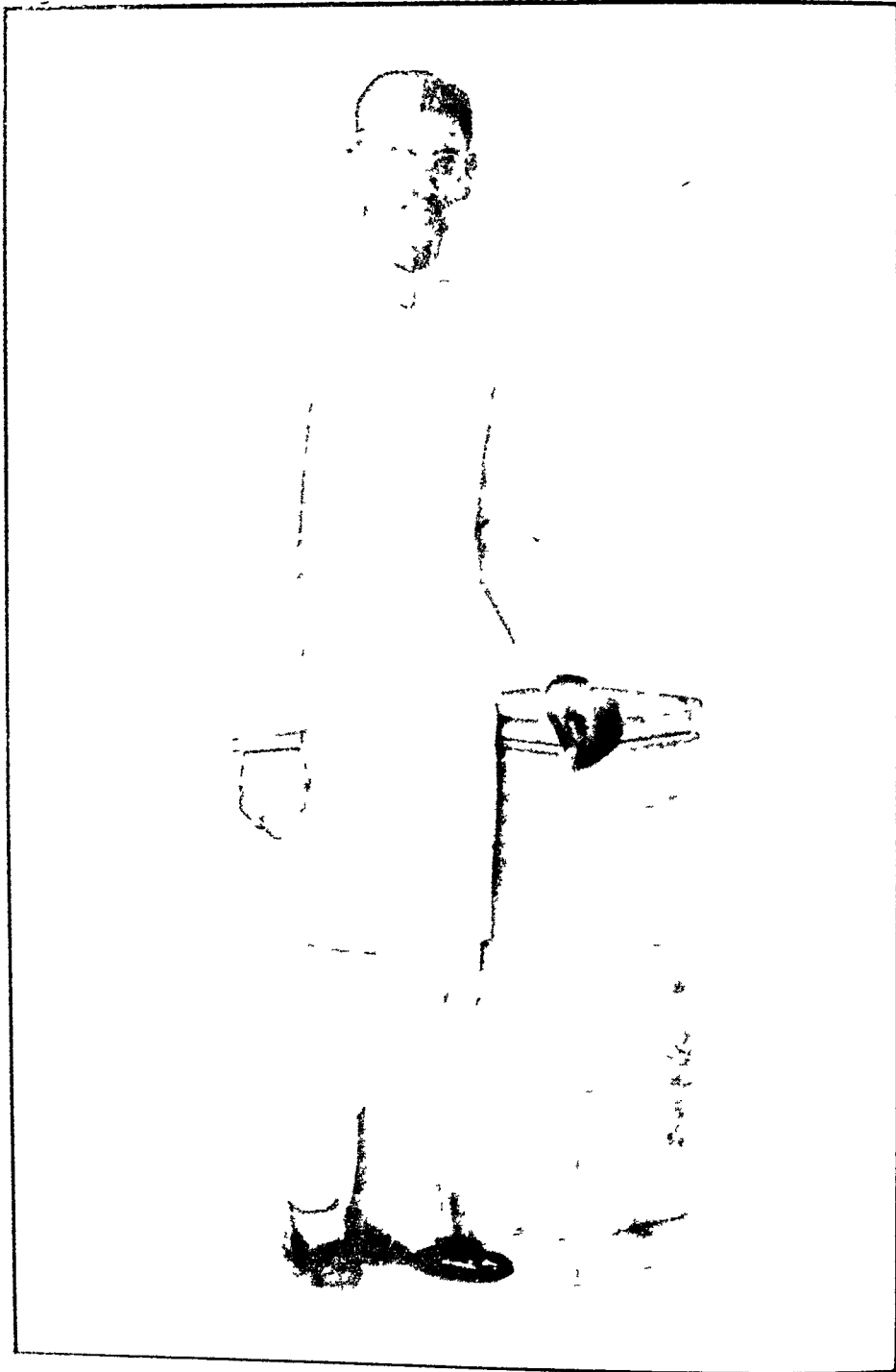
स्व० कुँ० रामबिलासजी पोदार

वाणिज्य-भूषण श्रीमान् सेठ आनन्दीलालजी पोदार, जे० पी०, उन महान् पुरुषो मे हैं, जिन्होने अपने पुरुषार्थ के बलसे खूब धन और नाम कमाया है। आप परम योग्य, समझदार, निपुण और बम्बईकी मारवाड़ी समाजके चमकते हुए सितारे है। व्यापारी समाज और राज-दरबारमे आपकी बातका खूब प्रभाव पड़ता है। अपनी दानशीलता के लिये भी आप प्रसिद्ध हैं। विद्या-प्रचारमे आपने सान्ताक्रुज, नवलगढ और भवानीमंडीमे स्कूलो की भव्य इमारते बनवा कर प्रशसनीय कार्य किया है।

मेरा परिचय आपसे सन् १९२५-२६ में हुआ। आपके लिए सबकी जबान पर यही शब्द रहते थे कि सेठ साहब के बराबर पुण्यवान् और भाग्यशाली कोई नहीं है। चार योग्य पुत्रोंका विद्यमान होना और सो भी आज्ञाकारी तथा सदाचारी होना विरलोको ही प्राप्त होता है।

तौरसे भरी थी। चारो भाइयों मे सबसे ज्यादा विद्याध्ययन उन्होंने किया था और यह विश्वास होता था कि वे बम्बई के मारवाडी समाजके मुखिया सेठ आनंदीलालजीके शुभ नामको और वैश्य समाजके नामको खूब ही चमकायेगे।

इसके सिवाय आपके मानस मे जापान और यूरोप जाकर नई कला-कौशल सीखनेकी भावनाएँ थीं। आपकी ऐसी उन्नत भावनाओको देख कर पिताजी के साथ ही रामदेवजी को विश्वास होता था कि 'बिलास' हमारे उत्तरदायित्वपूर्ण कामोको सम्हालकर, हमारी चिन्ता और जिम्मेदारीको कम करेगा। भ्रातृ-बल और भ्रातृ-प्रेम दुनियामे विरल ही होता है। संसारमे सब मिल जाते है, पर तुलसीदासजी के शब्दोंमे—"**मिलै न जगत सहोदर भ्राता।**" इसी बल पर श्री रामदेवजी की 'बिलासजी' से वैसी आशा करना स्वाभाविक था। इसी तरह कुलके चमकते हुए छोटे सितारे रामविलासजी की बढती हुई उमगे देखकर सुजनवर श्रीमान् सेठ आनदीलालजी साहबको यह विश्वास होता था कि मेरे लगाये बगीचेको 'विलास' अपनी योग्यता और विद्याबुद्धिके बलसे खूब सिंचन करेगा। पर यह हुआ नहीं। कराल काल ने नहीं होने दिया! और अपने पिताका प्यारा पुत्र, भाइयोका दुलारा भाई, भार्याका प्राण-पति, सबको बिलखना छोड कर संसार से चल बसा। आज उसकी स्मृति शेष है, जो अत्यत दुखदाई है; पर यहाँ तो यह भी मधुर मालूम होती है।

काल कुटिल है। वह न जाने कितनोकी सुन्दर भावनाओं और आशाओंको बेरहमीके साथ कुचल देता है। इसलिये मन मसोस कर बैठ जाना पड़ता है। यही 'बिलासजी'के लिये हुआ। अब हम विवश हैं। करे तो क्या करें? ऐसे पौधे जो कुसमय मे कुम्हला जाते हैं, वे अपनी सुन्दर आभा हृदय-पटल पर अमिट रूपमे छोड़ जाते हैं। यह भारत के वैश्य समाजका दुर्भाग्य है कि ऐसे ज्वाज्वल्यमान-नक्षत्र अस-

FROM WHAT I HAD SEEN OF HIM

I have known Podar family for the past five years Sheth Anandilal Podar is my personal friend There are few living Marwadi worthies more highly or more universally esteemed in or outside Bombay than Sheth Anandilal Podar It is his noble character which really compels respect and regard for him His life is most worthy and remarkable not merely for its purity but also for its high standard of public duty and philanthropy

Late Mr Rambilas, who was the youngest son of Sheth Anandilal Podar, was a graduate of the Bombay University with a cultured bend of mind On several occasions whenever we met together we exchanged our views with each other and from what I had seen of him I should say that unlike most rich young men, dear Rambilas was not morbidly conscious of the burden of honours which his family wealth was going to secure for him Simple, gracious, gentle, alike to great and small, young Rambilas seemed to be a man of sweet and unselfish nature and kindle love and affection in every one who had a chance to meet him There is no doubt that if his life had been spared his career would have culminated in his elevation to some higher honours in the world He was merely at what is often called the threshold of life and the last occasion

स्वर्गीय रामबिलास

श्री जवाहिरलालजी,

आपका २८–८–३६ का पत्र मिला। स्व० रामबिलास का मुझे जो परिचय हुआ, इतने परिचयसे मैने देखा था कि वह बालक होनहार था। उससे मुझे काफी आशाएँ थीं। उसमे राष्ट्रीय-भावना और सेवा-वृत्ति का विकास हो रहा था। राजस्थानी समाजमे ऐसे ही सुशिक्षित व संस्कारवाले बालक कम होते हैं; और खास कर धनी कुटुम्बोमे तो ऐसे बालक और भी कम होते हैं; और होते है तो उनमे अहङ्कार व उच्छृखलता ख़ूब आ जाती है। परन्तु रामबिलास धनी खानदान का होते हुए भी विनयशील था। अगर वह जीवित रहता तो, न केवल राजस्थानी समाजकी ही प्रतिष्ठा बढती, अपितु देशका भी लाभ होता।

वर्धा,
३१–८–१९३६

[illegible signature]

' ANJALI '

Seth Rambilas Podar was born with a silver spoon in his mouth and unlike many others situated in similar circumstances, he was very amiable, social and unassuming From his young age he showed signs of a promising youth and, as he grew up, he not only advanced in his studies at the school but also in the art of politeness and gentlemanliness He looked upon those below him in social status not as inferiors but as brothers in the process of evolution of the mother-land He took to sports from his early life and became a real sportsman as he advanced in age He was no admirer of "superiority complex," nor did he allow himself to suffer from inferiority complex from those above him in the various stations of life He was fond of his studies and falsified the common impression of mankind that the sons of the rich cannot and do not as a rule study Though a son of a millionaire he mixed himself freely with the students of his school and his college irrespective of caste and creed and endeavoured to take the best from any one, he came in contact with He liked to think for himself but had respect for his parents and his elders in the family to whom he gave implicit obedience In the society he gave his opinions freely but respected authority To him, no one was low or high, but he selected friends with due regard to their principles, in order that he may not fall a prey to those

स्व० कुँ० रामबिलासजी पोदार

वाणिज्य-भूषण श्रीमान् सेठ आनन्दीलालजी पोदार, जे० पी०, उन महान् पुरुषो मे हैं, जिन्होने अपने पुरुषार्थ के वलसे खूब धन और नाम कमाया है। आप परम योग्य, समझदार, निपुण और वम्बईकी मारवाड़ी समाजके चमकते हुए सितारे है। व्यापारी समाज और राज-दरवारमे आपकी वातका खूब प्रभाव पड़ता है। अपनी दानशीलता के लिये भी आप प्रसिद्ध हैं। विद्या-प्रचारमे आपने सान्ताक्रुज, नवलगढ और भवानीमंडीमे स्कूलो की भव्य इमारते बनवा कर प्रशसनीय कार्य किया है।

मेरा परिचय आपसे सन् १९२५–२६ में हुआ। आपके लिए सवकी जवान पर यही शब्द रहते थे कि सेठ साहव के वरावर पुण्यवान् और भाग्यशाली कोई नहीं है। चार योग्य पुत्रोंका विद्यमान होना और सो भी आज्ञाकारी तथा सदाचारी होना विरलोको ही प्राप्त होता है।

ભાઈ બિલાસ !

ભાઈ બિલાસ! વખત વખતનું કામ કરે છે, વખત બધાને વિસરાવતો જાય છે પણ તું વિસરાતો નથી. ત્હારાં કાર્ય ત્હારી યાદ આપ્યા કરે છે. તે જીવી જાણ્યું. બીજાને દૃષ્ટાંતરૂપ જીવવુ એ તે જીવન. આપણને ઈશ્વર જીવન આપે છે, તે એની સૃષ્ટિની સેવા કરવા વાસ્તેજ ! નાના, મોટા, ગરીબ, તવંગર, પશુ, પ્રાણી, વ્યક્તિ અથવા સંસ્થા દરેકની સેવા કરવી, દરેકને તેના કાર્યમાં કોઇપણ રીતે ઉપયોગી થઈ રહેવુ, તેને સવડતા કરી આપવી, સહાયરૂપ થવુ, એ તારી હોંશ અને તેમાંજ જીવનની સાર્થકતા માનવી તે તારો ધર્મ ! તે ધર્મ પાળવા વાસ્તે એકપણ પ્રસંગ જવા દેવો નહીં, એવા નિર્ણયવાળો તે તું બિલાસ ! જન્મે સંપૂર્ણ સાધનવાળો એટલે આ ધર્મને અંગે જે જે કાર્ય ધારે તે કરી શકતો. મોટામાં મોટો, ન્હાનામાં ન્હાનો, મ્હોટાઓને તારા "Gray Head" થી ઘણી ફેરી સાધનરૂપ થઈ તેઓનો લાડકો થતો, ન્હાનાઓ સાથે તેઓની રમતોગમ્મતોમાં હોંશથી ભાગ લઈ, તેઓને તેઓની રીતે બોધરૂપ થઈ, તેઓનો પ્રેમ ખેંચી શકતો અને સમોવયનાઓને મોટે અંશે આદર્શરૂપ હતો.

मै भी जब सेठ साहब और चारो भाइयोंको देखता, तो बड़ी प्रसन्नता होती थी। स्वयं सेठ साहब आनंदीलालजी और चारो भ्राता मुझसे बहुत स्नेह रखते है। मगर कालकी गति विचित्र है। सन् १९३१ मे मै अपने एक मात्र पुत्र विमलचन्द को खो बैठा हूँ, जो B. A मे पढता था और होनहार युवक था। उसके वियोग-दुःख का मै ऐसा शिकार बना हूँ कि जिसके घावोने मेरे दिलको भेद दिया है, जो इस जन्म मे कभी भरे नही जा सकते। मुझे कल्पना भी नहीं थी कि उसी दारुण-दुःख का सामना मेरे परम स्नेही सेठ आनंदीलालजी और रामदेवजी को भी करना पड़ेगा। तारीख ६ जुलाई सन् १९३६ की दोपहरको एकदम वह घटना घट जाती है जिसकी स्वप्नमे भी कल्पना नहीं थी। इस पर एकाएक विश्वास कर लेने को किसीका जी नहीं चाहता। माताजीके लिये डाक्टर को लेने जाना, बीचमे कालके शिकार बन जाना। इसे काल-गतिके सिवाय और क्या कहा जा सकता है!

जबसे रामबिलासजीसे मेरा परिचय हुआ, तबसे वे बराबर मिलते रहते थे। उनके अनेक सद्गुण देखकर मुझे खुशी होती थी। इतनी कम उम्र मे B A पास कर लेना, धनवान उच्च कुलमे जन्म पाकर अभिमान न होना और सबके साथ नम्रता, सौजन्यता तथा योग्यतासे बर्ताव करना, रामबिलासजीकी विशेपताएँ थीं। उनकी मृदुभाषिता, विनय-सम्पन्नता, सौम्यता, सादगी, सुन्दर आकृति और भोला-भाला मुख-मण्डल मेरी आँखोके सामने आज भी ज्यो का त्यो फिर रहा है। ऐसे गुण उसीमे होते है, जिसकी आत्मा पुण्यशाली, पवित्र, महान् और बलवान् होती है। उनके निधनका दुःख मेरे—प्यारे विमल—की याद दिलाता है– क्योकि ये गुण उसमे भी समान मात्रामे मौजूद थे।

प्रिय रामबिलासजी के हृदय मे भाव थे, सच्ची मातृ-पितृ-भक्ति थी, समाज-सेवाकी लगन थी और व्यापारमे अग्रगण्य होनेकी अभिलाषा पूरी

સદ્‌ગત રામબિલાસને અંજલિ.

સોરઠા

આજ્ઞાંકિત જેમ રામ, માત વચનને પાળવા,
શોધ્યો નિજ વિશ્રામ, જાતે વનવાસી* થયો.
આબેહુબ દૃષ્ટાંત, દીધો રામબિલાસ તે,
કરતાં સહુ કલ્પાંત, કાયમ વનવાસી* થયો
ઉજ્જવળ તુજ જીવન, ઉચી આશા આપતું,
આજ થયું છેદન, આશા મળી સહુ ધૂળમાં.
થોકે થોકે લોક, ઉમટ્યાં તુજ ઘર આંગણે,
કળકળી પાડે પોક, નામ રટે તુજ, હૃદયમાં.
વિસરાતી સહુ વાત, કાળ જતાં ભુલાય છે,
તુજ જુદો ઈતિહાસ, જીવનભર એ સાલશે.
મૃત્યુ ભલાનું હોય, વહેલું આ સંસારમાં,
દીર્ઘ કાળ તો જોય, સ્નેહહીન† ને સળગવા
આશિષ દે સહુ લોક, શાન્તિ મળજો સ્વર્ગમાં,
ભોગવ સુખ પરલોક, ભુલજે મૃત્યુ લોકને.

—" જુગલભાઈ. "

* વન=૧ જગલ, ૨ જલ
† સ્નેહ=૧. પ્રેમ, ૨. તેલ

तौरसे भरी थी। चारो भाइयों मे सबसे ज्यादा विद्याध्ययन उन्होंने किया था और यह विश्वास होता था कि वे बम्बई के मारवाडी समाजके मुखिया सेठ आनंदीलालजीके शुभ नामको और वैश्य समाजके नामको खूब ही चमकायेगे।

इसके सिवाय आपके मानस मे जापान और यूरोप जाकर नई कला-कौशल सीखनेकी भावनाएँ थीं। आपकी ऐसी उन्नत भावनाओको देख कर पिताजी के साथ ही रामदेवजी को विश्वास होता था कि 'बिलास' हमारे उत्तरदायित्वपूर्ण कामोको सम्हालकर, हमारी चिन्ता और जिम्मेदारीको कम करेगा। भ्रातृ-बल और भ्रातृ-प्रेम दुनियामे विरल ही होता है। संसारमे सब मिल जाते हैं, पर तुलसीदासजी के शब्दोंमे—"**मिलै न जगत सहोदर भ्राता।**" इसी बल पर श्री रामदेवजी की 'बिलासजी' से वैसी आशा करना स्वाभाविक था। इसी तरह कुलके चमकते हुए छोटे सितारे रामविलासजी की बढती हुई उमगे देखकर सुजनवर श्रीमान् सेठ आनदीलालजी साहबको यह विश्वास होता था कि मेरे लगाये बगीचेको 'विलास' अपनी योग्यता और विद्याबुद्धिके बलसे खूब सिंचन करेगा। पर यह हुआ नहीं। कराल काल ने नहीं होने दिया! और अपने पिताका प्यारा पुत्र, भाइयोका दुलारा भाई, भार्याका प्राण-पति, सबको बिलखता छोड कर संसार से चल बसा। आज उसकी स्मृति शेष है, जो अत्यत दुखदाई है; पर यहाँ तो यह भी मधुर मालूम होती है।

काल कुटिल है। वह न जाने कितनोकी सुन्दर भावनाओं और आशाओंको बेरहमीके साथ कुचल देता है। इसलिये मन मसोस कर बैठ जाना पड़ता है। यही 'बिलासजी'के लिये हुआ। अब हम विवश हैं। करे तो क्या करें? ऐसे पौधे जो कुसमय मे कुम्हला जाते हैं, वे अपनी सुन्दर आभा हृदय-पटल पर अमिट रूपमे छोड़ जाते हैं। यह भारत के वैश्य समाजका दुर्भाग्य है कि ऐसे ज्वाज्वल्यमान-नक्षत्र अस-

THIS EXCELLENT BOY

Sir,

Rambilas Podar passed quietly and unobtrusively through this College but by no means unnoticed , a kind gentle soul, quiet in appearance, he was endowed with a keen feeling for friendship, a remarkable gift of appreciating circumstances and situations, a knack of keeping always good feelings around himself and a deep store of enthusiasm, which, like so many select men, he knew how to keep to himself in ordinary life and save it for higher and nobler things

Although his mother-tongue was Hindi, he knew Gujarati very well He became aware at once of the importance which would have, for the promotion of the vernaculars in general in our University, the fact that St Xavier's College was going to start a Gujarati Institute , and, when his name was proposed to collaborate in the committee, he displayed an activity and interest which must have surprised many In fact, it was at an Institute meeting in Sir Chimanlal Setalvad's Chambers with Diwan Bahadur Jhaveri, Mr K M Munshi and others, that I met him for the last time A few days afterwards, at the inaugural meeting of the Gujarati Institute, Mr Bhulabhai Desai expressed the sad feelings of all present at the loss of the youngest but not least enthusiastic member of our Committee

God will reward the many good deeds and desires of *this excellent boy* in whom we had the highest expectations

St Xavier's College,
Bombay

Yours truly,

G Palacios

Principal

RAMBILAS—THE GOOD ŚIṢYA

I knew Rambilas A Podar as a student, and from the very outset I must say that I knew him as a good student He was good not precisely in the sense of applying himself to study as much as to kill himself—who is the student who does so! He was a good student, because he was good in his relations with his Professors A student who does not pay due respect to his Professor, who does not act according to the Professor's advice, who does not "revere the lotus feet of the *guru*" to use an ancient epigraphical phrase, is not a good student, even if he studies the whole day long, and turns the pages of his books till late when his head falls over them

It has always been a sacred duty in India for the *Śiṣya*, from very ancient times, to be good to his *guru* The modern doctrines of liberalism and communism, spread throughout the world by irresponsible leaders, have affected many of our students, especially those who have been in closest contact with Western ways and customs Rambilas knew the latter though he was never affected by the former He was always a good *Śiṣya* In the beginning, when he used to enter my den he seemed to have feared to find a lion there It always happens so to all those students who do not know me intimately Little by little he realised that the lion in his

RAMBILAS—THE GOOD ŚIṢYA

I knew Rambilas A Podar as a student, and from the very outset I must say that I knew him as a good student He was good not precisely in the sense of applying himself to study as much as to kill himself—who is the student who does so! He was a good student, because he was good in his relations with his Professors A student who does not pay due respect to his Professor, who does not act according to the Professor's advice, who does not "revere the lotus feet of the *guru*" to use an ancient epigraphical phrase, is not a good student, even if he studies the whole day long, and turns the pages of his books till late when his head falls over them

It has always been a sacred duty in India for the *Śiṣya*, from very ancient times, to be good to his *guru* The modern doctrines of liberalism and communism, spread throughout the world by irresponsible leaders, have affected many of our students, especially those who have been in closest contact with Western ways and customs Rambilas knew the latter though he was never affected by the former He was always a good *Śiṣya* In the beginning, when he used to enter my den he seemed to have feared to find a lion there It always happens so to all those students who do not know me intimately Little by little he realised that the lion in his

Rambilas," I said, "I thought you were going to join your father's business instead" "Yes Father, but I also want to continue my studies in history I love the history of our country I would like to do some research in it I shall find some time every now and then to come here to study" I was not so easily convinced, for I have some experience about students just after passing their B A But, what could a *guru* refuse a *śiṣya*? After all Rambilas was not like other students And Rambilas was admitted as a Research student and since he liked the image of Umāmahēśvara of Kajaraho, he commenced the study of the history of the Chandelas of Bundelkhand, the rulers of Kajaraho

But his study did not last long He soon realized that after a heavy business day, it was more inviting for a youth of his age to go to the tennis court than to busy himself among books and ancient inscriptions, in the Research Institute Library And much to his regret, he had to give it up On that occasion his heart had been ahead of his head He had not counted with the reality of things

To-day when Rambilas has flown from our midst, all those who had been connected with him remember him with sweetness in their memories, with sorrow in their hearts And his old *guru* especially enjoys recollecting the good examples of filial devotion and respectful love of that good śiṣya who was called *Rambilas Anandilal Podar*

Bombay } —*H Heras, S J.*

den was not so fierce as in the lecture room, and when later on he came for a private talk—and it was often—he was quite open, but always respectful, he was quite sincere but always reverential He spoke to me with the sincerity and frankness of a son towards his father, and indeed this is the ancient Indian idea of the *guru* All the rights of the father over his son are passed on to the *guru*, when the child is placed under him for the purpose of acquiring knowledge The *guru* is his second father And I always felt that Rambilas considered me as his second father, and that is the reason why I loved him as my son

Love does not know any limit, and when a person is loved all the things of that person are loved Rambilas loved his *guru* in this way He knew that my pet child was the Indian Historical Research Institute, this laboratory of History where our future historians are being trained, where our ancient past is being revealed to the world He often spoke to me about the Institute and especially about the Museum and its specimens He especially liked an image of Umāmahēśvara proceeding from Kajaraho, image which was kindly presented to me by His Highness the Maharaja of Chhatarpur

When he finished his course in History and took his B A degree, I wrote to his father suggesting that a donation to the Research Institute—which is always in need of them—would be a fitting souvenir of Rambilas's having studied in the History Department of St Xavier's College Two days afterwards Rambilas entered my office with a smiling face He had an envelope in his hand, and the envelope contained a cheque 'Father", he told me, "my father sends you this" And while I was thanking him and asking him to thank his father, on my behalf, he removed two notes of a hundred rupees each from his breast pocket and gave them to me saying "And this is my own donation, but kindly do not say anything about it I hope, later on I shall be able to do more for the Institute", and I knew that he meant it I kept the secret faithfully Now when Rambilas has disappeared from among us, I am not bound anymore, and I consider it my duty to narrate this episode that reveals the character of that good *Śiṣya*, who wanted to help the work of his *guru*, but preferred to do so in a quiet, silent way

A few days afterwards he came back to me once more "Father," he told me, "I want to join the Institute" "But

Nobody can be truly devoted to the call of Duty without being sincere about it Indeed, sincerity and devotion to duty go hand in hand. It is insincerity that leads people to shirk their duty and to make a show of having done it It was never so with Rambilasji He was sincere in the discharge of his duties, he was sincere in his statements and opinions, he was sincere in his feelings and affections None who came in contact with him failed to note his sincerity in all his dealings

Never did Rambilasji show in his behaviour that he was born with a silver spoon in his mouth. He was modest and social and associated himself freely with the students of his class Several times I have observed that he sympathised with the poor students of his class and supplied them with books and fees Rarely do we come across a rich student who cares to understand the difficulties of the poor students of his class and opens his purse to relieve them

The most remarkable trait that was always to be noticed in his character was his geniality Wherever he went he carried with him a fountain of sunshine Even in the class-room, I remember, when he was absent I missed the cheering atmosphere of his wit and humour and thought the class was dull on that account A look here and a smile there and a flash of sunshine everywhere that was the play of his presence

And they say Bilas is gone! Gone! I can't believe it! Can his friends and co-workers ever forget him? Does his physical absence come in the way of their remembering his genial and sincere nature? Does it lessen their affection for him? And after all who is it that dies? He who fails to perform his duty in life, who does not sympathise with the poor and who is vain and assuming in his dealings with others Surely not one who lives in the hearts he leaves behind!

Bombay }

—A V Jakhi, M A, S T C

Rambilas," I said, "I thought you were going to join your father's business instead" "Yes Father, but I also want to continue my studies in history I love the history of our country I would like to do some research in it I shall find some time every now and then to come here to study" I was not so easily convinced, for I have some experience about students just after passing their B A But, what could a *guru* refuse a *śiṣya*? After all Rambilas was not like other students And Rambilas was admitted as a Research student and since he liked the image of Umāmahēśvara of Kajaraho, he commenced the study of the history of the Chandelas of Bundelkhand, the rulers of Kajaraho

But his study did not last long He soon realized that after a heavy business day, it was more inviting for a youth of his age to go to the tennis court than to busy himself among books and ancient inscriptions, in the Research Institute Library And much to his regret, he had to give it up On that occasion his heart had been ahead of his head He had not counted with the reality of things

To-day when Rambilas has flown from our midst, all those who had been connected with him remember him with sweetness in their memories, with sorrow in their hearts And his old *guru* especially enjoys recollecting the good examples of filial devotion and respectful love of that good śiṣya who was called *Rambilas Anandilal Podar*

Bombay } —*H Heras, S J.*

had set in, which when combined with the sense of humour made his nature all the more amiable During my short stay at Bombay, one afternoon he and I together were motoring back to Santacruz He was driving the car with a friend of his beside him whom he had to drop on the way I found him all the way indulging in very subtle jokes with the friend From what I could overhear, I thought him capable of a full-blooded enjoyment of life He had a fine business acumen too During his brief career he had already acquired no mean position in the business circle of Bombay and had a still brighter future The hopes of the illustrious family were reposed in him, but the hostile powers above have carried him away before his early promises could materialize

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्री· ।
इत्थं विचिन्तयति कोषगते द्विरेफे
हा हन्त हन्त नलिनी गज उज्जहार ॥

Lucknow }

—*S P Shukla, M A, Visharad.*

BABU RAMBILAS PODAR

It was the last week of January last Our School prize distribution was to be held on the 2nd of February, and we were busy in making the necessary preparations One day Rambilas came to my office and I asked him as to what he had done regarding the medals and the cups and several other prizes that were required for the occasion "You have entrusted the work to me and you will see that I do it in time" was the reply he gave me The last day of January came and I did not see him I felt a bit anxious But the next day when I went to Vidyalaya, there was Bilas with the medals and the cups Again he went and brought me the other prizes And then his question with his usual smile "Well, Sir, have I done my work in time?" I thanked him heartily and he took his leave of me

This, then, is the first trait that I should like to mention in the character of Babu Rambilasji his devotion to Duty Whether it was in the class-room or on the play-ground he was ever ready to the call of duty and I do not remember any occasion when he shirked it And how did he meet with his end? Was it not while performing his duty to his dear mother? Does it not show his unfailing readiness to obey the "stern Daughter of the voice of God"?

he used to take great pleasure in helping them with the goods of the world and thus stooped to conquer the inequality of circumstances But these were of comparative triviality, the wealth of whose good nature out-shone the wealth of material prosperity I am quite certain that even if he were born in a labourer's family, he would nevertheless have won his way to success in life He had the grit, the determination to succeed and the genius of Johnson to take pains To this perseverance of purpose was wedded a rare measure of perspicacity that lifted him head and shoulders over his friends in the classroom

I found in him a striking example of opulence marching hand in hand with intelligence, or of intelligence that did not scorn toil in consummation of itself Born great and with a hundred willing hands to thrust greatness on him, he would have achieved greatness without such adventitious aid It was with great pleasure that I was learning from various quarters that he was already making rapid progress in the business world Pity it is that he is snatched away from us so soon and suddenly Had talents of such exceptional order been devoted to trade and industry, he would have won great rank among business magnates, to politics, he would have attained eminence as a builder of the nation, or—remembering as I do how his youthful ebullient heart throbbed with a passion for national service—both to business and politics he would have been a great benefactor of the Motherland It is said that the Ancient Greeks, who perfected the cult of beauty and therefore of nobility believed that the Gods are jealous of men, and that they permit the rich promise of youth only to cheat its fulfilment This fancy haunts me as I think of Rambilas Podar, a flower that was snubbed before full bloom, and that, had only the Gods been kind, would have wafted its fragrance to the four corners of the world

The more I think of our dear Rambilas the more do his good qualities crowd themselves in such quick succession that I find it impossible to express myself

Yours sincerely,

Secunderabad } *N S Raghavan*
(B A, LL B)

Nobody can be truly devoted to the call of Duty without being sincere about it Indeed, sincerity and devotion to duty go hand in hand. It is insincerity that leads people to shirk their duty and to make a show of having done it It was never so with Rambilasji He was sincere in the discharge of his duties, he was sincere in his statements and opinions, he was sincere in his feelings and affections None who came in contact with him failed to note his sincerity in all his dealings

Never did Rambilasji show in his behaviour that he was born with a silver spoon in his mouth. He was modest and social and associated himself freely with the students of his class Several times I have observed that he sympathised with the poor students of his class and supplied them with books and fees Rarely do we come across a rich student who cares to understand the difficulties of the poor students of his class and opens his purse to relieve them

The most remarkable trait that was always to be noticed in his character was his geniality Wherever he went he carried with him a fountain of sunshine Even in the class-room, I remember, when he was absent I missed the cheering atmosphere of his wit and humour and thought the class was dull on that account A look here and a smile there and a flash of sunshine everywhere that was the play of his presence

And they say Bilas is gone! Gone! I can't believe it! Can his friends and co-workers ever forget him? Does his physical absence come in the way of their remembering his genial and sincere nature? Does it lessen their affection for him? And after all who is it that dies? He who fails to perform his duty in life, who does not sympathise with the poor and who is vain and assuming in his dealings with others Surely not one who lives in the hearts he leaves behind!

Bombay } *—A V Jakhi, M A, S T C*

LATE RAMBILAS

I have observed many an illustration of the perverseness of malignant fate, but none have I found so poignant, none so ironical as the sad demise of the late Mr Rambilas Podar He is dead !—It is incredible ! It is true !

It is my duty, both pleasant and unpleasant, to record my experiences of him—unpleasant because it reminds me of the catastrophe, pleasant because in doing so, I seem to live afresh with him who is no more Even after the lapse of thirteen years, I vividly recollect myself indulgently enjoying his childlike talk Yes, he was too childlike for his age, but he was dutiful, obedient, considerate, and above all, he had even at that young age a sense of propriety and amiability of manner which accompany great men He is doing his lessons with me His elder brother and his niece are also beside him During the lessons a talk ensues His elder brother utters a word which propriety of the occasion demands that he should not And he protests to me "How can brother have the recklessness to talk as he does ?" Never before or since do I remember myself listening to an equally magnanimous protest from a boy as he then was I was really proud to own him for my pupil

I saw him again ten years later in the winter of 1934 The childlike innocence had departed and a magnanimous sobriety

very close to his own palatial mansion, and I still recall the many pleasant hours we have whiled away in the verandah of my cottage at Santacruz listening to the radio or the gramophone, or playing carrom or just chatting In those happy evenings of pleasant social intercourse, was formed a friendship which, I am glad and proud to acknowledge, is one of the happiest memories of my life Ordinarily a little shy and timid, he did, under encouragement and among close friends, beam forth into jovial talk and merry laughter He was at all times a pleasant companion and a reliable friend He would much rather enjoy a joke than make one himself He was of the passive type but had a keen sense of humour

The late Mr Rambilas had a great love for his Alma Mater and always took an abiding interest in its welfare As one of the past students and as a member of the Educational Board of the Marwadi Vidyalaya, he did much to enliven the extra-curricular activities of the school and to inspire in the students, by example and encouragement, his own love of sports The success of the sports events and the prize distribution ceremony of the school last year was due mainly to his warm zeal and untiring efforts The part he played there and in similar celebrations at the Anandilal Podar High School clearly marked him out as a great and efficient organizer Ability, enthusiasm, determination and organization-capacity had been so harmoniously mingled in the late Mr Rambilas that nature seemed to have marked him out for something really great, but alas ! —

Mr Rambilas was a great friend of the poor and had the most generous heart Many a poor student owes him much in various ways and the number of people who bless his memory and pray for him, for many little acts of kindness and love, is legion And yet he was undemonstrative He believed in doing good by stealth so that hardly any except those who have benefitted know of his help Of him truly it may be said "His left hand did not know what he gave with the right"

A young person of such varied accomplishments, whose life of service to the community was just beginning to unfold, has passed away To me he is never dead , the spirit which he symbolized so nobly, the spirit of buoyant and cheerful youth, the spirit of sacrifice and service, the spirit of generosity and humility can never die He lives in the memory of thousands

had set in, which when combined with the sense of humour made his nature all the more amiable During my short stay at Bombay, one afternoon he and I together were motoring back to Santacruz He was driving the car with a friend of his beside him whom he had to drop on the way I found him all the way indulging in very subtle jokes with the friend From what I could overhear, I thought him capable of a full-blooded enjoyment of life He had a fine business acumen too During his brief career he had already acquired no mean position in the business circle of Bombay and had a still brighter future The hopes of the illustrious family were reposed in him, but the hostile powers above have carried him away before his early promises could materialize

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्री· ।
इत्थं विचिन्तयति कोषगते द्विरेफे
हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार ॥

Lucknow } —*S P Shukla, M A, Visharad.*

‘स्वर्गीय’ रामबिलास

श्रीयुत जवाहिरलालजी,

आपका पत्र मिला। मुझे इस वातका नितान्त खेद है कि जिसको ‘चिरंजीवि’ रामविलास कहकर संवोधित करने की इच्छा रखता था, आज उसी रामविलास को ‘स्वर्गीय’ रामविलास लिखना पड़ता है। स्वर्गीय के साथ मेरा व्यवहार-सम्वन्धी किसी वात मे परिचय नहीं था। ‘गीता’ के सम्वन्ध से साधारण परिचय था। जहाँ तक मुझे स्मरण है, स्वर्गीय रामविलास प्रसन्न मुख, गंभीर भाव का परिपोषक था। मैंने उसमे अन्तिम-चचलता का अनुभव कभी नहीं किया था। मुझे यह आशा थी कि यह वालक व्यवहार-क्षेत्र मे आने पर आदर्श गृहस्थ वनेगा। इसके धार्मिक-विचार भी समयके अनुसार अनुमोदनीय थे। खान-पान आदि व्यवहार मर्यादाका उल्लंघन नहीं करते थे। इस उदारात्मा वालकके निधन से राजपूताना के तरुणो मे एक वह स्थान रिक्त हुआ है जिसकी सर्वतोभावेन पूर्ति सन्निहित काल मे असम्भव है।

वम्वई }   —रमापति मिश्र

WHAT A PROMISING YOUTH !

Dear Mr Jain,

I am in receipt of your kind letter and I thank you for it. Needless for me to say what a terrible shock it was when I learnt from the newspapers about the tragic end of our dear Rambilas The premature demise of Rambilas is an inconsolable loss not only to his near and dear ones but also to the community at large, all the greater because we cannot evaluate it with critical accuracy *What a promising youth* he was ! Though it was more than eight years since I moved with him in close intimacy I was so much impressed with his noble qualities that his very name awakens in my dormant memory even to-day a vista of crowded remembrances I was privileged to come into contact with him at that happy and all-too-brief period when like the rosy fingered dawn that struggles to emerge out of the mists of the night, the tenderness of youth was making way for the mystery of adolescence with its emotional nobility pending the very pressing problems of infinite life Though he was born in the lap of luxury, he turned away from the pomp and ostentations of wealth and lived the life of simplicity, so fittingly in consonance with the simplicity of his character Silently and almost ashamed, as it were, that fortune had favoured him more than his friends and comrades,

रामविलास अपने माता-पिताका पूर्ण आज्ञाकारी तथा भाइयो का सच्चा स्नेही रहा। उससे बड़े लोगो के लिए उसके पवित्र हृदय मे हमेशा आदर-भाव बना रहता था। वह अपने मित्रोके साथ प्रसन्न-वदन तथा प्रेमसे रहा करता था। वह वहुत थोड़े ही समय मे व्यापार के कार्य-भारमे दक्षता प्राप्त करके एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट डिपार्टमेन्टके कार्यका सञ्चालन कर रहा था और वेंकिंग तथा दूसरी व्यापार सम्बन्धी योग्यता प्राप्त करता जाता था। ऐसी आशा थी कि थोड़े ही समयमे वह एक कुशल व्यापारी हो जायगा तथा एक वड़ा नागरिक हो जायगा। परन्तु यह कौन जानता था कि भारतमाता का एक होनहार नव-युवक अपने विशाल हृदय के कितने ही उन्नत भाव अपने मनके मनमे रखते हुए ही अपने पूज्य पिता, भाइयों, इष्ट-मित्रो तथा धर्मपत्नी को छोडकर उस परम पिता के पास जा उपस्थित हो जायगा। फ़ूल असमय मे ही मुरझा गया।

भारतमाता को ऐसे ही लोगोंकी अत्यन्त आवश्यकता है।

महिदपुर } —नाथूलाल मास्टर

he used to take great pleasure in helping them with the goods of the world and thus stooped to conquer the inequality of circumstances But these were of comparative triviality, the wealth of whose good nature out-shone the wealth of material prosperity I am quite certain that even if he were born in a labourer's family, he would nevertheless have won his way to success in life He had the grit, the determination to succeed and the genius of Johnson to take pains To this perseverance of purpose was wedded a rare measure of perspicacity that lifted him head and shoulders over his friends in the class-room

I found in him a striking example of opulence marching hand in hand with intelligence, or of intelligence that did not scorn toil in consummation of itself Born great and with a hundred willing hands to thrust greatness on him, he would have achieved greatness without such adventitious aid It was with great pleasure that I was learning from various quarters that he was already making rapid progress in the business world Pity it is that he is snatched away from us so soon and suddenly Had talents of such exceptional order been devoted to trade and industry, he would have won great rank among business magnates, to politics, he would have attained eminence as a builder of the nation, or—remembering as I do how his youthful ebullient heart throbbed with a passion for national service—both to business and politics he would have been a great benefactor of the Motherland It is said that the Ancient Greeks, who perfected the cult of beauty and therefore of nobility believed that the Gods are jealous of men, and that they permit the rich promise of youth only to cheat its fulfilment This fancy haunts me as I think of Rambilas Podar, a flower that was snubbed before full bloom, and that, had only the Gods been kind, would have wafted its fragrance to the four corners of the world

The more I think of our dear Rambilas the more do his good qualities crowd themselves in such quick succession that I find it impossible to express myself

Yours sincerely,

Secunderabad

N S Raghavan
(B A, LL B)

छोड़ देने के पश्चात भी करते रहे। पूज्यजनों के प्रति उनका व्यवहार सर्वदा सराहनीय था। स्कूल के अध्यापकोंमे वे वड़ी श्रद्धा रखते थे। विद्यालय से उनका वहुत गाढा स्नेह था। अतः उन्होंने विद्यालय की समुचित सेवा करने के निमित्त शिक्षा-समिति मे भी प्रवेश किया। विद्यालय की उन्नति किस प्रकार से हो सकती है यही ध्यान सर्वदा उनका रहा। विद्यालयको उनसे वड़ी वड़ी आशाएँ थीं। उनके रहने से विद्यालयमे वहुतसे नये सुधार हो गये होते। उन्होंने मारवाड़ी नवयुवको के समक्ष अपना आदर्श रक्खा है। मै परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि, वह उन्हे सद्गति प्रदान करे।

वम्वई }

—रामकिशोर शुक्ल

कां बिलास आमुचा नेला ?

(उद्धवा शांतवन०—या चालीवर)

चोरट्या खला वद काला । कां बिलास आमुचा नेला ॥ ध्रु० ॥

स्वर्गिंच्या वंशावृक्षाची । का फळें करंटी झाली ।
अमरांची आस निमाली । देखतां फळें ती तसलीं ।
तुजला का आज्ञा दिधली । चोर जा भूतलावरली ।
तूं चोर भूतला येशी ।
सद्वंशावृक्ष निरखीसी ।
फळ त्याचे तोडुनि नेशी ।
अमरांस तुष्ट करण्याला । कां बिलास आमुचा नेला ॥ १ ॥

कर्तव्यपालनी दक्ष । अमरांच्या पुत्री व्हावे ।
परकार्यसाधनीं त्यांनी । निजमानस नित्य वहावें ।
सद्धर्माचरणीं त्यांचें । चित्त लीन सहजी व्हावे ।
हे कार्य कसे साधावे ।
आदर्श-चित्र त्यां द्यावें ।
तत्समान त्यांही व्हावे ।
हा हेतु मनी योजियला । कां बिलास आमुचा नेला ॥ २ ॥

साधिलें तुवां निजकार्या । परि अनर्थ येथ अनार्या ।
दुःखानें बघ कोमेली । सुकुमारी त्याची भार्या ।
हास्याचि छटा मावळली । खेदमेघ व्यापी सर्वा ।
पितयाच्या हृदिं औदास्य ।
बंधूंचे गेलें हास्य ।
सदनाचे मिटलें लास्य ।
सौख्याचा तारा तुटला । कां बिलास आमुचा नेला ॥ ३ ॥

सर्वथा चरित्री याच्या । रामगुणां होय विलास ।
म्हणुनिच कीं याते दिधले । नाम सार्थ रामविलास ।
नामासम गुण जरि असती । सार्थकता नामी खास ।
कर्तव्य पालनीं राम ।
निजवचनरक्षणी राम ।
सच्छीलवाहनीं राम ।
रामगुणां सर्वहि ल्याला । कां विलास आमुचा नेला ॥ ४ ॥

स्वर्गमनकाल जननीचा । सन्नीध पातला बघुनी ।
सेवेस योग्य ना कोणी । स्वर्लोकि तिच्या की म्हणुनी ।
'मातृभक्त येथें आणी' । कथियले तुला देवांनी ।
एकले न तिज वाटावें ।
स्वर्गीही सुख तिज व्हावे ।
तरि पुत्ररत्न हें न्यावें ।
जननीच्या का सेवेला । हा विलास आमुचा नेला ॥ ५ ॥

तो असो सुखी स्वर्लोकी । पुण्यात्मा जननीसंगें ।
तत्सद्गुणचिंतनस्मरणी । स्नेहीजनमानस रंगे ।
मूर्ति जी हृदन्तरि ठसली । कळिकाळा नच ती भंगे ।
देह जरी काळे नेला ।
ठेवुनी जात कीर्तीला ।
ती काळाच्याही वाला ।
येत ना हरण करण्याला । जरि विलास त्याने नेला ॥ ६ ॥

—ए. व्ही. जाखी, एम् ए, एस् टी सी

सर्वथा चरित्री याच्या । रामगुणां होय विलास ।
म्हणुनिच कीं याते दिधले । नाम सार्थ रामविलास ।
नामासम गुण जरि असती । सार्थकता नामी खास ।
कर्तव्य पालनी राम ।
निजवचनरक्षणी राम ।
सच्छीलवाहनीं राम ।
रामगुणां सर्वहि ल्याला । कां विलास आमुचा नेला ॥ ४ ॥

स्वर्गमनकाल जननीचा । सन्निध पातला बघुनी ।
सेवेस योग्य ना कोणी । स्वर्लोकि तिच्या की म्हणुनी ।
'मातृभक्त येथे आणी' । कथियले तुला देवांनी ।
एकले न तिज वाटावें ।
स्वर्गीही सुख तिज व्हावे ।
तरि पुत्ररत्न हें न्यावें ।
जननीच्या का सेवेला । हा विलास आमुचा नेला ॥ ५ ॥

तो असो सुखी स्वर्लोकी । पुण्यात्मा जननीसंगें ।
तत्सद्गुणचिंतनस्मरणी । स्नेहीजनमानस रंगे ।
मूर्ति जी हृदन्तरि ठसली । कळिकाळा नच ती भंगे ।
देह जरी काळे नेला ।
ठेवुनी जात कीर्तीला ।
ती काळाच्याही वाला ।
येत ना हरण करण्याला । जरि विलास त्याने नेला ॥ ६ ॥

—प. व्ही. जाखी, एम् ए, एस् टी सी

चार आँसू
T. Jain

दो–शब्द

मातृ-वियोग की तैयारी थी। वह जी जान से उनकी सेवामे तल्लीन था। किसी प्रकार की त्रुटि न रहे—यही उसका प्रधान लक्ष्य था। यह प्रायः वैद्यों और डाक्टरो की अनुमति थी, कि—माताजी का निधन बहुत करके आज अवश्यम्भावी है। अतएव वह सभी निश्चित एवं आवश्यक योजनाओं के प्रस्तुत करने मे व्यस्त था। मनमे उद्वेग था एवम् हृदयाकाश मे दुःख की अनेक घटाएँ उठ रही थीं। मातृ-वियोग की भयंकर वेदना के शोक मे असह्य कष्ट हो रहा था। कभी अन्तस्थल मे अनेकों कल्पनाएँ उठ कर दृष्टि-पथ मे अपना स्वरूपसा खड़ा कर देती थीं, तो कभी तिरोहित होकर मानसिक तटसे भयंकरता के साथ टकरा जाती थीं।

आह! उसे क्या मालूम था कि स्वर्ग मे माताजीका स्वागत करनेके लिए उसे पहिले ही पहुँचना होगा! यह किसे खबर थी कि, मलय-समीर-परिमार्जित यह नव-कुसुम-कलिका आज ही क्रूर-काल के द्वारा कुचल दी जायगी। किन्तु, विधिकी विडम्बनाएँ विचित्र एवं विविध प्रकार की होती है। उसके अमूक और चलित चित्रपट का चारु-चित्रण कभी प्रत्यक्ष चक्षुगत होता है तो कभी संसार की निःसारता के ज्वलत

IN MEMORIAM

1

Oh Fate! how cruel thou art to me?
Thou snatchedst away my beloved brother,
In his blossoming period of life,
Oh! how can I indeed bear!

2

Tears roll down my cheeks full sore
Oh, how can I forget my brother?
His presence, his sweet voice, his love,
All arise my eyes before

3

Oh brother! thou hast now the eternal sleep,
For me, thy memories and sorrows
Thou hast left the world to its course,
But ah! for me sad and hapless tears

4

Oh brother! no more shalt thou meet me,
From where can I ever meet like thee,
Thy sympathy, thy feelings, thy solace,
Ah! shall no more come to me

5

Thou hast left thy memory to me,
Oh! thou art impossible for me to forget
May Providence give thee that
Eternal joy, comfort and peace

—Annie D Desai *

---

* ता० ६ जुलाई १९३६ की रात्रि मे लिखित।

—संपादक

कर भरी हुई थी। ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसने एक बार उससे मिल-कर उसकी प्रशसा न की हो। उसकी हृदय-वाटिका मे नवयुगकी नव-भावनाएँ अभी नवीन-कलिकाओके रूप मे ही थी। उनका विकास-काल निकट था और वे प्रस्फुटित होना ही चाहती थीं कि अचानक उन पर प्रकृति का प्रचंड-पवि-पात हो गया।

भाई रामविलास सभी के लिए विलास था। वह हम सभी को अटूट दुःख के अथाह-सागर मे डुवो कर चला गया। प्रकृति की अपार माया ने मिनिटो मे ही, नहीं! नहीं!! निमिष मात्र मे ही कुछ का कुछ कर दिया। अपार दुःख था, अकथनीय वेदना थी, विधिका बीभत्स और भयानक ताण्डव-नृत्य था। जिस उद्यान की पुष्प-वाटिका के प्रसूनो पर मत्त-मलिंद मँडराते थे, हा! आज वह पुष्पविहीन एवम् मुरझाई हुई मालूम दे रही है।

वह वचपन से ही कुशाग्र-बुद्धि मालूम होता था। स्वभावका वड़ा ही शांत था, सदाका हँस-मुख और विनोद-प्रिय था। वच्चो के लिए खिलौना, मित्रो का मनसुखा और वड़ोका आज्ञाकारी अनुचर था। उसे किसी पर क्रोधित होते नहीं देखा। यह उसकी विशेषता थी। यही नहीं, गरीब विद्यार्थियो पर उसकी खास नजर रहती थी। प्रत्येक परोपकारी कार्य मे वह आगे रहता था। पिताजी की इच्छा के प्रतिकूल आज तक उसे कोई काम करते नहीं देखा। वह होनहार था, उस होनहार नवयुवक से समाज को वड़ी वड़ी आशाएँ थीं, और यह ध्रुव-निश्चय था कि भविष्य मे वह समाज के लिए कुछ कर दिखलाने मे समर्थ होगा। किन्तु! वह आशा-लता पल्लवित हुए विना ही नष्ट हो गई।

यह सोच कर कि, विधिकी विचित्र गति के सामने किसी का वश नहीं चलता—"**रह गये हम भी कलेजा थाम कर**"।

वम्बई }

—विश्वंभरलाल रूईया
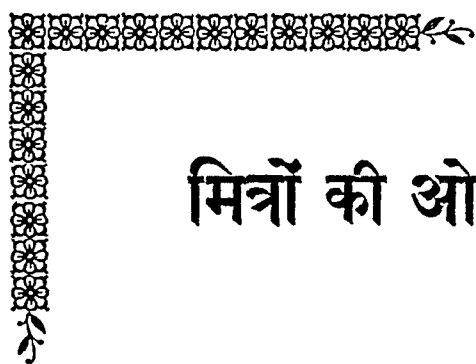
मित्रों की ओर से—

विस्मृति होती, तो भी कुछ खैर थी। पर रह-रह कर पीड़ा होती है, मन-मन्दिर मे प्रवेश होते ही कपाल-क्रिया हो जाती है और हृदय छटपटाने लगता है!

हा भगवान्! तुमने यह क्या कर दिया! इतना बड़ा वज्राघात! इतनी वडी विपत्ति! यह निष्ठुरता कैसी? क्या तुम्हारी सृष्टि का यही अचूक नियम है कि प्रेम-निधि को छीनकर, रख जाते हो हमारे लिये, हम मृत्यु-लोक के जीवोके लिये, उनकी स्मृतियाँ? समय-असमय, पात्रा-पात्र का विना विचार किये, तुम अपना नियम लागू कर देते हो! यह भी कोई नियम है! तुम तो इतने नियम पालक हो कि उसके परिणाम को भूल जाते हो! तुम अपना नियम लागू कर देते हो, हम उसके शिकार वन जाते है और जीवन भार वन जाता है!

ता० ६ जुलाई को वे छीन लिये गये। माता का हृदय था। अपने लालके इस प्रकार छीने जाने के विधि-विधानको वे नहीं मान सकीं। उसी रातको उनकी माता परम पूज्या सेठानीजी, अपने लालकी खोजमे ससार से चल वसीं! देव! नहीं समझ पाओगे तुम, माताका वात्सल्य! यह तो है इस मृत्युलोककी निधि! तुम्हारा विधान टूट सकता है। माताका प्रेम अचल है। तभी तो वे भी गईं। जाओ! तुम अपने विधानोका विधान करो। पर माताके हृदयकी एक आहमे उन्हे मिटा देनेकी शक्ति है! तुमने प्रत्यक्ष देख लिया! तुम्हे मानना पड़ेगा!

वे छीन लिये गये अपने पितासे, परम पूज्य सेठजीसे। हृदय सिहर उठता है, उस वृद्ध पिताके दारुण-दुःखका विचार करनेमे। उनका जीवन सुख चला गया। वे जीनेके लिये जियेगे; जीवन के लिये नहीं। अपने सन्मुख अपने अमूल्य वालकको जाते देखकर एक पिताकी क्या दशा होती है, यह सेठजीका हृदय ही वता सकता है।

और उस कुसुम-वयस्का षोड़ष वर्षीया-वालिका की क्या दशा होगी जिसका सिंदूर सदाके लिये मिट गया। आज उसकी क्या गति

वन जायगी। यहाँ तो मै केवल उन वातोंको लिखना चाहता हूँ जो उनके चरित्र और विचारो पर विशेप प्रकाश डालती हैं। यदि मेरे परम स्नेही और शुभेच्छुक विलासजी सेठके जीवनसे आधुनिक नवयुवको के जीवनमे कुछ भी उत्थान हो, तो मेरा मनोरथ सिद्ध हो जावेगा।

बम्बईमे कई घराने ऐसे है जिनका रहन-सहन अनुकरणीय है, परन्तु इस घराने की बात मैने निराली ही पाई। संस्कारों की निधि, प्रगतिशील विचार, उदार हृदय, त्यागकी भावना, कलाका प्रेम, देश-सेवाके उद्गार, सभी बाते उनके यहाँके सभी स्त्री पुरुपोंमे पाता हूँ। उनके साथ रहकर जैसा कुछ उन्हे जान पाया हूँ उस परसे कह सकता हूँ कि यह एक सम्पन्न प्रतिभाशाली घराना है और इसी घरानेकी विभूति श्री विलासजी सेठ थे।

उनका उदय हुआ मेरे सामने और मैने उस प्रदीप्त-दीपककी अन्तिम ज्योतिर्मयी लौ को बुझते भी देखा। जीवनका यही रहस्य है। संयोग–वियोग और सुख–दुःख। उनके निकटतम मित्रोमे से होनेके कारण, प्रति दिन २, ३ घण्टे तो मुझे उनके साथ विताने ही पडते थे। जीवनके सुप्रभातमे ही उस कुसुम-कली की सुगंधी चारो ओर फैल चुकी थी। उनके भविष्यकी उज्ज्वलता साफ थी। हम सव विचारते थे। उस पोद्दार-कुल के दीपक से मारवाडी समाज का उत्थान होगा, उस वालक मे इस समाज को उन्नति के शिखर पर पहुँचा देने की शक्ति नजर आती थी; पर विधाता को यह मजूर नहीं था और वे हमसे, मारवाड़ी समाज से तथा देश से छीन लिये गये। एक चमकता सितारा टूटा। शून्य-आकाश की नाँई रह गया हमारा शून्य-हृदय। देशका दुर्भाग्य कहे या हम लोगोके पूर्व जन्मोके सस्कार ? पर समाजने एक रत्न खोया–हमने एक प्रेमी। संग रह गयी हमारे हृदयोमे एक दहकती ज्वाला उनकी याद की।

उस दिन सारी बम्बई रोई। परिचित, अपरिचित सभी रोये। लोगो के दिलो पर गहरा धक्का लगा। एक कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति कर्तव्य पूरा करते करते ही चला गया।

बिलासजीका स्वभाव इतना सरल था कि कोई भी उनसे थोड़ी देर बात करने पर उनके लिए हृदयमे श्रद्धापूर्ण स्थान सुरक्षित किये बिना नहीं रह सकता था। एक भाग्यवान पिताके पुत्र होने पर भी उनको जरा भी बड़प्पनका ध्यान नहीं था। सबसे मीठे बोल बोलना, उनकी आदत थी। किसी का भी मन वे जीत सकते थे; पर यह उन्होने कभी चाह कर नहीं किया। इसका उनको कभी ध्यानभी नहीं था। बिना किसी भेद-भावके वे सबसे सहानुभूति रखते थे। छोटे से छोटे आदमीके साथ वे वही व्यवहार करते थे जो वे निजी मनुष्योके साथ करते थे। कोई निराश होकर उनके पाससे वापिस नहीं जाता था। सबको वे आवश्यकतानुसार सहायता देते थे।

सादगी उनमे इतनी थी कि जिस तरह जो काम बनता, कर लेते। घरमे कूड़ा पड़ा हुआ होता और नौकर हाजिर नहीं होता तो, वे बिना नौकरको बुलाये, खुद हाथ से साफ कर लेते थे। घर से बाहर यदि खूब सज-धज कर सूट पहन कर निकले तो कोई खास खुशी नहीं; यदि जाँघिया ही पहन लिया तो कोई शरम नहीं। वे सादगीकी जीवित प्रतिमा थे।

हृदय शुद्ध; किसीको यह नहीं खयाल हो सकता था कि वे थोथी बाते कर रहे है। कोई बनावट नहीं। निर्मल हृदय बिलासजी स्पष्ट-वक्ता थे और इतने शुद्ध हृदय होने पर भी वे एक कुशल व्यापारी होनेकी आशा देते थे। गत दो वर्षों मे जबसे उन्होने अपनी फर्मका काम-काज देखना शुरू किया था, उन्होने व्यापार-व्यवस्थामे कितने ही नये सुधार किए, तथा नयी योजनाये कीं। व्यापारको विलायत, जापान आदि देशो मे

अधिक फैलाया। वे शीघ्र ही यूरोप तथा जापान जानेवाले थे और इस यात्राके पहले वे व्यवहारिक-ज्ञान (Practical knowledge) प्राप्त कर लेना चाहते थे।

पढने मे वे हमेशा तेज रहे। सहपाठियो का भी वे पूरा ध्यान रखते थे। अपने निजी अध्यापको की दी गई सहायता को वे अपने तईं सीमित नहीं रखते थे। वह उनके सहपाठियों को भी सहायक होती थी। क्लास मे लिखे हुए नोट अपनी तरफसे टाइप कराकर वे बाँट देते थे। उनका कोई सहपाठी आर्थिक-संकट के कारण इम्तिहान मे नहीं वैठ सके, ऐसा नहीं हो पाता था।

मित्रो को दावते देने का उन्हे खूब शौक था। उनका सान्ताक्रुज का वंगला तो उनके मित्रों का घर था। दो-दो आलीशान टेनिस—कोर्ट रखते थे। टेनिस के वाद 'जुहू' पर नहाने जाकर उनको वहीं भोजन कराते थे। अपनी मलाडकी स्टेटमे उन्होंने एक सुन्दर क्रिकेट—पिच वनवाया था। अक्सर वे वहाँ मित्रोके साथ क्रिकेट खेलने जाया करते थे और रातको वहीं भोज भी देते थे। हमारे रुई वजारकी Cotton Brokers' Staff Union की पार्टीके लिये वे प्रायः अपना मलाडका बंगला खाली कर दिया करते थे। कॉलेजमे कभी मोटर-ट्रिप का वन्दोवस्त करते तो कभी स्टीमर का; और इनकी सव जिम्मेवारियाँ उन पर रहती। कोई काम वे अधूरा नहीं छोडते थे।

वीचमे उन्हे सिनेमाओसे और खास कर अंग्रेजी सिनेमाओंसे घृणा हो गई थी। कारण पूछने पर उन्होने वताया था:—"हीरा, (वे मुझे इसी नामसे पुकारा करते थे) आज कल सिनेमाओमे कई कुत्सित वातें रहती हैं। आधुनिक नाच वगैरहका मन पर वुरा असर पड़ता है। भले घरकी स्त्रियोंके साथ उन्हें देखना कितना लज्जास्पद है?" अपने खयालोके वड़े पक्के थे। व्यर्थकी दलील उनके सामने नहीं चल पाती थी।

अधिक फैलाया। वे शीघ्र ही यूरोप तथा जापान जानेवाले थे और इस यात्राके पहले वे व्यवहारिक-ज्ञान (Practical knowledge) प्राप्त कर लेना चाहते थे।

पढने मे वे हमेशा तेज रहे। सहपाठियो का भी वे पूरा ध्यान रखते थे। अपने निजी अध्यापको की दी गई सहायता को वे अपने तई सीमित नहीं रखते थे। वह उनके सहपाठियों को भी सहायक होती थी। क्लास मे लिखे हुए नोट अपनी तरफसे टाइप कराकर वे बाँट देते थे। उनका कोई सहपाठी आर्थिक-संकट के कारण इम्तिहान मे नहीं बैठ सके, ऐसा नहीं हो पाता था।

मित्रो को दावते देने का उन्हे खूब शौक था। उनका सान्ताक्रुज का बंगला तो उनके मित्रों का घर था। दो-दो आलीशान टेनिस-कोर्ट रखते थे। टेनिस के बाद 'जुहू' पर नहाने जाकर उनको वहीं भोजन कराते थे। अपनी मलाडकी स्टेटमे उन्होंने एक सुन्दर क्रिकेट-पिच बनवाया था। अक्सर वे वहाँ मित्रोके साथ क्रिकेट खेलने जाया करते थे और रातको वहीं भोज भी देते थे। हमारे रुई बजारकी Cotton Brokers' Staff Union की पार्टीके लिये वे प्रायः अपना मलाडका बंगला खाली कर दिया करते थे। कॉलेजमे कभी मोटर-ट्रिप का बन्दोबस्त करते तो कभी स्टीमर का; और इनकी सब जिम्मेवारियाँ उन पर रहती। कोई काम वे अधूरा नहीं छोडते थे।

बीचमे उन्हे सिनेमाओसे और खास कर अंग्रेजी सिनेमाओंसे घृणा हो गई थी। कारण पूछने पर उन्होने बताया था:—"हीरा, (वे मुझे इसी नामसे पुकारा करते थे) आज कल सिनेमाओमे कई कुत्सित बातें रहती हैं। आधुनिक नाच वगैरहका मन पर बुरा असर पड़ता है। भले घरकी स्त्रियोंके साथ उन्हें देखना कितना लज्जास्पद है?" अपने खयालोके बड़े पक्के थे। व्यर्थकी दलील उनके सामने नहीं चल पाती थी।

१००) मे उन्हे Boarding, lodging and conveyance के सिवाय सव खर्च करना पड़ता था। यह उन्हे प्रतिमास घरसे मिलता था। दूसरे इतने खर्च रहने पर भी वे इतना दान कैसे कर पाते थे यह एक समस्या है। मेरी धारणा है, उनकी माताजी उन्हे काफी पैसा दिया करती थीं। अव न माताजी हैं, न विलासजी कि इसका खुलासा किया जा सके। मेरे पूछने पर वे मुस्करा कर यह कह दिया करते थे, "हीरा, तुझे इसकी क्या फिकर। कहीं न कहींसे आ ही जाता है।" बेटा माँकी आत्मा थी, माँ बेटे की। दोनो एक दूसरेके लिये जीते थे। न तो वेटा ही माँका वियोग सह सकता था, न माँ ही वेटेका। दोनों एक दूसरे के लिये मर भी मिटे।

विलासजी सेठ ने सन् १९३० के सत्याग्रह—आन्दोलन मे पूर्ण सहयोग दिया था। वे कट्टर राष्ट्रीय और कांग्रेसके पूर्ण समर्थक थे। देशके कितने ही वड़े-वड़े लीडरों से उनका संबन्ध था। पडित जवाहरलालजी, वावू राजेन्द्रप्रसादजी, जमनालालजी, तथा वीर नरीमान उनके खास प्रिय थे। जवाहरलालजी तथा राजेन्द्रप्रसादजी जब बम्बई आये, विलासजी की तरफ से उनकी सवारी वगैरे का वंदोवस्त मेरे द्वारा ही हुआ है। समाजवाद को वे मानते थे; पर गाँधीवाद के भीतर रह कर। एक वार कतिपय समाजवादी नेताओं को ४००) ५००) मासिक की, उनके सिद्धान्तो का प्रचार करने के लिये जरूरत हुई। मैंने विलासजी सेठसे उन्हें कुछ सहायता देनेको कहा! उत्तर मिला "समाजवादियो को इतने रुपयो की क्या जरूरत! अगर इन्हे रुपये चाहिये तो गाँधीवाद का समर्थन करे, ताकि लाखों रुपये वात की वात मे मिल सकते हैं। गाँधीवाद का नाश करके रुपया नहीं पा सकेंगे।" हा! इस विपय पर अधिक वात करनेका मौका नहीं मिला परन्तु इस उत्तरमे कोई गूढ रहस्य अवश्य था, क्योकि समय समय पर वे खूब दिल खोलकर देते थे। इतने छोटे नवयुवक द्वारा जिसके पिता तथा वड़े भाई विद्यमान हो,

उसके बाद अक्सर यही देखा गया कि वे अपने भाईयोके साथ शिक्षा-प्रद सिनेमाओ मे ही जाते रहे।

अपने पूज्य पिताजीकी तरह ही वे शिक्षाकी उत्तेजनामे खूब दिल-चस्पी लेते रहे। इस कार्यको वे तन-मन-धनसे करते थे। सान्ताक्रुजकी हाईस्कूल, नवलगढकी हाईस्कूल, मारवाड़ी विद्यालय बम्बई, सीताराम पोदार बालिका विद्यालय आदि संस्थाओमे इन्होंने क्या क्या किया, इसका उनके जीवन-चरित्र से पता चल जायगा। वे मेडिकल-कॉलेजके विद्यार्थियोको खूब मदद दिया करते थे। वे कहते थे "आर्टस् लाइनके विद्यार्थी तो अपना ही भला कर सकते है, पर डाक्टर बनकर मेडिकल लाइनवाले और लोगो का भी भला कर सकते है। कितने ही गरीब उनसे मुफ्त फायदा उठा सकते है। इस सेवाके लिये ही मै Medical line को ज्यादा पसन्द करता हूँ व महत्व देता हूँ"। इसमे खूबी यह थी कि वे स्वय Arts Line के विद्यार्थी थे। वे दान भी बहुत करते थे। प्रायः उनका दान गुप्त हुआ करता था। औरोके जरिये वे क्या देते थे यह तो मुझे नहीं माळूम परन्तु मेरे ही जरिये उन्होंने हजारो रुपये दान किये। उन्होने कुछ नहीं तो भी ७०--७५ मेडिकल विद्यार्थियोंको फीस, परीक्षाकी फीस या पुस्तके आदि दी थीं। यह दान प्रत्येक विद्यार्थी को ५०) से १२५) रुपये तक का होता था।

बिलासजी सेठ कपड़े इतने बनवाते थे कि दर्जियोके यहाँ उनका ऑर्डर चाळू ही रहता था; परन्तु उनके Dressing Room मे थोड़े ही कपड़े रहते थे। इसका कारण वे यह बतलाते थे, "नये कपड़े तो कोई भी ले सकता है, परन्तु पहिने हुए कपडे तो वही लेगे जिन्हे सच्ची जरूरत हो। मुझे तो गरीबोको ही देना है और मै कपड़े थोडे ही दिन पहनकर दे देता हूँ।"

दान वे गुप्त करते थे। इस सिद्धात को वे इतना महत्व देते थे कि उनके घरवाले भी यह नहीं जान पाये कि वे क्या और कहाँ देते है।

और एक दिन आवेगा, जब तू मुझे भारत के राष्ट्रीय नेताओं मे देखेगा।" ये अरमान सब दिल के दिलमे रह गये। कांग्रेस भी उस नवयुवकको नेतारूप मे पाकर गौरवान्वित होती। हम देशवासियोंका दुर्भाग्य है कि यह होनहार नवयुवक जाता रहा।

जनसंख्या वृद्धिको रोकने के वे समर्थक थे। वे कहते थे, "जब भर पेट रोटी नहीं मिलती, संख्या बढाने से क्या लाभ हो सकेगा?"

विवाहको विलासजी सेठ बहुत महत्वपूर्ण बात समझते थे। उन्होंने मुझे कहा था, "विवाह मनुष्यको तभी करना चाहिए जब वह अपने पैरो पर खडा हो जाय। अपनी कमाई खा सके। अपनी वधू आप पसंद कर लेनी चाहिये, ताकि भविष्यमे अपने गार्हस्थ संसारको सुखी बना सके तथा दम्पत्तिके विचारो मे समानता हो।" इन्हीं विचारो के अनुसार उन्होंने कलकत्तेमे अपनी वधू अपने आप पसन्द की थी। बाल-विवाहके वे पूर्णतया विरोधी थे। अपनी शादी की बात होने पर उन्होने पूज्य सेठजीको, जो नवलगढ थे, ऐसा कर उनके सिद्धातो को ठेस नहीं लगानेकी सविनय प्रार्थना की थी। कई कारणोसे उनकी इच्छा नहीं फली और उन्हे १९॥ वर्षकी उम्रमे ही विवाह करना पडा। उस समय वे जूनियर बी० ए० मे थे। वे चाहते थे कमसे कम बी० ए० पास होने तक तो वे विवाह नहीं करे। स्वेच्छासे उनकी वह इच्छा नहीं चली। परन्तु अब इस बातका दुःख होता है कि उनका विवाह छोटी उम्रमे ही क्यो नहीं हो गया? यदि वे भी कम उम्रमे ही व्याह दिये गये होते तो अब तक वे एक दो आशाजनक निधियाँ छोड गये होते। इस विवा-हमे दोनों कुलोकी मर्यादानुसार दान पुण्य भी हुआ और कुप्रथाओका त्याग भी। मै जेलमे होनेसे विलासजीके विवाहमे शरीक नहीं हो पाया हालाँ कि विलासजी सेठ ने कुछ दिनके लिए मुझे छुडाने का विफल प्रयत्न भी किया था। इसका मुझे तथा विलासजीके अतरंग मित्र श्री मदन-लालजी पित्ती को भी—जो मेरे साथ जेलमे ही थे—अत्यन्त खेद रहा।

१००) मे उन्हे Boarding, lodging and conveyance के सिवाय सब खर्च करना पड़ता था। यह उन्हे प्रतिमास घरसे मिलता था। दूसरे इतने खर्च रहने पर भी वे इतना दान कैसे कर पाते थे यह एक समस्या है। मेरी धारणा है, उनकी माताजी उन्हे काफी पैसा दिया करती थीं। अब न माताजी हैं, न विलासजी कि इसका खुलासा किया जा सके। मेरे पूछने पर वे मुस्करा कर यह कह दिया करते थे, "हीरा, तुझे इसकी क्या फिकर। कहीं न कहींसे आ ही जाता है।" बेटा माँकी आत्मा थी, माँ बेटे की। दोनो एक दूसरेके लिये जीते थे। न तो बेटा ही माँका वियोग सह सकता था, न माँ ही बेटेका। दोनों एक दूसरे के लिये मर भी मिटे।

विलासजी सेठ ने सन् १९३० के सत्याग्रह–आन्दोलन मे पूर्ण सहयोग दिया था। वे कट्टर राष्ट्रीय और कांग्रेसके पूर्ण समर्थक थे। देशके कितने ही बड़े-बड़े लीडरों से उनका संबन्ध था। पडित जवाहर-लालजी, बाबू राजेन्द्रप्रसादजी, जमनालालजी, तथा वीर नरीमान उनके खास प्रिय थे। जवाहरलालजी तथा राजेन्द्रप्रसादजी जब बम्बई आये, विलासजी की तरफ से उनकी सवारी वगैरे का बंदोबस्त मेरे द्वारा ही हुआ है। समाजवाद को वे मानते थे; पर गाँधीवाद के भीतर रह कर। एक बार कतिपय समाजवादी नेताओं को ४००) ५००) मासिक की, उनके सिद्धान्तो का प्रचार करने के लिये जरूरत हुई। मैंने विलासजी सेठसे उन्हें कुछ सहायता देनेको कहा! उत्तर मिला "समाजवादियो को इतने रुपयो की क्या जरूरत! अगर इन्हे रुपये चाहिये तो गाँधी-वाद का समर्थन करें, ताकि लाखों रुपये बात की बात मे मिल सकते हैं। गाँधीवाद का नाश करके रुपया नहीं पा सकेंगे।" हा! इस विषय पर अधिक बात करनेका मौका नहीं मिला परन्तु इस उत्तरमे कोई गूढ रहस्य अवश्य था, क्योकि समय समय पर वे खूब दिल खोलकर देते थे। इतने छोटे नवयुवक द्वारा जिसके पिता तथा बड़े भाई विद्यमान हो,

आकाशमे फिर भी उसकी छाया प्रतीतसी होती है। पर फिर सदाके लिए अधकार !

यही है मृत्यु-भवानी का ताण्डव नृत्य और मानव-जीवन का पूर्ण क्षपिक इतिहास।

बम्बई } —हीरालाल दवे *

---

* अखण्ड-भारत मे उद्धृत।

—संपादक

यह तो नहीं धारा जा सकता था कि वह लाखों दे; परन्तु उन्होने कांग्रेसकी तन-मन-धनसे शक्त्यनुसार सेवा की। गत बम्बई कांग्रेस अधिवेशन मे उन्होने सभापतिके स्वागतके लिए बनाई गई कमिटीमे काम किया था। अपनी भूलेश्वरकी दुकान के सामने रुईकी गाँठोका एक दरवाजा बनाया था। उन्होंने अपने रूई के गोदामसे गाँठो को मँगाया था। बाबू राजेन्द्रप्रसादके स्वागतके लिए दरवाजा बनाया और जुलूसके साथ उनका स्वागत किया। इसमे उन्होने सैकड़ो रुपये खर्च किए; तथा चालीस पचास हजारकी जोखम सही। खुली जगहमे रक्खी हुई गाँठोका बीमा भी, बीमा कम्पनियाँ नहीं करतीं; पर इस जोखमका खयाल कराने पर उन्होने कहा था "काग्रेसमे सत्य तथा त्याग है। ऐसी संस्थाके लिये निकाली गई गाँठोमे आग नहीं लगेगी।" और हुआ भी ठीक वैसा ही।

सभापतिजीके स्वागतके लिये जी० आई० पी० के कल्याण स्टेशन से अब्दुल गफ्फार नगर तक जो सजावट काग्रेसने की थी, वह बिलासजी सेठ की सहायता तथा कार्यतत्परता से ही सफल हुई थी। बम्बई अधिवेशन के बाद तो उनकी काग्रेसके प्रति श्रद्धा बढती ही गई। लखनऊ काग्रेस मे वे उनकी माताजी की तबियत खराब होने के कारण नहीं जा सके और इसीलिए उन्होने मुझे अनुरोध कर वहाँ भेजा। अपने खर्चसे मुझे वहाँ जानेकी ताकीद की और सचमुच मेरे लिये Second Class Return टिकट और लखनऊ R G. Cotton Mills के मेनेजिंग-डाइरेक्टर के नाम एक चिठ्ठी लिख दी जिसमे मुझे जितने पैसे की जरूरत हो, दिये जाने की आज्ञा थी। न तो मुझे पैसेकी जरूरत ही थी, न वह चिठ्ठी मैंने काममे ही ली, परन्तु इससे माळ्म होता है कि उन्हे अपने आदमीकी सुविधाका कितना खयाल था।

दुकानका प्रायः सभी काम-काज वे करते थे, पर वे इसे छोड़कर देश-सेवा करनेके लिये तड़फते थे। मुझे प्रायः कहा करते थे कि "हीरा, दूकानका काम कुछ दिनोमे छोड़ कर मे तो देश-सेवा करने लगूँगा,

सहायक एवं वन्धु वन जाता है। दुनियाँ पुरुष के महत्व की कसौटी है। समाज के हितैषी और देशका कल्याण करनेवाले परोपकारी पुरुष ही संसार मे आदर्श माने जाते है। ऐसे उत्तम पुरुष का लोप होनेसे दुनियॅकि एक अङ्गका लोप हो जाता है। वस यही कारण है कि महान आत्माओ के गुजर जाने से सर्वत्र हाहाकार व्याप्त होजाता है और उनका दुःख प्रत्येक परिवार मे अपने निजी बान्धव के शोक की तरह माना जाता है। ऐसा सत्पुरुष मरने पर भी जीवित है। उसकी कीर्ति अमर है। हमारे सामने से उसके देह के अन्तर्धान हो जाने पर भी उसकी मूर्ति हर वक्त प्रत्यक्ष वनी रहती है। आत्मा अमर है फिर मरण कैसा ? कई पुरुष ऐसे भी होते है जो शतायु होते हुए भी आखिर जग की यवनिका के पीछे अपना स्वार्थ-नृत्य करके काल के अङ्क मे सदा के लिये सो जाते है। ऐसी दीर्घायु पाने से लाभ क्या ? जो अल्पायु होते है और अपनी छोटी-सी जीवन-गाथामे दुनियाँ को अपना कर्तव्य-पालन करके दिखला जाते हैं—उनकी अल्पायु भी अनेक पुरुषो की दीर्घायु से कहीं अधिक महत्व रखती है। एक मनुष्य की मृत्युके लिये हजारोका हृदय व्यथित होता है और हजारो मनुष्यों की मृत्यु के लिये किसी का भी नहीं। अर्थात् एक परोपकारी उत्तम पुरुष का वियोग-दुःख हजारो के लिए वियोग-दुःख और हजारो स्वार्थी अधम पुरुषो का वियोग-दुःख एक के लिये भी वियोग-दुःख नहीं होता। वस यही साधारण तथा असाधारण पुरुष की परीक्षा है। स्वर्गीय रामविलास पोद्दार असाधारण पुरुष था। वह परोपकारी और दया की मूर्ति था। स्वल्पायु होने पर भी उसके वियोग से सर्वत्र हाहाकार हो गया।

मारवाड़ी समाज के भाग्यशाली पुरुषों की गणना मे सर्व-सुख-सम्पन्न होने के कारण सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार का अग्रगण्य स्थान रहा है। समृद्धि तथा नाना सुखोंके स्रोतोने आपके लिये हर्ष का सागर तैयार

और एक दिन आवेगा, जब तू मुझे भारत के राष्ट्रीय नेताओं मे देखेगा।" ये अरमान सब दिल के दिलमे रह गये। कांग्रेस भी उस नवयुवकको नेतारूप मे पाकर गौरवान्वित होती। हम देशवासियोंका दुर्भाग्य है कि यह होनहार नवयुवक जाता रहा।

जनसंख्या वृद्धिको रोकने के वे समर्थक थे। वे कहते थे, "जब भर पेट रोटी नहीं मिलती, संख्या बढाने से क्या लाभ हो सकेगा?"

विवाहको विलासजी सेठ बहुत महत्वपूर्ण बात समझते थे। उन्होंने मुझे कहा था, "विवाह मनुष्यको तभी करना चाहिए जब वह अपने पैरो पर खडा हो जाय। अपनी कमाई खा सके। अपनी वधू आप पसंद कर लेनी चाहिये, ताकि भविष्यमे अपने गार्हस्थ संसारको सुखी बना सके तथा दम्पत्तिके विचारो मे समानता हो।" इन्हीं विचारो के अनुसार उन्होंने कलकत्तेमे अपनी वधू अपने आप पसन्द की थी। बाल-विवाहके वे पूर्णतया विरोधी थे। अपनी शादी की बात होने पर उन्होने पूज्य सेठजीको, जो नवलगढ थे, ऐसा कर उनके सिद्धातो को ठेस नहीं लगानेकी सविनय प्रार्थना की थी। कई कारणोसे उनकी इच्छा नहीं फली और उन्हे १९॥ वर्षकी उम्रमे ही विवाह करना पडा। उस समय वे जूनियर बी० ए० मे थे। वे चाहते थे कमसे कम बी० ए० पास होने तक तो वे विवाह नहीं करे। स्वेच्छासे उनकी वह इच्छा नहीं चली। परन्तु अब इस बातका दुःख होता है कि उनका विवाह छोटी उम्रमे ही क्यो नहीं हो गया? यदि वे भी कम उम्रमे ही व्याह दिये गये होते तो अब तक वे एक दो आशाजनक निधियाँ छोड गये होते। इस विवाहमे दोनों कुलोकी मर्यादानुसार दान पुण्य भी हुआ और कुप्रथाओका त्याग भी। मै जेलमे होनेसे विलासजीके विवाहमे शरीक नहीं हो पाया हालाँ कि विलासजी सेठ ने कुछ दिनके लिए मुझे छुडाने का विफल प्रयत्न भी किया था। इसका मुझे तथा विलासजीके अतरंग मित्र श्री मदनलालजी पित्ती को भी—जो मेरे साथ जेलमे ही थे—अत्यन्त खेद रहा।

गुण प्रगट होने लगे थे। तुम्हारी उदार प्रकृति का आभास सबको होने लगा था। तुम वास्तव मे खान से निकले हुए रत्न थे, जो कि शुद्ध एव परिमार्जित न होते हुए भी अपने गुणो का परिचय करा देते है। मनुष्य का संशोधन एव परिमार्जन, विद्या का अभ्यास और बुद्धि का विकास है। तुम जैसे सशोधित रत्नके विलीन होने का दुःख आज हमे कम्पित कर रहा है।

बाल्यावस्था से जब तुमने किशोरावस्था मे पदार्पण किया, तुम्हारे मधुर-वचनो एव सरल हृदय ने तुम्हारे लिये अनेक साथी बना दिये। स्कूल तथा कॉलेज मे सदा ही मैने तुम्हे मित्रो से घिरे हुए देखा। जो कोई तुमसे एक बार बात कर लेता था, वह लोहे की तरह चुम्बक से कभी अलग न होता था। प्रसून की सुरभि अपने आप मधुपों को अपनी तरफ आकृष्ट कर लेती है। अनेक मधुपो को तुमने निज–गुण रूप मधु–आस्वादन कराके सन्तुष्ट किया। तुम्हारी ऐसी उदार-प्रकृति के वशीभूत अनेक मधुप आज उस माली की निष्ठुरता को बार-बार धिक्कारते हैं।

स्कूल एव कॉलेजके छात्र-जीवन के बाद तुम अपने गुणोके कारण अपनी फर्म के प्रधान कार्यकर्ता स्वय हो गये। धीरे-धीरे डेढ वर्ष के अल्प समयमे तुमने सारा कार्यभार अपने कन्धो पर उठा लिया। तुम जैसे सम्पत्तिशाली नवयुवक का शीतल मधुर एव हृदयाकर्षक स्वभाव आजकल के मदान्ध नवयुवको के लिये आदर्श था। तुम असहायो के सहाय थे–गरीब विद्यार्थियो को छात्रवृत्ति देते थे–और अपने नौकरो पर पूर्ण कृपा-दृष्टि रखते थे। मारवाडी समाजकी उन्नति कर दिखलाने का तुम्हारा ध्येय था। इसीलिये सार्वजनिक कार्योंमे तुम दिलचस्पी लेने लगे थे।

मारवाडी विद्यालय की शिक्षा-समिति के तुम उत्साही सदस्य थे। विद्यालय मे खेल-कूद की जागृति एव पुरस्कार-वितरण की प्रणाली को

कुछ दिन पहिले जिन बातोको याद कर हमे सुख होता था, आज वे ही दुःखका कारण बन गई है। ईश्वरने यह काम कौनसे अच्छे के लिए किया, समझमे नहीं आता। दुःख यही है कि हम यह नहीं जान पाये कि बिलासजी सेठकी हम लोगो के लिये क्या अन्तिम आज्ञा थी। ये सब स्मृतियाँ आज जीवनको नीरस बनाये देती है।

बिलासजीको, देव हममे नहीं छोड़ सके। वे पुण्यात्मा थे, देवलोकके ही योग्य थे। इस मृत्यु लोकमे हमारे पास नहीं रह गये। रहते तो शायद इसे भी स्वर्ग बनानेका प्रयत्न करते। अपने त्याग तथा सेवा से संसार को पवित्र बनाते; पर सृष्टि के नियम अटल है। मनुष्य का स्वभाव है—सयोग से सुखी होना; वियोग से दुःखी। हम भी स्वभावानुसार आज उनकी वियोग स्मृति से दुःखी है। क्या बिलासजी सेठ के समान स्वामी कोई सेवक पावेगा? क्या कोई पिता उनके समान गौरवान्वित करने वाली सन्तान पावेगा? क्या समाज फिर ऐसा रत्न पैदा कर सकेगा? क्या ऐसा मित्र भी फिर मिलेगा? और सबसे अधिक, क्या उनके समान पुरुष फिर मुझे मिलेगा? हृदय टूक टूक हुआ जाता है इसे सोच कर।

चन्द्रमाकी स्निग्ध चादनी थी। कुछ दिन उजाला कर गई। अब वही भयानक तम। फिर भी कभी चादनी होगी? क्या यह सम्भव है? दैव!

"Like water we come, Like wind we go"

पानीकी तरह हम आते है, हवाके मानिंद जाते है। कहाँ से और किधर, यह नहीं जानते। जैसे एक क्षणके लिए बिजली चमकती है, विश्व दीप्तिमान हो उठता है—जीवन आलोक देख पड़ता है। दूसरे क्षण दामिनी अतीतमे सदाके लिये विलीन हो जाती है। एक क्षण

तुम्हारे विद्यार्थी-जीवन के वाद "मारवाडी स्पोर्टिंग क्लव" मे भी तुम्हारे साथ में खेलता था। अव तुम्हे सामने न देखने से सारा चित्र आँखो के सामने वारवार आता है। भुलाने पर भी भुलाया नहीं जाता। जितनी चेष्टा भूलने की करता हूँ—उतनी ही ज्यादा "याद" तुम्हारी आती है।

मलाड }

तुम्हारा,
'व्यथित-हृदय'—"मुरली"

आकाशमे फिर भी उसकी छाया प्रतीतसी होती है। पर फिर सदाके लिए अधकार !

यही है मृत्यु-भवानी का ताण्डव नृत्य और मानव-जीवन का पूर्ण क्षणिक इतिहास।

वम्बई } —हीरालाल दवे*

---

* अखण्ड-भारत मे उद्धृत।

—संपादक
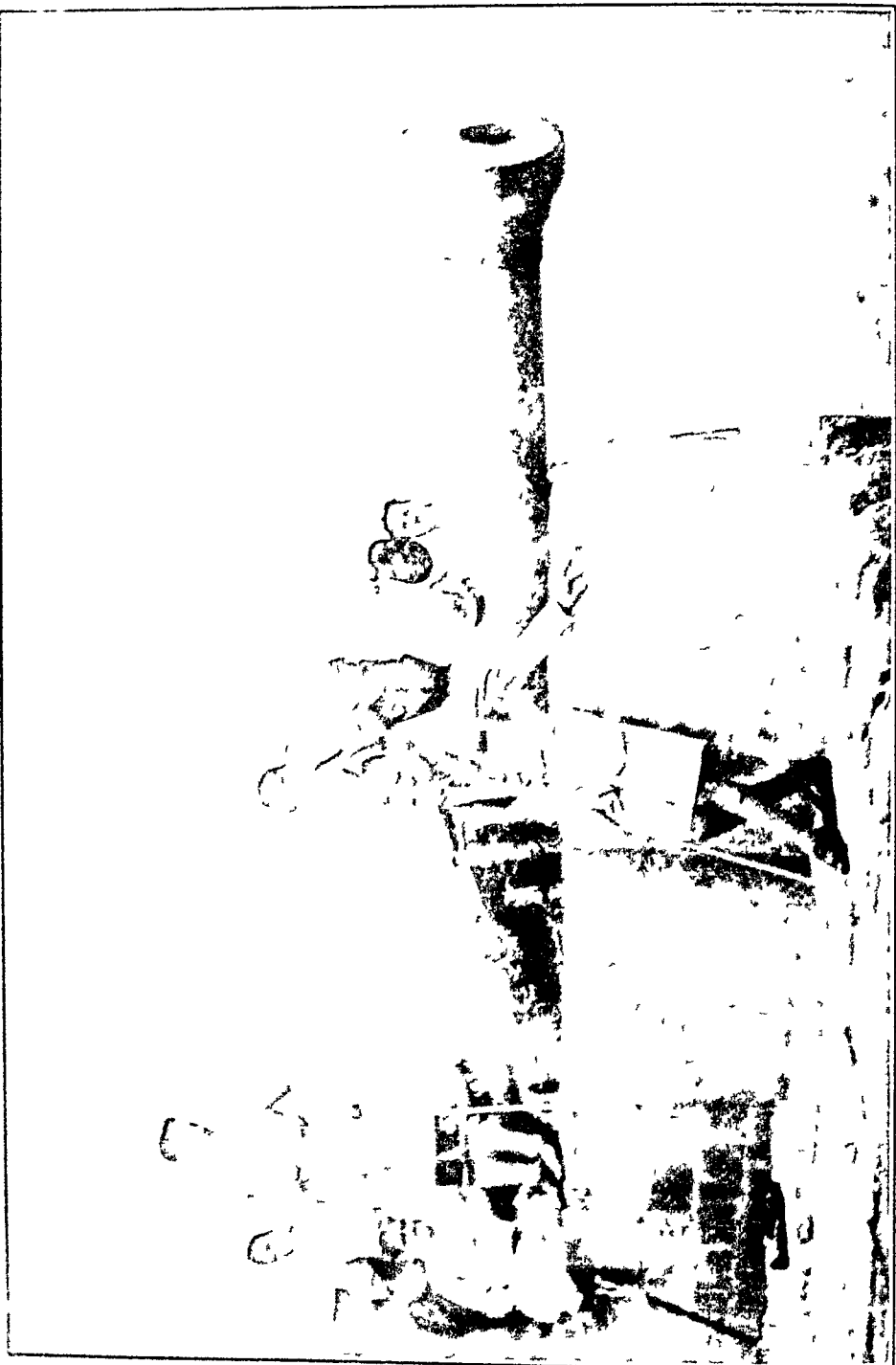
"याद"

संसार के अहर्निश चलते हुए चक्रमे अनेक मनुष्यों का जन्म, मरण प्रति दिन होता रहता है—उत्थान एव पतन भी होते रहते हैं। अनेक वज्रपात होते है। हजारो पुरुप दुनियाँ की दृष्टि मे जीते हुए भी मृत समान है और हजारो मरने पर भी जीवित है। संसार मे सुख-दुःख समान है। सुखके सभी साथी है पर दुःखके बहुत कम। सुख होने पर दुःख भूल जाते है और दुःख आने पर सुख। अगर ऐसा न हो तो सुखिया उन्मत्त और दुखिया अनीश्वरवादी हो जाय और संसार मे प्रलय अनिवार्य हो जाय। पर संसार का क्रम ऐसा अद्भुत है, कि संसारियों को सब अवस्थाओका अनुभव करा देता है और अपने प्रारब्धोका भोग समझ कर सभी प्राणी फिर जैसे तैसे अपना जीवन-यापन करने मे लग जाते हैं।

संसार मे सबका आदि और अन्त एक है; चाहे वह राजा हो या रङ्क। पर उनके गुणो के अनुसार उनकी कृतियो मे उत्तम, मध्यम और अधम का विभाग होना स्वाभाविक है। पुरुष अपने गुणो से ही उत्तम एवं दुर्गुणो से ही अधम होता है। सर्व-गुण-सम्पन्न पुरुष अपने परिवार या मित्रो का ही नहीं, बल्कि सारी दुनियाँ तथा समाजका

कहावत का समय-समय पर यथेष्ट परिचय दिया। जिन संस्थाओ का काम उसने उठाया; उसने सुन्दरता-पूर्वक संभाला। विलास वावू उन संस्थाओका क्रियाशील सदस्य था, उसके कारण कई संस्थाओमे प्राण आया।

विलास वावू एक आज्ञा-पालक आदर्श पुत्र था, स्नेही आदर्श आत्मज था। निष्काम आदर्श मित्र था। नौकरोका उदार तथा आदर्श मालिक था, तथा नन्हीं-नन्हीं वच्चियों के झगड़े निवटाने मे आदर्श जज था। वडे भाईयो के छोटे छोटे वच्चो की सवकी पुकार सुनता था, तथा सभी उससे खुश रहते थे। थोडे मे यह कहूँ तो अतिशयोक्ति न होगी कि विलास वावू एक Perfect Gentleman था। श्रीमन्त कुटुम्व मे जन्म लेकर विलास वावू मे श्रीमन्तो के गुण थे और श्रीमन्ताईके स्वाभाविक अवगुणोंको उसने गुणो की सेवामे लगा दिया था, जिससे वे उसके जीवन मे उपद्रव न मचा सके। इसी कारण से वह अपने हृदयको श्रीमन्त वनाकर, उदारमनेय सदैव गर्व मनीत था।

इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपने सांसारिक क्षेत्र मे अजव मोहजाल फैला दिया और अपनी अकाल मृत्युसे अपने सम्वन्धियोका दुःख हलका करने के लिये अनेक स्नेही-हृदयो पर दुःख का भार वाँट दिया। इसमे सन्देह नहीं कि विलास वावू ने अपनी छोटी सी संसार यात्रा मे भलाई जरूर पाई, और इस भलाई पाने के कारण—उसका सरल स्नेही स्वभाव, विनीत व्यवहार और अनुपम सेवा-वृत्ति थी। भलाई के साथ-साथ व्यवसाय क्षेत्र मे भी, विलास वावू ने आशातीत सफलता प्राप्त की। उसके कारण—उसकी उत्तम मेधा-शक्ति, कार्य-दक्षता और शान्त व्यापारिक वृत्ति थी।

कर्तव्य-परायण विलास का जीवनान्त, क्रूर-कालने वीमारी का दंड न देकर कर्तव्य-पालन करते समय ही लाना उचित समझा। उस समय कर्तव्य वेहोश होकर गिर पडा, दया रोने लगी, माया ने जगतके साथ

सहायक एवं वन्धु वन जाता है। दुनियाँ पुरुष के महत्व की कसौटी है। समाज के हितैषी और देशका कल्याण करनेवाले परोपकारी पुरुष ही संसार मे आदर्श माने जाते है। ऐसे उत्तम पुरुष का लोप होनेसे दुनियँकि एक अङ्गका लोप हो जाता है। वस यही कारण है कि महान आत्माओ के गुजर जाने से सर्वत्र हाहाकार व्याप्त होजाता है और उनका दुःख प्रत्येक परिवार मे अपने निजी वान्धव के शोक की तरह माना जाता है। ऐसा सत्पुरुष मरने पर भी जीवित है। उसकी कीर्ति अमर है। हमारे सामने से उसके देह के अन्तर्धान हो जाने पर भी उसकी मूर्ति हर वक्त प्रत्यक्ष वनी रहती है। आत्मा अमर है फिर मरण कैसा ? कई पुरुष ऐसे भी होते है जो शतायु होते हुए भी आखिर जग की यवनिका के पीछे अपना स्वार्थ-नृत्य करके काल के अङ्क मे सदा के लिये सो जाते है। ऐसी दीर्घायु पाने से लाभ क्या ? जो अल्पायु होते है और अपनी छोटी-सी जीवन-गाथामे दुनियाँ को अपना कर्तव्य-पालन करके दिखला जाते हैं—उनकी अल्पायु भी अनेक पुरुषो की दीर्घायु से कहीं अधिक महत्व रखती है। एक मनुष्य की मृत्युके लिये हजारोका हृदय व्यथित होता है और हजारो मनुष्यों की मृत्यु के लिये किसी का भी नहीं। अर्थात् एक परोपकारी उत्तम पुरुष का वियोग-दुःख हजारो के लिए वियोग-दुःख और हजारो स्वार्थी अधम पुरुषो का वियोग-दुःख एक के लिये भी वियोग-दुःख नहीं होता। वस यही साधारण तथा असाधारण पुरुष की परीक्षा है। स्वर्गीय रामविलास पोद्दार असाधारण पुरुष था। वह परोपकारी और दया की मूर्ति था। स्वल्पायु होने पर भी उसके वियोग से सर्वत्र हाहाकार हो गया।

मारवाड़ी समाज के भाग्यशाली पुरुषों की गणना मे सर्व-सुख-सम्पन्न होने के कारण सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार का अग्रगण्य स्थान रहा है। समृद्धि तथा नाना सुखोंके स्रोतोंने आपके लिये हर्ष का सागर तैयार

"ऑर्डर इज़ ऑर्डर"

'सीताराम पोदार बालिका विद्यालय' का उत्सव था। सेठ आनन्दी लालजी पोदार इसके सभापति थे।

"मैं क्या करूँ?" बाबू रामविलास ने पूछा।

"दरवाजे पर पहरा दो।" मैंने हँसते हुए कहा।

इसके बाद वे क्या कर रहे हैं, इस बात का ध्यान ही न रहा। अचानक भीड़ बढ़ी, दरवाजे पर कुछ हो-हल्ला हुआ; मैं द्वार की ओर बढ़ा——देखता हूँ द्वारपाल बड़ी तत्परता के साथ कर्तव्य पालन कर रहा है। नये द्वारपाल की नव–नव–उत्साहजन्य सेवा-भावना को देख कर हृदय बाँसो उछल पड़ा। किन्तु उसकी ओर देखकर संकोच हुआ। मैंने हँसते हुए कहा-

"भाई, मैंने तो मजाक मे कहा था।"

"ऑर्डर इज़ ऑर्डर।" भाई रामविलास ने एक विमुक्त हास्य से उत्तर दिया। कार्य परिमाण मे छोटा था किन्तु परिणाम अलौकिक

उत्साहवर्धक एवं आशाप्रद था। बिलास गये परन्तु उनकी स्मृति हृदय पर महत्त्वपूर्ण स्थान बना कर बैठ गई।

कार्यकर्ताओ को सच्चे कार्यकर्ता पाकर जो आनद होता है वही आनन्द मेरे मन ने, मन ही मन अनुभव किया। आशाओ की शृखला बढ ही रही थी कि अचानक सुना—

"सर्वनाश!"

हृदय बैठ गया। मोटर-अकस्मात् ने समाज के एक नव-जागृत दीपक को ही नही बुझाया, वरञ्च उसकी आशाओ को भी धूलि-धूसरित कर दिया।

सेवाओं का सूत्रपात—

कुछ व्यक्ति जन्म—जात कर्मयोगी होते है। यदि उन्हे अच्छी संरक्षता मिली तो वे अधिक जल्दी चमक उठते है। भाई रामबिलास जन्म से ही कर्मयोगी थे। अपने आदरणीय एवं उदात्तमना पिता के ससर्ग से उनकी भावनाएँ और भी खिल उठीं। विद्यार्थी जीवन से ही उन्होने अपनी हृदयसम्भूत सरल सेवा-भावना का परिचय देना प्रारम्भ किया। यद्यपि यह उनकी कार्यशक्ति की भूमिका थी तथापि थी प्राण प्रेरक और पूरक। मूल इतिहास तो अभी प्रारम्भ भी न हुआ था। हाँ, उसकी झलक जरूर दिखाई पड चुकी थी।

अकस्मात् से कुछ क्षण पूर्व—

माँ शय्याशायी थीं। कुछ घण्टे बाद ही वे अमरेन्द्र का आमत्रण स्वीकार कर इस असार-संसार और प्रिय परिजनोसे चिरबिदा ले महाप्रयाण करना चाहती थीं। गृहजन उनकी इस महायात्रा की तैयारी कर रहे थे। चारो सुपुत्रो ने श्रद्धा और भक्ति-गद्गद हो, अपने सबल-स्कन्धो को कृतार्थ करने एव सुपुत्र-सुलभ-मातृभक्ति का अन्तिम परि-

चय देने के लिए उनके प्रयाण रथ मे अपने-अपने कन्धो का स्थान निश्चित कर लिया था। किन्तु कौन जानता था कि इस वियोग-समारोह के पीछे—नेपथ्य मे—क्रूर काल अट्टहास कर रहा है? कौन जानता था कि कुछ ही काल मे भाग्यवान् पिता की सुखमय जीवनी के उपसंहार मे सर्वदा शूल की तरह कसकने वाला मर्मान्तक परिच्छेद संयुक्त होने वाला है? कौन जानता था कि आठ-कन्धो मे से दो परम सुयोग्य और कर्म-पूत कन्धे रथ का एक कोना खाली कर, माता के प्रयाण से पूर्व ही प्रयाण कर जायँगे?

सोचा, अभी जा आता हूँ। मोटर ली, वायुगति से बम्बई के लिए बढे। अगर आत्माएँ बोल सकतीं तो भाई रामविलास की आत्मा भी उनके हृदय के आन्दोलन को जिस रूप मे व्यक्त करतीं, अवश्य ही उससे जड पदार्थ भी रो पड़ते। वे इसीलिए तेजी के साथ बढे थे कि कार्य-सम्पन्न कर शीघ्र ही माँ के चरणो मे उपस्थित हो जाऊँ और अमरो को यह बतला दूँ कि मनुष्य भी अमर से कम नहीं होता। किन्तु—

'आपन चेता होत नहि'

भाई विलास इस लोकसे चले गए और ले गए उत्साही पिता का अदम्य-उत्साह और उनकी आशाएँ। हम सब उन्हे याद करके रह जाते है किन्तु अपने लाडले को, यों—सरे आम—दिन दहाड़े—अनाथो की भाँति—लुटा देखकर उनके पिता की क्या दशा होगी, यह कल्पना-तीन है। जिसने दम्पति जीवन का एक अवतरण भी पूर्ण नहीं किया था, उस सहधर्मिणी पर क्या बीत रही होगी, इसका भी हम अनुमान नहीं कर सकते। सभी का प्यारा, मुँह लगा और सबसे छोटा किन्तु महान्—सुरेन्द्र-सौध के स्वर्ण शिखर सा—बन्धु खो कर वे तीनो भाई आज किस वेदना का अनुभव कर रहे हैं, यह भी हमारे लिए अगम्य है। किन्तु

चय देने के लिए उनके प्रयाण रथ मे अपने-अपने कन्धो का स्थान निश्चित कर लिया था। किन्तु कौन जानता था कि इस वियोग-समारोह के पीछे—नेपथ्य मे—क्रूर काल अट्टहास कर रहा है? कौन जानता था कि कुछ ही काल मे भाग्यवान् पिता की सुखमय जीवनी के उपसंहार मे सर्वदा शूल की तरह कसकने वाला मर्मान्तक परिच्छेद संयुक्त होने वाला है? कौन जानता था कि आठ-कन्धो मे से दो परम सुयोग्य और कर्म-पूत कन्धे रथ का एक कोना खाली कर, माता के प्रयाण से पूर्व ही प्रयाण कर जायँगे?

सोचा, अभी जा आता हूँ। मोटर ली, वायुगति से बम्बई के लिए बढे। अगर आत्माएँ बोल सकतीं तो भाई रामविलास की आत्मा भी उनके हृदय के आन्दोलन को जिस रूप मे व्यक्त करतीं, अवश्य ही उससे जड पदार्थ भी रो पड़ते। वे इसीलिए तेजी के साथ बढे थे कि कार्य-सम्पन्न कर शीघ्र ही माँ के चरणो मे उपस्थित हो जाऊँ और अमरो को यह बतला दूँ कि मनुष्य भी अमर से कम नहीं होता। किन्तु—

'आपन चेता होत नहि'

भाई विलास इस लोकसे चले गए और ले गए उत्साही पिता का अदम्य-उत्साह और उनकी आशाएँ। हम सब उन्हे याद करके रह जाते है किन्तु अपने लाडले को, यों—सरे आम—दिन दहाड़े—अनाथो की भाँति—लुटा देखकर उनके पिता की क्या दशा होगी, यह कल्पना-तीत है। जिसने दम्पति जीवन का एक अवतरण भी पूर्ण नहीं किया था, उस सहधर्मिणी पर क्या बीत रही होगी, इसका भी हम अनुमान नहीं कर सकते। सभी का प्यारा, मुँह लगा और सबसे छोटा किन्तु महान्—सुरेन्द्र-सौध के स्वर्ण शिखर सा—बन्धु खो कर वे तीनो भाई आज किस वेदना का अनुभव कर रहे हैं, यह भी हमारे लिए अगम्य है। किन्तु

प्रायः देखा जाता है कि जो होनहार बालक होते हैं वे पूरे नहीं पड़ते। या तो उन पर पहले ही से कोई आपत्ति आ जाती है जो उन्नति में विघ्न स्वरूप हो जाती है। नहीं तो फिर भगवान् उनको अपना लेता है। अंग्रेजी मे एक कहावत है :—

Those whom Gods love die young

अर्थात्, जिनको देवता प्रेम करते हैं वे युवावस्था ही मे परलोकवासी हो जाते हैं। हमारे कुँ० साहब के साथ भी ऐसी ही घटना घटित हुई।

आपकी मृत्यु से गरीब बालको को शिक्षा प्राप्त करने मे बड़ा धक्का लगा है। और उनको जो क्षति हुई है वह पूरी होने से रही। आप कई गरीब विद्यार्थियो को अपने जेब-खर्च मे से छात्रवृत्ति दिया करते थे, जिससे उनका गुजारा चलता था और वे शिक्षा प्राप्त करते थे। आपने नवलगढ हाईस्कूल की जी जान से सेवा की है। स्कूलकी उन्नति करने मे आप अपना सर्वस्व समर्पण करने तक मे भी तनिक न हिचकते थे। जब से आपने स्कूल के मैनेजर का काम अपने हाथ मे लिया था, तब से स्कूल की दिनोदिन उन्नति हो रही थी और आशा की जाती थी कि यह स्कूल थोड़े ही समय मे एक आदर्श स्कूल बन जायगा, लेकिन भगवान् की ऐसी कोप-दृष्टि हुई कि उन्होंने इस उद्देश्य-पूर्तिमे एक बार बाधा डाल दी। परमात्मा की लीला अपार है। किसी की समझ मे नहीं आती। जैसे अंग्रेजी कहावत है कि Man proposes, God disposes, अर्थात् भगवान् जो कुछ करता है सो होता है, मनुष्यका किया कुछ नहीं होता।

मेरी उनसे दो बार मुलाकात हुई थी। उनका बात करने का ढग ऐसा सराहनीय था कि उसमे अभिमान की झलक बिलकुल न थी। वे अपने पास आये हुए मनुष्य का उचित रीतिसे सत्कार करते थे और उससे कुशल समाचार पूछते थे। वे इस बात की कभी परवाह न करते थे कि मैं एक करोड़पति का लडका होकर मामूली आदमी से क्या बात

शब्दो का अभाव हो जाता है और तब लिखने-पढने मे जी नहीं रहता। फिर भी हृदय थाम कर कुँवर साहब की पुण्य-स्मृति मे कुछ लिखे बिना भी तो नहीं रहा जाता। आप एक उच्च घराने मे पैदा हुए थे। आप कनिष्ठ पुत्र होने के कारण बड़े ही लाड़ प्यार से पाले गये थे। प्रायः देखा जाता है कि सेठ साहूकारो के लड़के अति प्रेम के कारण बिगड़ ही जाया करते हैं और उनमे कई प्रकार के अवगुणो का प्रवेश हो ही जाता है, लेकिन आप मे यह बात किञ्चित् मात्र भी न थी।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" के अनुसार आपका बाल्य-काल ही आपके उज्ज्वल भविष्य का द्योतक समझा जाने लगा था। आपने इस २३ वर्ष की छोटी अवस्था ही मे उच्च दर्जे की शिक्षा प्राप्त कर, व्यापार का सारा भार अपने ऊपर उठा लिया था और आपके काम के ढग को देखकर आशा की जाती थी कि आप प्रसिद्ध पोदार-वश को और भी समुज्ज्वल कर सकेगे। आप अपने ज्येष्ठ भ्राताओको हरेक काम मे मदद ही नहीं देते थे अपितु अपनी तीव्र-बुद्धि के प्रभाव से सबके पथ-प्रदर्शक बन गये थे। लेकिन दुःख है कि इस बाल-सूर्य को काल रूपी राहु ने थोड़े ही समय मे ग्रस लिया। आपकी अकस्मात् मृत्यु को सुन कर हरेक आदमी का हृदय दहल उठता है। जिस आदमीने आपको कभी देखा ही न था, उसके हृदय को भी इस अशुभ समाचार को सुन कर भारी वेदना हुई। नवलगढ का ऐसा कोई बिरला ही आदमी होगा, जिसने आपकी इस मृत्यु के समाचार को सुन कर शोक प्रगट न किया हो। भला जब अनदेखे हुए आदमियो की ऐसी दशा थी, तो देखे हुए आदमियों की कैसी दशा हुई होगी, इसका सहज ही मे अनुमान लगाया जा सकता है। भगवान् जाने घर वालो को इस अमूल्य रत्न को खोकर कितना दुःख हुआ होगा। मोती खोकर सीपी के पास और मणि खोकर सर्प के पास भला रह ही क्या जाता है?

शोकाश्रुबिन्दवः

(शोक-अश्रु-कण)

ननु काल ! करालतामिमां वहसे त्वं प्रभयावहां कथम् ।
मुकुलात्मतया स्थितानि यत् कुसुमानि प्रविहंसि निर्दयः ॥

भावार्थ—रे काल ! तुमने निर्दयतापूर्वक अध-खिली कलियो का नाश करनेवाली अपनी प्रकृति इतनी प्रचण्ड एव भय-प्रद क्यो बना रक्खी है ?

अयि दारुणदुर्विधे ! न्वियं कलिका रामविलासरूपिणी ।
अधुनाऽप्यविकाशमागता किमकाले हि विनाशिता त्वया ॥

भावार्थ—रे क्रूर विधि ! तुमने इस अविकसित रामविलासरूपी कली का इतना जल्दी विनाश क्यो कर दिया ?

ननु रामविलास ! किं त्वयाऽपकृतं प्राग्जननेऽस्य दुर्विधेः ।
समयेन विनाऽपि यद्यं कलिकां त्वाशु चकार धूलिसात् ॥

प्रायः देखा जाता है कि जो होनहार बालक होते हैं वे पूरे नहीं पड़ते। या तो उन पर पहले ही से कोई आपत्ति आ जाती है जो उन्नति में विघ्न स्वरूप हो जाती है। नहीं तो फिर भगवान् उनको अपना लेता है। अंग्रेजी मे एक कहावत है:—

Those whom Gods love die young

अर्थात्, जिनको देवता प्रेम करते हैं वे युवावस्था ही मे परलोकवासी हो जाते हैं। हमारे कुँ० साहब के साथ भी ऐसी ही घटना घटित हुई।

आपकी मृत्यु से गरीब बालको को शिक्षा प्राप्त करने मे बड़ा धक्का लगा है। और उनको जो क्षति हुई है वह पूरी होने से रही। आप कई गरीब विद्यार्थियो को अपने जेब-खर्च मे से छात्रवृत्ति दिया करते थे, जिससे उनका गुजारा चलता था और वे शिक्षा प्राप्त करते थे। आपने नवलगढ हाईस्कूल की जी जान से सेवा की है। स्कूलकी उन्नति करने मे आप अपना सर्वस्व समर्पण करने तक मे भी तनिक न हिचकते थे। जब से आपने स्कूल के मैनेजर का काम अपने हाथ मे लिया था, तब से स्कूल की दिनोदिन उन्नति हो रही थी और आशा की जाती थी कि यह स्कूल थोड़े ही समय मे एक आदर्श स्कूल बन जायगा, लेकिन भगवान् की ऐसी कोप-दृष्टि हुई कि उन्होंने इस उद्देश्य-पूर्तिमे एक बार बाधा डाल दी। परमात्मा की लीला अपार है। किसी की समझ मे नहीं आती। जैसे अग्रेज़ी कहावत है कि Man proposes, God disposes, अर्थात् भगवान् जो कुछ करता है सो होता है, मनुष्यका किया कुछ नहीं होता।

मेरी उनसे दो बार मुलाकात हुई थी। उनका बात करने का ढग ऐसा सराहनीय था कि उसमे अभिमान की झलक बिलकुल न थी। वे अपने पास आये हुए मनुष्य का उचित रीतिसे सत्कार करते थे और उससे कुशल समाचार पूछते थे। वे इस बात की कभी परवाह न करते थे कि मैं एक करोडपति का लडका होकर मामूली आदमी से क्या बात

प्राय: देखा जाता है कि जो होनहार बालक होते है वे पूरे नहीं पड़ते। या तो उन पर पहले ही से कोई आपत्ति आ जाती है जो उन्नति में विघ्न स्वरूप हो जाती है। नहीं तो फिर भगवान् उनको अपना लेता है। अंग्रेजी मे एक कहावत है:—

Those whom Gods love die young.

अर्थात्, जिनको देवता प्रेम करते हैं वे युवावस्था ही मे परलोकवासी हो जाते हैं। हमारे कुँ० साहव के साथ भी ऐसी ही घटना घटित हुई। आपकी मृत्यु से गरीव बालको को शिक्षा प्राप्त करने मे वड़ा धक्का लगा है। और उनको जो क्षति हुई है वह पूरी होने से रही। आप कई गरीव विद्यार्थियो को अपने जेब-खर्च मे से छात्रवृत्ति दिया करते थे, जिससे उनका गुजारा चलता था और वे शिक्षा प्राप्त करते थे। आपने नवलगढ हाईस्कूल की जी जान से सेवा की है। स्कूलकी उन्नति करने में आप अपना सर्वस्व समर्पण करने तक मे भी तनिक न हिचकते थे। जव से आपने स्कूल के मैनेजर का काम अपने हाथ मे लिया था, तव से स्कूल की दिनोदिन उन्नति हो रही थी और आशा की जाती थी कि यह स्कूल थोड़े ही समय मे एक आदर्श स्कूल बन जायगा, लेकिन भगवान् की ऐसी कोप-दृष्टि हुई कि उन्होंने इस उद्देश्य-पूर्तिमे एक बार वाधा डाल दी। परमात्मा की लीला अपार है। किसी की समझ मे नहीं आती। जैसे अंग्रेज़ी कहावत है कि Man proposes, God disposes, अर्थात् भगवान् जो कुछ करता है सो होता है, मनुष्यका किया कुछ नहीं होता।

मेरी उनसे दो वार मुलाकात हुई थी। उनका वात करने का ढंग ऐसा सराहनीय था कि उसमें अभिमान की झलक विलकुल न थी। वे अपने पास आये हुए मनुष्य का उचित रीतिसे सत्कार करते थे और उससे कुशल समाचार पूछते थे। वे इस वात की कभी परवाह न करते थे कि मै एक करोडपति का लड़का होकर मामूली आदमी से क्या वात

करूँ। प्रायः देखा जाता है कि रुपये के कारण धनिकों के लड़कों की अभिमान से आँखे नहीं खुला करती और अपने से छोटे आदमियों से वे बात तक नहीं करते। लेकिन भगवान् ने आपमे यह अपूर्व गुण भर दिया था कि आप हरेक से बात करने मे दिलचस्पी लेते थे। वे अपने यहाँ नौकरी करनेवाले नौकर को जब कभी आर्थिक-संकट से तग देखते थे तो उसी समय उसको कुछ रुपये देकर इस संकट से मुक्त करते थे। उनके हृदय मे दया का वास था।

देखा जाता है कि बहुत से लड़के जो पढने मे तेज होते है, वे खेलने मे कमजोर होते है और जो खेलने मे तेज होते है, वे पढने मे कमजोर होते है; लेकिन आपमे सोने मे सुगन्ध वाली कहावत चरितार्थ होती थी। आप पढने मे हमेशा अपनी श्रेणी के अच्छे लडको मे रहे, और कभी भी आपका परीक्षा-फल खराब न रहा। खेलो मे आप पूरी दिलचस्पी लेते थे। खास तौरसे टेनिस के तो अव्वल दर्जे के खिलाड़ी थे। जब कभी फुरसत मिलती थी, उसी वक्त समय को व्यर्थ न खोकर टेनिस खेलते थे।

आपने जिसके साथ जो उपकार किये है, उनके लिये वह चिर ऋणी रहेगा। आपका हृदय बड़ा सरल और उदार था। आपके आकर्षक और तेजस्वी व्यक्तित्व के दर्शन कर हृदय मे अनिर्वचनीय आनंद होता था।

ऐसी अकाल मृत्यु तो सभीको दुःखदायिनी होती है। फिर उनके घरवालो के दुःख का तो कहना ही क्या?

परमात्मासे प्रार्थना है कि वह आपके शोक-सन्तप्त परिवारको धैर्यपूर्वक दुःख सहन करने की शक्ति दे और आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

नवलगढ } —वंशीधर शर्मा

शोकाश्रुबिन्दवः

(शोक-अश्रु-कण)

ननु काल ! करालतामिमां वहसे त्वं प्रभयावहां कथम् ।
मुकुलात्मतया स्थितानि यत् कुसुमानि प्रविहंसि निर्दयः ॥

भावार्थ—रे काल ! तुमने निर्दयतापूर्वक अध-खिली कलियो का नाश करनेवाली अपनी प्रकृति इतनी प्रचण्ड एव भय-प्रद क्यो बना रक्खी है ?

अयि दारुणदुर्विधे ! न्वियं कलिका रामविलासरूपिणी ।
अधुनाऽप्यविकाशमागता किमकाले हि विनाशिता त्वया ॥

भावार्थ—रे क्रूर विधि ! तुमने इस अविकसित रामविलासरूपी कली का इतना जल्दी विनाश क्यो कर दिया ?

ननु रामविलास ! किं त्वयाऽपकृतं प्राग्जननेऽस्य दुर्विधेः ।
समयेन विनाऽपि यद्ययं कलिकां त्वाशु चकार धूलिसात् ॥

शोकाश्रुबिन्दवः

(शोक-अश्रु-कण)

ननु काल ! करालतामिमां वहसे त्वं प्रभयावहां कथम् ।
मुकुलात्मतया स्थितानि यत् कुसुमानि प्रविहंसि निर्दयः ॥

भावार्थ—रे काल ! तुमने निर्दयतापूर्वक अध-खिली कलियो का नाश करनेवाली अपनी प्रकृति इतनी प्रचण्ड एव भय-प्रद क्यो बना रक्खी है ?

अयि दारुणदुर्विधे ! न्वियं कलिका रामविलासरूपिणी ।
अधुनाऽप्यविकाशमागता किमकाले हि विनाशिता त्वया ॥

भावार्थ—रे क्रूर विधि ! तुमने इस अविकसित रामविलासरूपी कली का इतना जल्दी विनाश क्यो कर दिया ?

ननु रामविलास ! किं त्वयाऽपकृतं प्राग्जननेऽस्य दुर्विधेः ।
समयेन विनाऽपि यद्ययं कलिकां त्वाशु चकार धूलिसात् ॥

(पिता तथा बान्धवों पर) दया न की, तो न कर; पर तूने उस अबला पर दया क्यों नहीं की ?

ननु तां लतिकान्तु पातयन् भुवि पापं कृतवान्महद्भवान् ।
अपहृत्य तमाश्रयं तरुं यमभिव्याप्य स्थितान्वियं लता ॥

भावार्थ—तूने (हे ईश्वर) आश्रय स्वरूप उस तरु को, जिसके आधार पर यह लता खडी थी, हरते हुए और उसको जमीन पर गिराते हुए एक महान् पाप किया है।

ननु रामविलास। तावकं स्मृतिशेषं ह्यभवच्छरीरकम् ।
परमद्यापि न त्वं मृतो जगद् यावत्ते यशसाऽभिपूरितम् ॥

भावार्थ—रामविलास ! तुम्हारा शरीर जरूर स्मृति-शेष रह गया है, परन्तु जब तक यह जगत् तुम्हारे यश से पूर्ण है, तुम जीवित ही हो।

हृदयन्तु विदीर्यतेऽधुना समये भूरितिथे गतेऽपिच ।
उपयान्ति यदा स्मृतेः पथि दिवसास्तेऽतिसुखावहस्तव ॥

भावार्थ—यद्यपि बहुत समय व्यतीत हो चुका है फिर भी जब तुम्हारे सुख भरे दिनो की याद आती है—हृदय टुकडे-टुकड़े हुए विना नहीं रहता।

ननु सम्प्रति प्रार्थये ह्यहं भगवन्तं खलु चन्द्रशेखरम् ।
प्रददातु मृतात्मने शमम् धृतिमेवापि कुटुम्बिनान्तु सः ॥

भावार्थ—अन्तमे, मै ईश्वर से—भगवान् चन्द्रशेखर से प्रार्थना करना हूँ कि वह गत आत्माके लिए शान्ति तथा कुटुम्बियो के लिए धैर्य प्रदान करे।

नवलगढ } —पं० बसन्तलाल शर्मा 'साहित्याचार्य'

शब्दो का अभाव हो जाता है और तब लिखने-पढने मे जी नहीं रहता। फिर भी हृदय थाम कर कुँवर साहब की पुण्य-स्मृति मे कुछ लिखे बिना भी तो नहीं रहा जाता। आप एक उच्च घराने मे पैदा हुए थे। आप कनिष्ठ पुत्र होने के कारण बड़े ही लाड़ प्यार से पाले गये थे। प्रायः देखा जाता है कि सेठ साहूकारो के लडके अति प्रेम के कारण बिगड़ ही जाया करते है और उनमे कई प्रकार के अवगुणो का प्रवेश हो ही जाता है, लेकिन आप मे यह बात किञ्चित् मात्र भी न थी।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" के अनुसार आपका बाल्य-काल ही आपके उज्ज्वल भविष्य का द्योतक समझा जाने लगा था। आपने इस २३ वर्ष की छोटी अवस्था ही मे उच्च दर्जे की शिक्षा प्राप्त कर, व्यापार का सारा भार अपने ऊपर उठा लिया था और आपके काम के ढग को देखकर आशा की जाती थी कि आप प्रसिद्ध पोदार-वंश को और भी समुज्ज्वल कर सकेंगे। आप अपने ज्येष्ठ भ्राताओको हरेक काम मे मदद ही नहीं देते थे अपितु अपनी तीव्र-बुद्धि के प्रभाव से सबके पथ-प्रदर्शक बन गये थे। लेकिन दुःख है कि इस बाल-सूर्य को काल रूपी राहु ने थोड़े ही समय मे ग्रस लिया। आपकी अकस्मात् मृत्यु को सुन कर हरेक आदमी का हृदय दहल उठता है। जिस आदमीने आपको कभी देखा ही न था, उसके हृदय को भी इस अशुभ समाचार को सुन कर भारी वेदना हुई। नवलगढ का ऐसा कोई बिरला ही आदमी होगा, जिसने आपकी इस मृत्यु के समाचार को सुन कर शोक प्रगट न किया हो। भला जब अनदेखे हुए आदमियो की ऐसी दशा थी, तो देखे हुए आदमियो की कैसी दशा हुई होगी, इसका सहज ही मे अनुमान लगाया जा सकता है। भगवान् जाने घर वालो को इस अमूल्य रत्न को खोकर कितना दुःख हुआ होगा। मोती खोकर सीपी के पास और मणि खोकर सर्प के पास भला रह ही क्या जाता है?

प्रायः देखा जाता है कि जो होनहार बालक होते है वे पूरे नहीं पड़ते। या तो उन पर पहले ही से कोई आपत्ति आ जाती है जो उन्नति में विघ्न स्वरूप हो जाती है। नहीं तो फिर भगवान् उनको अपना लेता है। अंग्रेजी मे एक कहावत है:—

Those whom Gods love die young.

अर्थात्, जिनको देवता प्रेम करते हैं वे युवावस्था ही मे परलोकवासी हो जाते हैं। हमारे कुँ० साहब के साथ भी ऐसी ही घटना घटित हुई। आपकी मृत्यु से गरीब बालको को शिक्षा प्राप्त करने मे बड़ा धक्का लगा है। और उनको जो क्षति हुई है वह पूरी होने से रही। आप कई गरीब विद्यार्थियो को अपने जेब-खर्च मे से छात्रवृत्ति दिया करते थे, जिससे उनका गुजारा चलता था और वे शिक्षा प्राप्त करते थे। आपने नवलगढ हाईस्कूल की जी जान से सेवा की है। स्कूलकी उन्नति करने में आप अपना सर्वस्व समर्पण करने तक मे भी तनिक न हिचकते थे। जब से आपने स्कूल के मैनेजर का काम अपने हाथ मे लिया था, तब से स्कूल की दिनोदिन उन्नति हो रही थी और आशा की जाती थी कि यह स्कूल थोड़े ही समय मे एक आदर्श स्कूल बन जायगा, लेकिन भगवान् की ऐसी कोप-दृष्टि हुई कि उन्होंने इस उद्देश्य-पूर्तिमे एक बार बाधा डाल दी। परमात्मा की लीला अपार है। किसी की समझ मे नहीं आती। जैसे अंग्रेज़ी कहावत है कि Man proposes, God disposes, अर्थात् भगवान् जो कुछ करता है सो होता है, मनुष्यका किया कुछ नहीं होता।

मेरी उनसे दो बार मुलाकात हुई थी। उनका बात करने का ढंग ऐसा सराहनीय था कि उसमें अभिमान की झलक बिलकुल न थी। वे अपने पास आये हुए मनुष्य का उचित रीतिसे सत्कार करते थे और उससे कुशल समाचार पूछते थे। वे इस बात की कभी परवाह न करते थे कि मै एक करोडपति का लड़का होकर मामूली आदमी से क्या बात

ઉચ્ચ કોટીનું ભણતર B A સુધીનું સંપાદન કર્યું—પોદ્દાર એન્ડ કુંપનીનો વહીવટ સંભાળ્યો—એની અનેકવિધ જોખમદારી ઉપાડી—સ્પોર્ટમાં અગ્રસ્થાન ભોગવ્યું—આ બધુ એકી સાથે અતિશયોક્તિ ભર્યા લાગે; છતાં એ બધું મેળવ્યું હતું.

રમતના અતિ શોખીન શ્રીયુત્ રામબિલાસે...સાન્તાક્રુઝમાં એમના નિવાસસ્થાને એક અતિ-સુંદર ટેનીસ કોર્ટ બનાવ્યો હતો. . જ્યાં મને તથા અન્ય મિત્રોને દર રવિવારે અચૂક નિમંત્રણ હોયજ —

ત્યાં આવનારા મિત્રો સાથે-પોતાનેજ રમવું. એમ નહિ...આવેલાને રમાડવા, એજ ભાવના

હુ કહું "રામબિલાસજી તમે રમો" ..તો કહે..."જી...નહિ .. આપ ખેલો, હમ તો થક ગયે." તાજા છતાં અમોને રમાડવામાંજ આનંદ માને. .

રમત પછી...ખૂબ ખવડાવવાની તથા ઠંડી ઠંડાઈ પીવડાવવાની ટેવ આજ પણ સાંભરે છે..

"અરે ! આપ તો ખૂબ ખેલેહય.. કયું નહિ ખાતે ?. ક્યા તબીઅત અચ્છી નહિ...?" હું કહું "ભાઈ તારાથી તો વધુ ખાધુ. .શું, તારે ત્યાં રાંધ્યું છે તેટલુ ખાઈ જાઉ તોજ ખાધું કહેવાય ?" તો કહે "નહિ થોડાસા ઔર લો.. " આવો પ્રેમ—

ટેનીસ ટુરનામૅન્ટમાં કપ્સ મેળવ્યાં...જીવનમાં પ્રેમ અને આદર સન્માન મેળવ્યા...વેપારમાં સાખ અને કીર્તિ મેળવી...શ્રી અને સરસ્વતીનો વિરલયોગ તો હતોજ...એવા શ્રીયુત્ રામબિલાસ પોદારને મારા મિત્રભાવે——સ્નેહવંદન.

મુમ્બઈ } —સુન્દરદાસ પરશોતમ કાપડિયા.

करूँ। प्राय: देखा जाता है कि रुपये के कारण धनिको के लडकों की अभिमान से आँखे नहीं खुला करतीं और अपने से छोटे आदमियो से वे बात तक नहीं करते। लेकिन भगवान् ने आपमे यह अपूर्व गुण भर दिया था कि आप हरेक से बात करने मे दिलचस्पी लेते थे। वे अपने यहाँ नौकरी करनेवाले नौकर को जब कभी आर्थिक-संकट से तग देखते थे तो उसी समय उसको कुछ रुपये देकर इस संकट से मुक्त करते थे। उनके हृदय मे दया का वास था।

देखा जाता है कि बहुत से लड़के जो पढने मे तेज होते है, वे खेलने मे कमजोर होते है और जो खेलने मे तेज होते है, वे पढने मे कमजोर होते हे; लेकिन आपमे सोने में सुगन्ध वाली कहावत चरितार्थ होती थी। आप पढने मे हमेशा अपनी श्रेणी के अच्छे लड़को मे रहे, और कभी भी आपका परीक्षा-फल खराब न रहा। खेलों मे आप पूरी दिलचस्पी लेते थे। खास तौरसे टेनिस के तो अव्वल दर्जे के खिलाड़ी थे। जब कभी फुरसत मिलती थी, उसी वक्त समय को व्यर्थ न खोकर टेनिस खेलते थे।

आपने जिसके साथ जो उपकार किये हे, उनके लिये वह चिर ऋणी रहेगा। आपका हृदय बड़ा सरल और उदार था। आपके आकर्षक और तेजस्वी व्यक्तित्व के दर्शन कर हृदय मे अनिर्वचनीय आनंद होता था।

ऐसी अकाल मृत्यु तो सभीको दु:खदायिनी होती है। फिर उनके घरवालों के दु:ख का तो कहना ही क्या ?

परमात्मासे प्रार्थना है कि वह आपके शोक-सन्तप्त परिवारको धैर्यपूर्वक दु:ख सहन करने की शक्ति दे और आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

नवलगढ } —वंशीधर शर्मा

(पिता तथा बान्धवो पर) दया न की, तो न कर; पर तूने उस अबला पर दया क्यो नहीं की ?

ननु तां लतिकान्तु पातयन् भुवि पापं कृतवान्महद्भवान्।
अपहृत्य तमाश्रयं तरुं यमभिव्याप्य स्थितान्वियं लता ॥

भावार्थ—तूने (हे ईश्वर) आश्रय स्वरूप उस तरु को, जिसके आधार पर यह लता खड़ी थी, हरते हुए और उसको जमीन पर गिराते हुए एक महान् पाप किया है।

ननु रामविलास। तावकं स्मृतिशेषं ह्यभवच्छरीरकम् ।
परमद्यापि न त्वं मृतो जगद् यावत्ते यशसाऽभिपूरितम् ॥

भावार्थ—रामविलास ! तुम्हारा शरीर जरूर स्मृति-शेप रह गया है, परन्तु जब तक यह जगत् तुम्हारे यश से पूर्ण है, तुम जीवित ही हो।

हृदयन्तु विदीर्यतेऽधुना समये भूरितिथे गतेऽपिच ।
उपयान्ति यदा स्मृतेः पथि दिवसास्तेऽतिसुखावहस्तव ॥

भावार्थ—यद्यपि बहुत समय व्यतीत हो चुका है फिर भी जब तुम्हारे सुख भरे दिनो की याद आती है—हृदय टुकडे-टुकड़े हुए बिना नहीं रहता।

ननु सम्प्रति प्रार्थये ह्यहं भगवन्तं खलु चन्द्रशेखरम् ।
प्रददातु मृतात्मने शमम् धृतिमेवापि कुटुम्बिनान्तु सः ॥

भावार्थ—अन्तमे, मै ईश्वर से—भगवान् चन्द्रशेखर से प्रार्थना करता हूँ कि वह गत आत्माके लिए शान्ति तथा कुटुम्बियो के लिए धैर्य प्रदान करे।

नवलगढ } —पं० वसन्तलाल शर्मा 'साहित्याचार्य'

शोकाश्रुबिन्दवः

(शोक-अश्रु-कण)

ननु काल ! करालतामिमां वहसे त्वं प्रभयावहां कथम् ।
मुकुलात्मतया स्थितानि यत् कुसुमानि प्रविहंसि निर्दयः ॥

भावार्थ—रे काल ! तुमने निर्दयतापूर्वक अध-खिली कलियो का नाश करनेवाली अपनी प्रकृति इतनी प्रचण्ड एव भय-प्रद क्यो बना रक्खी है ?

अयि दारुणदुर्विधे ! त्वियं कलिका रामविलासरूपिणी ।
अधुनाऽप्यविकाशमागता किमकाले हि विनाशिता त्वया ॥

भावार्थ—रे क्रूर विधि ! तुमने इस अविकसित रामविलासरूपी कली का इतना जल्दी विनाश क्यो कर दिया ?

ननु रामविलास ! किं त्वयाऽपकृतं प्राग्जननेऽस्य दुर्विधेः ।
समयेन विनाऽपि यद्ययं कलिकां त्वाशु चकार धूलिसात् ॥

ઉચ્ચ કોટીનુ ભણતર (B A.) સૂધીનું સંપાદન કર્યું-પોદ્દાર એન્ડ કુંપનીનો વહીવટ સંભાળ્યો-એની અનેકવિધ જોખમદારી ઉપાડી-સ્પોર્ટમાં અગ્રસ્થાન ભોગવ્યું-આ બધું એકી સાથે અતિશયોક્તિ ભર્યો લાગે; છતાં એ બધું મેળવ્યું હતું.

રમતના અતિ શોખીન શ્રીયુત રામબિલાસે... સાન્તાક્રુઝમાં એમના નિવાસ-સ્થાને એક અતિ-સુંદર ટેનીસ કોર્ટ બનાવ્યો હતો... જ્યાં મને તથા અન્ય મિત્રોને દર રવિવારે અચુક નિમંત્રણ હોયજ:—

ત્યાં આવનારા મિત્રો સાથે-પોતાનેજ રમવું...એમ નહિ...આવેલાને રમાડવા, એજ ભાવના...

હુ કહું "રામબિલાસજી તમે રમો"...તો કહે..."જી...નહિ... આપ ખેલો, હમ તો થક ગયે" તાજા છતાં અમોને રમાડવામાંજ આનંદ માને...

રમત પછી...ખૂબ ખવડાવવાની તથા ઠંડી ઠંડાઈ પીવડાવવાની ટેવ આજ પણ સાંભરે છે...

"અરે! આપ તો ખૂબ ખેલે હય...કયું નહિ ખાતે?...ક્યા તબીઅત અચ્છી નહિ...?" હું કહું "ભાઈ તારાથી તો વધુ ખાધું...શું, તારે ત્યાં રાંધ્યું છે તેટલું ખાઈ જાઉં તોજ ખાધું કહેવાય?" તો કહે "નહિ થોડાસા ઔર લો .." આવો પ્રેમ—

ટેનીસ ટુરનામૅન્ટમાં કપ્સ મેળવ્યાં...જીવનમાં પ્રેમ અને આદર સન્માન મેળવ્યા...વેપારમાં સાખને કીર્તિ મેળવી...શ્રી અને સરસ્વતીનો વિરળયોગ તો હતોજ...એવા શ્રીયુત રામબિલાસ પોદ્દારને મારા મિત્રભાવે—સ્નેહવંદન.

મુમ્બઈ } —સુન્દરદાસ પરશોત્તમ કાપડીયા.

His was a delicate frame, a bundle of some sprightly virtues—now laughing, now teasing—playing child-like with the children and grave with the serious His was the rare and delicate compound of mock and seriousness, of honesty and shrewdness, of 'Shree and Saraswati' He was a sportsman of no mean order, a tennis champion He was an amiable companion, a social blessing In fine, he was both 'a figure resembling the sugary hero of a moral story-book' and 'a fellow man of flesh and blood'

He never could enjoy life properly and wholly He peeped on the stage of the world as a glowing 'meteor' simply to illuminate it for the time being Of course the morning of his life was red-shining, the afternoon golden, but alas! both the evening and the night were one in his case And really

"Thy day without a cloud hath past,
And thou wert lovely to the last,
Extinguished, not decay'd,"

I saw him last a short time ago, but never knew it was the last meeting But then in the full shining firmament of his life came a cloud, the black of the blackest, to engulf the whole brightness of

How horrible and ghastly it is to imagine! The Packard running madly running on the flooded Hornby-Vellard, and oh! striking a tree!! breaking the railing!!! and at last the angry waves swallowing that car and its pilot! a deep yet biting yell the pilot giving up his murmuring breath and all over

Though the shrine of truthfulness quit that temple of honesty, but departing kindled the invincible flame of honour, to last for ever

Thus, was 'BILAS' robbed of us all by that cruel Death—the final witness to human mutability

"Like the dew on the mountain,
Like the foam on the river,
Like the bubble on the fountain,
THOU art gone, and for ever!"

Surat } —ARUNIKA D MAJUMDAR

A LIVING EXAMPLE OF LOVE

Dear Sir,

It is my melancholy duty first of all to convey my heartfelt sympathy for the irreparable loss sustained by all those nearest and dearest for the sad and lamentable death of Rambilas Podar

His ever smiling and impressive face, his devotion towards relations and friends and his unfailing courtesy had endeared him to all, who came in contact with him

He had no enemies and he was a lovable gentleman, who bore no grudges and earned none.

He was endowed with a high conception of duty and sound common-sense judgment He was a gentleman of high principles and had a broad outlook on every question, which he used to judge with candour and admonish with friendship

He was a living example of love, sincerity, sympathy and justice, thus showing qualities of head and heart

The remembrance of his geniality and goodness will ever live in our memory

In the end we have to submit to the decrees of the All Powerful God and bear the loss with fortitude May his Soul rest in Peace.

Bombay

—P D BHIWANDIWALLA
(L M & S, D P H, L M)

A LIVING EXAMPLE OF LOVE

Dear Sir,

It is my melancholy duty first of all to convey my heart-felt sympathy for the irreparable loss sustained by all those nearest and dearest for the sad and lamentable death of Rambilas Podar

His ever smiling and impressive face, his devotion towards relations and friends and his unfailing courtesy had endeared him to all, who came in contact with him

He had no enemies and he was a lovable gentleman, who bore no grudges and earned none.

He was endowed with a high conception of duty and sound common-sense judgment He was a gentleman of high principles and had a broad outlook on every question, which he used to judge with candour and admonish with friendship

He was a living example of love, sincerity, sympathy and justice, thus showing qualities of head and heart

The remembrance of his geniality and goodness will ever live in our memory

In the end we have to submit to the decrees of the All Powerful God and bear the loss with fortitude May his Soul rest in Peace.

Bombay } —P D BHIWANDIWALLA
(L M & S, D P H, L M)

I was his senior by a few years in the college, I knew him intimately from our schooldays as well as in the college and outside His courage and cheerful temperament made him an entertaining companion and his simple sincerity—a reliable friend A warm spontaneous generosity found him always willing to champion and serve a deserving cause and ready to help and guide his friends With all this he combined a shrewd and discriminating intelligence coupled with a sense of proportion and responsibility I knew in what high and affectionate regard his friends including myself held him and what great expectations we entertained of him Among his hobbies were photography and motoring, the latter of which little did I imagine would be the unfortunate cause of his death, now mourned by so many of his friends and his family

Words are inadequate to describe the tragic sorrow caused to his family and to his newly-wed wife at this loss—the sense of sorrow and loss heightened only by the tragic and unfortunate circumstances in which he met his untimely end, nevertheless overwhelming even when shared by the wide circle of his friends and acquaintances whom I now join in extending their mute sympathy to his family and his wife in their irreparable loss in which they may find a little comfort for them to know that they are not alone You will please convey my sincerest sympathy and condolence to his grieved family, and particularly his wife, in their bereavement

Cambridge —MADANLAL PITTIE.
(B A)

AS I KNEW HIM

Dear Mr Jain,

I am sorry beyond words to learn of the tragic and untimely death of Ram Bilas, a very dear friend of mine, in a motor accident in Bombay It came as a great shock to me when I first learnt the sad news from my mother in a touching letter a few days before I received yours Not only do I feel deeply the loss of a personal friend, but I feel also that the whole Marwadi Community of Bombay has sustained a loss and has been deprived by his death of a life so young and full of promise His breadth of vision, outlook and wide human sympathies, his varied interests and affable manner not only endeared him to his friends, but held out promise of a bright and useful future so that he could in time to come take his legitimate and an honoured place in society and give his community an enlightened lead He had an affectionate nature and with his qualities of head and heart, had succeeded in gathering round him a wide circle of friends in his school and college career In college, he was very popular with his friends and fellow students as well as his teachers, in all his activities, whether in the classroom or in the playground and social life of the College He took a keen interest in sports, tennis and cricket being his main interests and I believe he showed a great enthusiasm and ability for tennis Though

I was his senior by a few years in the college, I knew him intimately from our schooldays as well as in the college and outside His courage and cheerful temperament made him an entertaining companion and his simple sincerity—a reliable friend A warm spontaneous generosity found him always willing to champion and serve a deserving cause and ready to help and guide his friends With all this he combined a shrewd and discriminating intelligence coupled with a sense of proportion and responsibility I knew in what high and affectionate regard his friends including myself held him and what great expectations we entertained of him Among his hobbies were photography and motoring, the latter of which little did I imagine would be the unfortunate cause of his death, now mourned by so many of his friends and his family

Words are inadequate to describe the tragic sorrow caused to his family and to his newly-wed wife at this loss—the sense of sorrow and loss heightened only by the tragic and unfortunate circumstances in which he met his untimely end, nevertheless overwhelming even when shared by the wide circle of his friends and acquaintances whom I now join in extending their mute sympathy to his family and his wife in their irreparable loss in which they may find a little comfort for them to know that they are not alone You will please convey my sincerest sympathy and condolence to his grieved family, and particularly his wife, in their bereavement

Cambridge —MADANLAL PITTIE.
(B A)

gentlemanliness of behaviour, which in the long run would have marked him out as one of Bombay's most pleasing business-men He never failed to keep an appointment. I have the pleasantest recollections of the meticulous care with which he carried out his promise to meet me at Calcutta although he had little time at his disposal And in addition to his high sense of the value of time, he invariably displayed sincere courtesy towards all with whom he came in contact The Gods were, however, jealous and they did not vouchsafe to him years enough for exploiting his sterling qualities in the service of his countrymen

'Whom the Gods love die young' But it is left to few to die doing one's duty The manner of Rambilas' death was however in consonance with the manner of his life. And amidst the extremely poignant feelings that were aroused at his tragic death, there was an element of consolation in the knowledge that he died while on a last mission of service to his dear mother

Bombay } *—H B Divanji, M A*

love and sympathy—all these hinted the latent traits of his character The boy grew and grew, grasped the three R's, and passing through the ordeal of the Matriculation Examination in 1930, determined to proceed to England for the prosecution of his further studies with an implied intention of sitting for the I C S But unavoidable circumstances of his family defeated his ambition and he was forced reluctantly to join the St Xavier's College of Bombay By that time he had won the "Good Conduct Gold Medal" from the Marwadi Vidyalaya After his graduation in 1934, he joined the M A Classes in History with a patriotic ambition of enriching the history of his own Agrawal community during his research studies In the meantime, he was also regularly attending the Law Classes to qualify himself for LL B But his practical penetrating ability to make crystal-clear any tangled problem and his unusual love of business necessitated his constant presence in the ever expanding business of the firm of Messrs Anandilal Podar & Co, of which he, having attained majority, was an active partner, and so he was forced to postpone his studies for the time being

During his chequered business career, he showed himself as the star of the highest magnitude He instilled life and energy into the business itself by co-operating and sympathising with his subordinates Nobility of soul is not a question of genius or glory or love, its real secret is kindness Rambilasji seemed to be in the knowledge of this secret, which he translated into practice He expanded the business of his firm to a wonderful extent Export business increased, brisk transactions were favourably done with leading firms of Bombay, Bullion and Share Departments were opened and thus he stabilised the firm on a strong and unshaking footing Side by side with the enlargement of these businesses at home, Rambilasji was equally responsible for the enhancement of the international credit of his firm Within the short time during which the onus of business fell upon his slender shoulders, the firm of Messrs Anandilal Podar & Co was enrolled as a member of the New York Cotton Exchange, New York, the Liverpool Cotton Association, Liverpool and the Incorporated Oil Seeds Association, London Though a young man of twenty, he was the moving spirit of the increasing responsibility of the firm It was he who worked day in and day out with untiring energy and enthusiasm to bring the standard of the firm to the level of an enterprising European concern

Thus in education, in business and in sports, his brain power never allowed anything to swerve from success to glory The fertilizing stream of steady efforts facilitated Rambilasji to meet with success in every walk of life He was kind and sympathetic not only to his kinsmen and people of his own community but even to his subordinates and fellow-beings "*Work I must for the public benefit*"—seemed to have been the motto of this brave son of our Motherland His whole and sole aim from the time he began to breathe life to the moment he was snatched away by the cruel hand of death, was to create unity in diversity The laudable and inspiring qualities of head and heart, the institutions founded under his patronage which stand as living monuments of his identity with the poor and down-trodden, his frail heart which melted at the sight of the sick and suffering—all these are but a few worthy of emulation by our brethren engrossed in the hobby of money-making

Young, handsome, brave, a man of culture, a restless worker, a lover of dignity, Rambilasji was, while thriving in his prime of youth, the angel of sudden death in the form of motor accident, snatched and embraced his filial soul in the calm solitude under the waters of the ocean below and the man-made medicines of the East and the West failed to restore him to life which we loved best His mortal remains though invisible, the image looms large before me May his soul rest in peace!

"His life is gentle,
And the elements so mixed in him
That Nature might stand up
And say to all the world
That this is a man"

Calcutta } —*Nand Kishor Jhajhadia.*

MY IMPRESSIONS OF RAMBILAS

I have been asked to send in my impressions about Rambilas and I gladly accede to the request This for two reasons—In the first place these have been of the happiest and secondly I consider it a pleasure to pay my tribute to the memory of that promising young man

I have the privilege of knowing Seth Anandilal and his family for over a decade and accordingly I came in contact with Rambilas In addition to this introduction, I used to hear much about him from my youngest brother—Mr Dilkhush—who was his tutor for some time And latterly during the past few months, I had further opportunities to know Rambilas intimately as we were drawn together in business relations

I have no hesitation in saying that I had the highest opinion about Rambilas' character Being a son of Seth Anandilal he was bound to be a young man of very wide sympathies I had also expected that he would develop business acumen of a high degree, that being the distinguishing trait of members of his community These virtues, great as they were, would not have, however, appealed to me if I had also not known the other salient features of his character What pleased me most was that he had developed a certain

MY MODEST CONTRIBUTION

Dear Sir,

I had known Mr Rambilas both in business and to a somewhat lesser extent in private life The friendship which I felt for his father and other brothers was ripening and maturing through my contacts with Mr Rambilas both in the office and on the sporting field Europeans and Americans are seldom afforded the opportunity and the privilege of really closely understanding and contacting the real Indian life and customs My contacts with, and my friendship for Mr Rambilas gave me such a rare privilege and I must record my gratitude at his having afforded me such an opportunity

That he was a business-man of rising importance in Bombay is well-known, that he was a sportsman in the true sense of the word I can gladly attest to, through personal experience That he was a faithful, devoted and loving son and brother could easily be seen and the tragic circumstances of his death while performing an act of duty and filial compassion, graphically depict these facts Those of his friends and relatives who have not the consolation which the belief in Reincarnation and the Law of Karma affords, can only sorrowfully mourn and eventually the magic of passing time will alone heal the wounds Those of us who are fortunate enough to see clearly the logic, the justice and the reasonableness of this ancient Hindu conception, while missing the temporary departure of a relative or a friend, know that those with whom there has been forged close ties of blood and friendship, must in the future inevitably work out together once more those close bonds of love and affection This conviction does not heal the heart with the scar of forgetfulness, but soothingly consoles with the balm of true knowledge and understanding of Nature's Laws In such a way am I, for one, consoled by the passing of my friend Mr Rambilas That we will meet again I consider inevitable but let us hope that, when we again may have to part, that leave-taking will not be under such tragic circumstances

Bombay

—*Wm D TenBroeck.*

gentlemanliness of behaviour, which in the long run would have marked him out as one of Bombay's most pleasing businessmen He never failed to keep an appointment. I have the pleasantest recollections of the meticulous care with which he carried out his promise to meet me at Calcutta although he had little time at his disposal And in addition to his high sense of the value of time, he invariably displayed sincere courtesy towards all with whom he came in contact The Gods were, however, jealous and they did not vouchsafe to him years enough for exploiting his sterling qualities in the service of his countrymen

'Whom the Gods love die young' But it is left to few to die doing one's duty The manner of Rambilas' death was however in consonance with the manner of his life. And amidst the extremely poignant feelings that were aroused at his tragic death, there was an element of consolation in the knowledge that he died while on a last mission of service to his dear mother

Bombay } —*H B Divanji, M A*

A SAD BLOW

Dear Sir,

I have only just received your letter of August 26th with regard to the unfortunate death of my friend Mr Rambilas Podar The news came to me as an unexpected shock, because when I was last in Bombay, Mr Rambilas was so well and hearty that I was confident that our friendly relationship would continue to exist for many years

Although I only had the pleasure of meeting Mr Rambilas twice on my very infrequent visits to India, I enjoyed his co-operation in business endeavours and his companionship on the sporting fields His accidental death comes to me as a sad blow as it must have come to all his relatives and friends That it occurred when he was performing a deed of mercy and of service will bear witness to the high and noble character of Mr Rambilas

New York } —*Paul E Monath*

THE LATE RAMBILASJI PODAR

Of no other man can it be asserted with greater truth than the late Kunwar Rambilasji Podar that child is the father of the man His sportsmanlike joviality and his sincere simplicity coupled with his extraordinary business acumen and untiring industry, assiduity and ability are some of the chief traits of his varied character No sooner did I hear on the night of the 6th July last the tragic news—the sullen circumstances under which he numbered his last moments—than was I reminiscent of his presence in the Mohan Bagan Athletic Club of Calcutta, where I, for the first time, not only came in contact with him, but also was able to perceive and admire the varied and sublime qualities of his head and heart True ! the Shakspearean dictum—'*Have more than thou showest, speak less than thou knowest*'—will not be an exaggeration to express the dominating and striking characteristics of this grand personality

Kunwar Rambilasji saw the light of day on the 3rd September 1913 in the highly respected family of Shriman Seth Anandilalji Podar, the well-known cotton magnate of Bombay Even when he was in his cradle, he showed signs of sincere love and sympathy to his parents, his three brothers and his only sister Add to this a peculiar businesslike caution, a capacity far above the common for receiving and retaining impressions, and further an almost painful craving for

AN HUMBLE APPRECIATION

During my rambles round the world in the past eleven years I have made many friends, and Rambilasji Podar was one of those few intimate friends whose affection had ripened into brotherly interest His unassuming frank talks and his personal magnetism had made an indelible impression upon my mind It was in June 1934 when I was on my way to America that I first met him I had gone to his father's palatial residence at Santa Cruz to pay my respects to Seth Sahib Clad in snow-white shirt and dhoti he was sitting in the porch Of course we were not known and introductions followed A hearty handshake spoke volumes of welcome I was announced and I met Seth Sahib and his eldest son, Kunwar Ram Deoji who, for the time being, took charge of me

An educated and cultured gentleman was Rambilasji He took me round the Santa Cruz High School which is the outcome of his father's philanthropy He had ambitions and ideals about this institution, and his enthusiasm had imbued others with the same He was keen on the physical culture and showed me the new game of Ju-Jutsu which he had recently introduced We came out of this building and he drove me to another building in the vicinity—a temple also built by his father His devotion to God, his broadmindedness and tolerance for other

love and sympathy—all these hinted the latent traits of his character The boy grew and grew, grasped the three R's, and passing through the ordeal of the Matriculation Examination in 1930, determined to proceed to England for the prosecution of his further studies with an implied intention of sitting for the I C S But unavoidable circumstances of his family defeated his ambition and he was forced reluctantly to join the St Xavier's College of Bombay By that time he had won the "Good Conduct Gold Medal" from the Marwadi Vidyalaya After his graduation in 1934, he joined the M A Classes in History with a patriotic ambition of enriching the history of his own Agrawal community during his research studies In the meantime, he was also regularly attending the Law Classes to qualify himself for LL B But his practical penetrating ability to make crystal-clear any tangled problem and his unusual love of business necessitated his constant presence in the ever expanding business of the firm of Messrs Anandilal Podar & Co, of which he, having attained majority, was an active partner, and so he was forced to postpone his studies for the time being

During his chequered business career, he showed himself as the star of the highest magnitude He instilled life and energy into the business itself by co-operating and sympathising with his subordinates Nobility of soul is not a question of genius or glory or love, its real secret is kindness Rambilasji seemed to be in the knowledge of this secret, which he translated into practice He expanded the business of his firm to a wonderful extent Export business increased, brisk transactions were favourably done with leading firms of Bombay, Bullion and Share Departments were opened and thus he stabilised the firm on a strong and unshaking footing Side by side with the enlargement of these businesses at home, Rambilasji was equally responsible for the enhancement of the international credit of his firm Within the short time during which the onus of business fell upon his slender shoulders, the firm of Messrs Anandilal Podar & Co was enrolled as a member of the New York Cotton Exchange, New York, the Liverpool Cotton Association, Liverpool and the Incorporated Oil Seeds Association, London Though a young man of twenty, he was the moving spirit of the increasing responsibility of the firm It was he who worked day in and day out with untiring energy and enthusiasm to bring the standard of the firm to the level of an enterprising European concern

One thing we had in common—and that was to popularise Indian merchandises abroad He, with his limitless resources, was always ready to lend his helping hand as he knew that, at the time when the nation is passing through rebirth and renaissance, such good-will that we create abroad for the motherland cannot be lightly ignored He was a great believer in foreign propaganda as he was a full-fledged modern merchant prince

My time to go abroad had come again and I was looking forward to the pleasure of passing a few days in his company, but it so happened that I had to leave at a very short notice Receiving instructions from my Paris office to reach there immediately I was put in a fix to get the passage I could not think of any thing else except to wire Rambilasji to arrange a passage for me by the first boat that was leaving Bombay I was surprised to see a telegram next morning stating that a berth has been booked and in order to catch the boat I must leave immediately Here was the self-same true Man revealing himself Leaving aside his heavy work, he got busy in securing me a passage Those who are engaged in heavy commercial work can only appreciate what that meant to me He was a man whose motto may justly be said to be '*Service and Sacrifice*'

Ajmer }

—*M Mathur*.

"TO DEAR RAMBILAS IN HEAVEN"

"Those whom Gods love die young"—these well-known words ring through my ears whenever I think of that beloved life cut off in its prime In the course of my duties and peregrinations, it has been my lot to see and make friends with a number of youths of all castes and creeds, but I cannot recollect of any one whom I have known and who has so much impressed me because of his splendid personality, keen intellect, sportsmanlike qualities, warm heart and engaging manners as Rambilas Podar I cherished my friendship with him as perhaps I have not cherished any other privilege, and though he was not of my kith and kin, he was more dear to me than those united to me by the closest ties of relationship Here was an ideal combination of high ancestry and noble lineage with great wealth and equally great culture No one could be with Rambilas for a few minutes without feeling the magnetism of that high-souled youth While others are intoxicated by high position and great riches, he, on the contrary, was humble in the presence of all these things He flung away money right and left in the cause of education, but whatever he gave in charity he gave away in secret. His left hand knew not what the right hand gave He was God's good man, spared to the world for a few brief years to render it sweet and glorious with his presence—and then he was suddenly snatched away His sudden tragic death has cast a pall of gloom upon those he left behind, and there are those whom nothing will gladden, now that Rambilas is no more

God gives us glimpses of such great souls to fortify our heart and strengthen our faith The brief glimpse I had of Rambilas' earthly existence will be a beacon-light to me in my life's journey, and in every prayer of mine I shall remember him and his unspoken message to those who loved him May God give strength to the dear parents and widow of Rambilas and bestow peace upon the soul of the departed one!

Om! Shanti! Shanti! Shanti!

Lahore }　　　　　　　　—*M A Wadhwani*.

THE MAN

It is a distinct honour and a great privilege to be counted among the close friends of late Seth Rambilasji, whose accidental and untimely death at an early age of 23 only, snatched away from his friends and dear ones, a precious gem, a great personality and a future leader, whose brilliant career and great achievements would have inspired the youth of our country to attain equally high positions I am writing a few lines as I knew him

"Men live after their death, they live not only in their writings or their chronicled history but still more in that unwritten memorial exhibited in school of pupils who trace their moral parentage to them"

Seth Rambilas loved his fellowmen, was forgetful of self in his anxiety to serve others, was filled with enthusiasm for high ideals of character and work, scorned the second best in all his strivings and was blessed with a rare sense of humour and with a genius for friendship

Usually a man in character is a composite of qualities—some good and some bad, received through inheritance and modified through circumstances and his own conscious efforts, his chance for effective life depends on the resultant of these

THE MAN

It is a distinct honour and a great privilege to be counted among the close friends of late Seth Rambilasji, whose accidental and untimely death at an early age of 23 only, snatched away from his friends and dear ones, a precious gem, a great personality and a future leader, whose brilliant career and great achievements would have inspired the youth of our country to attain equally high positions I am writing a few lines as I knew him

"Men live after their death, they live not only in their writings or their chronicled history but still more in that unwritten memorial exhibited in school of pupils who trace their moral parentage to them"

Seth Rambilas loved his fellowmen, was forgetful of self in his anxiety to serve others, was filled with enthusiasm for high ideals of character and work, scorned the second best in all his strivings and was blessed with a rare sense of humour and with a genius for friendship

Usually a man in character is a composite of qualities—some good and some bad, received through inheritance and modified through circumstances and his own conscious efforts, his chance for effective life depends on the resultant of these

HOW VERY LIKE OF YOU!

Dear Mr Jain,

It was in the year 1925 that I first met Mr Rambilasji, while I was a science teacher in the Marwadi Vidyalaya High School, Bombay Mr Ramnathji was my student and through him I came in contact with Mr Rambilasji I also had the honour of having a group-photo with him, which I have always preserved with a pride He was then a boy of twelve, attractive with an ever smiling face. I always looked upon him as a man with a future My personal circumstances forced me to leave Bombay and when I returned after a long period of ten years, I was engaged in a position of great trust and confidence As I worked directly and immediately under him, it afforded me a great chance to see the inner man

The acid test that I always apply to estimate the worth of a person is his attitude towards his fellow beings, because the result of this only follows the man A person with a potentiality to do either good or evil, may inspire awe in the minds of his less fortunate brethren or subordinates but can never create love. Some months back when Mr Rambilasji was convalescent after a brief attack of Influenza, I had the first opportunity of looking into his private letterheads At the base-curve of the monogram was inscribed " Love is God ; "

qualities But sometimes the Ruler of human destinies nods and a specification goes through with all good or all bad qualities left out, then a criminal or a saint comes to the earth for its bane or blessings It is certainly true that selfishness, which includes almost all that is bad, was left out of the nature of late Seth Rambilasji

He was peculiarly sensitive to kindly praise and his emotions were easily stirred His eyes would fill and his voice would break when someone spoke appreciatively of his kindly nature, straightforwardness in business, feelings for the needy and poor, and general accomplishments

Since only a short account of his life is needed to be published in a book prepared by his friends and admirers, I am expressing myself in a short poem to make the life-sketch brief and to give a little more space to the expressions of his other friends

SETH RAMBILAS PODAR

"A man of simple life and gentle ways,
Who spent himself in service all his days,
He had a tender heart for human ill,
But met injustice with steadfast will
He ever loved clean, mirthful tales, his face
And genial presence brightened any place
He was a seer, truths were clear to him
That groping saints sought with vision dim
The works of God and Godlike men he held
Precious for worth and beauty, he rebelled
Against war with its wanton waste and pain
He scorned the calls of wealth and worldly gain,
And ordering his life towards higher ends,
He heaped his treasures in the heart of friends"

Bombay

—Meharchand Riyat,
BSME, BSEE, Purdue (U S A)
A.M ASME, A M A I E E,
M A A E M I Fuel (Lond.)

HOW VERY LIKE OF YOU !

Dear Mr Jain,

It was in the year 1925 that I first met Mr Rambilasji, while I was a science teacher in the Marwadi Vidyalaya High School, Bombay Mr Ramnathji was my student and through him I came in contact with Mr Rambilasji I also had the honour of having a group-photo with him, which I have always preserved with a pride He was then a boy of twelve, attractive with an ever smiling face. I always looked upon him as a man with a future My personal circumstances forced me to leave Bombay and when I returned after a long period of ten years, I was engaged in a position of great trust and confidence As I worked directly and immediately under him, it afforded me a great chance to see the inner man

The acid test that I always apply to estimate the worth of a person is his attitude towards his fellow beings, because the result of this only follows the man A person with a potentiality to do either good or evil, may inspire awe in the minds of his less fortunate brethren or subordinates but can never create love. Some months back when Mr Rambilasji was convalescent after a brief attack of Influenza, I had the first opportunity of looking into his private letterheads At the base-curve of the monogram was inscribed " Love is God ; "

"उपालम्भ"

हा! कॉपती है लेखनी लिखते हृदय की व्यथा को।
अवरुद्ध होता कंठ, वाणी व्यथित, कहते कथा को॥

\+ \+ \+

दुर्दैव! क्या यह सत्य है "तुम हृदय-शून्य, कठोर हो?
निर्दय, निरंकुश, निरे, स्वारथरत, प्रपंच-प्रपूर्ण हो?"

मिल गया, असमय वुझा दीपक तुम्हें आह्लाद क्या?
अधखिली कलिका कुचल कर पा गये हो शौर्य क्या?

क्या तुम्हें प्रिय है जगत मे अंधकार वना रहे?
विकसित न हों कलियॉ प्रकृति थल गंध शून्य वना रहे?

हा! हाथ मलते रह गये, अलिगण विचारे देखते।
हैं फट गये उनके हृदय इस पवि-पतन को पेखते॥

भग्न प्रकृति-स्थल हुआ, होगी वहार न अव कभी।
मुरझा गई लतिका न अव वह सरस होगी फिर कभी॥

नष्ट रंग-स्थल हुआ, अभिनय न होगा अव कभी।
भीषण यवनिका पतन ऐसा अव न होगा फिर कभी॥

अनुपम सुधा जलधार से सिंचित किया जिसने कहो।
आशा-लता उसकी विधे! होगी वड़ी कितनी कहो?

निश्चय उसे विश्वास था यह खिल उठेगी शीघ्र ही।
होगा सुवासित यह चमन आनन्द होगा शीघ्र ही॥

पर हा! न वह अव है यहॉ, सुख—शोक-सागर वन गया।
पत्थर हृदय कर, हाथ "मालाकार" मलते रह गया॥

—'साहित्यरत्न' पं० लक्ष्मणप्रसाद शर्मा

" बिलास "

हम अपने निकट मित्रो के इतने निकट होते हैं, हमारे जीवनमे उनका स्थान इतना घुलामिला रहता है, हमारी विश्लेषण-बुद्धि पर स्नेहका एक ऐसा पर्दासा पडा रहता है कि हम उनके महान् से महान् गुणोकी, उनके असाधारण से असाधारण कृत्यों की महत्ता को वास्तविक स्वरूप मे प्राय: देख नहीं पाते। यह बात नहीं कि हम अपने घनिष्ट मित्रको पहचानते नहीं, उसकी आत्माकी आदर्श उड़ानोसे प्रभावित नहीं होते, या उसकी विशेषताओकी कभी-कभी मन ही मन एक क्षणके लिए प्रशसा नहीं कर जाते। यो तो कदाचित् यह भी कह सकना बहुत कठिन होगा कि हमारे मित्र-प्रेममें उसके गुणोंका प्रेम कितना और उसका जातीय प्रेम कितना है। पर इसमे सन्देह नहीं कि उससे वियोग हो जाने के बाद, खास कर यदि वह वियोग अकस्मात् और सदाके लिए हो गया हो, तो—उस वियोगकी मार्मिक पीडासे

and I felt instinctively at once that no other man had chosen a truer motto for himself and acted up to it It was the exact reflex of the inner man I was about to exclaim "How very like of you!" but refrained lest I should be taken for a flatterer With a true broad mind, he always overlooked the innumerable little frailties in his subordinates on which account they almost idolised him The love he bore towards his fellow beings was immense Once there was a party given to the staff of his office, in his bungalow Every one was in gay mood but he was in a disturbed state and there was a shade of gravity in his face I was aware of the reason for this attitude A tenant of his, in the neighbouring chawl, was very seriously ill and all his mind was with the poor sick man During the course of two hours he sent me twice to bring news about his condition

I have a precocious child of six, and she one day questioned me, "Father, every one says that Sethji's son was a very good man My brother also was very good Why is it that God always makes good people die so young?" I simply turned aside and wiped out a drop of tear With loss of Mr Rambilasji, Seth Anandilalji with all his reputed millions is like a scabbard without a sword

Bombay }

—*C N Raghavendra Rao.*
(B A LL B)

कौन ऐसा मारवाड़ी युवक हृदय होगा जो उस चित्रके प्रति स्नेह और श्रद्धा से नत मस्तक न हो जायगा? कितने ऐसे भारतीय युवक है जो अपने अन्दर इन गुणोकी उपस्थितिका सच्चा अनुभव कर सकते है?

स्व० रामविलासका जन्म ३ सितम्बर सन् १९१३ (मिती—भाद्रपद शुक्ला २, संवत् १९७०) को बम्बई मे हुआ था। वह महासमर का जमाना था। व्यापारमे ही क्या, जीवनके सभी क्षेत्रोंमे उस समय एक उथल-पुथल मची हुई थी। उनके कर्मिष्ट पिता श्री० सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार वीरतापूर्वक आर्थिक सग्राममे जुटे हुए थे। अपनी लगन और तत्परतासे कुछ ही काल पश्चात् वे व्यापार-क्षेत्र मे असाधारण सफलता के मार्ग मे अग्रसर हुए। भाग्यके सकेतोंपर विश्वास रखनेवाले व्यक्तिओका कहना है कि इस प्रतिष्ठित पोद्दार कुटुम्बमे बालक "विलास" और ऊर्ध्वगामिनी समृद्धि, दोनों के पदार्पण साथ ही साथ हुए। श्रीमान् आनन्दीलालजी पोद्दार के चार पुत्रोमे रामविलास सबसे छोटे और किन्हीं बातोमे सबसे निराले थे। विद्याध्ययनका प्रेम रामविलासमे बहुत सबल था। आरम्भिक शिक्षा घरमे ही प्राप्त करा कर रामविलासका बम्बई के मारवाडी विद्यालयमे प्रवेश कराया गया। पढनेमे वे काफी तेज थे। अग्रेजी भाषाके अध्ययनमे उन्हे विशेष रुचि थी। फलत: अग्रेजीमे वे बराबर अपने दर्जे मे अव्वल आते रहे। यही नहीं बल्कि मैट्रिककी परीक्षामे मारवाड़ी विद्यालयके छात्रोमे सर्व प्रथम उत्तीर्ण हुए थे। सदाचरण के लिए भी उन्हे विद्यालयकी ओरसे एक 'स्वर्णपदक' प्रदान किया गया था। उनकी तीक्ष्ण बुद्धिका लोहा उनकी कक्षा के सभी लड़के मानते थे। लेखक, मारवाडी विद्यालयमें रामविलासका कई वर्ष सहपाठी रहा। उस स्वच्छन्द और मस्ताने जमाने की छोटी-छोटी बाते मेरे स्मृतिपटल पर अमिट रेखाओसे अंकित है। विलास (मैं सदा उन्हें "विलास" या "विलास भाया" के

" उपालम्भ "

हा! कॉपती है लेखनी लिखते हृदय की व्यथा को।
अवरुद्ध होता कंठ, वाणी व्यथित, कहते कथा को॥

\+ + +

दुर्दैव! क्या यह सत्य है "तुम हृदय-शून्य, कठोर हो?
निर्दय, निरंकुश, निरे, स्वारथरत, प्रपंच-प्रपूर्ण हो?"

मिल गया, असमय वुझा दीपक तुम्हें आह्लाद क्या?
अधखिली कलिका कुचल कर पा गये हो शौर्य क्या?

क्या तुम्हें प्रिय है जगत मे अंधकार वना रहे?
विकसित न हों कलियॉ प्रकृति थल गंध शून्य वना रहे?

हा! हाथ मलते रह गये, अलिगण विचारे देखते।
हैं फट गये उनके हृदय इस पवि-पतन को पेखते॥

भग्न प्रकृति-स्थल हुआ, होगी वहार न अव कभी।
मुरझा गई लतिका न अव वह सरस होगी फिर कभी॥

नष्ट रंग-स्थल हुआ, अभिनय न होगा अव कभी।
भीषण यवनिका पतन ऐसा अव न होगा फिर कभी॥

अनुपम सुधा जलधार से सिंचित किया जिसने कहो।
आशा-लता उसकी विधे! होगी वड़ी कितनी कहो?

निश्चय उसे विश्वास था यह खिल उठेगी शीघ्र ही।
होगा सुवासित यह चमन आनन्द होगा शीघ्र ही॥

पर हा! न वह अव है यहॉ, सुख—शोक-सागर वन गया।
पत्थर हृदय कर, हाथ "मालाकार" मलते रह गया॥

—'साहित्यरत्न' पं० लक्ष्मणप्रसाद शर्मा

हार्दिक खेद था। उनके पिता का व्यापार विभिन्न शाखाओंमे इतना व्यापक और विशाल हो गया था कि युवक रामविलासके बुद्धिशाली सहयोगके विना काममे हानि हो रही थी। पिता और बड़े भाईकी इच्छाएँ रामविलास के लिए आज्ञाओ के समान थीं। अन्ततोगत्वा उन्होने अधिक विद्योपार्जन का विचार छोड़ दिया।

स्कूल और कॉलेजके अध्ययन-कालसे कई बार विवाह के प्रस्ताव, पहले मृदु संकेतोके रूपमे और पीछे अधिक स्पष्ट और जोरदार सिफारिशो-की शक्लमे, रामविलासके समक्ष उपस्थित हुए। परन्तु जीवनके इस महत्वपूर्ण प्रश्नपर रामविलासके विचार दृढ और अटल थे। इस बातमे वे अपने निश्चयको यथा शक्ति न डिगाना चाहते थे। साथ ही माता-पिताका दिल भी न दुखाना चाहते थे। युवक रामविलासके हृदयमे केवल बाल-विवाहकी कुप्रथाका विरोध ही न था बल्कि उनका यह निश्चित मत था कि यथेष्ट विद्योपार्जन कर अपने पैरो पर खड़े होनेकी कुछ योग्यता संचित किये विना विवाहका उत्तरदायित्व अगीकार करना अनधिकार चेष्टा है।

उनका विवाह उन्नीस वर्षकी अवस्थामे कलकत्ते के प्रसिद्ध राज-गढ़िया कुटुम्बकी सुशीला लड़की ज्ञानवतीके साथ हुआ। इस विवाह मे प्रायः सभी प्रचलित कुरीतियाँ तोड़ दी गई थीं। लग्न-सम्बन्धके पहले वे अपनी जीवन-सगिनीके शील, स्वभाव, व्यवहारका कुछ ज्ञान कर लेना कर्तव्य समझते थे। इस विषयमे सन्तोष हो जाने पर ही उन्होने सयुक्त-जीवनके मार्ग मे पदार्पण किया था। मानव-जीवन कितना अनिश्चित और क्षणभगुर है! अभी तो विवाहके मंगल-गीतोकी प्रति-ध्वनियाँ भी बन्द न हुई होगी कि वर-वधूका यह हृदय-विदारक वियोग हो गया। कहा जाता है कि जिनको मनुष्य चाहते हैं देवताओको भी उन्हींकी चाह होती है। यदि वास्तवमें कोई देवलोक है तो

सहपाठियों की ओरसे—

हार्दिक खेद था। उनके पिता का व्यापार विभिन्न शाखाओंमे इतना व्यापक और विशाल हो गया था कि युवक रामविलासके बुद्धिशाली सहयोगके बिना काममे हानि हो रही थी। पिता और बड़े भाईकी इच्छाएँ रामविलास के लिए आज्ञाओ के समान थीं। अन्ततोगत्वा उन्होने अधिक विद्योपार्जन का विचार छोड दिया।

स्कूल और कॉलेजके अध्ययन-कालसे कई बार विवाह के प्रस्ताव, पहले मृदु सकेतोके रूपमे और पीछे अधिक स्पष्ट और जोरदार सिफारिशो-की शक्लमें, रामविलासके समक्ष उपस्थित हुए। परन्तु जीवनके इस महत्वपूर्ण प्रश्नपर रामविलासके विचार दृढ और अटल थे। इस बातमे वे अपने निश्चयको यथा शक्ति न डिगाना चाहते थे। साथ ही माता-पिताका दिल भी न दुखाना चाहते थे। युवक रामविलासके हृदयमे केवल बाल-विवाहकी कुप्रथाका विरोध ही न था बल्कि उनका यह निश्चित मत था कि यथेष्ट विद्योपार्जन कर अपने पैरो पर खड़े होनेकी कुछ योग्यता सचित किये बिना विवाहका उत्तरदायित्व अगीकार करना अनधिकार चेष्टा है।

उनका विवाह उन्नीस वर्षकी अवस्थामे कलकत्ते के प्रसिद्ध राज-गढिया कुटुम्बकी सुशीला लड़की ज्ञानवतीके साथ हुआ। इस विवाह मे प्रायः सभी प्रचलित कुरीतियाँ तोड दी गई थीं। लग्न-सम्बन्धके पहले वे अपनी जीवन-संगिनीके शील, स्वभाव, व्यवहारका कुछ ज्ञान कर लेना कर्तव्य समझते थे। इस विषयमे सन्तोष हो जाने पर ही उन्होने सयुक्त-जीवनके मार्ग मे पदार्पण किया था। मानव-जीवन कितना अनिश्चित और क्षणभगुर है! अभी तो विवाहके मंगल-गीतोकी प्रति-ध्वनियाँ भी बन्द न हुई होगी कि वर-वधूका यह हृदय-विदारक वियोग हो गया। कहा जाता है कि जिनको मनुष्य चाहते है देवताओको भी उन्हींकी चाह होती है। यदि वास्तवमें कोई देवलोक है तो

संस्थाओंके अन्दर वे जिस विशुद्ध भावनासे काम करते थे, उसकी छाप दूसरो पर पड़े बिना न रहती थी।

कुछ ही महीने हुए, उस दिन सीताराम-पोद्दार-बालिका-विद्यालय[1] का वार्षिक उत्सव था। उत्सवके कई सप्ताह पूर्वसे वे उसकी तैयारियोमे संलग्न हो गये। उत्सवके अवसर पर एक शिक्षाप्रद नाटक खेलनेका आयोजन था। नाटकका चयन, उसके खेलनेका प्रबन्ध, पारितोषिक वितरण, श्रोताओंके बैठनेकी व्यवस्था आदि, सभी बातोंकी उन्हे फिक्र थी। कभी सामान जुटाना, कभी कपड़े लटकाना, जो काम सामने आता तन्मयतासे उसीमे जुट जाते। हॉल छोटा था और अतिथियोकी भीड़ भारी—उसपर बाहरके तमाशबीन टूटे पडते थे। रामविलास फाटक पर एक दो मित्रोंके साथ डट गये। न परिचितोंके नाराज़ होनेकी चिन्ता और न भीड के रेलो का भय, बस यही एक धुन थी कि, व्यवस्थामे त्रुटि न रहने पावे। तीन साढे-तीन घण्टे तक उसी प्रकार जमे हुए फाटक पर पहरा देते रहे। शुद्ध सेवा, भावना, उनकी नैसर्गिक प्रवृत्ति थी, जिसमें कृत्रिमताका लेश भी न था। मिथ्याभिमान तो उनमे छू भी नहीं गया था। कदाचित् उस निर्दोष हृदयमे इस विकारका प्रवेश ही नहीं हुआ था कि, धन के कारण मनुष्य-मनुष्य के बीचमे अन्तर पैदा हो सकता है।

रामविलास खेलो के प्रेमी थे और इस बातके दृढ पक्षपाती थे कि मारवाडी समाजमे दूसरे समाजोंके सदृश, दिन के व्यापार कार्य को समाप्त कर, खेल-कूद, व्यायाम आदि से मन बहलाने, स्वास्थ्य सुधारने और एक जगह मिल बैठकर हँसने-बोलने की आदत पडे। यो तो क्रिकेट, बैडमिन्टन, पिंगपॉग आदि सभी खेलोमे उनकी रुचि थी, किन्तु

---

१ नोट—लेखक महाशय के पिता स्वर्गीय सेठ श्री सीतारामजी पोद्दार द्वारा संस्थापित विद्यालय। —संपादक

टेनिस पर उनका अत्यधिक अनुराग था। छात्रकाल मे ही उन्होने टेनिस के खेलमे अपने हस्तकौशलसे तीन या चार "कप" जीते थे। वे वम्बई के हिन्दू जीमखानेके सरक्षक (Patron) और क्रिकेट-क्लब-ऑफ-इन्डिया के आजीवन सदस्य बन गये थे।

यह उन्हींकी प्रेरणा और प्रयत्नोका फल था कि वम्बई मे मेरी-मेकर्स क्लब (Merry-Makers' Club) और मारवाडी स्पोर्टिंग क्लबकी स्थापना हुई। इन प्रवृत्तियोके सम्बन्ध मे रामविलासको काफी धन व्यय करना पडा था। टेनिस और क्रिकेटके अच्छे खिलाड़ियो को कितनेही सुवर्ण-पदक उन्होने, अवसर-अवसर पर, प्रदान किये थे।

रामविलास का अल्पकालीन गार्हस्थ-जीवन एक आदर्श जीवन था। युवा पति-पत्निमे भी आन्तरिक प्रेम था ही, साथ ही साथ रामविलास पर परिवारके छोटे बडे सभी लोगो का अनन्य अनुराग था। प्रेम, सेवा, आत्म-त्याग, मधुर व्यवहार आदि के वल से रामविलास सब के स्नेहभाजन हो गये थे। छोटे वच्चो के निकट रामविलास का दर्जा कल्पवृक्ष और सर्वोच्च अपील-कोर्ट से कम न था। सब भाईयोका उसपर समान प्रेम था। कौटुम्बिक व्यवहारमे रामविलास का आचरण एक मूल्यवान उदाहरण है, जिसे अनुकरण कर हम कौटुम्बिक रहस्यको समझ सकते है। ऐसे होनहार उन्नतिशील और सहृदय युवक की जीवन-डोरी असमय टूट जानेसे किसका हृदय विव्हल न हो जायगा! इस दुःख के लिए जीवनके द्वन्द्वपूर्ण अनुभवोसे वृद्ध, सेठ आनन्दीलालजी और उनके समस्त परिवार के साथ मारवाडी समाज और बम्बई के सपूर्ण व्यापारी समाज की सच्ची सहानुभूति है।

रामविलास के चले जानेसे मारवाडी समाज और बम्बई नगर के सामाजिक और सार्वजनिक जीवन की कितनी बड़ी हानि हुई है, इसका अनुमान कर सकना उनके लिए बहुत कठिन है, जिन्हे उस प्रतिभाशाली युवक के परिचय का सद्भाग्य प्राप्त नहीं हुआ था।

प्राचीन संस्कृति और अर्वाचीन विज्ञान, व्यक्तिगत सुख और कौटुम्बिक कर्तव्य, व्यापार की लगन और ललित-कलाओका प्रेम, स्वहित और समाज तथा देश की सेवा—इस प्रकार के परस्पर-विरोधी द्वन्द्वो के बीच मे रामविलास ने एक ऐसा अद्भुत सामञ्जस्य स्थापित कर लिया था, जो मारवाड़ी समाज के नवयुवको के लिए अनुकरणीय उदाहरण है।

अन्त मे एक शब्द और लिखना है। समाज की जो हानि हुई है, वह शायद आगे पीछे पूरी हो जायगी, परिवार और मित्रों का शोक भी शायद शान्त हो जायगा। परन्तु उस षोडशवर्षीया, सरल-हृदया, निर्दोष बालिका की स्थिति की कल्पनामात्र से रोमाञ्च हो जाता है, जिसे रामविलास ने अपनी चिरसंगिनी बनाया था। उसके निकट हमारी समवेदना का विशेष मूल्य तो हो ही क्या सकता है? हाँ, यदि उस अग्निशिखा को यह विश्वास हो जाय कि मारवाडी समाज एव अन्य समाजो के सहस्रो बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष मेरे दुःख मे दुखी है; तो कदाचित् उसका हृदय-सन्ताप कुछ शान्त और उसकी जीवन-यात्रा कुछ सह्य हो जाय। अपने पतिदेव के चरण-चिन्हो का अनुकरण और सेवा-धर्मका आचरण—शान्ति सम्पादन के बस यही श्रेयस्कर मार्ग है। परमात्मा इस सँकड़े मार्ग पर चल सकने की इस देवी को शक्ति प्रदान करे, यही मेरी कामना है।

बम्बई }

—घनश्यामदास पोद्दार

प्राचीन संस्कृति और अर्वाचीन विज्ञान, व्यक्तिगत सुख और कौटुम्बिक कर्त्तव्य, व्यापार की लगन और ललित-कलाओका प्रेम, स्वहित और समाज तथा देश की सेवा—इस प्रकार के परस्पर-विरोधी द्वन्द्वो के बीच मे रामविलास ने एक ऐसा अद्भुत सामञ्जस्य स्थापित कर लिया था, जो मारवाड़ी समाज के नवयुवको के लिए अनुकरणीय उदाहरण है।

अन्त मे एक शब्द और लिखना है। समाज की जो हानि हुई है, वह शायद आगे पीछे पूरी हो जायगी, परिवार और मित्रों का शोक भी शायद शान्त हो जायगा। परन्तु उस षोडशवर्षीया, सरल-हृदया, निर्दोष बालिका की स्थिति की कल्पनामात्र से रोमाञ्च हो जाता है, जिसे रामविलास ने अपनी चिरसंगिनी बनाया था। उसके निकट हमारी समवेदना का विशेष मूल्य तो हो ही क्या सकता है? हाँ, यदि उस अग्निशिखा को यह विश्वास हो जाय कि मारवाडी समाज एव अन्य समाजो के सहस्रो बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष मेरे दुःख मे दुखी है; तो कदाचित् उसका हृदय-सन्ताप कुछ शान्त और उसकी जीवन-यात्रा कुछ सह्य हो जाय। अपने पतिदेव के चरण-चिन्हो का अनुकरण और सेवा-धर्मका आचरण—शान्ति सम्पादन के बस यही श्रेयस्कर मार्ग है। परमात्मा इस सँकड़े मार्ग पर चल सकने की इस देवी को शक्ति प्रदान करे, यही मेरी कामना है।

बम्बई } —घनश्यामदास पोद्दार

उसकी बाल्यावस्था का तो मुझे कुछ ज्यादा अनुभव नहीं हुआ, परन्तु जबसे मेरा उसके साथ संसर्ग हुआ तबसे—क़रीब-क़रीब ११ वर्ष के परिचय में—मैंने उसे बहुत कुछ पहचाननेकी चेष्टा की, पर सफल नहीं हो सका, और मैं तो जोर देकर यह कह सकता हूँ कि—उसके जीवन में उसके व्यक्तित्वका सबसे बड़ा मौन और रहस्य यही है। उसका जीवन अत्यत शुद्ध तथा प्रेममय था। उसने ज़िंदगीमें कभी किसी को अपना दुश्मन नहीं बनाया। केवल एक बारके परिचयमे दूसरो को अपना-लेने की उसमे गजब की शक्ति थी। इसके अनेको प्रमाण आज उसके लिए रोनेवालो में मौजूद है।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' यह कहावत अब मुझे हमेशा याद आया करती है। शिक्षा-कालमे जब और लड़के शैतानी किया करते और आपसमे वैमनस्य फैलाया करते थे, रामविलास सदा प्रसन्न चित्तसे अपने काममे लगा रहता था। अपने प्रिय तथा मित-भाषण से सबको प्रसन्न रखता था। इतना ही नहीं उसने छोटी-सी उम्रमे ही स्कूलके लड़कोकी तो बात ही क्या, अध्यापको पर भी प्रभाव जमा लिया था। एक तो होनहार बालक, दूसरे पढने-लिखने मे तेज, तीसरे अच्छे खान्दानमे परवरिश किया गया; इन्हीं कारणोंसे वह सबको प्रिय था और सब उसे इज़्जतकी निगाहसे देखते थे।

उसी उम्रमे परोपकार करने की धुन उसे इतनी अधिक थी कि जो कुछ जेब खर्च, उसे घर से मिलता—उसीसे वह सहपाठियो की सहायता पुस्तकें, फीस, वस्त्र आदि के द्वारा किया करता था। पाठको! विचार करनेकी बात है कि जिस उम्रमे लड़के फिजूल खर्ची करने के लिए चोरी कर के तथा झूठ बोल कर घरवालो से पैसे लाते है, उसी अवस्थामे अपने जीवन को सादा रखकर घरसे मिले हुए पैसोमे से बचाकर इतरोकी सहायता करना मामूली बात नहीं है। और वह भी इतने गुप्त रूपसे कि

तथापि उसने कभी अपनी पूजनीया माताजी के दिलको नहीं दुखाया। जितनी देर घर पर रहता बराबर माताके चित्तको प्रसन्न करने मे प्रयत्नशील रहता था।

वैसे तो मैट्रिक्युलेशन की परीक्षा पास करने पर ही, कॉलेज के अध्ययन के साथ ही साथ अपनी दूकान के कार्य को भी देखना उसने अपना एक कर्तव्य समझ लिया था, पर बी० ए० पास करने के बाद तो उसने बहुत कुछ काम अपने ऊपर लेकर, अपने पूज्य भ्राता का बोझा हल्का कर दिया था। उसमे विशेषता यह थी कि वह जिस क्षेत्र मे रहा उसी मे उसने उन्नति कर दिखाई। उसका दिमाग़ बहुत तेज था और सब से ज्यादा उसका मिलनसार स्वभाव और सहानुभूति-पूर्ण व्यवहार सबको अपना लेता था। मेरे लिए उसको इतना खयाल रहता था कि अपनी मिल मे मेरी नियुक्ति एक खूब अच्छे वेतन पर करा कर, आगे अच्छा चान्स दिलाना और मेरे भविष्य को चमकाना—यह उसकी तीव्र इच्छा थी, परन्तु अभाग्यवश उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। मुझे स्वप्न मे भी खयाल नहीं था कि, मेरा हितचिन्तक इतनी जल्दी मुझे छोडकर हमेशाके लिए चला जायगा।

विलास बाहरी संसार से बिल्कुल अनभिज्ञ था। मुझे यह पूर्ण रूपसे ज्ञात है कि विवाह होनेके पहले उसे यह भी मालूम नहीं था कि स्त्री भोग-विलासका भी साधन है। धन्य है, उस पवित्र आत्माको जिसने अपने आपको संसार से इतना बचाया और शुद्ध रक्खा।

कहावत है कि, ईश्वर के यहाँ अच्छी और पवित्र आत्माओकी हमेशा जरूरत रहती है। जो उसे प्रिय होते है उन्हे वह इस पामर भूमि मे नहीं रहने देता। फिर भला रामविलास कैसे हम लोगो के साथ रह सकता था? पाठको! मैंने जो कुछ लिखने की चेष्टा की है वह विलासके प्रेम के कारण ही है; वर्ना मुझे लेख लिखने नहीं आते। मेरी ज़िंदगी मे यह पहला ही अवसर है, जब मैं अपने विचार दूसरो के सामने इस

"मित्र बिलास"

ता० ६ जुलाई १९३६ को 'हॉर्नबी वैलार्ड' पर घटनेवाली मोटर दुघर्टना के कारण मेरे परम स्नेही रामविलास के जीवन का पटाक्षेप हुआ और बम्बई की मारवाडी समाज का वह अमूल्य रत्न सदा के लिए कराल काल का ग्रास बनगया।

मनुष्य को बुरे स्वप्न आते है, परन्तु इस प्रकारकी घटना कभी घटेगी—इसका स्वप्न भी लेना चाहे, तो वह कभी कल्पना मे भी नही आ सकता, परन्तु जो अनहोनी हो चुकी है—उसे अब मान लेनेमे कोई उज्र नहीं है। ईश्वर की लीला अगाध है और यह घटना इस बातका साक्षात् प्रमाण है।

"मित्र रामविलास का अल्पकालीन जीवन कुछ ऐसा रहस्यमय है कि उसके घरवाले, मित्र आदि कोई भी उसे नहीं समझ सके। वह सबके पास होते हुए भी—बहुत परे था। उसने सबको समझ लिया, पर उसे कोई नहीं पहचान सका।

"वज्राघात"

मै सन् १९२१ मे वम्बई आया। जब इस विशाल नगरी मे मैंने प्रवेश किया तो मेरे आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा। मै हक्का–वक्कासा हो सब वस्तुओको कौतुक तथा आश्चर्यकी निगाह से घूरने लगा। किसी प्रकार अपने चाचाजीके साथ उनके वास-स्थान पर पहुँचा। दो-चार दिन तो एक अलौकिक नशे की खुमारी मे पड़ा रहा और उसके वाद मारवाड़ी विद्यालयका दर्शन करने के लिये पहुँचा।

यह विद्यालय नगर के एक अच्छे तथा सुन्दर अंचल मे स्थापित है। इसकी आलीशान इमारत देखते ही वनती है। जब मेने इस विशाल विद्यालयमें प्रवेश किया तब ठीक १०॥ वजे थे और विद्यार्थियोंके झुण्डके झुण्ड अपना-अपना वस्ता सम्हाले दौडते, हँसते, तथा किलकारियाँ मारते विद्यालय मे प्रवेश कर रहे थे। उन लोगो का उल्लसित जीवन देख कर मेरे हृदय मे भी भावी उल्लास की एक धुँधुली रश्मि-रेखा खिंच गई। कुछ ही समयमें सब लड़के अपनी-अपनी कक्षाओंमें

उसकी बाल्यावस्था का तो मुझे कुछ ज्यादा अनुभव नहीं हुआ, परन्तु जबसे मेरा उसके साथ संसर्ग हुआ तबसे—क़रीब-क़रीब ११ वर्ष के परिचय में—मैंने उसे बहुत कुछ पहचाननेकी चेष्टा की, पर सफल नहीं हो सका, और मैं तो जोर देकर यह कह सकता हूँ कि—उसके जीवन में उसके व्यक्तित्वका सबसे बड़ा मौन और रहस्य यही है। उसका जीवन अत्यत शुद्ध तथा प्रेममय था। उसने ज़िंदगीमें कभी किसी को अपना दुश्मन नहीं बनाया। केवल एक बारके परिचयमे दूसरो को अपना-लेने की उसमे गजब की शक्ति थी। इसके अनेको प्रमाण आज उसके लिए रोनेवालो में मौजूद है।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' यह कहावत अब मुझे हमेशा याद आया करती है। शिक्षा-कालमे जब और लड़के शैतानी किया करते और आपसमे वैमनस्य फैलाया करते थे, रामविलास सदा प्रसन्न चित्तसे अपने काममे लगा रहता था। अपने प्रिय तथा मित-भाषण से सबको प्रसन्न रखता था। इतना ही नहीं उसने छोटी-सी उम्रमे ही स्कूलके लड़कोंकी तो बात ही क्या, अध्यापको पर भी प्रभाव जमा लिया था। एक तो होनहार बालक, दूसरे पढने-लिखने मे तेज, तीसरे अच्छे खान्दानमे परवरिश किया गया; इन्हीं कारणोंसे वह सबको प्रिय था और सब उसे इज़्जतकी निगाहसे देखते थे।

उसी उम्रमे परोपकार करने की धुन उसे इतनी अधिक थी कि जो कुछ जेब खर्च, उसे घर से मिलता—उसीसे वह सहपाठियो की सहायता पुस्तकें, फीस, वस्त्र आदि के द्वारा किया करता था। पाठको! विचार करनेकी बात है कि जिस उम्रमे लड़के फिज़ूल खर्ची करने के लिए चोरी कर के तथा झूठ बोल कर घरवालो से पैसे लाते है, उसी अवस्थामे अपने जीवन को सादा रखकर घरसे मिले हुए पैसोमे से बचाकर इतरोकी सहायता करना मामूली बात नहीं है। और वह भी इतने गुप्त रूपसे कि

किसी को कानो-कान खबर नहीं होने पाये। इसीलिए उसके सारे ऐसे कार्य मेरे ही मार्फत हुआ करते थे। मुझे अब वे दिन याद आते हैं तो कलेजा धकधक करने लगता है।

बिलास से मेरा प्रेम बड़ा घनिष्ठ था और ईश्वर की कृपासे वह दिन-दिन बढता ही गया । एक बार की बात है कि जब वह कॉलेज मे पढता था, तब वहाँ की हिन्दू एसोसिएशन की ओर से 'उपाधि की व्याधि' नामका हिन्दी प्रहसन होनेवाला था । यद्यपि मे कॉलेज का छात्र नहीं था, पर उसे मुझसे इतना प्रेम तथा मुझ पर इतना विश्वास था कि उसने सहयोगियो पर प्रभाव डालकर मुझे उक्त प्रहसन का मुख्य पात्र बनवाया और उसने स्वय भी उस मे भाग लिया। ईश्वर की कृपा से वह प्रहसन बड़ी सफलता-पूर्वक खेला गया। इस घटना से मेरे प्रति उसका कितना प्रेम था, यह भली-भाँति प्रगट होता है।

रामविलास बडा महत्वाकाक्षी युवक था। उसने थोड़ी-सी जिन्दगी मे जो कुछ कर दिखाया—वह साधारण मनुष्यके लिए असभव है। आज-कलके कलुपित वातावरणमे तथा पाश्चात्य फैशन के युवक और युवति-योके साथ कॉलेज मे शिक्षण पाते हुए भी उसने जीवनको अत्यत शुद्ध रक्खा और किसी प्रकार का दाग नहीं लगने दिया । सम्पन्न घराने मे जन्म लेकर तथा धनिक समाज मे घूम फिर कर भी उसने अपने आपको किसी भी दुर्गुण का गुलाम नहीं होने दिया। यह उसके लिए अत्यंत प्रशसाकी बात थी।

मित्र विलास, अपने माता-पिता का बड़ा लाडला था। पिताकी आज्ञाकी उसने कभी अवहेलना नहीं की। मुझे याद आता है कि एक साल सक्राति पर पतग उड़ाने के लिए मना करने पर उसने कई वर्ष तक पतंगको छुआ तक नहीं। होलीके अवसर पर रंग वगैरा डालने के विपय मे पिताजीका जरासा इशारा होते ही उसने फिर कभी रंग से होली खेलने का इरादा नहीं किया। यद्यपि वह नये विचारोका युवक था,

रहते हुए भी न तो वह खुद किसी तरह की हरकत करता था और न किसी को करने देता था। वह कितना पक्षपात रहित तथा न्यायप्रिय था उसका जीता जागता उदाहरण मै यहाँ देता हूँ। एक दिन की बात है कि क्लास मे दो-तीन लड़को ने कुछ गडबड़ी की। इस पर उसने सबको रोका, किन्तु कुछ लड़के नहीं माने। अन्त मे अत्यन्त दुखी होकर उसने उन सब लडको के नाम प्रिन्सिपाल साहब के पास भेज दिये। फिर क्या था—मि० लाल, अपनी बेत लिये हुए क्लास मे आ धमके, और उन सब लडको को दो-दो बेतो की सजा दी। इन लड़को मे जब मेरा भी नाम आया तब क्या कहना था। सारी कक्षा भर मे सन्नाटा छा गया। सब लड़के मारे आश्चर्य के, दंग रह गये कि कहीं यह भी हो सकता था कि रामविलास मेरा भी नाम भेज देगा। उस समय तो मै भी दग रह गया। किन्तु इसके पश्चात् जब सोचा तब समझ पाया कि, वह महापुरुष कितना कर्तव्य-परायण तथा न्यायी था। मै उसका दोस्त था तो क्या—वह अन्याय नहीं होने देना चाहता था। जब मेरी समझ मे यह बात आगई, तो मेरी श्रद्धा उसके प्रति और भी बढ गई।

रामविलास बड़ा ही परोपकारी था। उसे परम पिता परमात्मा ने वह हृदय प्रदान किया था जो दूसरो के दुःख के साथ दुखी तथा सुख के साथ सुखी रहना जानता था। वह गरीबो का दु:ख देख कर द्रवित हो उठता था। उसकी आत्मा भीतर से रो उठती थी। परोपकार उसका सर्वप्रथम ध्येय था। इसके कितने ही उदाहरण मुझे याद है, जो उसने कितने ही आदमियो के साथ किये थे। एक दिन की बात है कि बम्बई नगरी मे इतनी ठण्ढी पडी कि सड़को के किनारे गृह-हीन दो-तीन व्यक्ति ठण्ढ से अकड कर मर गये थे। उसके दूसरे ही दिन मेरे स्कूल के भैयाने, जो पानी पिलाता है; मुझे कहा कि, बाबूजी, ठण्ढ के मारे रात को मैं मरने लगा। यह सुन कर मैंने कहा अच्छा, मैं इस का इन्तजाम कर दूँगा। उसे इतना कह कर मैंने विलास से कहा कि

तथापि उसने कभी अपनी पूजनीया माताजी के दिलको नहीं दुखाया। जितनी देर घर पर रहता बराबर माताके चित्तको प्रसन्न करने मे प्रयत्नशील रहता था।

वैसे तो मैट्रिक्युलेशन की परीक्षा पास करने पर ही, कॉलेज के अध्ययन के साथ ही साथ अपनी दूकान के कार्य को भी देखना उसने अपना एक कर्तव्य समझ लिया था, पर बी० ए० पास करने के बाद तो उसने बहुत कुछ काम अपने ऊपर लेकर, अपने पूज्य भ्राता का बोझा हल्का कर दिया था। उसमे विशेषता यह थी कि वह जिस क्षेत्र मे रहा उसी मे उसने उन्नति कर दिखाई। उसका दिमाग़ बहुत तेज था और सब से ज्यादा उसका मिलनसार स्वभाव और सहानुभूति-पूर्ण व्यवहार सबको अपना लेता था। मेरे लिए उसको इतना खयाल रहता था कि अपनी मिल मे मेरी नियुक्ति एक खूब अच्छे वेतन पर करा कर, आगे अच्छा चान्स दिलाना और मेरे भविष्य को चमकाना—यह उसकी तीव्र इच्छा थी, परन्तु अभाग्यवश उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। मुझे स्वप्न मे भी खयाल नहीं था कि, मेरा हितचिन्तक इतनी जल्दी मुझे छोडकर हमेशाके लिए चला जायगा।

विलास बाहरी संसार से बिल्कुल अनभिज्ञ था। मुझे यह पूर्ण रूपसे ज्ञात है कि विवाह होनेके पहले उसे यह भी मालूम नहीं था कि स्त्री भोग-विलासका भी साधन है। धन्य है, उस पवित्र आत्माको जिसने अपने आपको संसार से इतना बचाया और शुद्ध रक्खा।

कहावत है कि, ईश्वर के यहाँ अच्छी और पवित्र आत्माओकी हमेशा जरूरत रहती है। जो उसे प्रिय होते है उन्हे वह इस पामर भूमि मे नहीं रहने देता। फिर भला रामविलास कैसे हम लोगो के साथ रह सकता था? पाठको! मैंने जो कुछ लिखने की चेष्टा की है वह विलासके प्रेम के कारण ही है; वर्ना मुझे लेख लिखने नहीं आते। मेरी ज़िंदगी मे यह पहला ही अवसर है, जब मैं अपने विचार दूसरो के सामने इस

खेल-कूद तथा व्यायाम आदि का वह वड़ा प्रेमी था। खेल मे वह फुटवॉल, क्रिकेट, पिंगपोग तथा टेनिस, जानता ही नहीं था; किन्तु स्वयं भी श्रेष्ठ खिलाडी था। मारवाडी विद्यालय मे पहिले क्रिकेट की टीम नहीं थी। तब मेरे सहयोग से उसने एक टीम स्थापित की। जब कि हम दोनो चौथी अंग्रेजी मे थे, एक दिन हम लोग मॅच खेलने मरीन लाइन्सके मैदान मे गये थे। मि० लाला को जब यह बात मालूम हुई तो वे भी मॅच देखने को आये। मॅच देख कर तथा हम लोगो का सङ्गठन देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए और उसी दिन बाबू रामनाथ जी को, जो रामविलास के वडे भाई है, कहा कि क्रिकेट का सब सामान खरीद लाओ और बिल मेरे पास भेज दो। उस दिन से विद्यालय की क्रिकेट टीम बनी और उसका श्रेय रामविलास को ही है।

इसी तरह पिंगपौग के खेल को भी उसी ने प्रारम्भ कराया और उसके दो-तीन कप मैचो मे रक्खे। एक टेबल भी उसी के कहने पर सेठ घनश्यामदासजी पोद्दार ने विद्यालय को भेट स्वरुप प्रदान की, जो अब तक विद्यालय मे वर्तमान है।

रामविलास को कुस्ती से भी बहुत प्रेम था। वह पंडित माधवप्रसाद-जी सोलिसिटर के अखाड़े पर अक्सर जाया करता था तथा कुस्ती भी लडता था। इन सब के उपरान्त जब हम लोग स्काउटिङ्ग मे थे तब उसमे भी वह बहुत भाग लिया करता था। वह स्वय भी एक सच्चा तथा निपुण स्काउट था। एक बार जब हम लोग ट्रिप पर गये थे तो राम-विलास के ही यहाँ से हम लोगो के खाने-पीने का प्रबन्ध किया गया था। उसी का रसोइया भी आया था। इससे हम लोगो को बहुत आराम रहा।

वह हद से ज्यादा सरल तथा मिलनसार था। वह सबसे अच्छी तरह से मिलता था। स्कूल मे वह लडको से इस तरह मिल जाता था कि यह ज्ञात नहीं होता था कि, वह एक श्रीमन्त का लडका है।

तरह पेश कर रहा हूँ। "**विलास के लिए कुछ लिखा ही नहीं जा सकता। उसके लिए लिखनेवालोंमें, उसके कार्यों के मौन को चित्रण करनेवाले, या जो कुछ वह था—अस्पष्ट था, अज्ञात था, और अपने व्यक्तित्वका अनोखा रुस्तम था—को दर्शानेवाले, शायद ही कोई मिल सकें। मेरी बुद्धि इतनी तीव्र नहीं थी कि उसके जीवन के हरेक पहलू को समझ सकती; क्योंकि वह अपने आप को इतना छिपाये हुए रहता था कि जो अनहोनी-सी बात मालूम पड़ती है।**" उसने अपनी तरफ से न तो उसने कभी किसीको दुःख दिया और न कभी दुःख देखा। संसार उसके लिए सुखमय था। २३ वर्ष की अवस्था ही मे उसने अपने आत्मीयजनो तथा सुसरालवालोको इतना अपना लिया था कि वह सबका जीवन हो गया था। आज गया है तो वह गया है और सब कुछ यहीं छोड गया है, परन्तु फिर भी उसके बिना सब सूना है। समूचा घर ज्योतिहीन मदिर-सा प्रतीत होता है। बच्चे उसके लिए सबसे ज्यादा तड़फते है। वह उनका परमाधार था। ईश्वर उसकी आत्माको शांति प्रदान करे।

विलेपार्ले } —राधाकृष्ण सराफ

ही उपस्थित रहता था और सब तरह का कार्य करने के लिये तैयार रहता था। जो कार्य वह अपने हाथमे ले लेता, उसे सुचारु रूप से करता था। उस अघटित घटना के कुछ ही दिन पूर्व स्वर्गीय सेठ सीतारामजी पोदार बालिका विद्यालय का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ वनिता-विश्राम मे मनाया गया था। उस अवसर पर रामविलास भी उपस्थित था। सब कार्य-कर्ता अपने-अपने कार्य पर लगे थे और विलास भी सदर द्वार पर निमंत्रित व्यक्तियों को एक द्वारपाल की तरह अभिनन्दित कर रहा था। कुछ ही समय के बाद भवन एकदम ही जन-समूह से भर गया। कुछ चुने-चुने व्यक्ति जो निमंत्रित थे वे कुछ विलम्ब से आये। उस समय विलास एक साधारण मजदूर की तरह कुर्सी ला-ला कर उनको बिठाने लगा। वह पसीनेमे तर-बतर हो गया। कोट कमीज इत्यादि पसीने मे भीज गये। फिर भी वह अपने कार्य पर डटा रहा। जिन आदमियोंने देखा, वे उसकी सराहना करने लगे। वह दृश्य देखने ही योग्य था कि, सेठ आनन्दीलालजी पोदार तो उस उत्सव के सभापति थे और उन्हीं का प्यारा लड़का 'विलास' एक सच्चे समाज सेवक की तरह बिना किसी हिचकिचाहट के हर प्रकार के कार्य कर रहा था। वह दिन भी, मै ही नहीं; किन्तु जितने व्यक्तियो ने उसे देखा, नहीं भूल सकते।

हाँ, मै अब उसकी व्यापार-कुशलता के बारे में कुछ लिख रहा हूँ। जब उसने सन् १९३४ में बी० ए० पास किया, तब से पेढी पर ही बैठने लगा था और पिताजी के हाथमे जो काम-काज था उसे सम्भालने लगा। बैंक का सब काम-काज वही करने लगा। विदेशका व्यापार भी वही देखने-भालने लगा और कुछ ही दिनोंमे वह एक कुशल व्यवसायी हो गया। यहाँ तक कि उसके बड़े भाई साहब उससे विचार पूछने लगे। वह उन लोगो का विचारक तथा नयनो का तारा था।

"वज्राघात"

मै सन् १९२१ मे बम्बई आया। जब इस विशाल नगरी मे मैंने प्रवेश किया तो मेरे आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा। मै हक्का—बक्कासा हो सब वस्तुओको कौतुक तथा आश्चर्यकी निगाह से घूरने लगा। किसी प्रकार अपने चाचाजीके साथ उनके वास-स्थान पर पहुँचा। दो-चार दिन तो एक अलौकिक नशे की खुमारी मे पड़ा रहा और उसके बाद मारवाड़ी विद्यालयका दर्शन करने के लिये पहुँचा।

यह विद्यालय नगर के एक अच्छे तथा सुन्दर अंचल मे स्थापित है। इसकी आलीशान इमारत देखते ही बनती है। जब मेने इस विशाल विद्यालयमें प्रवेश किया तब ठीक १०॥ बजे थे और विद्यार्थियोंके झुण्डके झुण्ड अपना-अपना बस्ता सम्हाले दौडते, हँसते, तथा किलकारियाँ मारते विद्यालय मे प्रवेश कर रहे थे। उन लोगो का उल्लसित जीवन देख कर मेरे हृदय मे भी भावी उल्लास की एक धुँधुली रश्मि-रेखा खिच गई। कुछ ही समयमें सब लड़के अपनी-अपनी कक्षाओंमें

ही चिंतित रहने लगा। तीन दिन के बाद मैंने फिर टेलीफोन किया, तो ज्ञात हुआ कि उसे ज्वर हो गया था. . किन्तु अब ठीक है और मुझे सोमवार को बुलाया है।

हा! दुर्दैव मुझे क्या खबर थी कि वह सोमवार, सोमवार नहीं किन्तु काल-वार होगा, जिसने मेरे एक मात्र सहारे को इस असार संसार से लुप्त कर दिया। उस दिन प्रातःकाल से ही मै अनमना-सा हो गया और इसी कारण से सारे दिन अपनी कोठरी मे पड़ा रहा। संध्या के समय जैसे कि रोज, माधवबाग दर्शन करने जाया करता था, वैसे ही उस दिन भी जाने की तैयारी कर रहा था, कि इतने मे दो व्यक्ति और तैयार हो गये। इस पर मैंने कहा कि भाई, यह अच्छा नहीं हुआ कि हम तीन ब्राह्मण एक साथ चले। खैर, इतना कह कर ज्योही मै जूता पहिनने लगा, कि उनमे से एकने छींक दिया। मेरा कलेजा काँप उठा। मे भावी अनजान आशका से अधमरा-सा हो गया। फिर भी हृदय को स्थिर करने का भरसक प्रयत्न करता हुआ माधवबाग पहुँचा, तो वहाँ कुछ लोग आपस मे बात कर रहे थे कि एक सेठ की पत्नी बीमार थीं, सो उसका लडका डाक्टर बुलाने बम्बई आ रहा था, किन्तु रास्ते मे मोटर समुद्र मे गिर जाने से सेठ का लडका मर गया। यह सुन कर भी मैंने कुछ पूछ-ताछ नहीं की। लेकिन जब मैंने देखा, कि जो कोई आता था—वह वही बात पूछता था, तब मुझे भी कुछ जानने की इच्छा हुई। मैंने दो-चार आदमियोसे पूछा भी और सुनकर चुप हो रहा। मुझे यह क्या खबर थी कि, ऐ पापी प्राण! यह वज्राघात तेरे ही ऊपर हुआ है। मै उन लोगो से पूछ ही रहा था कि हमारे एक मित्र भी वहाँ आ पहुँचे और जब उन्होने मुझे वहाँ देखा, तो चकित हो कर बोले, 'क्यो भाई, सान्ताक्रुज नहीं गये?' मैंने घबड़ा कर पूछा, 'क्यों? क्या बात है?' उन्होने कहा, 'तुम्हें मालूम नहीं?' मैंने कहा,

'कहो, जल्दी कहो, क्या वात है?' फिर क्या था। मुझे उन्होंने वही सुनाया जो सभीने सुनाया था। इस वार वह सेठ का लड़का "कोई" नहीं—मेरा सर्वस्व था। मै बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा। बहुत देर के वाद जब मै होश मे आया तब से कुछ पागल-सा हो गया। न किसी से कुछ कहा—न पूछा। चुप-चाप अपने घर पर आकर पडा रहा।

अब मेरे पास कुछ नहीं है। बस एक शरीर मात्र है। वह मेरा कौन था और मै उसका कौन था—यह अब मै किसी से नहीं कहना चाहता। और वह क्या था?—वह एक तारा था, एक सितारा था। बस—

यों तो दुनियाँ के समन्दर में कमी होती नही।
लेकिन उसकी शानका, हा! दूसरा मोती नही॥

वम्बई }   —परमानन्द झा

"मेरे अनुभव"

ता० ६ जुलाई को मैंने सुना कि श्रीयुत रामविलासजी पोदार की अचानक मृत्यु हो गई। यह अनभ्र वज्रपात, यह कारुणिक दुर्घटना मेरे लिये अत्यंत असहनीय थी। मित्रोंके ज़रिये मुझे विदित हुआ कि अपनी पूजनीया वृद्ध माताजीकी अत्यत चिंताजनक अवस्था देखकर, विलासजी स्वय ही सान्ताक्रुज़ से बम्बई की ओर वैद्यजीको लानेके लिए मोटरमे आरहे थे। समुद्र के सकीर्ण किनारेसे होती हुई आपकी मोटर बडी तेजीके साथ चली आ रही थी। दुर्भाग्यसे मार्गमे एक्सिडेन्ट हो गया और वह मोटर विधिके विधानका संकेत पा, बड़ी निर्दयताके साथ इन्हे ले अथाह समुद्रके उदरमें चली गई। बस यहीं इनका अत था। खबर चारों तरफ शीघ्रतासे फैल गई। विलासजी निकाले गये। दौड-धूप हुई, परंतु सब निष्फल हुआ। विलासजी इस नश्वर शरीरको यहीं छोड़कर चले गये और उनका हँसता हुआ चेहरा कह रहा था, "संसारका यही तो अटल नियम है।"

"मेरे अनुभव"

ता० ६ जुलाई को मैंने सुना कि श्रीयुत रामविलासजी पोदार की अचानक मृत्यु हो गई। यह अनभ्र वज्रपात, यह कारुणिक दुर्घटना मेरे लिये अत्यंत असहनीय थी। मित्रोंके ज़रिये मुझे विदित हुआ कि अपनी पूजनीया वृद्ध माताजीकी अत्यत चिंताजनक अवस्था देखकर, विलासजी स्वय ही सान्ताक्रुज़ से बम्बई की ओर वैद्यजीको लानेके लिए मोटरमे आरहे थे। समुद्र के सकीर्ण किनारेसे होती हुई आपकी मोटर वडी तेजीके साथ चली आ रही थी। दुर्भाग्यसे मार्गमे एक्सिडेन्ट हो गया और वह मोटर विधिके विधानका संकेत पा, वड़ी निर्दयताके साथ इन्हे ले अथाह समुद्रके उदरमें चली गई। वस यहीं इनका अत था। खवर चारों तरफ शीघ्रतासे फैल गई। विलासजी निकाले गये। दौड-धूप हुई, परंतु सव निष्फल हुआ। विलासजी इस नश्वर शरीरको यहीं छोड़कर चले गये और उनका हँसता हुआ चेहरा कह रहा था, "संसारका यही तो अटल नियम है।"

भापण, मातृ-पितृ-भक्ति, भ्रातृ-प्रेम, कर्तव्यपालन, सदाचार, उन्नत विचार, वाल-मित्रादिका मनोरंजन, अजात-शत्रुता, कार्य-दक्षता, वाक्पटुता, आज्ञा-पालन, तथा धीरता, उनके अनुपम गुणोंका स्वाभाविक परिचय दे रही थीं।

विलासजीने जनरल ज्ञान अच्छा हासिल किया था। उन्हे किसी भी विपय का रटन करना विलकुल नापसंद था। वे उन विषयोंको अच्छी तरह समझ, उनका मनन करते और वादमे उनको प्रॅक्टिकल रूपमे समझ-नेका प्रयास करते; ताकि वे विपय, किसीभी रूपमे सामने क्यो न रक्खे जायँ, वे उनके प्रश्नोंको वरावर हल कर सके। इसीका यह कारण था कि क्लास की पाठ्यपुस्तकोंके अतिरिक्त और भी विपयके प्रश्नोका उत्तर वे वड़ी सरलतासे दे सकते थे। उनके साथ रहनेसे मेरी भी सव विपयोमे प्रगति उत्तरोत्तर होती गई। फलतः थोड़े ही समयमे विलासजीके साथ-साथ मेरा भी नंवर ऊपर आया, जिससे उनका प्रेम मुझ पर अधिकाधिक वढने लगा।

विलासजीको स्पोर्टका अजीव शौक़ था। क्रिकेट, फुटवॉल और पिंगपोग आदिके खेळोमे वे वहुत दिल्चस्पी लेते थे। उनकी प्रेरणा देखकर मे भी उनका साथ दिया करता। एक दिन की वात है, विला-सजीने मुझे विद्यालयसे पिंगपोगके खेलमे पारितोपिक दिल्वानेका निश्चय कर लिया, और प्रिन्सिपाल साहव के सामने अपनी इच्छा जाहिर की। प्रिन्सिपाल साहव यह जानते थे कि विलासजीको जितना शौक़ खेलनेका है उससे भी अधिक पढनेका है; अतः उन्होने यह वात मंजूर कर, एक चाँदीका प्याला मँगवा लिया। प्लान सामने रक्खा गया, लड़के चुने गये, और दिन निश्चित हो गया। यह वात लड़को को विदित थी, कि माणिकचदको इनाम दिल्वानेके लिये ही, विलासजीने यह प्रयास

मुझे यह समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ, क्योकि बिलासजी के साथ मेरी घनिष्ठ मित्रता थी। हम दोनो क़रीब ४ वर्ष एक साथ पढे थे। कक्षा चतुर्थमे इस छात्र-जीवनका प्रारंभ हुआ था और मेट्रिकमे इसका अत। विद्यालयमे मैने द्वितीय कक्षामे प्रवेश किया था और जब मै चौथीमे आया तो बिलासजी का परिचय हुआ। परिचय होते-होते एक दिन उन्होने मुझे क्लासमे कुछ कमजोर देख, अपने पास बडे प्रेमसे बिठाकर कहा, "यदि कोई विषयमे तुम्हे कठिनाई माल्रम होती हो, तो अपनी शका मुझसे हल कर लिया करो। बस यहींसे प्रेमाकुरारोपण हुआ। उस दिनसे हमारी मित्रता द्विगुणित होने लगी। घरकी परिस्थिति देखते हुए मेरा विचार आगे पढनेका बहुत कम था, परंतु बिलासजीका मुझ पर भाईसे भी बढकर प्रेम होनेके कारण मैंने उनके साथ मेट्रिक्युलेशन की परीक्षा पास की।

बिलासजी जैसे श्रीमंत थे, वैसे ही इनका दिल भी उदार था। इनके दिलमे बड़प्पन या घमड का नामोनिशान भी न था। क्लासमे या स्कूलभरमे किसी भी योग्य लड़केको आर्थिक कमजोरी को लिये हुए देखते तो सब प्रकारसे उसकी मदद किये बिना नहीं मानते। विद्या-प्रेमी होनेसे आपका ध्येय साहित्य-संसारको विस्तृत रूपसे समझनेका रहा करता। ऐतिहासिक शोधमे या विज्ञानकी विस्तृत-कलामे, अर्थशास्त्र या भौगोलिक परिज्ञानके परिशोधमे, वे इतने तन्मय होजाते कि तन-मन या धनकी इन्हे कुछ परवाह ही नहीं रहती। इसके लिए वे छोटेसे छोटे मनुष्यसे भी मिलते अथवा रात-दिन भूखो रहकर भी दूर-दूर तक जानेको तत्पर रहते। इनमे दूरदर्शिता अद्भुत थी। कोई भी मनुष्य इनसे चाहे किसी भी विचारसे मिलने आता, तो ये उसे झट पहचान लेते और हेय उपादेयको लक्ष्यमे रख, उसे अपनी कसौटी पर अच्छी तरह कसकर उसका विचार करते। इनके अनुपम गुणोसे मुग्ध हो, सब लोग इनकी सदैव मुक्तकण्ठसे प्रशसा किया करते, क्योकि इनकी जनसेवा, मधुर

देते। उनकी यह भावना कभी नहीं रहती, कि मुझे पीछे रखकर, वे आगे बढ़ जायँ।

एक साल उन्होने संस्कृत की ट्यूशन, प्राइवेट तौरसे प्रिन्सिपाल साहबसे ली। उनके सुलभ पोइन्ट्स् और नियमावली को मनन करनेसे विलास-जीने अच्छा ज्ञान हासिल कर लिया। और उसके बाद उन्होने मुझे अपनी नोट-बुक देकर अच्छी तरह मनन करनेके लिए आग्रह किया। फल यह हुआ कि मे उनसे आगे हो गया, पर मैंने देखा कि ईर्ष्याके बदले, उनमें मेरे प्रति प्रेमकी मात्रा अधिक हो गई।

एक दिन वे मेरी सख़्त बीमारीकी हालत सुनकर घर पर दौडे आये। मैंने देखा कि प्रेमवश विलासजी की आँखो से अश्रुधारा निकल रही थी। कुछ देर तक सब हाल-चाल पूछनेके बाद उन्होने मुझे पथ्यापथ्य का पूर्ण विचार रखने के लिये, तथा योग्य औषधोपचार करनेके लिये मेरे भाई साहबसे आग्रह किया। बादमे भी वे समय-समय पर मेरी खबर लेते रहे।

विलासजी होनहार युवक थे। उनकी निष्पक्ष कार्य-कुशलता और विचारपूर्वक न्याय-निपुणता उन्हे लोकप्रिय बना रही थी। विलासजीने बी० ए० की परीक्षा पास की थी और थोड़े ही समयमे अल्पवयस्क होनेपर भी उन्होने ऑफिस का काम सम्हाल लिया था।

विलासजी का शात-स्वभाव सदा एक-सा बना रहा। उन्हे एक मिनिट की भी फुरसत न होने पर भी, जो कोई उनसे मिलने आते, उनसे गभीरताके साथ बाते करते। और अच्छी तरह परामर्श कर, जिस तरह होता उनकी तन-मन-धनसे सहायता करते। जिनके मुँहसे मै सुनता—यही सुनता कि, विलासजी के सरीखा व्यक्ति मिलना अत्यत ही दुर्लभ है।

किन्तु सृष्टिका नियम और ही है। यहाँ के सुरभिमय, सरस उद्यान में सभी तरह के फूल लगते है। परंतु उनमे से जो सुवासित और

भाषण, मातृ-पितृ-भक्ति, भ्रातृ-प्रेम, कर्त्तव्यपालन, सदाचार, उन्नत विचार, वाल-मित्रादिका मनोरंजन, अजात-शत्रुता, कार्य-दक्षता, वाक्पटुता, आज्ञा-पालन, तथा धीरता, उनके अनुपम गुणोंका स्वाभाविक परिचय दे रही थीं।

विलासजीने जनरल ज्ञान अच्छा हासिल किया था। उन्हे किसी भी विषय का रटन करना विलकुल नापसंद था। वे उन विषयोंको अच्छी तरह समझ, उनका मनन करते और वादमे उनको प्रॅक्टिकल रूपमे समझनेका प्रयास करते; ताकि वे विषय, किसीभी रूपमे सामने क्यो न रक्खे जायँ, वे उनके प्रश्नोंको वरावर हल कर सके। इसीका यह कारण था कि क्लास की पाठ्यपुस्तकोंके अतिरिक्त और भी विषयके प्रश्नोका उत्तर वे वड़ी सरलतासे दे सकते थे। उनके साथ रहनेसे मेरी भी सव विषयोमे प्रगति उत्तरोत्तर होती गई। फलतः थोड़े ही समयमे विलासजीके साथ-साथ मेरा भी नंवर ऊपर आया, जिससे उनका प्रेम मुझ पर अधिकाधिक वढने लगा।

विलासजीको स्पोर्टका अजीव शौक़ था। क्रिकेट, फुटवॉल और पिंगपोंग आदिके खेळोमे वे वहुत दिलचस्पी लेते थे। उनकी प्रेरणा देखकर मै भी उनका साथ दिया करता। एक दिन की वात है, विलासजीने मुझे विद्यालयसे पिंगपोंगके खेलमे पारितोषिक दिलवानेका निश्चय कर लिया, और प्रिन्सिपाल साहव के सामने अपनी इच्छा जाहिर की। प्रिन्सिपाल साहव यह जानते थे कि विलासजीको जितना शौक़ खेलनेका है उससे भी अधिक पढनेका है; अतः उन्होने यह वात मंजूर कर, एक चाँदीका प्याला मँगवा लिया। प्लान सामने रक्खा गया, लड़के चुने गये, और दिन निश्चित हो गया। यह वात लड़को को विदित थी, कि माणिकचदको इनाम दिलवानेके लिये ही, विलासजीने यह प्रयास
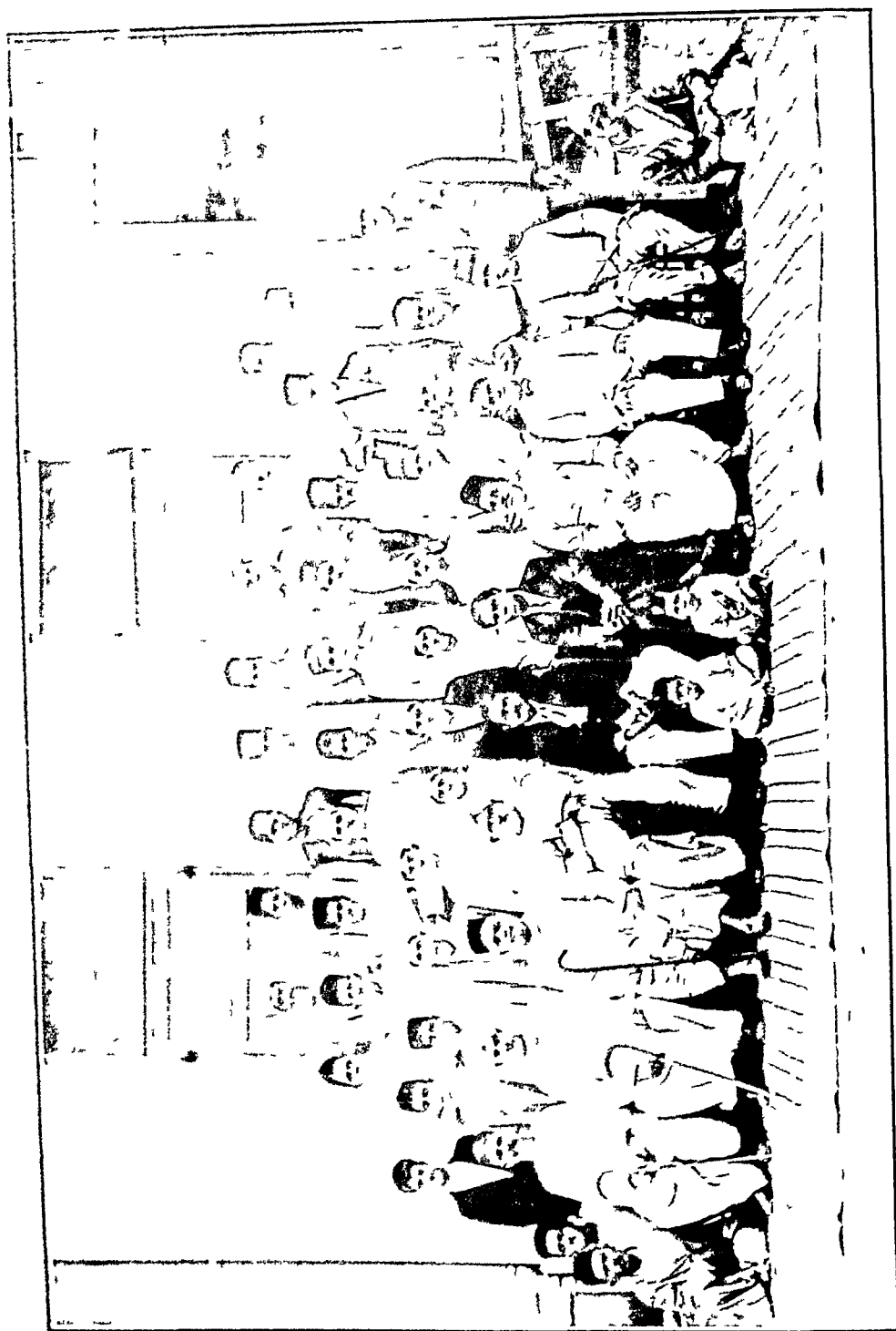
किया है। बिलासजीने मेरे लिये नये बॅट, नेट, और बॉल लाकर मेरा उत्साह बढाया। पर बात और ही थी। मुझे जूने बॅटोके साथ खेलनेका अभ्यास था और उनसे मेरी प्रॅक्टिस बहुत बढ गई थी। पर भाग्य विपरीत था। मॅच शुरू हुआ। केवल बिलासजीको खुश करनेके लिये मेने नये बॅटोसे खेलना शुरू किया और पहिले ही दावमे मै एक छोटेसे लड़केसे ही हार खा गया। शर्मके मारे मै जमीनमे गड़ा जा रहा था। मन ही मन मेने कहा, 'माणिक, तुझे चुल्लूभर पानीमे डूब मरना चाहिये'। और मे झट वहाँसे नौ-दो-ग्यारह हुआ। दूसरे दिन मुझे मालूम हुआ कि वह इनाम उसी छोटे लड़केको मिला, जिससे मेने हार खाई थी। दूसरे दिन बिलासजी मिले। मुझे डर इस बातका था कि बिलासजीको मुँह कैसे दिखाऊँगा। पर उन्होने मेरी पीठ ठोकते हुए कहा, 'मित्रवर, आपने बाइ-चान्स हार खाई है। एक दिन तुम्हे पोदार-प्राइज दिलाकर, मेरी इच्छा पूर्ण करूँगा'। उनकी उदारता अद्भुत थी।

एक दिन सायन्स टीचर के साथ हम सब लड़के, जोगेश्वरीकी गुफाओको देखने गये। बिलासजीको मेरी बहुत चिंता थी। मुझको अपने पास रक्खा, साथमे बैठकर भोजन कराया और वहॉकी गुफाओमे जो बौद्ध मूर्तियाँ स्थापित है उनका हाल बहुत अच्छी तरह बताया। लड़के देखकर आश्चर्यचकित हो जाते और उनके मुँहसे सहसा निकल जाता—वाह! कृष्ण और सुदामा की कैसी मुहब्बत है।

बिलासजीमे एक गुण स्वाभाविक था। वे सबके साथ एक-सा प्रेम रखते थे। उनकी दृष्टि हमेशा यही रहती थी कि लडके मुझे अपनी बराबरीका ही समझे। यही कारण था कि लडके भी उन्हे उच्च दृष्टिसे देखते और अपनी कठिनाईयाँ उनके सामने कह देते। सच्ची मित्रता यही है।

मै और बिलासजी दोनो एक बेच पर बैठते और अपना रफ-वर्क एक ही नोट-बुकमे करते—एक पेज पर वे और दूसरे पर मै। यदि कोई बात जानने या मनन करने लायक होती, तो वे झट मुझे कह

" मेरा बाल-सखा "

जीवनके ऊषा-काल मे ही हम दोनोका साथ हुआ था; याद नहीं कब ? पर जिस दिनसे मिले—मित्र-भाव—सच्चा सख्यभाव हमारे साथ रहा। बाल-विनोद भी हम में था, पर था सीमाके अन्तर्गत। शताब्दियो से प्रचलित, क, ख, ग और ए, बी, सी अक्षरोकी अभ्यासारम्भ-तिथिसे, साक्षरताकी परीक्षाओ तक हम साथ रहे, किन्तु जब जीवन की वास्तविक परीक्षा का समय आया, जब उस साक्षरता-साधन के सदुपयोगकी घटी आयी, तब मेरा सुयोग्य-सहचर—बाल-सखा—साथी चल बसा। माना, मनुष्य गतक्षण प्राणी है, किन्तु यह विश्वास नहीं था कि, यह मानव-दीप यो ही अचानक हमारी मजलिशको अन्धकारमे छोड़कर, बुझ जायगा!

भाई विश्वास वस्तुतः एक दीपक था। उसमे अपनी एक मौलिक रोशनी थी। शिशुपनसे ही वह जिस रूपमें प्रकाशित हुआ, जिस प्रकार अपनी ज्योति अपनी जगहके चतुर्दिक् फैलायी, उससे यह विश्वास होने

देते। उनकी यह भावना कभी नहीं रहती, कि मुझे पीछे रखकर, वे आगे वढ जायँ।

एक साल उन्होने संस्कृत की ट्यूशन, प्राइवेट तौरसे प्रिन्सिपाल साहवसे ली। उनके सुलभ पोइन्ट्स् और नियमावली को मनन करनेसे विलास-जीने अच्छा ज्ञान हासिल कर लिया। और उसके वाद् उन्होने मुझे अपनी नोट-वुक देकर अच्छी तरह मनन करनेके लिए आग्रह किया। फल यह हुआ कि मे उनसे आगे हो गया, पर मैंने देखा कि ईर्ष्याके वदले, उनमें मेरे प्रति प्रेमकी मात्रा अधिक हो गई।

एक दिन वे मेरी सख़्त वीमारीकी हालत सुनकर घर पर दौडे आये। मैंने देखा कि प्रेमवश विलासजी की आँखो से अश्रुधारा निकल रही थी। कुछ देर तक सव हाल-चाल पूछनेके वाद उन्होने मुझे पथ्यापथ्य का पूर्ण विचार रखने के लिये, तथा योग्य औपधोपचार करनेके लिये मेरे भाई साहवसे आग्रह किया। वादमे भी वे समय-समय पर मेरी खवर लेते रहे।

विलासजी होनहार युवक थे। उनकी निष्पक्ष कार्य-कुशलता और विचारपूर्वक न्याय-निपुणता उन्हे लोकप्रिय वना रही थी। विलासजीने वी० ए० की परीक्षा पास की थी और थोड़े ही समयमे अल्पवयस्क होनेपर भी उन्होने ऑफिस का काम सम्हाल लिया था।

विलासजी का शात-स्वभाव सदा एक-सा वना रहा। उन्हे एक मिनिट की भी फुरसत न होने पर भी, जो कोई उनसे मिलने आते, उनसे गभीरताके साथ वाते करते। और अच्छी तरह परामर्श कर, जिस तरह होता उनकी तन-मन-धनसे सहायता करते। जिनके मुँहसे मै सुनता—यही सुनता कि, विलासजी के सरीखा व्यक्ति मिलना अत्यत ही दुर्लभ है।

किन्तु सृष्टिका नियम और ही है। यहाँ के सुरभिमय, सरस उद्यान में सभी तरह के फूल लगते है। परंतु उनमे से जो सुवासित और

सर्व-प्रिय मित्रके निधनसे हमारे हृदयको जो मर्मान्तक वेदना हो रही है, उसे हमारी क्षुब्ध मित्र-मण्डली ही अनुभव कर सकती है। वह वेदना अन्तर्मुखी है, अव्यक्त है। विलास, विधाताका कला-विलास था। आया, चला गया; छोड गया मात्र अपनी दर्द भरी—

याद

बम्बई —धननारायण दानी

को सान्त्वना मिली और जब उनसे यह मालूम हुआ कि स्व० रामविलासजी के सम्बन्ध मे मित्रो के शोकाकुल हृदयो की भावनाओ का सग्रह करने के लिये 'जैन महाशय' कष्ट उठा रहे है, तब साप्ताहिक "स्वाधीन-भारत" मे दो शब्द लिखने का साहस हुआ।

इसके अलावा यह भी बता देना आवश्यक है कि स्व० रामविलासजी से मेरा सम्बन्ध कृष्ण और सुदामा की तरह था। विद्याध्ययन काल मे मुझे उनका सहपाठी होने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ था। उनकी मेरे प्रति सदैव कृपा थी, प्रेम और स्नेह समान था। मेट्रिक्युलेशन मे एक वर्ष तक साथ रहकर मैंने देखा कि, वे मेरे ही लिये कृपालु न थे, बल्कि अन्य सहपाठियो के भी सहायक थे। मै जानता हूँ कि, वे गुप्त रूपसे कई विद्यार्थियोकी आर्थिक तथा पुस्तकोसे सहायता किया करते थे। मेरे लिये भी यह बात कम सौभाग्यकी न थी कि अनेक बार वे मेरी आवश्यकताओकी पूर्ति किया करते थे। सहपाठियोकी सहायता करना उनका स्वाभाविक गुण था। मेट्रिक्युलेशन की परीक्षा मे एक साथ बैठने के पूर्व उन्होने मेरे लिये 'शेक्सपियर' की सम्पूर्ण कृतियाँ खरीद कर दी थीं। खान-पान तथा व्यवहारमे भी वे मुझे अपना मित्र और भाई मानते थे। और मै सोचा करता था कि इतने बडे धनी घर के ये मेरे मित्र, भावी जीवन में बड़े उपयोगी सिद्ध होगे!

गत सन् १९३० ई० मे, मैं सार्वजनिक क्षेत्र मे आया। वे पढते ही रहे, पर उन्होने मुझे 'स्वाधीनभारत' (दैनिक) का सहकारी सम्पादक देखके हार्दिक प्रसन्नता प्रगट की। गत १९३१ के सविनय अवज्ञान्दोलन का पूरा इतिहास 'सत्याग्रह संग्राम' प्रकाशित होने पर उन्होने मेरी उन्नतिकी आकाक्षा प्रगट करते हुए, मुझे प्रोत्साहित किया। सक्षेप मे मेरी सार्वजनिक प्रवृत्तियोकी ओर वे सदैव दृष्टि रखते और मिलने
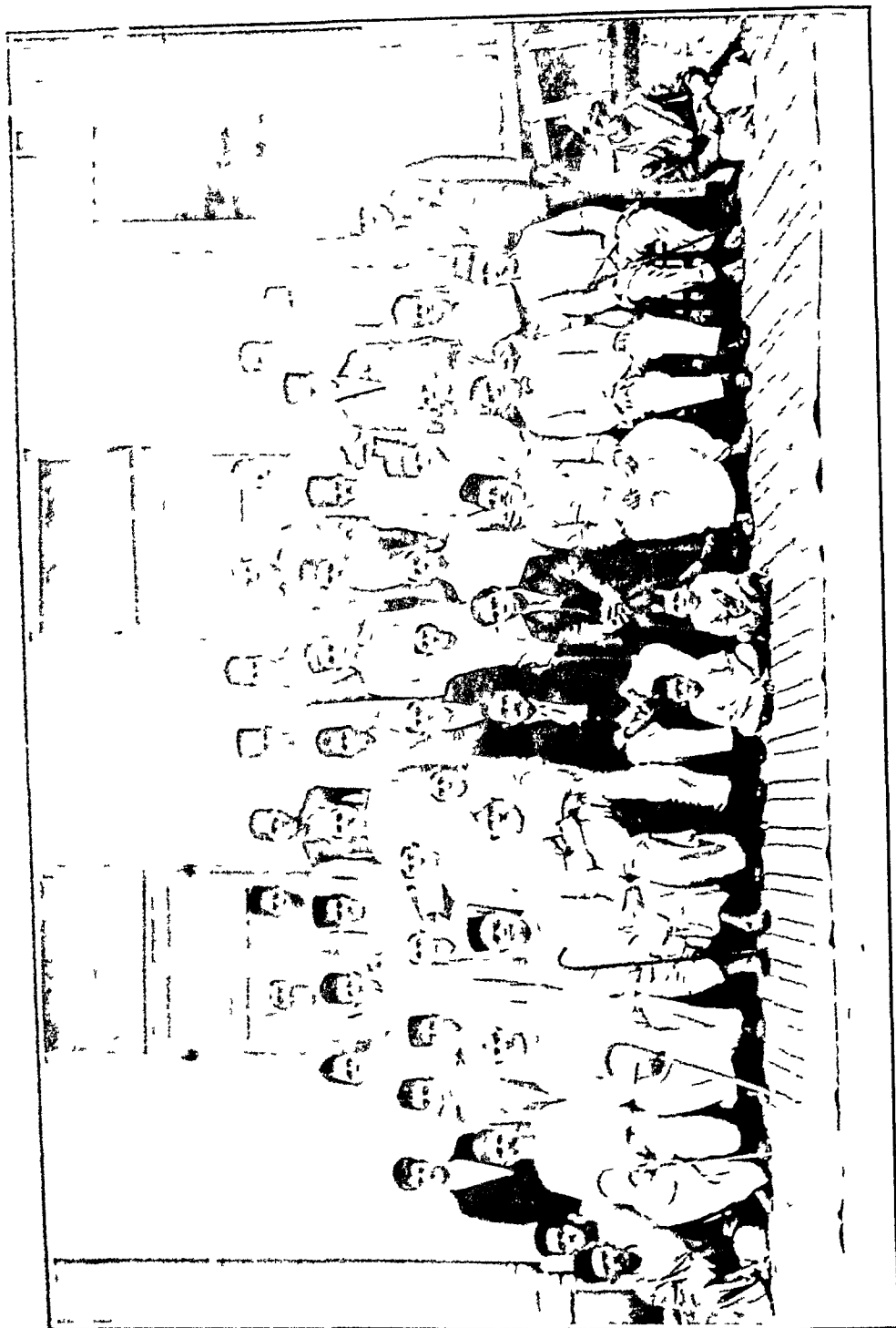
ये सब बातें आज स्वप्नवत् हैं। आँखे बन्द करने पर सब दृश्य नज़र आते हैं, पर आँख खोलते ही सब दृश्य विलीन हो जाते हैं। एक बार फिर हृदय को गहरी ठेस लगती है और जीवन एक पहेली-सा मालूम होने लगता है।

बम्बई }

—सुन्दरलाल त्रिपाठी

हितकारी होते है, उनकी मधुर कलियाँ फूल के रूपमे आते ही, वे झट मुरझा कर, बिचारे माली को तरसाती है। बिलासजी भी होनहार थे। उनका आदर्शमय जीवन हमारे लिये आदरणीय तथा अनुकरणीय है। हमे भविष्यमे उनसे बहुत कुछ आशा थी, परंतु हमारे बदनसीबमे यह बदा न था। इस छोटी-सी उम्रमे ही, वे हमे छोडकर चले गये। आज भी उनकी विमल स्मृतियाँ हमारे होठो पर नाच रही हैं; और कह रही है—

ऐसा व्यक्ति मिलना अत्यंत ही दुर्लभ है

बम्बई } —माणिकचंद जैन

दुर्मिळ गुणचतुष्टयीने युक्त अशा व्यक्तीचा हा अंत अत्यंत शोक-कारक झाला. त्याचे गुणानुवाद गाऊनच आतां या दुःखाचे समाधान केले पाहिजे !

त्याचा पहिला गुण म्हणजे " **विद्या.** "

अलोट संपत्ती असणाऱ्या माणसाचे मुलगे प्रतिवर्षी परीक्षा पास व्हावयाचे म्हणजे आश्चर्याचेच. पण हा पठ्ठ्या या क्रमाने बी. ए. पर्यंत जाऊन आतां एल्‌एल्. बी. च्या पायऱ्या चढत होता. मारवाडी विद्यालयांतून मॅट्रिकच्या परीक्षेस आम्ही एकाच वर्षी बसलो. माझा शाळेत पहिला नंबर आला तर रामविलासचा मारवाडी विद्यार्थ्यांत पहिला नंबर आला. बक्षिससमारंभ सौ. सरोजिनी नायडू यांच्या हस्ते झाला, आणि आम्ही आमचीं बक्षिसे एकदमच घेतलीं. आमचे अभ्यासासंबंधीं बोलणे होत असे, पण ते त्याला मदत म्हणून नव्हे तर केवळ चर्चा या दृष्टीने. तो स्वतः बुद्धिमान् तर होताच, पण दुसऱ्याच्या हुशारीबद्दलही त्याला कौतुक वाटे हा त्याचा विशेष होय. एकादे झोकदार इंग्रजी वाक्य सहज संभाषणांत माझ्या तोंडीं आले तरी उत्तर देण्यापूर्वी तो अगोदर माझी पाठ थोपटी. किती लाजल्यासारखे होई त्यावेळीं ! हा सगळा त्याच्या गुणग्राहकत्वाचा परिणाम.

ज्याप्रमाणे विद्येचा प्रकर्ष त्याने साधला होता त्याचप्रमाणे विनया-चाहि प्रकर्ष त्यानें साधला होता. किंबहुना विनयामुळे त्याची विद्या अधिकच शोभत असे. "श्री"च्या मागोमाग "ग" हा ठरलेलाच असे आपण म्हणतो. परंतु लोकोत्तर विभूतींच्या बाबतींत ज्याप्रमाणें कित्येकदां नियमाला अपवाद धरावा लागतो त्यातलाच हा प्रकार. तो प्रत्येक महिन्याला शंभर रुपये खर्च करीत असेल, तर माझ्या वडिलांचा महिन्याचा पगार शंभर रुपये होता. पण हा फरक त्यानें आपल्या वागणुकींत कधींहि दाखविला नाहीं.

" मेरा बाल-सखा "

जीवनके ऊषा-काल मे ही हम दोनोका साथ हुआ था; याद नहीं कब ? पर जिस दिनसे मिले—मित्र-भाव—सच्चा सख्यभाव हमारे साथ रहा। बाल-विनोद भी हम में था, पर था सीमाके अन्तर्गत। शताब्दियो से प्रचलित, क, ख, ग और ए, बी, सी अक्षरोकी अभ्यासारम्भ-तिथिसे, साक्षरताकी परीक्षाओ तक हम साथ रहे, किन्तु जब जीवन की वास्तविक परीक्षा का समय आया, जब उस साक्षरता-साधन के सदुपयोगकी घटी आयी, तब मेरा सुयोग्य-सहचर—बाल-सखा—साथी चल बसा। माना, मनुष्य गतक्षण प्राणी है, किन्तु यह विश्वास नहीं था कि, यह मानव-दीप यो ही अचानक हमारी मजलिशको अन्धकारमे छोड़कर, बुझ जायगा!

भाई विरास वस्तुतः एक दीपक था। उसमे अपनी एक मौलिक रोशनी थी। शिशुपनसे ही वह जिस रूपमें प्रकाशित हुआ, जिस प्रकार अपनी ज्योति अपनी जगहके चतुर्दिक् फैलायी, उससे यह विश्वास होने

HAPPY REMINISCENCES & IMPRESSIONS

The month of July 1936 is a land mark in the History of Bombay in general and that of Marwadi Community in particular Why? It is so, because during this month a gem and a promising youth of the Community departed from this world It was nobody else but dear *Bilas* His death was a tragic and very mournful one. The whole city was aghast All the people were filled with great sorrow when they heard the details of the circumstances under which the CRUEL FATE caught hold of dear *Bilas* The memory is still quite fresh It was a great shock, it is a terrible blow to his family, relatives and friends All of us sincerely and deeply deplored the loss so sustained by his family to which we conveyed our heart-felt sympathies and condolences, which were not mere formal words of sorrow but real expressions of the 'agony of our heart' The lapse of time only may assuage such grief.

The life of dear Bilas would have been of very great importance, if the Cruel Death had allowed him to live for a longer period His case just resembles the bud, full of smell, just to open Even in his short life, he cut a good figure, and there was a very bright future if he were only to survive

While jotting down a few of my impressions of Dear Bilas, his smiling face stands before me It appears as if he is peeping into what I write. With a very dejected face and tears in my eyes I venture to write down something

It was in the year 1925, that I had the first occasion to see dear Bilas in the Marwadi Vidyalaya High School, Bombay, along with my friend Mr Ramnath, his elder brother, who was then, my class fellow Even during his boyhood, dear Bilas presented himself to be a smart, loving and silent boy He was well up in his studies At the same time he had a liking for games Ping-Pong was his pet game, although he did not lag in Cricket He mixed with the school-boys and his class fellows with an open heart and a cheerful face He had no pride, which is a rare virtue to be found amongst the sons of the rich It is this, that made him not to distinguish between the poor and the rich, the high and the low He had affection towards his friends, and he was always sincere He endeared himself to every one He was regular in his studies with the result that he passed the Matriculation Examination at the first attempt

After completing his School career, Bilas joined the St Xavier's College, of which I was also a student During the College-life, he proved himself to be a very enthusiastic and social Collegian He was always ready to serve the College Societies—specially The St Xavier's College Hindu Association He revealed a great co-operative spirit during the College Functions His help at the College Societies was three-fold—physical, mental and financial At the same time he did not neglect the studies which is generally the case with the so-called Social Collegians It is due to this fact that he passed the B A Examination in his first attempt He was thus a social, intelligent and helpful Collegian—full of vigour and active life

Coming to his post-graduate life, though very short, it is well-known that he attended his business with full vigour, and turned out to be very promising and helpful to his father and brothers He would have served the Merchantile community greatly, if the All-Mighty were to bless him with a long life But this was not so ordained

Besides this, Bilas was the follower of the modern ideas He had a zeal to improve the Marwadi society "We, the Marwadis, are lagging behind The other societies ore far ahead of us Why is it so? The answer is well known We are in want of a rapid, but a steady progress in the educational domain, which, when achieved, will make our lot better" Such was the idea of dear Bilas, who would have done much if he had lived

Dear Bilas was a believer in the modern principle that when you are at work, be engrossed in it, but the moment you finish it, lighten yourself in sports, which will serve you as recreation He was a member of the Hindu Gymkhana where I used to meet him occasionally. He was considered to be a good tennis player In addition, he was taking part in other activities of the Gymkhana He maintained a very happy connection with the Secretary and the Members of the Managing Board His personality and popularity at the Gymkhana was so remarkable that it helped me once a good deal At the time of the recent M C C Matches, I applied to the Secretary to reserve for me a front Sofa in their tent, but owing to heavy booking he refused But the next day accompanied by dear Bilas, I again approached the Secretary, who on account of Bilas's influence agreed to reserve a sofa for me Out of etiquette, I thanked Bilas who thus replied —"It needs no thanks, it was my duty to serve you" Such was his politeness and courtesy

The proverb—"A friend in need is a friend indeed"—is truly revealed from these facts, found in dear Bilas's short life Recently seeing a friend in trouble owing to business losses, he advised him on the right lines, and with his initiative the friend got out of the worries, and started a new business, in which Bilas promised to help him Thus he possessed the initiative—a great virtue for a businessman

Dear Bilas always showed reverence and respect to his elderly persons, and to prove this, the following incident is important. Recently the well-wishers and friends of Mr Bishwambharnath Bhargava, B A, LL B, arranged a gathering at the Blavatsky Lodge, for presenting an address to him upon his being made a Justice of the Peace I accompanied my father to this function, wherein Bilas's presence was to be found After the completion of the function, dear Bilas came to see my father, to whom he paid his homage and respects On coming to know that our car was not there, he requested my father to sit in his car and left us at our office On the way, from his talk we gathered that he was in a hurry to go to Santa Cruz My father was very sorry, and expressed his regret to Bilas, who with a smiling face replied, "No, Dagaji, I have done what was right" It clearly proves that he gave more importance to the discharge of his duties rather than to his personal work

Dear Bilas was a believer in the modern principle that when you are at work, be engrossed in it, but the moment you finish it, lighten yourself in sports, which will serve you as recreation He was a member of the Hindu Gymkhana where I used to meet him occasionally. He was considered to be a good tennis player In addition, he was taking part in other activities of the Gymkhana He maintained a very happy connection with the Secretary and the Members of the Managing Board His personality and popularity at the Gymkhana was so remarkable that it helped me once a good deal At the time of the recent M C C Matches, I applied to the Secretary to reserve for me a front Sofa in their tent, but owing to heavy booking he refused But the next day accompanied by dear Bilas, I again approached the Secretary, who on account of Bilas's influence agreed to reserve a sofa for me Out of etiquette, I thanked Bilas who thus replied —"It needs no thanks, it was my duty to serve you" Such was his politeness and courtesy

The proverb—"A friend in need is a friend indeed"—is truly revealed from these facts, found in dear Bilas's short life Recently seeing a friend in trouble owing to business losses, he advised him on the right lines, and with his initiative the friend got out of the worries, and started a new business, in which Bilas promised to help him Thus he possessed the initiative—a great virtue for a businessman

Dear Bilas always showed reverence and respect to his elderly persons, and to prove this, the following incident is important. Recently the well-wishers and friends of Mr Bishwambharnath Bhargava, B A, LL B, arranged a gathering at the Blavatsky Lodge, for presenting an address to him upon his being made a Justice of the Peace I accompanied my father to this function, wherein Bilas's presence was to be found After the completion of the function, dear Bilas came to see my father, to whom he paid his homage and respects On coming to know that our car was not there, he requested my father to sit in his car and left us at our office On the way, from his talk we gathered that he was in a hurry to go to Santa Cruz My father was very sorry, and expressed his regret to Bilas, who with a smiling face replied, "No, Dagaji, I have done what was right" It clearly proves that he gave more importance to the discharge of his duties rather than to his personal work

IN MEMORIAM

It was morning school Sjt Ram Nath Podar and myself were having a little fun by the side of a small tree in the Marwadi Vidyalaya Garden Being a little bulky in those days, I was an object of much mischief and comedy Being harassed that lovely morning, I began to flee On the staircase I met the little Bilas in dhotee and Kurta Perfect innocence of boyhood became all the more charming when he smiled at my helpless ness in the mischief with his elder brother His pearly teeth were sparkling like a row of white diamonds In his own childlike manner he embraced me Since then we became friends, even though I was senior to him at school

I continued, though Ram Nathji left the studies It was then that we met oftener Bilas had a soft corner for all whom he met So large was his heart So I cannot claim any special intimacy Suffice it to say that he was a perfect lovable friend with all the sincerity in the strict sense of the word He was very affectionate and kind-hearted to the brim and was moved when he saw any fellow student in financial or any other difficulty I remember, he paid the examination fees of about half a dozen classmates in the year, when he appeared at the Matric When he joined business, he posted a few of his friends in the Mill, he was managing In the College, he paid the entire expenses of a friend His other College friends will do him proper

The last but not the least important incident which I can jot down is his laborious work in connection with the recent Prize Distribution Ceremony of the Marwadi Vidyalaya High School It was he, who devoted his full attention to the task for which he was made responsible , it was he who arranged the interesting dramatic programme , it was he, who arranged interesting sport items Again it was he, who purchased the suitable prizes It shows nothing but his zeal and vigour, and the way, in which he understood his responsibility

Thus we, all his friends, mourn his death the more Bilas was the friend, who had endeared himself to every one It has been a very sad bereavement In him, is lost a social, sincere helpful, and promising friend His ever cheerful face, his excellent character and kind nature are ever fresh to us His short, but sweet talk even for a moment can never be got out of memory An hour's contact with him created the desire in one to have his constant company Alas ! he is dead He is lost—lost for good The Cruel Death is responsible for such an unbearable event The Cruel Destiny caught hold of him and took him away to the place from where no one returns The only consolation left for us, is to pray the Almighty " May He be pleased to bless his soul with eternal peace and salvation " It seems incredible now, but we depend upon this—that there is *Some* all-ruling reason for such a severe blow It may be trusted that time will heal the terrible wound thus sustained

Bombay } —*Hanumanprasad L Daga,*
B Com

IN MEMORIAM

It was morning school Sjt Ram Nath Podar and myself were having a little fun by the side of a small tree in the Marwadi Vidyalaya Garden Being a little bulky in those days, I was an object of much mischief and comedy Being harassed that lovely morning, I began to flee On the staircase I met the little Bilas in dhotee and Kurta Perfect innocence of boyhood became all the more charming when he smiled at my helpless ness in the mischief with his elder brother His pearly teeth were sparkling like a row of white diamonds In his own childlike manner he embraced me Since then we became friends, even though I was senior to him at school

I continued, though Ram Nathji left the studies It was then that we met oftener Bilas had a soft corner for all whom he met So large was his heart So I cannot claim any special intimacy Suffice it to say that he was a perfect lovable friend with all the sincerity in the strict sense of the word He was very affectionate and kind-hearted to the brim and was moved when he saw any fellow student in financial or any other difficulty I remember, he paid the examination fees of about half a dozen classmates in the year, when he appeared at the Matric When he joined business, he posted a few of his friends in the Mill, he was managing In the College, he paid the entire expenses of a friend His other College friends will do him proper

justice regarding his qualities, elsewhere in this memorial Alas !

My eyes are dim with childish tears,
My heart is idly stirred
For the same sound is in my ears
Which in those days I heard

He was only a friend to me And so much do I feel ! How much more that unfortunate little flower of the weaker sex, whom he married, must have withered to pieces—is beyond words to imagine And his aged father who will not get such a promising son in many a life to come ! Alas his helpless brothers could have moved the whole world, to get back their dearly loved Bilas ! Oh ! Cruel Destiny ! Inscrutable are thy ways

Bombay }　　　　*—Hari Prasad Gupta*

रोम रोम में रमी हुई है,
प्रिय विलास ! तव मीठी याद ।
दुख भी देती, सुख भी देती,
कैसी है यह अद्भुत याद ?

—'अभिन्न हृदय'

"वेदनाओ !"

आह! वेदनाओ! आओ, तुम आओ।
यह भग्न हृदय है पड़ा इसे अपनाओ॥

तुम क्या हो? सत्य बताओ, क्यों आई हो?
क्या कोई मूक सन्देश साथ लाई हो?

हॉ, "स्मृति" है प्यारे विलास की सँग मे।
तो फलो और फूलो इस उजड़े वन मे॥

मै अश्रुधार से शुभे! तुम्हें सींचूँगा।
उच्छ्वास-पुञ्ज से नित लहलही करूँगा॥

प्रिय है क्या इस उत्तप्त सद्म में आना?
देखो, तुम अति कोमल हो, झुलस न जाना।

तुम इष्ट देवियो! रहो इसी मन्दिर मे।
मै पत्र पुष्प से पूजूँगा जीवन में॥

—'साहित्यरत्न' पं० लक्ष्मणप्रसाद शर्मा